

श्री-मन्मुनि-पाणिनि-प्रणीत

# उणादिकोषः



वृत्तिकार :

आचार्य सत्यव्रत शास्त्री

-ओ३म्

पाणिनिमुनिप्रणीतो वृत्तिद्वयसमलङ्कृतः

# उणादिकोषः

(आर्ष गुरुकुल एटा की स्वर्णजयंती के उपलक्ष में प्रकाशित)

-: वृत्तिकार :-

श्री सत्यव्रत शास्त्री

“वेदनिरुक्त व्याकरणाद्याचार्यः”

“आचार्यः”

आर्ष गुरुकुल एटा (उ०प्र०)

-प्रकाशिका-

श्रीमती मिथिलेश कुमारी

सत्यसदन, चन्देरिया, चित्तौड़गढ़ (राज०)



© सर्वाधिकार वृत्तिकाराधीन

**आर्ष साहित्य बिक्री केंद्र**  
चन्देरिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)  
मूल्य- 100

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

- आर्ष गुरुकुल  
एटा (उ०प्र०)
- सत्यव्रत शास्त्री  
सत्य सदन, मेनबाजार  
चन्देरिया, चित्तौड़गढ़ (राज०)
- कन्या गुरुकुल,  
प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ (राज०)

लेजर टाइपसेटिंग :

सूर्याकम्प्यू ग्राॅफिक्स  
मोती कटरा आगरा,

मुद्रक :

काका प्रिन्टर्स  
मोती कटरा आगरा,

# आचार्य श्री स्वामि व्रतानन्द जी महाराज

संस्थापक—श्री गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ (राज०)



ओम्भक्तधर्मात्मज वृत्तचित्रकः स्वामिव्रतानन्द यतीन्द्रचन्द्रकः ।

भद्रप्रदतां भवतेऽर्पयाम्यहं प्रकाशिकावृत्तिमनल्पचन्द्रिकाम् ॥

हे गुरुवर ! आप जो ओम् देव के परम भक्त, धर्म के पुत्र, चरित्र के सिरजनहार, यति श्रेष्ठ आनन्द स्वरूप थे । उन आप द्वारा प्रदत्त महती प्रकाशवती आनन्दित करने वाली अभिलाषारूपिणी उणादिकोष की अत्यन्त मोदकारिणी विपुल शीतल समुज्ज्वल ज्योत्स्ना स्वरूप प्रकाशिका नामिका टीका समर्पित करता हूँ ।

—आपका विनीत शिष्य : सत्यव्रत

# शुभाशंसनम्

सुविदिततरमेवैतद् यद्धि पाणिनिमुनिकृतोणादिकोषोऽयं संस्कृत वाङ्-  
मयेऽतिमहत्वपदभागिति । आदित एव पक्षद्वयमेतद् वरीवर्त्ति यत् "समे शब्दा  
धातुजाः" अथ च केचन धातुजा अपरेऽधातुजाः । यथाहिः—

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् ।  
यन्न पदार्थविशेषसमुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम् ॥

महाभाष्य- ३-३-१

तदेतदेवमिति विचिन्त्य पाणिनिमुनिरुवाच उणादयो बहुलमिति । बह्व्यो  
वृत्तयश्चाऽस्योणादिकोषस्योणादयो बहुलमिति सूत्र प्रपञ्चभूतस्य दरीदृश्यन्ते ।  
नियतगोचरासु च सर्वासु वृत्तिषु कुत्रचिदपि सूत्राणामर्थनिर्देशो नाभूदिति  
विद्यार्थिनां कृते महत्कष्टकरं बभूव ।

यद्यपि महता प्रयत्नेन सूत्राणि प्रणीतवताऽचार्येणर्षिबुद्ध्या नाऽत्र  
मनागपि काठिन्यमकारि तथापि मन्दधीनामध्येतृणां कष्टकरमेवैतदिति विचार्य  
बहुकालतो वैदिकवाङ्मयमध्यापयताऽऽचार्येण सत्यव्रतमहाभागेन छात्राणां  
सुखमर्थबोधाय "प्रकाशिका" वृत्तिः कृता । न केवलं वृत्तिमात्रमेवात्रानुष्ठितं  
विदुषा किन्तु शब्दानां पर्याया अपि कोशेभ्य उपाहृत्य

समुपस्थापितास्सन्तीति प्रमाणमेतद् कृतश्रमस्याचार्यसत्यव्रतस्य । एवं  
हि श्रूयते लोके द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति, किञ्चाऽत्र तु त्रिबद्धमपि भवति ।  
यतोह्याचार्येणात्र "विमला" किल विगतमला काठिन्यदोष रूपमलनिवारणाचार्य  
भाषायामपि ललिता वृत्तिर्विहिता । 'नितरामनयोः सुवृत्योरध्ययनमध्यापनं  
वर्णिवृन्देष्वचार्येषु च वर्त्तत' इति कामयमानः सम्प्रति विरमामि ।

सुबोधायाशुबोधाय वर्णिनां हितकारिके ।

"प्रकाशिका" "विमला" वृत्ती स्यातां सर्गमादृते ॥

शिवदत्तः पाण्डेयः, आचार्य

आर्ष गुरुकुल, एटा (उ०प्र०)

## प्राक्कथन

उणादिकोष- उणादयो बहुलम् (३-३-१) सूत्र में पठित- आदि एवं 'बहुलम्' पद की व्याख्या के अन्तर्गत आ जाता है, उणादिकोष को "कृतपरिशिष्ट" भी कहते हैं, भगवान् पाणिनि मुनि ने जैसे तद्धितप्रत्ययों एवं प्रकृतियों की अनन्तता को "शेषे" (अ० ४-२-६१) सूत्र में पर्यवसान किया है, उसी प्रकार कृत्प्रत्ययों एवं प्रकृतियों की अनन्तता को "उणादयो बहुलम्" इस सूत्र में परिसमाप्त किया है वैयाकरण को "ऊहज्ञ" होना चाहिए, "ओहब्राह्मणासो विचरन्त्युत्वे" (ऋ० १०-७१-०)

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते, हयाश्च नागाश्च वहन्ति चोदिताः ।  
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः, परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥  
"बहुलमेतन्निदर्शनम्" (धातुपाठ) इन सभी वचनों का यही अभिप्राय है, कि स्वल्प प्रकृतियों- से- स्वल्प कृत्प्रत्ययों-उणादि प्रत्ययों का विधान संकेतमात्र है, उन्हें "स्थालीपुलाक" न्याय से अन्य शब्दों में भी ऊहित करना चाहिये, अदृष्ट सत्प्रयोगों में उनका "ऊह" गुरु की सहायता एवं तपश्चर्यापूर्वक सम्प्राप्त अपनी ऋतम्भरा बुद्धि एवं प्रतिभा से करना चाहिए, वस्तुतः " पाणिनीय व्याकरण" में साधु शब्दों के व्युत्पादन के प्रकार का दिग्दर्शन कराया गया है, ऐसा व्याकरण नहीं बनाया जा सकता है, जो प्रतिशब्द प्रकृति प्रत्यय का निर्देश करके शब्दों का व्युत्पादन करे। अतः आचार्य का परम कर्तव्य है, कि वह छात्र की प्रतिभा को जागृत करके उसे व्युत्पन्नमति करे।

उणादयो व्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि प्रातिपदिकानि, महा० १-१-१६  
उणादिप्रातिपदिक अव्युत्पन्न प्रकृति प्रत्यय के विभाग से रहित उनमें यौगिक अर्थ संगत नहीं होता है, वे बहुधा रूढ़िशब्द होते हैं, किं वा संज्ञा शब्द होते हैं। रूढ़िशब्दों का निज अर्थ के साथ वाच्य वाचक भाव सम्बन्ध होता है, अतः



वे प्रकृति-प्रत्ययार्थ के सम्बन्ध के बिना भी 'स्वार्थ' का बोध करा ही देंगे, उनके व्युत्पादन की क्या आवश्यकता है ?

दूसरा पक्ष यह है कि-

“नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्”

(महा० ३-३-१)

सब संज्ञा= रूढ़िशब्द प्रकृति-प्रत्ययार्थ के सम्बन्ध से यौगिक अर्थों के बोधक होते हैं। ऐसा निरुक्तकारों एवं वैयाकरणों में शाकटायन ऋषि का मत है।

शब्दों के विषय में इन दोनों पक्षों को दृष्टिगत करते हुये “पाणिनि” ने ‘अष्टाध्यायी’ में निम्न दो सूत्रों का प्रणयन किया है; अव्युत्पन्नपक्ष में- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिषदिकम् (अ० १-२-६५) व्युत्पन्नपक्ष में- कृत्तद्धितसमासाश्च (१-२-६६) व्याकरण के अध्येताओं को इन दोनों पक्षों की सम्यक् जानकारी होनी चाहिये, अन्यथा शब्द व्युत्पादन में उन्हें भ्रान्ति या विप्रतिपत्ति होगी, यथा अप्तृन्तृच्० (अ० ६-६-१६) सूत्र में तृन्तृ एवं तृच्प्रत्ययान्त शब्दों की उपधा को दीर्घ सर्वनामस्थान के परे कहा है, वह उणादिकोष में “नप्तृनेष्ट्र (उणादि० २-६५)” सूत्र से निपातित तृन् या तृच्प्रत्ययान्त शब्दों = पितरौ, मातरौ इत्यादि में नहीं होता; क्योंकि अव्युत्पन्न पक्ष में- उपर्युक्त सूत्र में उणादि के तृन्तृच् प्रत्ययों का ग्रहण नहीं है, अतः इस पक्ष में ‘अप्तृन्तृच्०’ (अ० ५-४-११) इस सूत्र में पठित “नप्त्रादि शब्दों” का ग्रहण विध्यर्थ है, तथा च व्युत्पत्ति पक्ष में-नियमार्थ है, “अप्तृन्तृच्” इस सूत्र में पठित उणादि के तृन्तृच्प्रत्ययान्त “नप्त्रादि शब्दों” को दीर्घ होवे, अन्य उणादि के तृन्तृ एवं तृच्प्रत्ययान्त शब्दों में दीर्घ न होवे, इसलिए “पितरौ” “मातरौ” में दीर्घ नहीं होता उणादिकोष को न पढ़ने वालों को यह शंका भी होगी, “रै, ग्लौ, नौ, गो” इन एजन्त शब्दों की “कृन्मेजन्तः” (अ० १-१-३८) सूत्र से अव्ययसंज्ञा एवं “अव्ययादाप्सुपः” (२-४-८२) से इन से परे सुप् प्रत्यय का लुक् क्यों नहीं होता ?

इसका समाधान उणादिकोष के अध्ययन से होगा। ‘च्विरव्ययम्’ (उणादि० २-६५- इसका तात्पर्य यह है- उणादि के एजन्त शब्द रै, ग्लौ

इत्यादि च्विप्रत्ययान्त होने पर ही अव्ययसंज्ञक होते हैं च्विप्रत्ययान्त इस सूत्र के नियम से निरास हो जाता है, अतः उणादिकोष का अध्ययन परमावश्यक है।

धातुपाठ के स्मरण एवं अर्थपरिज्ञान के बिना उणादिकोष का अध्ययन करने से छात्रों को विशेष लाभ नहीं होगा। अतः धातुपाठ का स्मरण आवश्यक है, आचार्य सत्यव्रत जी, महावैयाकरण, दर्शनकेसरी श्रद्धास्पद पूज्य पण्डित श्री शंकरदेव जी मिश्र महाभाग के अन्तेवासी हैं। आजकल आप-दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान श्रद्धेय स्वा० ब्रह्मानन्द जी दण्डी द्वारा संस्थापित आर्ष गुरुकुल एटा में अध्यापन कार्य कर रहे हैं, आपने इस गुरुकुल की विराट् यज्ञशाला में इस सर्वाङ्गीण व्याख्या का निर्माण किया है, आर्य भाषा में अभी तक कोई वृत्ति दृष्टिगोचर नहीं हुई। आपने उस कमी को पूरा किया है अनुवृत्ति निर्देशपूर्वक सूत्रार्थ सरल सरस सुगम संस्कृत एवं आर्यभाषा में दर्शाया है, कहीं-कहीं क्लिष्ट शब्दों की सिद्धि भी व्याख्या में सूत्र निर्देशपूर्वक दिखा दी है; आपने उदाहरणों के अर्थों को आर्यभाषा में विशेष परिश्रमपूर्वक स्पष्ट किया है, ताकि छात्र शब्दों के अर्थ का परिज्ञान करके दैनिक वाग्व्यवहार में प्रयोग कर सकें। छात्र इसके अध्ययन से विशेष लाभान्वित होंगे।

विदुषां वशंवदः

आचार्य विश्वदेव शर्मा

आर्ष गुरुकुल, एटा

# रुव० पिता श्री रामप्रसाद जी



रागद्वेषविनिर्मुक्तः प्रोक्तवान् मृत्युवनेहसम् ।

तमहं श्रद्धया वन्दे रामप्रसाद तातकम् ॥

जिन्होंने पहले ही अपनी मृत्यु वेला आश्विन कृष्णा द्वादशी मध्याह्न १ बजे सन् १९७२ ईस्वी कथन की, उन रागद्वेष विनिर्मुक्त पिता श्री रामप्रसाद जी को श्रद्धा के साथ अभिवादन करता हूँ ।

विनीत पुत्र—सत्यव्रत

## किञ्चित् आवश्यक निवेदन

मुनिप्रवर पाणिनि जी महाराज द्वारा विनिर्मित अष्टाध्यायी सूत्रपाठ अत्यन्त संयमित सुसम्बद्ध क्रमानुसारी ऊहापोह से युक्त (व्याकरण) संस्कृत भाषा को बहुत ही दृढ़ता से पकड़े हुए हैं। जैसे कि किसी की मुट्ठी में स्वर्ण सिक्का दबा हो। आप संसार के किसी भाग में चले जाइये जहाँ संस्कृत का कोई ग्रन्थ हो या संस्कृत बोलचाल की भाषा हो वहाँ सब विज्ञान नियमपूर्वक पाणिनि विनिर्मित व्याकरण-सूत्र में ही बँधे दिखाई देंगे। उसी महीनीय अष्टाध्यायी के एक सूत्र "उणादयो बहुलम्" का ही विस्तार यह उणादिकोष ग्रन्थरत्न है। इस कोष के सूत्रों के द्वारा कृदन्त शब्दों का निर्माण होता है। इस कोष में ७५० सूत्र हैं। इन सूत्रों द्वारा प्रकृति से प्रत्यय का विधान किया गया है। इन आप्तशब्दपयोनिधि स्वरूप मुनिवर पाणिनि ने अपने सूत्र लाघव कला निर्माण द्वारा कहीं तो एक प्रकृति (धातु) से अनेक प्रत्यय-विधान करके अनेक शब्दों की रचना की है और कहीं अनेक प्रकृतियों से एक प्रत्यय का उच्चारण कर अनेक शब्दसृष्टि निर्मित की है। तथा जहाँ प्रत्यय की अनुवृत्ति इष्ट सगङ्गी है वहाँ वह सतत् चलती गई है। इस से कृदन्त के सहस्रों शब्दों का निर्माण सम्भव हुआ है। इस से ऋषि की विमल बुद्धि से चलाई गई सूक्ष्म लेखनी की अनुभूति एवं दर्शन स्वतः ही अन्तःकरण में होने लगता है। जिसने कि हमारे अन्तःस्थित अज्ञानान्धकार को सूर्य-प्रकाश की भाँति दूर किया है।

ऐसे पृथिवी से लेकर आकाश पर्यन्त. (निहित वस्तु तत्त्वों के नाम) विश्रुत कारक उणादि कोष का प्रकाशनाभाव हो तो यह लोक के लिये कितनी दुःखद बात है। यह अनुभूति गूँगे पुरुष को जैसे पीड़ित करती है वैसे ही हमारे लिये भी महती वेदनामयी है।

ऐसा ग्रन्थ रत्न बाजार में शुद्ध मूल रूप में न मिलता हो और न उसकी विद्यार्थिवृन्द हेतु कोई मंगलकारी टीका ही उपलब्ध हो तो हमारे कोमल मति बाल समूह कैसे शब्दों की निर्मिति व उनके अनेक अर्थों को हृदयङ्गम करके लोक व्यवहार में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं ?



जिन महानुभावों ने इस आर्ष ग्रन्थ की टीका लिखी है उन्होंने लोकोपकार तो किया ही है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है और वे अध्येतृवृन्द जनता जनार्दन के अनेकशः धन्यवाद के पात्र हैं। फिर भी किन्हीं विद्वज्जनों ने अपनी वृत्ति शब्दार्थ स्वरूप में अत्यन्त संक्षिप्त रखते हुए शब्दार्थ विज्ञापन में न्यूनता ही रखी है। शब्दों के विस्तृत अर्थ नहीं दर्शाये। जिससे कि अध्येता एक शब्द के अनेक अर्थ जानकर किसी ग्रन्थ को ऊहापोह पूर्वक लगा सके एवं स्वयं शब्द को अपनी वाक्यावली में अन्यार्थ परक प्रयोग करके इतने शब्द निर्माण पुरुषार्थ को सफलीभूत कर सके। इसी बात को ध्यान में रखकर यहाँ शब्दों के अनेकार्थ वाचक शब्द दिखलाये गये हैं। जिससे बालसुलभ अवस्था में अपनाया हुआ अनेकार्थ व शब्द ज्ञान अनायास ही अभ्यस्त हो जाय और आगे के जीवन का अविभाज्य अंग बन जाय।

साथ ही सूत्रार्थ शैली सुलभ सरल शब्दार्थमयी अपनाई गई है। न तो सूत्रार्थ का विशेष विस्तार ही किया गया है और न अत्यन्त संक्षिप्तता को ही अवसर दिया है कि जिससे विद्यार्थी सूत्रार्थ को हृदयङ्गम करने में कठिनाई अनुभव करे।

हाँ, इतना अवश्य किया है कि सूत्र में आये हुए प्रत्येक शब्द को व धातु को अर्थ पूर्वक खोला है। जिससे कि विद्यार्थी शब्दार्थ के ज्ञान में व धात्वर्थ के अवगाहन में कृतकार्य होता हुआ शब्दार्थ सिद्धि में जो कि विद्यार्थी के लिये आवश्यक है और उद्देश्य परक है। अतः सूत्रस्थ प्रत्येक धातु को अर्थ सहित खोला है तथा निपातन परक सूत्रों में आये हुए शब्दों को धात्वर्थ सहित बतलाते हुए प्रत्यय का ज्ञान कराया है।

इस टीका में शब्दार्थ प्रत्येक का किया है शब्द की उपेक्षा अर्थविधान में नहीं की है। क्योंकि जब विद्यार्थी को शब्द का अर्थ ज्ञात होगा तभी वह प्रयोग कर सकेगा तथा प्रयोग में आये शब्द के अर्थ को अवगम कर अर्थानुभूति का आनन्द ले सकेगा। अन्यथा केवल अर्थ शून्य शब्द ज्ञान तो भार रूप ही होता है जैसा कि कहा गया है कि—

यथा खरश्चन्दनभारवाही,

भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।

एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य,

चार्येषु मूढाः खरवद् वहन्ति ॥ (सुश्रुत सं०)

अर्थात् जैसे गधे के ऊपर चन्दन हो तो वह उसे भार रूप ही समझता है उसके महत्व को नहीं समझता। इसी प्रकार जो व्यक्ति शब्द तो जानता है किन्तु उसके अर्थ ज्ञान से रहित है तो वह गधे के समान शब्द भार को वहन करने वाला ही है। तथा च “योऽर्थज्ञ इत्सकल भद्रमश्नुते” जो अर्थ ज्ञाता होता है वह अध्ययन के सम्पूर्ण कल्याण रस का आस्वादन करता है। इसलिये हम जो कुछ भी पढ़ें पढ़ावें वह सब अर्थ ज्ञान से परिपूर्ण ही हो।

इसी उदात्त भावना को चित्त में रखकर यहाँ शब्द को अर्थ ज्ञान पूर्वक दर्शाने का प्रयास किया है। जिससे कि अध्ययन के समग्र फल को प्राप्त हों। तथा वे उणादिस्थ शब्दों को तीनों कालों में प्रयुक्त कर सकें। क्योंकि ये कृत्प्रत्ययान्त शब्द सामान्य तौर से सभी कालों में व्यवहरणीय होते हैं। जैसे कि—

पठतीति पाठकः, अपाठीदिति पाठकः, पठिष्यतीति पाठकः, एवं साध्नोति धर्म्यं यशस्यं कर्मेति साधुः, सत्पुरुषः, असाध्नोद् धर्म्यं यशस्यं कर्मेति साधुः, सात्स्यति यशस्यं कर्मेति साधुः “अर्थात् जो पढ़ता है, वह पाठक है, जो अध्ययन कर चुका वह भी पाठक है तथा जो भविष्य में पढ़ेगा वह भी पाठक है। इसी प्रकार जो धर्म कीर्ति के कार्यों को सिद्ध करता है वह साधु श्रेष्ठ पुरुष है, जिसने धार्मिक प्रसिद्धि देने वाले कार्य किये थे वह भी श्रेष्ठ साधु पुरुष है एवं जो न्याय्य यशोवर्धक कर्म भविष्य में करेगा वह भी साधु पुरुष कहा जाता है। इस प्रकार तीनों कालों में व्यवहार में आने वाले ये उणादि शब्द होते हैं।

ये उणादिगणस्थ सभी ७५० सूत्र परिशिष्ट के तौर पर अष्टाध्यायी के एक सूत्र उणादयो बहुलम् ३/३/१ सूत्र के व्याख्यान स्वरूप हैं। ऐसा समझना चाहिये।

इस उणादि कोष की टीका में जैसा सूत्रार्थ, उदाहरण अनेकार्थ व प्रमुख शब्द सिद्धिज्ञान विशिष्ट सूत्र दिग्दर्शन का संगम हुआ है वैसा पथप्रदर्शन हमारी दृष्टि में अब तक अन्य टीकाओं में नहीं सुलभ हुआ है। क्योंकि किसी ने सूत्रार्थ को सरल समझकर सूत्रार्थ की उपेक्षा कर अपनी टीका निर्वचन प्रधान रखी है और किसी ने सूत्रार्थ करते हुए भी अनेकार्थ की उपेक्षा बरती है एवं किसी ने केवल शब्द अनेकार्थ वाच्यार्थ की श्लोकमयी रम्य रचना की

है। किन्तु आज के अंग्रेजी प्रधान वातावरण युग में मन्दमति मध्यम व श्रेष्ठ अध्येताओं के लिये ऐसी एकांगी टीकायें पूर्ण लाभकारी सिद्ध प्रतीत न होने से इस प्रकाशिका का निर्माण व विमला नामक हिन्दी टीका की रचना जन सामान्य को उणादिकोष के महनीय ज्ञान से गौरवान्वित करने हेतु रची गयी है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि अध्येतृवर्ग इस नवीन कृति का परिशीलन करके उणादि कोष के ज्ञान में चहुँमुखी प्रगति प्राप्त कर संस्कृत विद्या के ज्ञान प्रसार व प्रचार में अग्रसर होकर संस्कृत भाषा जो सब भाषाओं की जननी है एवं जो आर्ष मतावलम्बिनी है इसे हिमालय के समान ज्ञान विज्ञान आचार विचार में उन्नत शिखर पर आरूढ़ करेंगे जिससे कि हम विश्व को एक बार फिर यह डिण्डिम घोष सुना सकें कि—

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**

**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।**

अर्थात् इस देश में उत्पन्न हुए गुण कर्म स्वभाव सिद्ध विद्वद् वृन्द ब्राह्मणों के समीप से पृथिवी के समस्त मानव अपने-अपने जीवन व्यवहार की शिक्षा ग्रहण करें। तभी हमारा ज्ञान कर्म वृद्ध भारत संसार में सिर मुकुट मणिरूप होगा। इत्योम् शम्

संस्कृत, संस्कृति हितेच्छुः

**सत्यव्रत वेदाचार्यः**

तिथि— दीपमालिका अमावस्या

वि. संवत् २०५३।।

## कृतज्ञता ज्ञापन

सबसे प्रथम परम पिता परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद है कि जिसकी कृपा कटाक्ष से अनेक वैयक्तिक सामाजिक बाधाओं के होते हुए भी मैं इस उणादि कोष की प्रकाशिका नामक संस्कृत टीका एवं विमला नामक हिन्दी टीका को पूर्ण कर सका। तदनन्तर श्री पं. देवराज जी शास्त्री मन्त्री व मुख्याधिष्ठाता आर्ष गुरुकुल एटा का अनेकशः धन्यवाद है कि जिनकी छत्रछाया में रहकर व जिनकी शुभ प्रेरणा से यह टीका लिखी गई इन्हीं का यह विचार फलित हुआ कि " पण्डित सत्यव्रत जी ! आप एक आर्ष ग्रन्थ उणादिकोष की संस्कृत हिन्दी टीका कर दीजिये जिससे व्याकरण विषय में निर्धारित उणादिकोष के शब्दों का अर्थसहित ज्ञान ब्रह्मचारी लोग अपने मस्तिष्क में सुविधापूर्वक धारण कर सकें और हम अपने स्वर्णजयन्ती महोत्सव से पूर्व इसे प्रकाशित देख सकें। सो उनकी भावना मूर्तिमती होकर साक्षात् है।

तीसरे मेरे अपने इस कार्य में अनन्य सहयोगी श्री पंडित शिवदत्त जी पाण्डेय भी धन्यवाद के पात्र हैं, जो शिक्षा के क्षेत्र में अल्पायु बाल होते हुए भी अबालमति, कर्तव्य निष्ठ, सुलझे विचारों के होनहार आर्य संस्कृति के प्रचारक, यज्ञ कर्म के प्रसारक, सुललित व्याख्यान कला निष्णात, पटु बटु रूप हैं। जिन्होंने पुस्तक के इस प्रकाशन को अपना ही समझ मुझे आर्थिक सहयोग के साथ ही प्रूफ संशोधन के काम में अत्यधिक सहायता लगातार प्रदान की है।

जिन आर्ष गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों ने द्वितीय प्रेस कापी करने में अपना-अपना जैसा सहयोग दिया तदर्थ प्रिय मुकेश सनत्कुमार, योगेन्द्र व धर्मेन्द्र को शुभाशीर्वाद देता हुआ प्रभु से कामना करता हूँ कि इनकी अपने जीवन काल में चहुँमुखी उन्नति हो। तथा ब्रह्मचारि पटु वटु रूप अनिल व ओम्प्रकाश को भी आशीराशि देता हूँ जिनके आत्मिक भक्ति भाव से शब्द सिद्धि विस्तार में सहयोग मिलता रहा। सबसे अन्त में अपने उदारमना विध्वेश्वरी प्रसाद शुक्ल को धन्यवाद देना कैसे भूला जा सकता है जिन्होंने पुस्तक का अवलोकन कर अपने उत्तम सुझावों से मुझे लाभान्वित किया है। सर्वान्त में प्रेस मालिक आनन्द जी को भी बहुत-बहुत धन्यवाद है कि जिनके वास्तविक सहयोग व सुजनता से यह पुस्तक प्रकाशन में आई और संस्कृत प्रीतिभाजनों की प्रीति विवर्धिनी बनी। इस पुस्तक प्रकाशन में निम्न सज्जनों ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

११०१) श्री जयदेव शर्मा, सूबेदार मेजर (अवकाश प्राप्त)

अमौली फतेहपुर (उ०प्र०)

१००१) श्री ला० हरप्रसाद जी गोहाना वाले अवागढ़।



५०१) श्रीमती शारदा देवी जी धर्मपत्नी श्रीयुत देवराज जी शास्त्री  
आर्ष गुरुकुल, एटा।

५०१) श्री विद्याधर जी पाण्डेय, अवधपुर, मायंग, सुल्तानपुर द्वारा अपने  
पुत्र चिरं शिवदत्त पाण्डेय के पाणिग्रहण के निमित्तोपलक्ष में।

२५१) स्व० श्री स्वामिवेदानन्द जी महाराज दण्डी, आर्ष गुरुकुल, एटा।

२५१) श्री अशोक कुमार जी चौहान, अध्यक्ष आर्य समाज,  
नौगांव, मैनपुरी।

१०१) श्री सोमदेव जी वानप्रस्थी आर्ष गुरुकुल एटा।

१०१) दान सहाय खादी ग्रामोद्योग समिति एटा।

इन सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद है, तथा जिन्होंने अनजाने में भी  
इस कार्य में सहयोग दिया है उन सभी का बहुत धन्यवाद है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जो कहीं कोई भूल रह गई हो चाहे वह भूल दृष्टि  
दोष की हो, अज्ञान मूलक हो या फिर प्रेस सम्बन्धी हो। इस ओर जो सज्जन  
ध्यान दिलावेंगे उनका भी मैं सच्चे हृदय से धन्यवाद करूँगा। क्योंकि भूल हो जाना  
जीव के अल्पज्ञ होने के कारण स्वाभाविक है कहा भी है कि "गच्छतः स्खलनं क्वापि  
भवत्येव प्रमादतः। दुर्जनाः हसन्त्यत्र समादधति सज्जनाः" अर्थात् चलते हुए  
असावधानता से फिसलना हो जाता है इस में दुष्ट जन मजाक बनाते हैं और सज्जन  
गण उसका समाधान करते हैं। अतः जो वास्तविक त्रुटि को पवित्र भावना के साथ  
दूर करने हेतु लिखेंगे उनका सत्कार करना मेरा परम कर्तव्य होगा मैं उनके द्वारा  
दर्शायी गई त्रुटि को अगले संस्करण में अवश्य दूर करूँगा। मैं अपने इस परिश्रम  
को तभी सफल समझूँगा जब इसके अध्येतृ वृन्द इस का अध्ययन कर इससे लाभ  
उठावेंगे। वैसे इस उणादिकोष को विद्यार्थिगण के लिये सर्वभावेन लाभार्थ करने हेतु  
इस में सूत्रार्थ, अनुवृत्ति उदाहरण, उदाहरणों के अनेकार्थ एवं ऋषिदयानन्द की  
निर्वचन प्रधान वृत्ति सहित प्रकाशित करने के साथ विमला नामक हिन्दी टीका भी  
प्रकाशित की है। जिससे कि उणादिकोष सम्बन्धी पूर्ण लाभ विद्यार्थियों को मिल  
सके। मूल सूत्र भी प्रारम्भ में प्रकाशित किये हैं एवं अन्त में अकारादि क्रम से शब्द  
सूची भी प्रकाशित की है। जो प्रकाशिका व स्वामि दयानन्द जी की वृत्ति की परिचायक  
है।

ऐसे महंगाई के समय में ऐसे स्वल्प विक्रय रूप आर्ष ग्रन्थ का प्रकाशन करना मेरे  
जैसे मनुष्य के लिये दुष्कर ही है। फिर भी ऋषियों में अतीव श्रद्धान्विति रखकर इस  
प्रकाशन यज्ञ को भगवान की कृपा से कर ही डाला है।

विद्वज्जनसेवक :

सत्यव्रत शास्त्री

## ओ३म् अथोणादिकोष भूमिका

ओं चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।  
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति॥

ऋ १०/७१/४

अर्थ:- अथि मनीषिविद्वानों। यह ऋग्वेद का मन्त्र है। इसमें कहा गया है कि (चत्वारि) चार= नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात रूप (वाक्) वाणी के (परिमिता) परिमाण युक्त नपे तुले (पदानि) जानने योग्य भाग हैं (तानि) उनको (ये मनीषिणः ब्राह्मणाः) जो मन के दमन शील व्याकरण व वेद ईश्वर को जानने वाले विद्वान लोग हैं वे जानते हैं। (त्रीणि गुहा निहिता) उनमें से तीन पद नाम आख्यात उपसर्ग तो बुद्धिरूपी गुहा में स्थित रहते हैं (न इंगयन्ति) वे कोई चेष्टा नहीं करते अर्थात् व्यवहार में नहीं आते प्रकाशित नहीं होते (मनुष्याः वाचः तुरीयं वदन्ति) सामान्य जन इस वाणी के चतुर्थ भाग निपात रूढ़ अर्थात् प्रकृति प्रत्यय अनुबन्ध आदेश लोप आगम आदि शून्य सिद्ध रूप शब्दों का उच्चारण करते हैं व्यवहार में लाते हैं। इस प्रकार प्रकृति प्रत्यय के विभाग से सिद्ध नामसुबादि विभक्ति युक्त, आख्यात = तिङादि विभक्ति सम्पन्न, उपसर्गधातु के साथ मिला हुआ भाग इन तीन में प्रकृति प्रत्यय कृत भिन्नता के कारण ये भेद बुद्धि में स्थित हैं अर्थात् बौद्धिक हैं इन्हें तो मनीषी ब्राह्मण वैयाकरण ही प्रकृति प्रत्यय से युक्त रूप को जानते हैं देखते हैं विचार करते हैं। जन सामान्य तो "रामः नगरं प्रयाति" आदि सिद्ध शब्द रूपों का ही प्रयोग करते हैं अर्थात् वे प्रकृति पुरस्सर रूप शब्दों को नहीं जानते उनका प्रयोग नहीं करते। निपात शब्द का अर्थ रूढ़ होता है और रूढ़ कहते हैं अर्थ विशिष्ट में प्रयुक्त वर्णानुपूर्वी विशेष शब्द को, अतः इस मन्त्र द्वारा वाणी के चार पद समझाते हुए विद्वान् और अविद्वान् के अन्तर को बताया गया है कि— जो विद्वान् हैं वे नाम आख्यात उपसर्ग और निपात रूप चारों को जानते हैं। उनमें से तीन ज्ञान में रहते हैं, और चतुर्थ निपात रूप शब्द समूह को व्यवहार में लाते हैं प्रयोग करते हैं उच्चारण करते हैं। तथा जो अविद्वान् = सामान्य

जन हैं वे नाम आख्यात उपसर्ग निपातों को नहीं जानते, किन्तु निपातरूप साधन ज्ञान रहित सिद्ध शब्द का प्रयोग करते हैं। सो यहाँ जो उणादिकोष विषय है वह विशिष्ट असामान्य वैयाकरण मनीषि ब्राह्मण विद्वज्जनों का है। क्योंकि जो कृदन्त शब्द हैं जिनकी यहाँ प्रकृति (धातु) प्रत्यय लोप आगम वर्ण विकार अनुबन्ध आदि के द्वारा रचना होती है वह मनीषि विद्वान् की बुद्धि में स्थित होती है पुनश्च व्यवहार में आती है। जैसे कि "प्रकाश" शब्द है यह नाम वाचक है और इसका अर्थ ज्योतिः है इसमें प्र उपसर्ग है काश् प्रकृति है और घञ् प्रत्यय है। ऐसे अनेक वायु जायु, गोधूम मसूर उच्चैः नीचैः आदि नाम वाचक शब्द हैं जो कि मन्त्रानुसार सब शब्द विद्वज्जन बुद्धि गम्य हैं उनकी उत्पत्ति की विधि भगवत्पाणिनि मुनि ने अपने अष्टाध्यायी के एक सूत्र "उणादयो बहुलम्" द्वारा दर्शाई है और उसी के व्याख्यान स्वरूप जो कृवापा-जिमिस्वदिसाध्यशुभ्यउण् आदि से लेकर पञ्चपाद में ७५२ सूत्रों की रचना की है उसका नाम ही उणादि कोष है। क्योंकि मुनि ने इन सूत्रों से कहीं एक प्रकृति (धातु) से अनेक प्रत्यय किये हैं और कहीं अनेक प्रकृतियों (धातुओं) से एक प्रत्यय विधान करके अनेक नाम वाचक शब्दों का निर्माण कर अपनी सूक्ष्म बुद्धि का परिचय कहीं प्रत्यय निर्धारण या उसके लघु से लघु रूप स्थिर करने में या उसमें अनुबन्ध विशिष्ट के ओत प्रोत करने में अपने इस उणादि कोष शास्त्र में पदे पदे दिया है। ऐसे ही शब्द के शब्दार्थ निर्धारण में धातु को स्थिर करते हुए धातु पाठ पठित धातुओं को गण विशिष्ट रीति से प्रयोग किया है। जिससे शब्दार्थ ज्ञान विस्तार में विशिष्ट गण विभाग की ऊहा पोह मुनि का अगाध विद्या ज्ञान पारावार परिलक्षित होता है। इस प्रसंग में यह बात विशेष ध्यान गम्य है कि जो शब्द इन प्रकृति प्रत्ययों के घेरे से अवशिष्ट हैं और जिन्हें अन्य वैयाकरणजनों ने अपनी सीमा में बाँधने में असमर्थ होकर छोड़ दिया है उसको भी महामहिम मुनि ने अपने "उणादयो बहुलम्" में बहुलं पद से समाविष्ट किया है। जैसा कि इन वार्त्तिक कारिकाओं में दर्शाया गया है—

बाहुलकं प्रकृतेस्तनुदृष्टेः प्रायसमुच्चयनादपितेषाम्।

कार्यसशेषविधेश्च तदुक्तं नैगमरूढि भवं हि सुसाधु।।१।

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् ।  
यन्न पदार्थ विशेषसमुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम् ।।२४  
संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे ।  
कार्याद्विद्यादनुबन्धमेतच्छास्त्रमुणादिषु ।।३।।

यहाँ सर्व प्रथम प्रश्न होता है कि बहुल शब्द का क्या अर्थ है? उत्तर—  
यो बहून् अर्थान् लाति आददाति गृह्णाति स बहुलशब्दार्थः अर्थात् जो बहुत  
से अर्थों को लाता है ग्रहण करता है वह बहुल है। क्योंकि कहा गया है कि—  
क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ।

विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ।।

अर्थ- बाहुलक उसे कहते हैं जिसकी (१) न प्रवृत्त होने वाले नियम  
का कहीं पर प्रवृत्त होना (२) कहीं संभव नियम का प्रवृत्त न होना (३) कहीं  
विकल्प से प्रवृत्त होना और (४) कहीं पर कुछ और ही होना इस प्रकार नाना  
प्रयोगों का विधान देखकर आचार्यों ने चार प्रकार का बाहुलक कहा है। सो  
यहाँ किसलिये उणादि प्रत्यय बाहुलक तौर से कहे गये हैं। उसका यह कारण  
है कि "बाहुलकं प्रकृतेस्तनुदृष्टेः" बहुल का जो भाव है या कर्म है वही बाहुलक  
कहा जाता है और प्रकृति वह है जो प्रत्यय से पूर्व कृति हो क्रिया रूप हो  
या की जाय रखी जाय वह प्रकृति है तथा च "प्रत्ययमनादिं कृत्वा यः पूर्व-  
मुपादीयते शब्दः सा प्रकृतिरुच्यते" तथा च जिससे अनादिभूत प्रत्यय करके  
जो पूर्व में ग्रहण की जाती है वह प्रकृति कही जाती है। अथवा जिससे नियम  
पूर्वक प्रत्यय का विधान किया जाता है वह प्रकृति कहाती है। वह (तनु दृष्टेः)  
प्रकृति रूप क्रियायें अल्प मात्रा में प्राप्त होती हैं। इस प्रकार उणादि सूत्रों  
में स्वल्प प्रकृतियाँ (मूल धातुएँ) देखी जाती हैं और इनसे अतिरिक्त भी  
धातुओं से प्रत्यय देखे जाते हैं। जैसे "हृषेरुलच्" इस उणादि सूत्र से हृष्  
धातु से उलच् प्रत्यय करके हर्षुल शब्द बनता है वैसे ही "शकि शंकायाम्"  
इससे भी उलच् प्रत्यय होकर शंकुला शब्द सिद्ध होता है सो उणादयो बहुलम्  
के बहुल से ही होता है। तथा आगे भी कारिका में कहा गया है कि "प्राय  
समुच्चयनादपि तेषाम्" अर्थात् केवल धातुएँ ही स्वल्प कहीं हों ऐसा ही केवल  
नहीं अपितु उनसे होने वाले औणादिक प्रत्यय भी स्वल्प ही कथन किये हैं  
उन अवशिष्ट प्रत्ययों का भी ग्रहण प्रायः करके बाहुलक पद से ही हो जाता



है। अतः अनुक्त प्रत्यय भी बहुलं इस पद से गृहीत होते हैं जैसे कि ऋधातु से फिड-फिड्ङ औणादिक ये अविहित प्रत्यय भी उणादयो बहुलं इस पद में बहुलं के होने से विहित करके ऋफिड ऋफिड्ङ शब्द सिद्ध कर लिये जाते हैं।

इसी प्रकार अन्य भी कहा है कि " कार्य सशेष विधेश्च तदुक्तम्" यहाँ प्रकृतियों और प्रत्ययों में कार्य भी सशेष अर्थात् अवशिष्ट रूप से कथित है पूर्ण रूप से नहीं। अर्थात् प्रकृति या प्रत्ययों में या दोनों में लोप आगम रूप विकार गुण वृद्धि आदि कार्य भी पूर्ण रूप से सूत्रों द्वारा अकथित हैं। सम्पूर्ण रूप से नहीं कहे गये हैं। जैसे कि ऋफिड ऋफिड्ङ शब्दों में जो ऋ प्रकृति से फिड फिड्ङ प्रत्यय किये गये हैं उनमें ऋ+फिड, ऋ+फिड्ङ जो प्रत्यय हैं उनकें होते हुए "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से जो गुण प्राप्त होता है उसका निषेध फिडक फिड्ङक ककारानुबन्ध लगाकर नहीं किया गया इसका भी निषेध बहुलं पद से हो जाता है। यहाँ गुण का अभाव कैसे हुआ इसका एक ही समाधान है कि बाहुलक पद के पठित होने से अर्थात् बहुल करके होता है सो नहीं भी होता अतः नहीं भी होता इसकी प्रविष्टि हो जाती है। ऐसे ही " षणु दाने" इस प्रकृति से ड प्रत्यय करने पर षण्+ड इस अवस्था में धात्वादेः षः सः इस सूत्र से षण् के षकार को दन्त्य सकारत्व की प्राप्ति है सो बहुलं पद के होने से नहीं होती। किन्तु जहाँ कहीं सकार के होने पर षकार की प्राप्ति आवश्यक होती है तो षत्व कार्य सम्पन्न भी हो जाता है। यह सब महिमा पाणिनि मुनि द्वारा "उणादयो बहुलम्" पद के कथन के कारण ही है और भी आगे कहा गया है कि " नैगम रूढि भवंहि सुसाधु" वेद में पठित शब्द और लोक में प्रसिद्ध नाम वाच्य शब्द भी अवश्य साधुहीरूप से सिद्ध करने चाहिये व्याकरण शास्त्र में उन शब्दों के साधुत्व की सिद्धि बहुलं पद से की जाती है। सो बहुलं पद से अपरिपूर्ण शब्दों की पूर्णता की जाती है। इस प्रकार वेद में होने वाले वैदिक रूढि शब्द इस व्याकरण शास्त्र में सिद्ध करने से निस्सन्देह रूपेण उनकी साधुत्व रूप से सिद्धि होती है। इसीलिये ही यहाँ बाहुलक पद का प्रयोग है।

यहाँ प्रश्न होता है क्या दूसरे आचार्यों ने भी वेद के शब्द और प्रसिद्ध लौकिक नाम वाच्य शब्द अपने२ व्याकरण शास्त्र में सिद्ध किये हैं ?

उत्तर है कि " नाम च धातुजम्— आह निरुक्ते"

अर्थात् समस्त नाम वाच्य शब्दों की सिद्धि धातुओं से होती है ऐसा दृढ़ मन्तव्य निरुक्तकारों का है और शाकटायन का है। जिसको कि यास्क ने अपने निरुक्त में इस प्रकार कहा है कि "नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्त समयश्चेति" पुनरपि इस सम्बन्ध में वैयाकरण शास्त्रज्ञों का क्या सिद्धान्त है? यह भी एक प्रश्न विचारणीय है जिसका उत्तर है कि —" व्याकरणे शकटस्य च तोकम्" अर्थात् व्याकरण शास्त्रज्ञों का मत तो यह है कि शब्द अव्युत्पन्न हैं किन्तु इन सब व्याकरण शास्त्र रचयिताओं में एक शकटपुत्र शाकटायन मुनि का मत है कि सब शब्द धातुज हैं अर्थात् धातुओं से उत्पन्न होते हैं जिन शब्दों में प्रकृति प्रत्यय का निर्धारण न हो पाता हो उन्हें हम कैसे धातुज कह सकते हैं या कैसे उनका निश्चय किया जा सकता है कि ये शब्द धातूत्पन्न हैं। उनके विषय में कारिका कार ने आगे इस प्रकार कथन किया है कि— "यन्न पदार्थ विशेष समुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम्" अर्थात् जहाँ विशिष्ट प्रकृति प्रत्यय के द्वारा अव्युत्पादित शब्द प्रतीत हो वहाँ प्रकृति (धातु) को देखकर प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये और प्रत्यय को देखकर पूर्व भाग में प्रकृति की कल्पना करनी चाहिये। जैसे ऋफिड ऋफिड्ड शब्दों में पूर्व भाग में ऋ धातु स्पष्ट रूप से देखी जाती है और उत्तर भाग में फिड फिड्ड प्रत्यय ऊहितव्य (तर्कणीय) होते हैं। ऐसे ही डित्थ डवित्थ यहाँ, पर भाग में थः प्रत्यय कल्पनीय है और पूर्व भाग में डीड् विहायसा गतौ इस धातु को डित् व डवित् आदेश होकर प्रकृति का निर्णय होता है। इस प्रकार तर्कना द्वारा और बहुल शब्द की सहायता से शब्द की सिद्धि तथा पदार्थ का ज्ञान सम्पन्न करना चाहिये। कहते हैं कि यह तर्कना क्या समस्त असिद्ध शब्दों में करनी चाहिये? उत्तर में नहीं। जहाँ आचार्यों को "संज्ञासु धातुरूपाणि" प्रसिद्धनामवाच्य शब्दों का सम्पादन अभिमत है वहाँ यह तर्कना करनी चाहिये सब जगह नहीं। उन शब्दों में पहले धातुत्व का निश्चय करना चाहिये "प्रत्ययाश्चततः परे" इस प्रकार धातु के निश्चय हो जाने पर उनसे परे प्रत्यय का निर्धारण करना चाहिये। "कार्याद्विद्यादनुबन्धमेतच्छास्त्र—मुणादिषु" इस प्रकार उन प्रत्ययों के निर्धारण करने के पश्चात् उन प्रत्ययों में कार्यानुकूल अनुबन्ध विशेष का अनुयोजन करना चाहिये। जैसे कि यदि प्रकृति में गुण

का अभाव हो तो प्रत्यय में ककार का अनुबन्ध कर लेना चाहिये और यदि धातु में वृद्धि प्रतीत होती हो तो प्रत्यय गित् कर लेना चाहिये। इसी प्रकार शब्द आद्युदात्त हो और वृद्धि भी उसमें प्रतीत हो तो प्रत्यय जित् करना चाहिये। इस प्रकार कुशल वैयाकरणों को उणादिशास्त्र में उल्लिखित अनुबन्धादि का व्यवहार करके शब्दों को सिद्ध कर लेना चाहिये। तथा च जो अन्य कार्य अभीष्ट हों और सूत्र द्वारा उसकी प्राप्ति या अप्राप्ति प्रतीत हो तो उसकी प्राप्ति या अप्राप्ति रूप कार्य की सिद्धि बाहुलक पद से सिद्ध करनी चाहिये।।

अतः यह ज्ञान सुलभ है कि उणादिसूत्रोपदेश उन्हीं वाणी के चारों पद ज्ञाताओं के लिये हैं जो मन के दमनशील व्याकरण व वेदेश्वर के विज्ञान में श्रद्धालु हैं तथा जिन्होंने पढ़ा तो है किन्तु जिन्हें ज्ञात नहीं है केवल उच्चारण से ही उच्चरित होता है जाना जाता है उन मन्द मति ऊहापोह शून्य जनों के लिये यह औणादिक उपदेश नहीं है किन्तु जो बुद्धिमान्, श्रद्धालु, लगनशील विद्याध्ययन रत दत्तचित्त विद्यार्थिवर्णिजन है उनके लिये इनका पठन पाठन चिन्तन मनन निदिध्यासन व वाग्व्यवहार में नैपुण्यार्थ है। इस लिये हम सब उणादि कोष का ज्ञान करें और विद्या व्यवहार व लोक व्यवहार में विदग्धता प्राप्त करें तथा यशस्वी होकर ज्ञानामृतत्व रूप चारो पदों को जानें।

**इति भूमिका- विद्वज्जनानुरागी सत्यव्रत शास्त्री**

**आचार्य आर्ष गुरुकुल एटा (यू०पी०)**

**ता० २०/४/१९६७ ईस्वीय सन्**

# उणादि-सूत्रपाठः

## प्रथमः पादः

- |                                    |                                   |
|------------------------------------|-----------------------------------|
| १ कृवापाजिभिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् ।  | २४ कृगोरुच्च ।                    |
| २ छन्दसीणः ।                       | २५ अपदुःसुषु स्थः ।               |
| ३ दृसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो जुण्       | २६ रपेरिच्चोपधायाः ।              |
| ४ किञ्जरयोः श्रिणः ।               | २७ अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजि-   |
| ५ त्रो रश्च लः ।                   | पशितुक्धुक्दीर्घहकाराश्च ।        |
| ६ कृके वचः कश्च ।                  | २८ प्रथिप्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं |
| ७ भृमृशीङ्तृचरित्सरितनिघनिमि-      | सलोपश्च ।                         |
| मस्जिभ्य उः ।                      | २९ लङ्घिबंहोर्नलोपश्च ।           |
| ८ अणश्च ।                          | ३० ऊर्णोतेर्णुलोपश्च ।            |
| ९ धान्ये नित् ।                    | ३१ महति ह्रस्वश्च ।               |
| १० शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लि- | ३२ शिल्षेः कश्च ।                 |
| दिबन्धिमनिभ्यश्च ।                 | ३३ आङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च ।    |
| ११ स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च ।     | ३४ हरिमितयोर्दुवः ।               |
| १२ उन्देरिच्चादेः ।                | ३५ शते च ।                        |
| १३ ईषेः किच्च ।                    | ३६ खरुशंकुपीयुनीलंगुलिगु ।        |
| १४ स्कन्देः सलोपश्च ।              | ३७ मृगख्यादयश्च ।                 |
| १५ सृजेरसुम् च ।                   | ३८ मन्दिवाशिमथिचतिचङ्क्य-         |
| १६ कृतेराद्यन्तविपर्ययश्च ।        | ङ्किभ्य उरच् ।                    |
| १७ नावञ्चेः ।                      | ३९ व्यथेः सम्प्रसारणं धः किच्च ।  |
| १८ फलिपाटिनमिमनिजनां गुँकपटि-      | ४० मकुरददुँरौ ।                   |
| नाकिधतश्च ।                        | ४१ मदगुरादयश्च ।                  |
| १९ वलेर्गुँक्च ।                   | ४२ असेरुरन् ।                     |
| २० शः कित्सन्वच्च ।                | ४३ मसेश्च ।                       |
| २१ यो द्वे च ।                     | ४४ शावशेराप्तौ ।                  |
| २२ कुर्भ्रश्च ।                    | ४५ अविमह्योष्टिषच् ।              |
| २३ पृभिदिव्यधिगृधिघृषिहृषिभ्यः ।   | ४६ अमेर्दीर्घश्च ।                |
|                                    | ४७ रुहेर्वृद्धिश्च ।              |

( ख )

४८ तवेर्णिद्वा ।	७१ पः किच्च ।
४९ नञि व्यथेः ।	७२ अर्तेश्च तुः ।
५० किलेर्बुक्च ।	७३ कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च
५१ इषिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिम- न्दिचन्दिमिमिहिमुहिमुचिरुचि- रुधिबन्धिषुषिभ्यः किरच् ।	७४ चायः की ।
५२ अशेर्नित् ।	७५ आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ।
५३ अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फि- रस्थविरखदिराः ।	७६ कृजः कतुः ।
५४ सलिकल्यनिमहिभडिभण्डिश- ण्डिपिण्डितुण्डिकुकिभूम्य इलच्	७७ एधिवह्योश्चतुः ।
५५ कमेः पश्च ।	७८ जीवेरातुः ।
५६ गुपादिभ्यः कित् ।	७९ आतृकन् वृद्धिश्च ।
५७ मिथिलादयश्च ।	८० कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्य- ऊः स्त्रियाम् ।
५८ पतिकठिकुटिगडिगुडिदंशिभ्य- एरक् ।	८१ मृजेर्गुणश्च ।
५९ कुम्बेर्नलोपश्च ।	८२ खडेर्दुँड् वा ।
६० शदेस्तश्च ।	८३ वहेर्धश्च ।
६१ मूलेरादयः ।	८४ कषेश्छश्च ।
६२ कबेरोतच् पश्च ।	८५ णित्कशिपद्यर्तेः ।
६३ भातेर्डवतुँप् ।	८६ अणोडश्च ।
६४ कठिचकिभ्यामोरन् ।	८७ नञि लम्बेर्नलोपश्च ।
६५ किशोरादयश्च ।	८८ के श्र एरँड् चास्य ।
६६ कपिगडिगण्डिकटिपटिभ्य- ओलच् ।	८९ त्रो दुँट् च ।
६७ मीनातेरूरन् ।	९० दरिद्रातेर्यालोपश्च ।
६८ स्यन्देः सम्प्रसारणञ्च ।	९१ नृतिशृध्योः कूः ।
६९ सितनिगमिमसिसच्यविधा- ञ्क्रुशिभ्यस्तुन् ।	९२ ऋतेरम् च ।
७० वसेरगारे णिच्च ।	९३ अन्दूदृम्फूजम्बूकम्बूकफेलूकर्क- न्धूदिधिषूः ।
	९४ मृग्रोरुतिँः ।
	९५ ग्रो मुँट् च ।
	९६ ह्रषेरुलच् ।
	९७ ह्रसूरुहियुषिभ्य इतिँः ।
	९८ ताडेर्णिलुक् च ।

- ६६ शमेर्ढः ।  
 १०० कमेरठः ।  
 १०१ रमेर्वृद्धिश्च ।  
 १०२ शमेः खः ।  
 १०३ कणेष्ठः ।  
 १०४ कलस्तृपश्च ।  
 १०५ शपेर्बश्च ।  
 १०६ वृषादिभ्यश्चित् ।  
 १०७ कमेर्बुक् ।  
 १०८ लङ्गेर्वृद्धिश्च ।  
 १०९ कुटिकशिकौतिभ्यो मुट् च ।  
 ११० मृजेष्टिलोपश्च ।  
 १११ चुपेरच्चोपधायाः ।  
 ११२ शकिशम्योर्नित् ।  
 ११३ छो गुँघ्रस्वश्च ।  
 ११४ जमन्ताड् डः ।  
 ११५ क्वादिभ्यः कित् ।  
 ११६ स्थाचतिमृजेरालज्वालजालीयचः ।  
 ११७ पतिचण्डिम्यामालञ् ।  
 ११८ तमिविशिविडिमृणिकुलिकपिप-  
 लिपञ्चिभ्यः कालन् ।  
 ११९ पतेरंगच्यक्षिणि ।  
 १२० तरत्यादिभ्यश्च ।  
 १२१ विडादिभ्यः कित् ।  
 १२२ सृवृजोर्वृद्धिश्च ।  
 १२३ गन् गम्यद्योः ।  
 १२४ छापूखडिभ्यः कित् ।  
 १२५ भृजः किर्नुट् च ।  
 १२६ शृणातेर्ह्रस्वश्च ।  
 १२७ गण् शकुनौ ।  
 १२८ मुदिग्रोर्गगौ ।  
 १२९ अण्डन् कृसृभृवृजः ।  
 १३० शृदृभसोऽदिः ।  
 १३१ दृणातेः षुग्घ्रस्वश्च ।  
 १३२ त्यजितनियजिभ्यो डित् ।  
 १३३ एतेस्तुट् च ।  
 १३४ सर्तेरदिः ।  
 १३५ लङ्घेर्नलोपश्च ।  
 १३६ पारयतेरजिः ।  
 १३७ प्रथेः कित्सम्प्रसारणञ्च ।  
 १३८ भियः षुँघ्रस्वश्च ।  
 १३९ युष्यसिभ्यां मदिक् ।  
 १४० अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदि-  
 यक्षिनीभ्यो मन् ।  
 १४१ जहातेः सन्वदाकारलोपश्च ।  
 १४२ अवतेष्टिलोपश्च ।  
 १४३ ग्रसेरा च ।  
 १४४ अविसिविसिशुषिभ्यः कित् ।  
 १४५ इषियुधीन्धिदसिशयाधूसूभ्यो मक् ।  
 १४६ युजिरुचितिजां कुश्च ।  
 १४७ हन्तेर्हि च ।  
 १४८ भियः षुँगवा ।  
 १४९ घर्मग्रीष्मौ ।  
 १५० प्रथेः षिवन्षवन्ध्वनः सम्प्रसारण-  
 ञ्च ।  
 १५१ अशूप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः-  
 क्वन् ।  
 १५२ इण्शीभ्यां वन् ।  
 १५३ सर्वनिघृष्परिष्वलष्वशिवपट्व-  
 प्रहेष्वा अतन्त्रे ।



- १५४ शेवायहवजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवाः । १४ चकिरम्योरुच्चोपधायाः ।  
 १५५ कृगृशृदृभ्यो वः । १५ वौ कसेः ।  
 १५६ कनिँन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्यु- १६ अमितम्योर्दीर्घश्च ।  
 प्रतिदिवः । १७ निन्देर्नलोपश्च ।  
 १५७ सप्यशूभ्यां तुँट् च । १८ अर्देर्दीर्घश्च ।  
 १५८ नञि जहातेः । १९ शुचेर्दश्च ।  
 १५९ श्वनुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेह- २० दुरीणो लोपश्च ।  
 न्मूर्धन्मज्जन्नर्यमन्विश्वप्सन्प- २१ कृतेश्छः क्रू च ।  
 रिज्वन्मातरिश्वन्मघवन्निति । २२ रोदेर्णिलुक् च ।  
 इति प्रथमः पादः । २३ बहुलमन्यत्रापि सञ्ज्ञाछन्दसोः ।  
 द्वितीयः पादः । २४ जोरी च ।  
 १ कृह्भ्यामेणुः । २५ सुसूधाञ्जृधिम्यः क्रन् ।  
 २ हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यःक्थन् २६ शुसिचिमीनां दीर्घश्च ।  
 ३ अवे भृजः । २७ वाविन्धेः ।  
 ४ उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन् । २८ वृधिवपिभ्यां रन् ।  
 ५ सर्तेर्णित् । २९ ऋजेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्रक्षुरखु-  
 ६ ज्वृड्भ्यामूथन् । रभद्रोग्रभेरभेलशुकुशुक्ल  
 ७ पातृतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक् । गौरवत्रेरामालाः ।  
 ८ अर्तेर्निरि । ३० समि कस उकन् ।  
 ९ निशीथगोपीथावगथाः । ३१ पचिनशोर्णुकन्कुँमौ च ।  
 १० गश्चोदि । ३२ भियः क्रुकन् ।  
 ११ समीणः । ३३ क्वुन् शिल्पिसञ्ज्ञयोरपूर्व-  
 १२ तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः । स्यापि ।  
 १३ स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपिक्षु- ३४ रमेरश्च लो वा ।  
 दिसृपितृपिदृपिवन्द्युन्दिश्विति- ३५ जहातेर्दे च ।  
 वृत्यजिनीपदिमदिमुदिखिदि- ३६ ध्मो धम च ।  
 छिदिभिदिमन्दिचन्दिदहिद- ३७ हनो वध च ।  
 सिदम्भिवसिवाशिशीङ्हसि- ३८ बहुलमन्यत्रापि ।  
 सिधिशुभिभ्यो रक् । ३९ कृषेर्वृद्धिश्चोदीचाम् ।  
 ४० उदकञ्च ।

४१ वृश्चिकृषोः किकन् ।	७० दमेर्दोसि ः ।
४२ प्राडि पणिकषः ।	७१ पणेरिज्यादेश्च वः ।
४३ मुषेर्दीर्घश्च ।	७२ वशः कित्
४४ स्यमेः सम्प्रसारणञ्च ।	७३ भृज उच्च ।
४५ क्रिय इकन् ।	७४ जसिसहोरुरिन् ।
४६ आडिः पणिपनिपतिखनिभ्यः ।	७५ सुयुरुवृजो युच् ।
४७ श्यास्त्याह्वजविभ्य इनच् ।	७६ अशे रश च ।
४८ वृजेः किच्च ।	७७ उन्देर्नलोपश्च ।
४९ अजेरज च ।	७८ गमेर्गश्च ।
५० बहुलमन्यत्रापि ।	७९ बहुलमन्यत्रापि ।
५१ द्रुदक्षिभ्यामिनन् ।	८० रञ्जेः क्युन् ।
५२ अर्तेः किदिच्च ।	८१ भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि ।
५३ वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च ।	८२ कृपृवृजिमन्दिनिधाजः क्युः ।
५४ तलिपुलिभ्यां चं ।	८३ धृषेर्धिष च सञ्ज्ञायाम् ।
५५ गर्वेरत उच्च ।	८४ हन्तेर्धुर च ।
५६ रुहेश्च ।	८५ वर्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च ।
५७ महेरिनण्च ।	८६ संश्चत्पद्वेहत् ।
५८ किँब्वचिप्रच्छिभ्रिभ्रुद्रुप्रुज्वां- दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च ।	८७ छन्दस्यसानच् शुजूभ्याम् ।
५९ आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ।	८८ ऋञ्जिवृधिमन्दिंसहिभ्यः कित्
६० परौ ब्रजेः षश्च पदान्ते ।	८९ अर्तेर्गुणः शुँट् च ।
६१ हुवः श्लुवच्च ।	९० सम्यानच् स्तुवः ।
६२ सुवः कः ।	९१ युधिबुधिदृशः किच्च ।
६३ चिँक् च ।	९२ हुर्छेः सनो लुक्छलोपश्च ।
६४ तनोतेरनश्च वः ।	९३ शिवतेर्दश्च ।
६५ ग्लानुदिभ्यां डौ ।	९४ मुचियुधिभ्यां सन्वच्च ।
६६ च्विरव्ययम् ।	९५ तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः सञ्ज्ञायां चानिटौ ।
६७ रातेर्डेः ।	९६ बहुलमन्यत्रापि ।
६८ गमेर्दोः ।	९७ नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजा- मातृमातृपितृदुहितृ ।
६९ भ्रमेश्च डूः ।	

## तृतीयः पादः

- ६८ सावसेर्ऋन् ।  
 ६९ यतेर्वृद्धिश्च ।  
 १०० नञि च नन्देः ।  
 १०१ दिवेर्ऋत् ।  
 १०२ नयतेर्ङिच्च ।  
 १०३ सव्ये स्थश्छन्दसि ।  
 १०४ अतिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः ।  
 १०५ आङि शुषेः सनश्छन्दसि ।  
 १०६ कृषेरादेश्च धः ।  
 १०७ अदेर्मुँट् च ।  
 १०८ वृत्तेश्च ।  
 १०९ क्षिपेः किच्च ।  
 ११० अर्विशुचिहुसृपिष्ठादिछर्दिभ्य  
 इसिँः ।  
 १११ बृहेर्नलोपश्च ।  
 ११२ द्युतेरिसिँत्रादेश्च जः ।  
 ११३ वसौ रुचेः सञ्ज्ञायाम् ।  
 ११४ भुवः कित् ।  
 ११५ सहो धश्च ।  
 ११६ पिबतेस्थुँक् ।  
 ११७ जनेरुसिँः ।  
 ११८ मनेर्धश्छन्दसि ।  
 ११९ अतिपृवपियजितनिधनितपिभ्यो  
 नित् ।  
 १२० एतेर्णिच्च ।  
 १२१ चक्षेः शिच्च ।  
 १२२ मुहेः किच्च ।  
 १२३ कृगृशृवृञ्चतिभ्यः ष्वरच् ।  
 १२४ नौ षदेः ।
- १ छित्त्वरछत्त्वरधीवरपीवरमीवरची-  
 वरतीवरनीवरगहरकट्त्वरसंय-  
 द्वाराः ।  
 २ इणिसञ्जिदीडुष्यविभ्योनक् ।  
 ३ फेनमीनौ ।  
 ४ कृषेर्वर्णे ।  
 ५ बन्धेर्ब्रधिवुधी च ।  
 ६ धापृबस्यज्यतिभ्यो नः ।  
 ७ लक्षेरट् मुँट् च ।  
 ८ वनेरिच्चोपधायाः ।  
 ९ सिवेष्ठेर्युँ च ।  
 १० कृवृजृसिद्रूपन्यनिस्वपिभ्यो नित्  
 ११ घेट् इच्च ।  
 १२ तृषिशुषिरसिभ्यः कित् ।  
 १३ सुजो दीर्घश्च ।  
 १४ रमेस्त च ।  
 १५ रास्नासास्नास्थूणावीणाः ।  
 १६ गादाभ्यामिष्णुच् ।  
 १७ कृत्यशूभ्यां क्स्नः ।  
 १८ तिजेर्दीर्घश्च ।  
 १९ शिलषेरच्चोपधायाः ।  
 २० यजिमनिशुश्चिदसिजनिभ्योयुच् ।  
 २१ भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युक्तौ ।  
 २२ सरतेरयुः ।  
 २३ पानीविषिभ्यः पः ।  
 २४ च्युवः किच्च ।  
 २५ स्तुवो दीर्घश्च ।  
 २६ सुशूभ्यां निच्च ।

इति द्वितीयः पादः ।

## ( छ )

२७	क्युभ्यां च ।	५६	फलेगुँक् च ।
२८	खष्पशिल्पशष्पवाष्परूपपर्यतल्याः ।	५७	अशर्लशश्च ।
२९	स्तनिहृषिपुषिगदिमदिभ्यो णेरित्नुच् ।	५८	अर्जेर्णिलुक्च ।
३०	कृहनिभ्यां क्तुः ।	५९	तृणाख्यायां चित् ।
३१	गमेः सन्वच्च ।	६०	अर्तेश्च ।
३२	दाभाभ्यां नुः ।	६१	अजियमिशीङ्भ्यश्च ।
३३	वचेर्गश्च ।	६२	वृत्वदिवचिवसिहनिकमि कषिभ्यः सः ।
३४	घेट इच्च ।	६३	प्लुषेरच्चोपधायाः ।
३४	सुवः कित् ।	६४	मनेर्दीर्घश्च ।
३६	जहातेर्द्वेऽन्त्यलोपश्च ।	६५	अशेर्द्वने ।
३७	स्थो णुः	६६	स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः कित् ।
३८	अजिवृरीभ्यो निच्च ।	६७	ऋषेर्जातौ ।
३९	विषेः किच्च ।	६८	उन्दिगुधिकृषिभ्यश्च ।
४०	कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः ।	६९	गृधिपण्योर्दकौ च ।
४१	सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक् ।	६०	अशेः सरन् ।
४२	शुकवल्कोल्काः ।	७१	वसेश्च ।
४३	इष्मीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन्	७२	सम्पूर्वाच्चित् ।
४४	नौ हः ।	७३	कृधूमदिभ्यः कित् ।
४५	नौ सदेर्दिच्च ।	७४	पतेरश्च लः ।
४६	स्यमेरीट् च ।	७५	तन्यृषिभ्यां कसरन् ।
४७	अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च ।	७६	पीयुक्वणिभ्यां कालन् हस्वं सम्प्रसारणञ्च ।
४८	ह्रियो रश्च लो वा ।	७७	कठिकृषिभ्यां काकुः ।
४९	शकेरुनोन्तोन्त्युनयः ।	७८	सर्तेर्दुक्च ।
५०	भुवो झिच् ।	७९	वृतेर्वृद्धिश्च ।
५१	कन्युच् क्षिपेश्च ।	८०	पदेर्नित् सम्प्रसारणमलोपश्च ।
५२	अनुङ् नदेश्च ।	८१	सृयुवचिभ्योऽन्युजागूजक्नुचः ।
५३	कृवृदारिभ्य उनन् ।	८२	आनकः शीङ्भिः ।
५४	त्रो रश्च लो वा ।	८३	आणको लूधूशिङ्घिभ्यः ।
५५	क्षुधिपिषिमिथिभ्यः कित् ।		

( ज )

- ८४ उल्मुकदर्विहोमिनः । ११२ खलतिः ।  
८५ द्वियः कुक् रश्च लो वा । ११३ शीङ्शपिरुगमिवञ्चिजीवि-  
८६ हसिमृग्निष्वामिदमिलूपू- ११४ प्राणिभ्योऽथः ।  
धूर्विभ्यस्तन् ।  
८७ नञ्याप इट् च । ११५ रुविदिभ्यां ङित् ।  
८८ तनिमृङ्भ्यां किच्च । ११६ उपसर्गे वसेः ।  
८९ अञ्जिघृसिभ्यः क्तः । ११७ अत्यविचमितमिनमिरभिलभिन-  
९० दुतनिभ्यां दीर्घश्च । ११८ भितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसच् ।  
९१ जेर्मूट् चोदात्तः । ११९ वेजस्तुट् च ।  
९२ लोष्टपलितौ । ११६ बहियुभ्यां णित् ।  
९३ ह्रश्याभ्यामितन् । १२० वयश्च ।  
९४ रुहेरश्च लो वा । १२१ दिवः कित् ।  
९५ पिशेः किच्च । १२२ कृशृशालिकलिगर्दिभ्योऽभच् ।  
९६ श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः । १२३ ऋषिवृषिभ्यां कित् ।  
९७ दधातेर्द्वित्वमित्वं षुक् च । १२४ रुषेर्निल्लुष् च ।  
९८ वृज एण्यः । १२५ रासिवल्लिभ्यां च ।  
९९ स्तुवः केय्यश्छन्दसि । १२६ जृविशिभ्यां झच् ।  
१०० राजेरन्यः । १२७ रुहिनन्दिजीविप्राणिभ्यः  
१०१ शूरम्योश्च । षिदाशिषि ।  
१०२ अर्तेर्निच्च । १२८ तृभूवहिवसिभासिसाधिग-  
१०३ पर्जन्यः । डिमण्डिजिनन्दिभ्यश्च ।  
१०४ वदेरान्यः । १२९ हन्तेर्मुट् हि च ।  
१०५ अमिनक्षयजिवधिपतिभ्योऽत्रन् । १३० भन्देर्नलोपश्च ।  
१०६ गडेरादेश्च कः । १३१ ऋच्छेररः ।  
१०७ वृजश्चित् । १३२ अर्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्य-  
१०८ सुविदेः कत्रन् । शिच्त् ।  
१०९ कृतेर्नुमच् । १३३ कुवः क्ररन् ।  
११० भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिन- १३४ अङ्गिमदिमन्दिभ्य आरन् ।  
मिहर्यिभ्योऽतच् । १३५ गडेः कड च ।  
१११ पृषिरञ्जिभ्यां कित् । १३६ शृङ्गारभृङ्गारौ ।

१३७ कञ्जिमृजिभ्यां चित् ।	जिष्णुजिष्ठजिसन्स्यनिथिन्नुल्य-
१३८ कमेः किदुच्चोपधायाः ।	सासानुकः ।
१३९ तुषारादयश्च ।	३ श्रः करन् ।
१४० दीडो नुँट् च ।	४ पुषः कित् ।
१४१ सर्तेरपः पुँक् च ।	५ कलश्च ।
१४२ उषिकुट्टिदलिकचिखजिभ्यः कपन् ।	६ गमेरिनिः ।
१४३ क्लणेः सम्प्रसारणञ्च ।	७ आडि. णित् ।
१४४ कपश्चाक्रवर्मणस्य ।	८ भुवश्च ।
१४५ विटपविष्टपविशिपोलपाः ।	९ प्रे स्थः ।
१४६ वृतेस्तिकन् ।	१० परमे कित् ।
१४७ कृतिभिदिलतिभ्यः कित् ।	११ मन्थः ।
१४८ इष्यशिभ्यां तकन् ।	१२ पतस्थ च ।
१४९ इणस्तशन्तशसुनौ ।	१३ खजेराकः ।
१५० वीपतिभ्यां तनन् ।	१४ वलाकादयश्च ।
१५१ दृदलिभ्यां भः ।	१५ पिनाकादयश्च ।
१५२ अर्तिगृभ्यां भन् ।	१६ कषिदूषीभ्यामीकन् ।
१५३ इणः कित् ।	१७ अनिहृषिभ्यां किच्च ।
१५४ असिसञ्जिभ्यां विथन् ।	१८ चङ्कणः कङ्कण च ।
१५५ प्लुषिकुषिशुषिभ्यः किसः ।	१९ शृपृवृजां द्वे रुँक् चाभ्यासस्य ।
१५६ अशेर्नित् ।	२० फर्फरीकादयश्च ।
१५७ इषेः क्सुः ।	२१ ईषेः किदध्रस्वश्च ।
१५८ अवितृस्तृत्तन्त्रिभ्य ईः ।	२२ ऋजेश्च ।
१५९ यापोः किद् द्वे च ।	२३ सर्तेर्नुँक् च ।
१६० लक्षेर्मुँट् च ॥	२४ मृडः कीकच्चङ्कणौ ।

इति तृतीयः पादः

चतुर्थः पादः

१ वातप्रमीः ।	२५ अलीकादयश्च ।
२ ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्यत्य- ङ्गिकुयुकृशिभ्यःकल्चिच्यतुजलि-	२६ कृतृभ्यामीषन् ।
	२७ शृपृभ्यां किच्च ।
	२८ अर्जेर्ऋज च ।
	२९ अम्बरीषः ।



३० कृशृपृकटिपटि- शौटिभ्य ईरन् ।	५८ शकेर्ऋतिन् ।
३१ वशः किच्च ।	५९ अमेरतिः ।
३२ कशेर्मुँट् च ।	६० वहिवस्यर्तिभ्यश्चित् ।
३३ कृञ उच्च ।	६१ अञ्चेः को वा ।
३४ घसेः किच्च ।	६२ हन्तेरंह च ।
३५ गभीरगम्भीरौ ।	६३ रमेर्नित् ।
३६ विषाविहा ।	६४ सूडः क्रिः ।
३७ पच एलिमच् ।	६५ अदिशदिभूशुभिभ्यः किन् ।
३८ शीङो धुकलक्वलञ्ज्वालनः ।	६६ वङ्क्रयादयश्च ।
३९ मृकणिभ्यामूकोकणौ ।	६७ राशदिभ्यां त्रिप् ।
४० वलेरुकः ।	६८ अदेस्त्रिनिश्च ।
४१ उलूकादयश्च ।	६९ पतेरत्रिन् ।
४२ शलिमण्डिभ्यामूकण् ।	७० मृकणिभ्यामीचिः ।
४३ नियो मिः ।	७१ श्वयतेश्चित् ।
४४ अर्तेरुच्च ।	७२ वेजोडिच्च ।
४५ भुवः कित् ।	७३ ऋहनिभ्यामूषन् ।
४६ अश्नोते रश च ।	७४ पुरः कुषन् ।
४७ दल्मिः ।	७५ पूनहिकलिभ्य उषच् ।
४८ वीज्याज्वरिभ्यो निः ।	७६ पीयेरूषन् ।
४९ सुवृषिभ्यां कित् ।	७७ मस्जेर्नुँम् च ।
५० अङ्गेर्नलोपश्च ।	७८ गण्डेश्च ।
५१ वहिश्रिश्रुयुद्गलाहात्वरिभ्योनित् ।	७९ अर्तेररुः ।
५२ घृणिपृशिनपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः ।	८० कुटः किच्च ।
५३ वृद्ध्यां विन् ।	८१ शकादिभ्योऽटन् ।
५४ जृशृस्तृजागृभ्यः- क्विन् ।	८२ कृकदिकडिकटिभ्योऽम्बच् ।
५५ दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य ।	८३ कदेर्णित्पक्षिणि ।
५६ कृविघृष्विछविस्थविकिकीदिवि ।	८४ कलिकर्धोरमः ।
५७ पातेर्डतिः ।	८५ कुणिपुल्योः किन्दच् ।
	८६ कुपेर्वा वश्च ।
	८७ नौ षञ्जेर्घथिन् ।

८८ उद्यर्तेश्चित् ।	क्वनिपं
८९ सर्तेर्णिच्च ।	११५ ध्याप्योः सम्प्रसारणञ्च ।
९० खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ ।	११६ अदेर्ध च ।
९१ कुवश्चट् दीर्घश्च ।	११७ प्र ईरशदोस्तुट् च ।
९२ समीणः ।	११८ सर्वधातुभ्य इन् ।
९३ सिवेष्ठेरु च ।	११९ ह्रपिषिरुहिवृतिविदिछिदिकीर्ति-
९४ शमेर्बन् ।	भ्यश्च ।
९५ उल्बादयश्च ।	१२० इगुपधात् कित् ।
९६ स्थः स्तोऽम्बजवकौ ।	१२१ भ्रमेः सम्प्रसारणञ्च ।
९७ शाशपिभ्यां ददनौ ।	१२२ क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च ।
९८ अब्दादयश्च ।	१२३ मनेरुच्च ।
९९ वलिमलितनिभ्यः कयन् ।	१२४ वर्णेर्बलिश्चाहिरण्ये ।
१०० वृहोः षुँग्दुँकौ च ।	१२५ वसिवपियजिराजिप्रजिसदिह-
१०१ मीपीभ्यां रुः ।	निवाशिवादिवारिभ्य इज् ।
१०२ जत्र्वादयश्च ।	१२६ नहो भश्च ।
१०३ रुशातिभ्यां क्रुन् ।	१२७ कृषेर्वृद्धिश्छन्दसि ।
१०४ जनिदाच्युसृवृमदिषमिनमिभृञ्भ्य-	१२८ श्रः शकुनौ ।
इत्वन्त्वन्तणक्विन्शकस्यढडटोटयः ।	१२९ कृञ उदीचां कारुषु ।
१०५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ।	१३० जनिघसिभ्यामिण् ।
१०६ कुसेरुम्भोमेदेताः ।	१३१ अज्यतिभ्याञ्च ।
१०७ सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलाङ्कु	१३२ पादे च ।
शचषालेत्वलपत्वलधिष्ण्यशल्याः ।	१३३ अशिपणाय्योरुँडायलुकौ च ।
१०८ मूशक्यबिभ्यः क्लः ।	१३४ वातेर्डिच्च ।
१०९ माछाशसिभ्यो यः ।	१३५ प्रे हरतेः कूपे ।
११० सुनोतेश्च ।	१३६ नौ व्यो यलोपः पूर्वस्य च दीर्घः ।
१११ जनेर्यक् ।	१३७ समाने ख्यः स चोदात्तः ।
११२ अध्न्यादयश्च ।	१३८ आडि. श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्चौ
११३ स्नामदिपद्यर्तिपृशकिभ्यो	१३९ अच इः ।
वर्निपं ।	१४० खनिकष्यञ्ज्यसिवसिवनिसनि-
११४ शीङ् कुशिरुहिजिक्षिसृधृभ्यः	ध्वनिग्रन्थिचरिभ्यश्च ।

- १४१ वृतेश्छन्दसि ।  
 १४२ भुजेः किच्च ।  
 १४३ कृगृशृपृकुटिभिदिछिदिभ्यश्च ।  
 १४४ कुण्ठिकम्प्योर्नलोपश्च ।  
 १४५ सर्वधातुभ्यो मनिँन् ।  
 १४६ बृहेर्नोऽच्च ।  
 १४७ अशिशकिभ्यां छन्दसि ।  
 १४८ ह्रमृधृसृस्तृशृभ्य इमनिँच् ।  
 १४९ जनिमृङ्भ्यामिमनिँन् ।  
 १५० वेजः सर्वत्र ।  
 १५१ नामन्सीमन्व्योमन्त्रोमन्लोमन्-  
 पाप्मन्ध्यामन् ।  
 १५२ मिथुने मनिँः ।  
 १५३ सातिभ्यां मनिँन्मनिँणौ ।  
 १५४ हनिमशिभ्यां सिकन् ।  
 १५५ कोररन् ।  
 १५६ गिर उडच् ।  
 १५७ इन्देः कमिँर्नलोपश्च ।  
 १५८ कायतेर्डिमिँः ।  
 १५९ सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन् ।  
 १६० अस्जिगमिनमिहनिविश्यशां-  
 वृद्धिश्च ।  
 १६१ दिवेर्दुच्च ।  
 १६२ उषिखनिभ्यां कित् ।  
 १६३ सिविमुच्योष्टेरु च ।  
 १६४ अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः  
 १६५ पुवो ह्रस्वश्च ।  
 १६६ स्त्यायतेर्द्रट् ।  
 १६७ गुधृवीपचिवचियमिसदिक्ष-  
 दिभ्यस्त्रः ।  
 १६८ हुयामाश्रुमसिभ्यस्त्रन् ।  
 १६९ गमेरा च ।  
 १७० दादिभ्यश्छन्दसि ।  
 १७१ भूवादिगृभ्यो णित्रन् ।  
 १७२ चरेर्वृते ।  
 १७३ अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ ।  
 १७४ अमेर्द्विषति चित् ।  
 १७५ आः समिणिकषिभ्याम् ।  
 १७६ चितेः कणः कश्च ।  
 १७७ सूचेः स्मन् ।  
 १७८ पातेर्दुम्सुँन् ।  
 १७९ रुचिभुजिभ्यां किष्णन् ।  
 १८० वसेस्तिः ।  
 १८१ सावसेः ।  
 १८२ वौ तसेः ।  
 १८३ पदिप्रथिभ्यां नित् ।  
 १८४ दृणातेर्ह्रस्वश्च ।  
 १८५ कृतृकृपिभ्यः कीटन् ।  
 १८६ रुचिवचिकृचिकृटिभ्यः कितच् ।  
 १८७ कुटिकृषिभ्यां क्मलन् ।  
 १८८ कुषेर्लश्च ।  
 १८९ सर्वधातुभ्योऽसुँन् ।  
 १९० रपेरत एच्च ।  
 १९१ अशेर्देवने युँट् च ।  
 १९२ उब्जेर्बले बलोपश्च ।  
 १९३ श्वेः सम्प्रसारणञ्च ।  
 १९४ श्रयतेः स्वांगे शिरः किच्च ।  
 १९५ अर्तेरुच्च ।  
 १९६ व्याधौ श्रुँट् च ।  
 १९७ उदके नुँट् च ।

- १६८ इण आगसि ।  
 १६९ रिचेर्धने धिच्च ।  
 २०० चायतेरत्रे ह्रस्वश्च ।  
 २०१ वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वांगयोः  
 पुँट् च ।  
 २०२ सुरीम्यां तुँट् च ।  
 २०३ पातेर्बले जुँट् च ।  
 २०४ उदके थुँट् च ।  
 २०५ अत्रे च ।  
 २०६ अदेर्नुँ म्धौ च ।  
 २०७ स्कन्देश्च स्वांगे ।  
 २०८ आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुँट्  
 च वा ।  
 २०९ रूपे जुँट् च ।  
 २१० उदके नुँम्भौ च ।  
 २११ नहेर्दिवि भश्च ।  
 २१२ इण आगोऽपराधे च ।  
 २१३ अमेर्हुँ क्व ।  
 २१४ रमेश्च ।  
 २१५ देशे ह च ।  
 २१६ अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुँश्च ।  
 २१७ भूरञ्जिभ्यां कित् ।  
 २१८ वसेर्णित् ।  
 २१९ चन्देरादेश्च छः ।  
 २२० पचिवचिम्यां सुँट् च ।  
 २२१ वहिहाधाञ्भ्यश्छन्दसि ।  
 २२२ इणश्चासिँः ।  
 २२३ मिथुनेऽसिँः पूर्ववच्च सर्वम् ।  
 २२४ नञि हन एह च ।  
 २२५ विधाजो वेध च ।

- २२६ नुवो धुँट् च ।  
 २२७ गतिकारकोपपदयोः  
 पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च ।  
 २२८ चन्द्रे मो डित् ।  
 २२९ वयसि धाजः ।  
 २३० पयसि च ।  
 २३१ पुरसि च ।  
 २३२ पुरुरवाः ।  
 २३३ चक्षेर्बहुलं शिच्च ।  
 २३४ उषः किच्च ।  
 २३५ दमेरुनसिँः ।  
 २३६ अंगेरसिः ।  
 २३७ सर्त्तरपूर्वादसिः ।  
 २३८ विदिभुजिभ्यां विश्वे ।  
 २३९ वशेः कनसिँः ।

इति चतुर्थः पादः

**पञ्चमः पादः**

- १ अदिभुवो डुतच् ।  
 २ गुधेरुमः ।  
 ३ मसेरुरन् ।  
 ४ स्थः किच्च ।  
 ५ पातेरतिः ।  
 ६ वातेर्नित् ।  
 ७ अर्तेश्च ।  
 ८ तृहेः क्नो हलोपश्च ।  
 ९ वृञ्जुठितनिताडिभ्य  
 उलत्तण्डश्च ।  
 १० दंसेष्टनौ न आ च ।  
 ११ दंशेश्च ।  
 १२ उदिचेर्डेसिँः ।

- १३ नौ दीर्घश्च । ४३ क्रमिगमिक्षमिभ्यस्तुन् वृद्धिश्च ।  
 १४ सौ रमेः क्तो दमे पूर्वपदस्य च ४४ हर्यतेः कन्यन् हिर च ।  
 दीर्घः । ४५ कृजः पासः ।  
 १५ पूजो यण्णुंघ्रस्वश्च । ४६ जनेस्तु रश्च ।  
 १६ संसेः शिः कुँट् किच्च । ४७ ऊर्णोतेर्दः ।  
 १७ अर्तेः क्युरुच्च । ४८ दधातेर्यन्तुँट् च ।  
 १८ हिंसेरीरन्नीरचौ । ४९ जीर्यतेः क्रिन् रश्च वः ।  
 १९ उदि दृणातेरलचौ ५० मव्यतेर्यलोपो मश्चापतुँट् चालः ।  
 पूर्वपदान्त्यलोपश्च । ५१ ऋजेः कीकच् ।  
 २० डित्खनेर्मुट् चोदात्तः । ५२ तनोतेर्दुः सन्वच्च ।  
 २१ अमेः सन् । ५३ अर्भकपृथुकपाका वयसि ।  
 २२ मुहेः खो मूर्च । ५४ अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते ।  
 २३ नहेर्हलोपश्च । ५५ लीरीडोर्ह्रस्वः पुँट् च तरौ  
 २४ शीडो ह्रस्वश्च । श्लेषणकुत्सनयोः ।  
 २५ माड ऊखो मय च । ५६ क्लिशेरीच्चोपधायाः कन्  
 २६ कलिगलिभ्यां फगस्योच्च । लोपश्च लो नाम् च ।  
 २७ स्पृशेः श्वण्शुनौ पृ च । ५७ अश्नोतेराशुकर्मणि वरट् च ।  
 २८ श्मनि श्रयतेर्दुन् । ५८ चतेरुरन् ।  
 २९ अश्रवादयश्च । ५९ प्राततेरर्न् ।  
 ३० जनेष्टन् नलोपश्च । ६० अमेस्तुँट् च ।  
 ३१ अच् तस्य जंघ च । ६१ दहेर्गो हलोपो दश्च नः ।  
 ३२ हन्तेः शरीरावयवे द्वे च । ६२ सिचेः सञ्ज्ञायां हनुँमौ कश्च ।  
 ३३ क्लिशेरन् लो लोपश्च । ६३ व्याडि घ्रातेश्च जातौ ।  
 ३४ फलेरितजादेश्च पः । ६४ हन्तेरच् घुरँ च ।  
 ३४ कृत्रादिभ्यः सञ्ज्ञायां वुन् । ६५ क्षमेरुपधालोपश्च ।  
 ३६ चीकयतेराद्यन्तविपर्ययश्च । ६६ तरतेर्द्विः ।  
 ३७ पचिमच्योरिच्चोपधायाः । ६७ ग्रहेरनिः ।  
 ३८ जनेररष्ट च । ६८ प्रथेरमच् ।  
 ३९ वचिमनिभ्यां चिच्च । ६९ चरेश्च ।  
 ४० ऊर्जिं दृणातेरलचौ । ७० मंगेरलच् ।  
 ४१ कृदरादयश्च । इति पञ्चमः पादः ।  
 ४२ हन्तेर्युन्नाद्यन्तयोर्धत्वतत्वे । इत्युणादिमूलसूत्रपाठः ।

## पुस्तक के टीकाकार



आचार्य—श्री सत्यव्रत जी शास्त्री



## सच्चिदानन्द—परमात्मने नमः

नमस्तुभ्यं निरालम्ब-सर्वाधारहितैषिणे ।  
साक्षिणेऽद्वैततत्त्वाय शिवाय परमात्मने ॥१॥  
परात् परो यो भुविसूक्ष्मभूताज्—  
ज्यायान् न कश्चित् रवतु दृष्टिजातः ।  
व्याप्तः समस्तेषु चराचरेषु  
तं देवदेवं विनतो नमामि ॥२॥  
उणादिकोषकर्तारं सूक्ष्मबुद्धिसुसागरम् ।  
नौमि पाणिनिमाचार्यं विद्यावारिधिशंकरम् ॥३॥  
दयानन्दं दयानन्दं यतिनं च तपस्विनम् ।  
वेदविद्याप्रदीप्तारं प्रणमामि पुनः पुनः ॥४॥  
आचार्यं श्रीं व्रतानन्दं व्रतानन्दं व्रतीश्वरम् ।  
ब्रह्मधर्मैकनिष्ठान्तं नतोऽस्मि ज्ञानदायिनम् ॥५॥  
शंकरदेवमाचार्यमार्षग्रन्थसुपाठकम् ।  
भीमसेनमुपाचार्यं देवतुल्यं सरोरुहम् ॥६॥  
राजारामसुजिज्ञासुं सत्कर्तव्यविबोधकम् ।  
मेधाव्रतकवीन्द्रं च सत्साहित्यसर्जकम् ॥७॥  
पण्डितं शोभितं मिश्रं विहारप्रान्तवासिनम् ।  
भूयो भूयो नमत्येष सत्यव्रतो वशम्बदः ॥८॥  
यस्य माताऽभवद् गोपी, पिता रामप्रसादभाक् ।  
राधावल्लभसंनाम्नाऽग्रजो यस्माद् बभूववै ॥९॥  
हरिशंकरनामाऽसौ लघुभ्राता समीरितः ।  
सप्तमश्रेणिपर्यन्तं कासगञ्जेऽपठच्च यः ॥१०॥

पश्चाद् गुरुकुले रम्ये, चित्रकूटेऽपठन्ननु।  
 व्रतानन्दमहाभागैः प्रेरितोऽयं दशाब्दकान्॥११॥  
 पश्चात् स्नातक पदवीं वेदवागीश नामिकाम्।  
 लब्ध्वा तत्र समापन्नोऽध्यापकंगुरुगौरवम्॥१२॥  
 सोऽयं पाणिगृही भूतः चतुर्विंशतिवर्षकान्।  
 अध्यापयद् बटून् वर्यान्, वेदविद्यानुरञ्जकः॥१३॥  
 पत्नी श्री मिथिला नाम्नी, गुणालंकारभूषिता।  
 चत्वारस्तु सुताः सन्ति तावत्यः कन्यका वराः॥१४॥  
 वेदव्रतोऽग्रजः शेषो, राजेशश्च मुकेशकः।  
 सुषमा कुसुमापुष्पा—रेखाश्च लक्षणाञ्चिताः॥१५॥  
 अत्राहं विरतो भूतो गृहकर्मणि संरतः।  
 आबू गुरुकुले मासाः षडपाठि निरन्तरम्॥१६॥  
 कन्या गुरुकुले श्रेष्ठे, चित्रकूटेऽप्यपाठयम्।  
 अद्यत्वे कुशली भूतो यज्ञकर्म विवर्धयन्॥१७॥  
 एटा गुरुकुले ह्यार्षे, महाभाष्यं निरुक्तकम्।  
 पाठयन् नियतं चारु, रमेऽहं सुमनोमनाः॥१८॥  
 चतुष्षष्टिकवर्षोऽहं ज्ञानबुद्धिसुपकंजः।  
 विद्याकर्मणि संपूक्तः समयं गोपयामि वै॥१९॥  
 सोऽहमुणादिकोषस्य वृत्तिं तन्वे प्रकाशिकाम्।  
 शब्दार्थ कोशवृद्धर्थं बटूनां विमलां मिताम्॥२०॥

अथ तत्र भवान् ज्ञानविज्ञानप्रतिभानवान् महामनाः सर्वशास्त्र पारंगतः तत्र  
 शब्दरचनारचन चतुरः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः सन् शब्दशास्त्र शब्द बन्धनं चिकीर्षमाणो  
 दाक्षीपुत्र आचार्य श्री पाणिनिमुनिः कृतप्रत्ययान्तानां निर्मितिं चेतसि विधाय  
 ग्रन्थरत्नारम्भे “आशीर्नमस्क्रियावस्तु निर्देशोवापि तन्मुखम्” इति सत्पुरुषोक्त्या  
 साशीर्वादरूपेणाध्येतवर्गाणां कृते “कृवापाजिमिस्वदि साध्यशूभ्य उण्” इति  
 प्रथमसूत्रे प्रथमरूपेण “कृ” करणे समुच्चारणेन विद्यार्थिवृन्देभ्यः पुरुषार्थ  
 पुरुषार्थ चतुष्टयसिद्धिं कामयमानस्तथा च सूत्रे “उण्” प्रत्ययं वितन्वानः “ण्”  
 णित्संज्ञिकां वृद्धिं बटुसमूहेषु समीहमानः सूत्रं विधत्ते—

## अथोणादिकोषे

### प्रथमः पादः प्रारभ्यते

(१) कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् ।

अर्थः- डुकृञ् करणे, वा गति गन्धनयोः, पा पाने, जि जये, डुमिञ् प्रक्षेपणे, स्वद आस्वादने, साध संसिद्धौ, अशूङ् व्याप्तौ इत्येतेभ्यो धातुभ्य उण् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:- कारुः = कर्ता, शिल्पी, भृत्यः, कलाकारः । वायुः<sup>१</sup> = पवनः, परमेश्वरः । पायुः = रक्षकः, गुदा । जायुः = शूरः, वैद्यः, औषधम् । मायुः = पित्तम् । स्वादु = भोज्यम्, अन्नम् । साधुः = सत्पुरुषः, उत्तमः, योग्यः, गुणी, सम्माननीयः । आशु = शीघ्रम्, वर्चः, शालिः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः- करोतीति कारुः कर्ता, शिल्पी वा । वाति गच्छति जानाति वेति वायुः पवनः, परमेश्वरो वा । पाति रक्षति स पायुः रक्षकः, गुदेन्द्रियं वा । जयत्यभिभवति तिरस्करोति शत्रूनि जायुः शूरः, जयति रोगानिति जायुः औषधं, वैद्यो वा । यो मिनोति प्रक्षिपति स मायुः; अथवा मिनोति प्रक्षिपत्यूष्माणमिति मायुः पित्तम् । गां विकृतां वाचं मिनोतीति 'गोमायुः' श्रृगालो (वा) । स्वद्यते भोक्तुमभीप्स्यते तत् स्वादु, भोज्यमन्नं वा । साध्नोति धर्म्यं कर्मेति साधुः सज्जनः । अश्नुते व्याप्नोति तत् आशु शीघ्रम् । अश्नुते सद्योऽध्वानमिति आशुः अश्वो वा; अश्यते भुज्यते शीघ्रमिति आशुः धान्यं व्रीहि (वा) ।

बहुलवचनात्- स्नाति शोधयत्यंगानीति स्नायुः, नाडी वा । कक्यते लोलश्चञ्चलो भवति येनेति काकुः भयादिः, ध्वनेर्विकारो वा । हल्यते छिद्यतेऽन्नमनेनेति हालुः, दन्तो वा । वसति जगदस्मिन् सर्वस्मिन् वा यो वसति स वासुः ईश्वरः, इत्यादि ।।

हिन्दी- कृ आदि धातुओं से उण् प्रत्यय होता है ।

(२) छन्दसीणः । उणनुवर्त्तते ।

अर्थः- वेद विषये इण् गतौ इत्येतस्माद् धातोः उण् प्रत्ययो भवति ।

१- वा + युक् + उण् अत्र "आतो युक्चिण्कृतोः" इत्यनेन युगागमः ।

उदाहरणम् :— आयुः = जीवनम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—वेद इण् धातोरुण् । एति प्राप्नोति सर्वानिति आयुः  
जीवनकालः । सान्तस्तु द्वितीयपादे वक्ष्यते ॥

हिन्दी— वेद विषय में इण् धातु से उण् प्रत्यय होता है ।

### (३) दृसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो जुण् ॥

अर्थः—जुणनुवृत्तिः कृके वचः कश्चेति यावत् । दृ विदारणे, सन संभक्तौ,  
जनी प्रादुर्भावे, चर गतिभक्षणयोः, चट भेदने, रह त्यागे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो  
जुण् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम् :— दारु = काष्ठम् काष्ठशकलम्, उत्तोलनदण्डम् । सानुः =  
शिखरम्, शृंगम्, शैलशिला । वनम्, मार्गः तटम्, भानुः विद्वज्जनः । जानु<sup>२</sup> =  
जंघोपरिभागः । चारु = सुन्दरं शोभनम्, प्रतिष्ठितम् अभीष्टम् । चाटु = प्रियंवचः  
अनृतशंसा । राहुः = ग्रहविशेषः एकरक्षोऽभिधानम्, सैहिकेयः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— दीर्यते भिद्यते इति दारु, काष्ठं वा । सनति  
सम्भजति सनोति ददाति वा स सानुः; पर्वतैकदेश शृंगबुधमार्गवात्यापर्णवनानि  
च सानूनि वा । जायन्तेऽस्मात् तत् जानु, जङ्घाया उपरिभागो वा ।  
जनिवध्योश्च (७/३/३५) इति प्रतिषिद्धाऽप्यनुबन्धद्वयसामर्थ्याद् वृद्धिर्भवति ।  
चरति चक्षुरादिष्विति चारु शोभनम् । चटति भिनत्तीति चाटुः प्रियं वचो वा । रहति  
त्यजति दोषानिति राहुः, ग्रहविशेषो वा ॥

हिन्दी— दृआदि धातुओं से जुण् प्रत्यय होता है ।

### (४) किंजरयोः श्रिणः

अर्थः— किं पूर्वकं शृ हिंसायाम्, जरा पूर्वकं च इण्गतौ इत्येताभ्यां  
धातुभ्यां जुण् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम् :— किंशारुः = धान्यविशेषः, वकः, वाणः धान्यमञ्जर्यग्रभागः ।  
जरायुः = गर्भाशयः गर्भावरणम्, गोनिः सर्पकञ्चुली

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—किं शृणात्यनेनेति किंशारुः, धान्यविशेषो वा ।  
जरां जीर्णतामेतीति जरायुः गर्भाशयो, गर्भावरणं वा ॥

हिन्दी— किं पूर्वकं शृ से एवं जरापूर्वकं इण् धातु से 'जुण्' प्रत्यय होता  
है ।

(५) त्रोरश्च लः ।

अर्थः— तृ प्लवनसंतरणयोः इत्येतस्माद्धातोर्जुण् प्रत्ययो भवति रेफस्य च लादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम् :— तालु = मुखैकभागः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— 'तृ' धातोर्जुण् रेफस्य लत्वम् । तरन्ति निःसरन्ति वर्णा यत इति तालुः मुखैकदेशः ।

बाहुलकात्—अर्यते प्राप्यत इति आलु भक्ष्यं कन्दं वा । भृणाति स्वतापेन छेदयति पदार्थानिति भालुः, सूर्यः (वा) । शृणाति चित्तं हिनस्तीति शालुः, कषायद्रव्यं वा इत्यादि ।।

हिन्दीः— तृ धातु से जुण् प्रत्यय होता है तथा तृ के रेफ को लकार आदेश होता है ।

(६) कृके वचः कश्च ।

अर्थः— कृक उपपदे वच परिभाषणे इत्येतस्माद्धातोः जुण् प्रत्ययो भवति धातोश्च ककारादेशो जायते ।।

उदाहरणम् :— कृकवाकुः = यवनादिर्मयूरः, कुक्कुरः गृहगोधिका ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— कृकोपपदाद् वचधातोर्जुण् । कृकेन वक्तीति कृकवाकुः यवनादिर्मयूरो वा ।।

हिन्दीः— कृक पूर्वक वच् धातु से जुण् प्रत्यय होता है और वच को कादेश हो जाता है ।

(७) भृमृशीङ्त्चरित्सरितनिधनिमिमस्जिभ्य उः ।

अर्थः—उप्रत्ययाधिकारो मृगख्यादयश्चेतिपर्यन्तम् । डुभृञ् धारणपोषणयोः मृङ् प्राणत्यागे शीङ् स्वप्ने, तृ प्लवनसंतरणयोः, चर गतिभक्षणयोः, त्सर छद्म गतौ, तनु विस्तारे, धन धान्ये, डुमिञ् प्रक्षेपणे, टुमस्जो शुद्धौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्य उः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :—भरुः = स्वामी, विष्णुनाम, सुवर्णम्, उदधिः । मरुः = निर्जल-प्रदेशो वा (अजगरः सर्पः महमात्रं) । शयुः = शयनशीलः, अजगरः सर्पः महानागः । तरुः = वृक्षः । चरुः = यज्ञपाकः ओदनः । त्सरुः = खड्गमुष्टिः, सर्पणकीटः । तनुः = शरीरमल्पंवा, कृशः, मृदुः, सुकुमारः, प्रकृतिः, त्वग् । धनुः

= शास्त्रं शस्त्रं कार्मुकं, धनुः सज्जितम् । मयुः = वानरः, किन्नरः, स्वर्गीयः, संगीतज्ञः, मृगः । मद्गुः<sup>१</sup> = जलप्लवी पक्षी, जलकाकः सर्पविशेषः ।

**स्वामिदयानन्द वृत्तिः**—भरति बिभर्ति वेति भरुः स्वामी । म्रियन्ते भूतान्यस्मिन्निति मरुः निर्जलो देशो वा । शेतेऽसौ शयुः शयनशीलः (अजगरो वा) । यस्तरति येन वा स तरुः वृक्षो वा । चरति चर्यतेऽग्निना भक्षयत इति चरुः यज्ञपाको वा । त्सरति कुटिलं गच्छतीति त्सरुः खड्गमुष्टिर्वा । तन्यन्ते कर्माण्यनेनेति तनुः शरीरं, स्वल्पं वा । धन्यते धनं प्राप्यतेऽनेनेति धनुः शास्त्रं शस्त्रं वा । मिनोति सुशब्दं प्रक्षिपतीति 'मयुः वानरो वा । मज्जति शुद्धो भवतीति मद्गुः जलप्लवी पक्षी वा । न्यङ्क्वादित्वात् (द्र-७/३/५३) कुत्वम्, (झलां जश् झशि (अ० ८/४/५२) इति सकारस्य दकारः) ।

बाहुलकात्— गण्डति (यः) स गण्डुः वदनैकदेशः, उपधानम् 'तकिया' इति प्रसिद्धं, तैलं वा ॥

हिन्दी :— उभृज् धारणपोषणयोः आदि धातुओं से उ प्रत्यय होता है ।

### ( ८ ) अणश्च ।

अर्थः— अण शब्द इत्येतस्माद्धातोरुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :— अणुः = अतिसूक्ष्मम्, तनु, लघु, समयांशः शिवाभिधेयम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— अणति शब्दयतीति अणुः अतिसूक्ष्मं वा ।

अत्र चकारग्रहणाद् (बाहुलकाद्) वा कटति विकारयतीति कटुः रसः । वटति गुणकर्माणि विभजतीति वटुः द्विजसुतो वा ॥

हिन्दी— अण् धातु से उ प्रत्यय होता है ।

### ( ९ ) धान्ये नित् ।

अर्थः— धान्येऽर्थेऽण शब्दे ऽस्मादेव धातोरुः प्रत्ययो भवति स च उ-प्रत्ययो नित् जायते ।

उदाहरणम् :— अणवः = अन्नविशेषो वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अणन्ति शब्दायन्ते यैस्ते अणवः अन्न विशेषा वा ।

नित्करणमाद्युदात्तस्वार्थम् ॥

<sup>१</sup>—मद्गुः = मस्ज + उ अत्र स्तोश्चुना श्चुः इत्यनेन सकारस्य शकारे पुनश्च "झलां जश् झशि" इत्यनेन जश्त्वंम् ।



हिन्दी :—शब्द अर्थवाली अण धातु से उ प्रत्यय होता है, और वह नित हो जाता है।

(१०) शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च ।

शृ हिंसायाम्, स्वृ उपतापे, ष्णिह प्रीतौ, त्रपुष् लज्जायाम्, असुक्षेपणे वस आच्छादने, हनहिंसागत्योः क्लिदूआर्दीभावे बन्ध बन्धने, मनु अवबोधने इत्येतेभ्यो धातुभ्य उः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :—शरुः = आयुधं कोपो वा । स्वरुः = बज्रम् यज्ञीयस्तम्भांशः, यज्ञः, विशिखः, तापः । स्नेहुः = व्याधिः, चन्द्रमाः । त्रपु = सीसकं रंगं वा । असुः = प्राणः, श्वासः, आध्यात्मिकजीवनम्, शरीरपञ्चप्राणाः । वसुः = अग्न्यादयोऽष्टौवसवः, धनम्, रत्नम् कुबेरः, शिवः, वृक्षः, जलाशयः । हनुः = कपोलावयवः, प्रहरणं, मृत्युः, शस्त्रम्, रोगः, औषधविशेषः । क्लेदुः = चन्द्रमाः । बन्धुः = प्रेमी सज्जनः, सम्बन्धी ।

मनुः = ईश्वरः विद्वान् चतुर्दश प्रतीकात्मक संख्या ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अत्र चाद् उप्रत्ययो निदिति सम्बन्धः, एवमर्थ एव पृथक्पाठः । शृणाति हिनस्ति येनेति शरुः आयुधं कोपो वा । स्वर्यन्त उपतप्यन्ते प्राणिनोऽनेनेति स्वरुः बज्रम् (वा) । स्निह्यति यस्मिन् स स्नेहुः, व्याधिर्वा । अग्निं प्राप्य यत् त्रपते लज्जितमिव भवतीति तत् त्रपु सीसकं रंगं वा । अस्यति प्रक्षिपति वायुमिति असुः प्राणः । असुं प्राण राति ददातीति असुरो मेघः । वस्त आच्छादयति दुःखं येन तद् वसु धनं वा; वसन्ति प्राणिनो येषु (वासयन्ति वा ये) ते वसवः अग्न्यादयोऽष्टौ । हन्यतेऽनेनेति हनुः कपोलावयवः प्रहरणं मृत्युर्वा । क्लिद्यत्यार्दीकरोति चित्तमिति क्लेदुः चन्द्रमा वा । प्रेम्णा बध्नातीति बन्धुः सज्जनो वा । मन्यते चराचरं जगज्जानातीति मनुः ईश्वरः; मनुतेऽवबुध्यते शास्त्रमिति मनुः विद्वान् राजर्षिः ।

बहुलवचनात्—बिन्दत्यवयवीभवतीति बिन्दुः परिमाणं जलादिकणो वा ।।

हिन्दी—शृ आदि धातुओं से उ प्रत्यय होता है ।

(११) स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च ।

अर्थः—स्यन्दू प्रस्रवणे इत्येतस्माद्धातोः उप्रत्ययो भवति धातोश्च सम्प्रसारणं जायते दकारस्य च धकारादेशः ।

उदाहरणम् :- सिन्धुः = सागरो नदो हस्तिशुण्डं, जलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— स्यन्दन्ते प्रस्रवन्त्युदकान्यस्मिन्निति सिन्धुः (समुद्रो नदी विशेषो वा) ॥

हिन्दी— स्यन्दू धातु से उ प्रत्यय होता है इसे सम्प्रसारण भी होता है तथा स्यन्दू के दकार को धकारादेश हो जाता है ।

### (१२) उन्देरिच्चादेः ।

अर्थः— उन्दी क्लेदने इत्येतस्माद्धातोरुप्रत्ययो भवति धातोश्चादेः इज्जायते ।

उदाहरणम् :- इन्दुः = चन्द्रमाः, कर्पूरः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—उन्द धातोरुः प्रत्यय आदिवर्णस्येकारादेशश्च । उनत्यार्दीकरोति पदार्थानिति इन्दुः चन्द्रमा वा ॥

हिन्दी— उन्दी धातु से उ प्रत्यय होता है और धातु के आदि को इकारादेश हो जाता है ।

### (१३) ईषेः किच्च ।

अर्थः— ईष गतिहिंसादर्शनेषु इत्येतस्माद्धातोः उः प्रत्ययो भवति । धातोरादेरिकारादेशो जायते कित्त्वच्च स प्रत्ययः सज्जायते ।

उदाहरणम् :- इषुः = बाणः, वीरः, योद्धा पञ्चसंख्या ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अत्र चकारादिच्चादेरित्यनुवर्तते, तेन दीर्घस्य ह्रस्वो भवति । ईषति गच्छति हिनस्ति वा शत्रूनिति इषुः बाणो वीरो वा । कित्त्वाद् गुणाभावः ॥

हिन्दी— ईष धातु से उ प्रत्यय होता है और धातु को इकार हो जाता है । तथा उ प्रत्यय कित्त्वत् होता है ।

### (१४) स्कन्देः सलोपश्च ।

अर्थः— स्कन्दि गतिशोषणयोः इत्येतस्माद्धातोरुप्रत्ययो भवति । धातोरादेः सकारस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम् :- कन्दुः = कन्दुकम् गेंद इति हिन्दी, पतीली तंदूर ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— स्कन्दति गच्छति शुष्यति वा येन स कन्दुः कुमाराणां क्रीडायै 'गेंद' इति प्रसिद्धं वा ॥

हिन्दी— स्कन्दि धातु से उ प्रत्यय होता है तथा धातु के आदि सकार का लोप हो जाता है ।

(१५) सृजेरसुम् च ।

अर्थः— सृज विसर्गे इत्येतस्माद्धातोरुः प्रत्ययो भवति असुमागमः सकारस्य च लोपः ।

उदाहरणम् :— रज्जुः = जलोद्धरणम्, स्त्रीवेणी, रस्सा रस्सी इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अत्र पूर्वसूत्रात् सलोप इत्यनुवर्तते । धातोरसुमागम आदिसकारलोपश्च । पुनर्ऋकारस्य यणादेश आगमसकारस्य जश्त्वं च । सृजन्त्युदकनिस्सारणायेति रज्जुः जलोद्धरणं वा ॥

हिन्दी— सृज<sup>१</sup> धातु से उ प्रत्यय होता है और सृज को असुम् आगम होता है तथा धातु के सकार का लोप हो जाता है ।

(१६) कृतेराद्यन्तविपर्ययश्च ।

अर्थः— कृती छेदने इत्येतस्माद्धातोः उः प्रत्ययो भवति आद्यन्त-विपर्ययोऽर्थादादौ तकारोऽन्तेककारश्चादेशो जायते ।

उदाहरणम् :— तर्कुः<sup>२</sup> = कर्तनी वेष्टनम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— आद्यन्तविपर्ययोऽर्थादादौ तकारोऽन्ते ककारः, उश्च प्रत्ययः । कृन्तति छिनत्ति वस्त्रादिकमनेन स तर्कुः कर्तनी वा ॥

हिन्दी— कृती धातु से उ प्रत्यय होता है तथा आद्यन्त विपर्यय होता है अर्थात् धातु के आदि ककार को तकार और अन्त के तकार को ककार हो जाता है ।

१—सृ + असुम् + ज् + उ

सृ + अस् + जु

स्रसृजु अत्र स्तोःश्चुना श्चुः इत्यनेन सकारस्य शकारे भूते “झलां जश् झशि” इत्यनेन जश्त्वं जातम् ।

२—तर्कुः अत्र पुगन्तलघूपधस्य चेति सूत्रेण गुणो जायते ।

## (१७) नावञ्चः ।

अर्थ :- नौ उपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः इत्येतस्माद्धातोः उः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :- न्यङ्कुः<sup>१</sup> = विशिष्ट जाति हरिणः । एक प्रकार का बारह सिंहा मृग ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— ये नितरामञ्चन्ति गच्छन्ति ते न्यंकवः जातिविशेषाः हरिणा वा ॥

हिन्दी— नि पूर्वक अञ्चु धातु से उ प्रत्यय होता है ।

## (१८) फलिपाटिनमिमनिजनां गुक्पटिनाकिधतश्च ।

अर्थः— फल निष्पत्तौ, पट गतौ, णम प्रह्वत्वेशब्दे च, मन ज्ञाने, जनी प्रादुर्भाव, इत्येतेभ्यो धातुभ्य उः प्रत्ययो भवति, यथासंख्यं च गुगागमः, पटि नाकि आदेशौ, मनधातोर्धकारादेशो, जनेस्तकारादेशश्च जायते ।

उदाहरणम् :- फल्गुःअसारः फलवाची नपुंसके । पटुः = वाग्मी, विशारदः, सांप की छतरी कुकुरमुत्ता । नाकुः = बल्मीकः, पर्वतः । मधुः = चैत्रमासः, वसन्तर्तुः, राक्षसविशेषनाम, अशोकपादपः । जतु = लाक्षा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—उप्रत्यये 'फल' धातोरुं गागमः । फलति निष्पद्यते स फल्गुः असारो वा । नपुंसके 'फल्गु' फलम् । 'पाटि' धातोः पटिरादेशः । पाटयति ज्ञापयति सदसत्पदार्थान् स पटुः वाग्मी विशारदो वा । 'नम' धातोर्नाकिरादेशः । नमतीति नाकुः बल्मीको वा । 'मन' धातोर्धकारादेशः । मन्यन्ते विशेषेण जानन्ति यस्मिन् स मधुः चैत्रो मासः । मधूको मद्यं क्षौद्रं पुष्परसो वा । 'जन' धातोस्तकारादेशः । जायते प्रादुर्भूयतेऽनेनेति जतु लाक्षा वा ॥

हिन्दी— फल आदि धातुओं से उ प्रत्यय होता है और क्रमशः फल धातु को गुक् आगम पाटि को पटि, णम को नाकि आदेश, मन को धकारादेश और जन को तकारादेश होता है ।

## (१९) बलेर्गुक् च ।

अर्थः— बल प्राणने इत्येतस्माद्धातोः उः प्रत्ययो भवति गुगागमश्च जायते ।

१— न्यंकुः = नि + अञ्चु + उ अत्र न्यङ्क्वादीनां चेति सूत्रेण कुत्वम् ।

उदाहरणम् :— बल्गुः = जीवनदाता, नपुंसके शोभार्थे ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—वलते संवृणोतीति वल्गुः (वाक) । नपुंसके 'वल्गु' शोभनम् ॥

हिन्दीः—बल धातु से उ प्रत्यय होता है और बल को गुगागम होता है ।

(२०) शः कित्सन्वच्च ।

अर्थः— शो तनूकरणे इत्येतस्माद्धातोः उः प्रत्ययो भवति कित्त्वत् सन्वच्च सम्पद्यते ।

उदाहरणम् :— शिशुः<sup>१</sup> = बालकः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—सन्वदभावाद् द्वित्वादिकम् । श्यति तनूकरोति पित्रोः शरीरमिति शिशुः बालको वा ॥

हिन्दीः— शो धातु से उ प्रत्यय होता है और वह प्रत्यय कित्त्वत् सन्वत् हो जाता है ।

(२१) यो द्वे च ।

अर्थः— या प्रापणे धातोः उः प्रत्ययो भवति तस्य च धातोः द्वित्वं जायते ।

उदाहरणम् :— ययुः<sup>२</sup> = अश्वः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अत्र सन्वदित्यनुवर्तमानेऽपि द्वेग्रहणमभ्यासेत्त्व-निवृत्त्यर्थम् । यान्ति प्राप्नुवन्ति देशान्तरमनेनेति ययुः अश्वो वा ॥

हिन्दी = या धातु से उ प्रत्यय होता है और उस धातु को द्वित्व हो जाता है ।

(२२) कुर्भश्च ।

अर्थः— डभृञ् धारणपोषणयोः इत्येतस्माद्धातोः कुः प्रत्ययो भवति धातोश्च द्वित्वंजायते ।

१—शिशुः = शो, आदेच उपदेशेऽ शिति—इत्यनेनाकारा देशे पुनश्च—उ प्रत्यये कृते सन्वदभावेन द्वित्वे

शा + शा + उ पूर्वे ऽभ्यासः ह्रस्वः इत्यनेन ह्रस्वभावे "सन्वतः" इति—

शि + शा + उ इत्वे आतोलोप इटि चेत्यनेनाकारलोपे

शिशु + सु स्वादिरुत्पत्ति, विसर्गे जाते रूप सिद्धिः ।

२— ययुः = या + या + उ अत्र द्वित्वे सति—अभ्यासस्य ह्रस्वत्वेधातोश्च

"आतो लोप इटिच" इत्याकार लोपे—रूपसिद्धिः

उदाहरणम् :— बभ्रुः = नकुलः, पिंगलवर्णः, अनलः, बभ्रुकेशिकः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अत्र द्वे इत्यनुवर्तते । 'भृ' धातोः कुः प्रत्ययो द्वित्वं च । विभर्ति सर्वमिति बभ्रुः नकुलः पिंगलो वा ।

सूत्रे चकारग्रहणाद् अन्यधातुभ्योऽपि कुः प्रत्ययस्तेषां द्वित्वं च भवति । तद्यथा—करोतीति चक्रुः कर्ता । हन्तीति जध्नुः हन्ता । पाति रक्षतीति पपुः पालकः, इत्यादि ।।

हिन्दीः— डुभृञ् धातु से कु प्रत्यय होता है और धातु को द्वित्व होता है ।

### (२३) पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः ।

अर्थः— पृ पालनपूरणयोः, भिदिर विदारणे, व्यध ताडने, गृधु अभिकाङ्क्षायाम् जिधृषा प्रागल्भ्ये, हृष तुष्टौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कुः प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्— पुरुः<sup>१</sup> = बहु इन्द्रियंवा, पुष्परागः, स्वर्गः नृपविशेषः । भिदुः = कुलिशम् । विधुः = कर्पूरं चन्द्रोवा, पिशाचः, विष्णुः । ब्रह्मा, प्रायश्चित्तीयाहुतिः । गृधुः = कामातुरः, कामदेवः । धृषुः = दक्षः, साहसी विश्वस्तः । हृषुः = हर्षकः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—एभ्यः कुः । पिपर्ति पालयति पूरयति वा स पुरुः बहुइन्द्रियं वा । भिनतीति भिदुः वज्रं वा । विध्यति दुर्गन्धिं दिवसं वेति विधुः कर्पूरं चन्द्रमाः वा । व्यधेः ग्रहिज्या० (६/१/१६) इति सम्प्रसारणम् । गृध्नोत्यभिकाङ्क्षते येन स गृधुः कामो वा । धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति धृषुः दक्षः । हृष्यति स हृषुः हर्षकः । दृशि इति पाठान्तरे दृशुः दर्पकः ।।

हिन्दी = पृ आदि धातुओं से कु प्रत्यय होता है ।

### (२४) कृग्रोरुच्च ।

अर्थः— डुकृञ् करणे गृ शब्दे इत्येताभ्यां धातुभ्यां कुः प्रत्ययो भवति तथा च उदादेशो जायते ।

उदाहरणम् :— कुरुः = कुरवो राजानः, पुरोहितः, भक्तम् । गुरुः = ईश्वरः, आचार्यः, पिता वा, भारयुक्तः । प्रशस्तः, महान्, आयतः, लम्बकः विस्तृतः, तीव्रः प्रियः, अहम्मन्यः, दीर्घमाला वृद्ध पुरुषः, सम्बन्धी ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—यः करोति येन वा स कुरुः कुरवो राजानो वा ।  
गृणात्युपदिशति वेदशास्त्रविद्यामाचारं च स गुरुः आचार्यः पिता वा, सर्वेषां  
गुरुत्वादीश्वरः ॥

हिन्दीः—डकृञ् एवं गृ धातुओं से कु प्रत्यय होता है और उन धातुओं  
को उदादेश हो जाता है ।

### (२५) अपदुःसुषु स्थः ।

अर्थः— अप-दुः-सु इत्येतेषूपपदेषु ष्टा गतिनिवृत्तौ इत्येतस्माद्धातोः कुः  
प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— अपष्णु<sup>१</sup> = वामभागः, प्रतिकूलः पदार्थो वा । दुष्णु =  
अविनीतः । अनुचितम्, अशुद्धरूपेण । सुष्णु = शोभनम्, अत्यन्तम्, यथायथम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अप दुः सु इत्येतेषूपपदेषु 'स्था' धातोः कुः ।  
अपतिष्ठतीति अपष्णु वामभागः प्रतिकूलः पदार्थो वा । निन्दितस्तिष्ठतीति दुष्णु  
अविनीतः सुतिष्ठतीति सुष्णु शोभनम् । सर्वत्र सुषामादित्वात् (८/३/६८)  
षत्वम् ॥

हिन्दीः— अप दुस् और सु पूर्वक ष्टा धातु से कु प्रत्यय होता है ।

### (२६) रपेरिच्चोपधायाः ।

अर्थः— रप व्यक्तायां वाचि इत्यस्माद्धातोः कुः प्रत्ययो भवति धातोरुप-  
धायाश्च इदादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— रिपुः = शत्रुः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अनिष्टं रपति वदतीति रिपुः शत्रुः । चकारग्रहणात्  
कुप्रत्यये परे इकारादेश एव समुच्चीयते ॥

हिन्दीः— रप धातु से कु प्रत्यय होता है और धातु की उपधा को इद  
आदेश हो जाता है ।

### (२७) अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुक्धुक्दीर्घहकारश्च ।

अर्थः— ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु, दृशिर् प्रेक्षणे, कमु कान्तौ, अम  
गत्यादिषु, पसि नाशने, बाधृ विलोडने, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कुः प्रत्ययो भवति,  
यथा संख्यं च ऋजि पशि आदेशौ तुक् धुक् आगमौ दीर्घत्वं हकाराश्चान्तादेशो  
जायते ।

१—अपष्णु = अत्र "सुषमादिषु च" इत्यनेन षत्वं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— ऋजुः = कोमलः, सरलः, स्पष्टवक्ता, अनुकूलः । पशुः = अग्निः, पशुगवादिः, शिवानुचरः । कन्तुः = कामः हृदयम्, धान्यकोठी (खत्ती) अन्धुः = कूपः । पांसुः = धूलिः, गोमयं, धूलिकणः, कर्पूरविशेषः । बाहुः = भुजौ बाहू, प्रायेणायं द्विवचनान्तः पशोरग्रपादः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कुप्रत्यये सति अर्ज्यादिप्रकृतीनामृज्यादय आदेशा भवन्ति । अर्जयति सञ्चिनोति गुणानिति ऋजुः कोमलो वा । पश्यति सर्वमिति पशुः; पश्यन्ति येन वा स पशु अग्निः; पश्यति जानाति स्वार्थमिति पशुः गवादिः । 'कम' धातोस्तुक् । कामयन्ते यं स कन्तुः कामो वा । 'अम' धातोर्धुक् । अमति रुजति गच्छति वेति अन्धुः कूपो वा । अस्मिन् सूत्रे चकारग्रहणाद् बहुलवचनाद्वा 'अम' धातोर्बुगागमोऽपि भवति । अमन्ति गच्छन्ति चेष्टन्ते प्राणिनो येन तद् अम्बु जलम् । 'पंस' धातोर्दीर्घः । पंसयति नष्टमिव भवतीति पांसुः धूलिर्वा, क्षेत्रार्थं चिरकालात् सञ्चितं गोमयं वा, इत्याद्येवार्थेषु पांशुरिति तालव्यान्तोऽपि शब्दो दृश्यते । बाध्यन्ते विलोड्यन्ते पदार्थां याभ्यां तौ बाहू भुजौ । प्रायेणाऽयं द्विवचनान्तः ।।

हिन्दी— ऋज आदि धातुओं से कु प्रत्यय होता है और क्रमशः ऋज को ऋजि, दृशिर् को पशि, कमु को तुक्, अम को धुक् आगम पसि को दीर्घ, बाधु को हकार आदेश अन्त को हो जाता है ।

### (२८) प्रथिभ्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च ।

अर्थः— प्रथ विस्तारे, भ्रद मर्दने, भ्रस्जपाके इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कुः प्रत्ययो भवति सम्प्रसारणं च जायते, भृज्यतेश्च सकारस्य लोपः ।

उदाहरणम् :— पृथुः = पृथुराजः, प्रख्यातः, अग्निः । मृदुः = मादकः, कोमलं शनिग्रहः । भृगुः = ऋषिः प्रतापी वा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रथ्यादिभ्यः कुः प्रत्ययः । तस्मिन् सति प्रथिभ्रद्योः सम्प्रसारणं (भ्रस्जेः) सलोपश्च । प्रथते कीर्त्तिं वा विस्तारयति स पृथुः राजविशेषो, विस्तीर्णः पदार्थो वा । भ्रदते भ्रदितुं शक्यते स मृदुः मादकः कोमलं वा । भृजति तपसा शरीरमिति भृगुः ऋषिः प्रतापी वा । न्यङ्क्वादित्वात् (७/३/५३) कुत्वम् ।।

हिन्दी :— प्रथ आदि धातुओं से कु प्रत्यय होता है और उन्हें सम्प्रसारण भी होता है तथा भ्रस्ज के सकार का लोप हो जाता है ।



### (२६) लङ्घिबंहयोर्नलोपश्च ।

अर्थः— लघि गत्यर्थः, बृहि वृद्धौ, इत्येताभ्यां धातुभ्यां कुः प्रत्ययो भवति नकारस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्— लघुः = स्वल्पः, ह्रस्वः । बहुः = प्रचुरं संख्या वा । रघुः = राजविशेषो वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—लंघिबंहिभ्यां कुरनयोर्नलोपश्च । लङ्घति गन्तुं शक्नोतीति लघुः स्वल्पो वा । अस्यैव 'बालमूललध्वसुरामलङ्गुलीनां वा लो रत्वमापद्यते' (महा० ८/२/१८) इति वार्तिकेन रेफः । रघू राजविशेषः । बंहते वर्धतेऽन्येभ्य इति बहुः प्रचुरः, सङ्ख्या वा ॥

हिन्दी— लघि और बृहि धातुओं से कु प्रत्यय होता है और इनके नकार का लोप हो जाता है ।

### (३०) ऊर्णोतेर्णुलोपश्च ।

अर्थः— ऊर्णुञ् आच्छादने इत्यस्माद्धातोः कुः प्रत्ययो भवति णुभागस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्— ऊरुः = जङ्घा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—ऊर्णोत्याच्छादयति या सा ऊरुः जङ्घा । कुप्रत्यये णुभागलोपः ॥

हिन्दी— ऊर्णुञ् धातु से कु प्रत्यय होता है और धातु के णु भाग का लोप हो जाता है ।

### (३१) महति ह्रस्वश्च ।

अर्थः— महत्यभिधेये ऊर्णुञ् धातोः कुः प्रत्ययो भवति ह्रस्वत्वं च जायते ।

उदाहरणम्— उरुः = बहु महद्वा, श्रेष्ठम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—'ऊर्णु' धातोः कुप्रत्ययस्तस्मिन् णुभागलोप ऊकारस्य ह्रस्वत्वं च । ऊर्णोत्याच्छादयत्यल्पानिति उरु महत् ॥

हिन्दी— महत् अर्थ में ऊर्णुञ् धातु से कु प्रत्यय होता है और उसे ह्रस्व हो जाता है ।

### (३२) श्लिषेः कश्च ।

अर्थः— श्लिष आलिङ्गने इत्यस्माद्धातोः कुः प्रत्ययो भवति श्लिष्

इत्येतस्य षकारस्य ककारादेशो जायते।

उदाहरणम् :— शिलकुः = परायत्तः ज्योतिर्वा, कामुकः सेवकः।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—शिल्प्यति पदार्थैः सह सम्बध्यते स शिलकुः परवशो ज्योतिषं वा ॥

हिन्दीः— शिल्प धातु से कु प्रत्यय होता है और शिल्प के षकार को ककारादेश हो जाता है।

(३३) आङ्परयोः खनिशृभ्यां ङिच्च।

अर्थः— आङ्परयोरुपपदयोः खनु अवदारणे, शृ हिंसायाम् आभ्यां धातुभ्यां कुः प्रत्ययो भवति सच प्रत्ययो ङित् भवति

उदाहरणम् :— आखुः = मूषको, वराहः, चोरः, कुदालः, कृपणः। परशुः = कुठारः, शस्त्रम्, वज्रम्।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—आसमन्तात् खनति भूमिमिति आखुः मूषको, वराहो वा। परान् शत्रून् शृणाति हिनस्ति येन स परशुः शस्त्रभेदः कुठारो वा ॥ पृषोदरादित्वात् (६/३/१०८) अकारलोपे पूर्वार्थ एव पर्शुः अपि दृश्यते ॥

हिन्दीः— आङ् तथा पर पूर्वक खनु अवदारणे, शृ हिंसायाम् धातुओं से कु प्रत्यय होता है और वह प्रत्यय ङित् होता है।

(३४) हरिमितयोर्द्रवः।

अर्थः—हरिमितयोरुपपदयोः द्रुगतौ धातोः कुः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम् :— हरिद्रुः = दारु हरिद्रा वा। मितद्रुः = शोभनगमनः।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—हरिणाऽश्वेन वा द्रवति गच्छतीति हरिद्रुः दारुहरिद्रा वा। मितं परिमितं द्रवतीति मितद्रुः शोभनगमनो वा ॥

हिन्दीः— हरि और मित पूर्वक द्रु धातु से कु प्रत्यय होता है।

(३५) शते च।

अर्थः— शते चोपपदे द्रु गतौ इत्यस्माद्धातोः, कुः प्रत्ययो भवति

उदाहरणम् :— शतद्रुः = गंगा।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—शतधा बहुप्रकारैर्द्रवति गच्छतीति शतद्रुः नदीभेदो गंगा वा।

अत्र बाहुलकात् केवलादपि 'द्रु' धातोः कुप्रत्ययो दृश्यते। यं द्रवन्ति

कार्यार्थं प्राणिनः प्राप्नुवन्तीति स द्रुः वृक्षः शाखा वा । द्रुवः शाखा अस्मिन् सन्तीति द्रुमः वृक्षः । द्युद्रुभ्यां मः (५/२/१०८) इति सूत्रेण मत्वर्थीयो मः प्रत्ययः ।।

हिन्दीः— शत के उपपद रहते द्रु धातु से कु प्रत्यय होता है ।

### (३६) खरुशंकुपीयुनीलंगुलिगु ।

अर्थः— खनु अवदारणे, शकि शंकायां, पा पाने, लिगि गत्यर्थः, लगे संगे एभ्यो धातुभ्यः कुः प्रत्ययो निपात्यते ।

उदाहरणम् :— खरुः = कामः, दन्तः, संहर्ता, दर्पः अश्वो वा । शंकुः = सन्दिग्धः, असिधेनुका, स्तम्भः, पुरुषलिगम्, राक्षसः, विषम्, पापम्, शिवः । पीयुः = कालः, काकः, भानुः अनलः, घूकः रुक्मम् । नीलंगुः = भ्रमरः, पुष्पं, कीटविशेषः । लिगु = चित्तम्, पुं सितु = मृगः, मूर्खः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— खरु इत्येवमादयश्शब्दाः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । 'खन' धातोः कुः, नस्य रः । खनति शरीरमिति खरुः कामो दन्तः संहर्ता दर्पोऽश्वो वा । श्वेतार्थे तु वाच्यवत्, यथा खरुरियं ब्राह्मणी, खरु कुलम्, खरुः पुमान् । यं दृष्ट्वा शंकते सन्दिग्धो भवतीति तत् शङ्कु विषं कीलं शस्त्रं संख्या वृक्षभेदो जलभेदः पापं स्थाणुर्वा । पिबति पाति वा स पीयुः कालः काको वा । कुप्रत्यये धातोरीकारादेशो युगागमश्च । नितरां लंगति गच्छतीति नीलङ्गु क्रिमिजातिभ्रमरः पुष्पं वा । कुप्रत्यये उपसर्गस्य दीर्घत्वम् । सर्वत्र लगति संगच्छते तत् लिगु चित्तं वा । 'लगे' धातोरुपधाया इत्त्वम् ।

बाहुलकात्— खञ्जति गमने विकलो भवतीति पङ्गुः, गतिहीनो वा । कुप्रत्यये 'खञ्ज' धातोः पंगादेशः स्वगन्धेनान्यगन्धान् हन्तीति हिङ्गुः वणिग्द्रव्यम् । (कुप्रत्यये हन्तेरुपधाया इत्त्वं गुगागमश्च ।)

हिन्दीः— खरु आदि शब्द कु प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

### (३७) मृगय्वादयश्च ।

अर्थः— मृगय्वादयश्च शब्दाः कु प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— मृगयुः = व्याधः, जम्बुकः । देवयुः = धार्मिकः । मित्रयुः = लोकव्यवहारवित्, स्नेहशीलः । कुमारयुः = राजपुत्रः । अध्वर्युः याजकः यजुर्वेदः । कुहुः = अमावस्या ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— मृगयुप्रभृतयः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मृग, देव, मित्र, कुमार, अध्वर इत्येतेषूपपदेषु 'या प्रापणे' इत्यस्मात् कुप्रत्ययो भवति ।

मृगान् याति प्राप्नोतीति मृगयुः व्याधः । देवान् विदुषो याति स देवयुः धार्मिकः । मित्रान् यातीति मित्रयुः लोकव्यवहारवित् । कुमारावस्थां यातीति कुमारयुः राजपुत्रो वा । अध्वरं यज्ञं यातीति अध्वर्युः याजकः । अध्वरस्यान्त्यलोपश्च ।

बहुलवचनात्—कोहयति विस्मापयतीति कुहुः, यस्यां चन्द्रो न दृश्यते साऽमावास्या वा कुहुः । पण्डति गच्छतीति पाण्डुः रंगविशेषो वा । राजविशेषो वा । (धातोर्वृद्धिश्च ।) पीलति प्रतिष्ठन्तीति निरुणद्धि जीवानिति पीलुः हंस्ती वृक्षः काणुः परमाणवः पुष्पाणि वा । 'नजि सौत्रो धातुस्तस्मात् कुः । मञ्जति चित्तं प्रसादयतीति मञ्जु शोभनम् । एवं निघण्टु पलाण्डु कर्करेटु करेटु डमरु प्रभृतयः शब्दा अप्यत्रैव द्रष्टव्या आकृतिगणत्वादस्य ॥

हिन्दीः—मृगयु आदि शब्द कु प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

(३८) मन्दिवाशिमथिचतिचङ्क्यङ्कभ्य उरच् ।

अर्थः— मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्निगतिषु, वाशु शब्दे, मथ विलोडने, चते याचने, अंक पदे लक्षणे च इत्येतेभ्यो धातुभ्य उरच् प्रत्ययो भवति । सोऽयं मद्गुरादयश्चेति यावदधिक्रियते ॥

उदाहरणम्:— मन्दुरा = अश्वशाला, घुड़शाल इति हिन्दी, खट्वा, कटः । वाशुरा = रात्रिः । मथुरा = मथुराभिधानानगरि । चतुरः = दक्षः, मेधावी, द्रुतगामी, मनोज्ञः । अंकुरः = बीजोत्पादकः, जलम्, रक्तम्, केशः, सरसग्रन्थिः, किसलयम् । चंकुरः = रथः, तरुः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—मन्दते स्तौति माद्यति वा यस्यां सा मन्दुरा अश्वशाला वा । वाश्यते शब्दं करोतीति वाशुरा रात्रिर्वा । मथति विलोडयतीति मथुरा नगरी वा । चतते याचते स चतुरः, दक्षः, कुशलो वा । 'चकि' इति सौत्रो धातुः, चंकति सर्वतो भ्रमति येन स चङ्कुरः रथो वा । अङ्क्यते लक्ष्यते निःसृतं दृश्यते स अङ्कुरः बीजोत्पादो वा । अत्र खर्जूरादि (उ० ४/६९) वक्ष्यमाणगणेन ऊरप्रत्यये अङ्कूर इत्यपि, अर्थः स एव ॥

हिन्दी— मदि आदि धातुओं से उरच् प्रत्यय होता है ।

(३९) व्यथेः सम्प्रसारणं धः किच्च ।

अर्थः— व्यथ भयसंचलनयोः, इत्येतस्माद्धातोः उरच् प्रत्ययो भवति । धातोः सम्प्रसारणं थकारस्य च धकारादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम् :- विधुरः = वियोगी, पत्नीविहीनः, विपदग्रस्तः, भयम् ।  
स्वामिदयानन्द वृत्तिः—व्यथते बिभेति यस्मात् स विधुरोऽत्यन्तवियोगः,  
शरीरत्यागो वा । संप्रसारणे सति गुणनिषेधाय कित्त्वम् । बाहुलकात् थकारस्य  
धकारो न, तेन 'विथुरः' इत्यपि सिद्धं भवति । विथुरः चौरः दुष्टो वा ॥

हिन्दी— व्यथ धातु से उरच् प्रत्यय होता है और सम्प्रसारण होकर इसके  
थकार को धकारादेश हो जाता है ।

### (४०) मकुरददुरौ ।

अर्थः— मकुर - ददुरावुरच् प्रत्ययान्तौ निपात्येते ।

उदाहरणम्— मकुरः = दर्पणः, मौलश्रीतरुः, कुलालचक्रदण्डः, काली ।  
ददुरः = मेघः, भेकः, वाद्यभेदः, पर्वतभेदः पर्वतः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—मकुरददुरावुरच्प्रत्ययान्तौ निपात्येते । मंकतेऽलं करोति  
येन स मकुरः दर्पणो वा । 'मकि' धातोर्नलोपः । बाहुलकाद्धातोर्कारस्योकारे कृते  
दर्पणार्थ एव मुकुर इत्यपि सिद्धम् । दृणाति विदारयत्युष्णमिति ददुरः मेघो  
मण्डूको वाद्यभेदः पर्वतभेदो वा । उरचि 'दृ' धातोर्द्विर्वचनमभ्यासस्य रुगागमो  
धातोष्टिलोपश्च निपात्येते ॥

हिन्दीः— मकुर और ददुर शब्द उरच् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते  
हैं ।

### (४१) मदगुरादयश्च ।

अर्थः— मदगुरादयः शब्दा उरजन्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— मदगुरः = मत्स्यविशेषः (शारमण्यमत्स्यः मोतीनिस्सारकः)  
जलावतरणः, वर्णसंकरजातिभेदः । कर्बुरः = श्वेतः, दुष्टः, अनेक रागरञ्जितः,  
पापम्, भूतः, पिशाचः, धतूरे का पौधा । बन्धुरः = नम्रः, सुन्दरः, हंसः,  
ओषधिः, योनिः सारसः, खली । कुक्कुरः = श्वा । कुकुरः = श्वा । चिकुरः =  
एककृत्, शिरोरुहः, पर्वतः, सर्पणशीलसर्पः । आतुरः = अशान्तः, रोगी । वागुरा  
= जालम् । शकुलः = मीनः । वकुलः = मौलश्रीतरुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मदगुरप्रभृतयः शब्दा उरजन्ता निपात्यन्ते । माद्यति  
हृष्यतीति मदगुरः मत्स्यभेदो वा । धातोर्गुगागमः । कबते वर्णविशेषो भवतीति  
स कर्बुरः श्वेतो दुष्टो वा । धातोरुगागमः । बध्नाति मार्दवेन स बन्धुरः नम्रः  
सुन्दरो वा । खर्जूरादित्वाद् ऊरप्रत्यये बन्धूरोऽपि उक्तार्थ एव । चिन्चन्त्येकी

कुर्वन्ति याँस्ते चिकुराः । अत्र धातोः कुगागमः । कोकत आदत्ते परपदार्थमिति कुक्कुरः, कुकुरः श्वा (वा), एकार्थौ । पक्षान्तरे कुगागमो निपात्यते ।

(बाहुलकाद्—) अतति निरन्तरं गच्छतीति आतुरः अशान्तः (वा) । धातोरादौ दीर्घः । वान्ति मृगान् प्राप्नुवन्ति यया सा वागुरा मृगबन्धनी = मृगबन्धनार्थं जालम् अत्र धातोर्गुगागमो निपात्यते । शक्नोति तरितुमिति शकुलः मत्स्यः (वा) । वंकते कुटिलो भवतीति वकुलः वृक्षभेदो वा । अत्रोभयत्र प्रत्ययरेफस्य लत्वम्, वंकेर्नलोपश्च ।।

हिन्दी— मद्गु आदि शब्द उरच् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते है ।

### (४२) असेरुरन् ।

अर्थः— वक्ष्यत्याचार्यः शावसेराप्ताविति, तत्रावधित्वेन "उरन् अधिकारः प्रवर्तते । असुक्षेपणे इत्येतस्माद्धातोः उरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— असुरः मेघो दुर्जनो वा दानवः, प्रेतः, रविः करी, राहुः, राक्षसः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अस्यति प्रक्षिपति धर्मं शुभगुणांश्च सः असुरः मेघो दुर्जनादिर्वा । नित्करणमाद्युदात्तस्वरार्थम् ।।

हिन्दीः— असु धातु से उरन् प्रत्यय होता है ।

### (४३) मसेश्च ।

अर्थः— मसी परिणामे धातोः उरन् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्— मसुराः = द्विदलविशेषाः, मसूर इति हिन्दी, तकिया ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मस्यन्ति सुष्ठुतया परिणमन्ते ते मसुराः द्विदलविशेषाः । अत्रैव पञ्चमपादे 'मस' धातोरुरन्प्रत्यये मसूर इत्यपि सिद्धम् । एकार्थाविमौ । द्विदलान्नेषु 'मसूर' इति प्रसिद्धम् ।।

हिन्दीः— मसी धातु से उरन् प्रत्यय होता है ।

### (४४) शावशेराप्तौ ।

अर्थः— शु इति शीघ्रार्थं वाचिन्युपपदे आप्तौ गम्यमानायां अशूङ् व्याप्तौ संघाते च धातोरुरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :— श्वशुरः = दम्पत्योः पिता ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—शु इति शीघ्रार्थवाचिन्युपपद आप्तौ गम्यमानायां 'अशूङ्' धातोरुत्तरन् । शु शीघ्रमश्नुत आप्नोति जामाता यं स श्वशुरः दम्पत्योः पिता ।।

हिन्दीः— शु के उपपद होने पर अशूङ् धातु से उरन् प्रत्यय होता है, यदि आप्ति अर्थ होतो । आप्ति = प्राप्ति ।

### (४५) अविमह्योष्टिषच् ।

अर्थः— टिषजधिकारः "किलेवुक्चेति पर्यन्तम् । अव गति रक्षणादिषु, मह पूजायां इत्येताभ्याम् धातुभ्यां टिषच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— अविषः = समुद्रः, विषशून्यः, भूपः । महिषः = राजा, पशुविशेषो वा महिषासुरः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अवन्ति नद्यो गच्छन्ति यस्मिन् स अविषः समुद्रः (वा); अवति प्रीणाति प्राणिन इति अविषी नदी वा । महति पूजयति स्वपुरुषार्थेन इति महिषः महान् राजा वा; तद्योगात् 'महिषी' राज्ञी पशुविशेषो वा ।।

हिन्दीः— अव और मह धातुओं से टिषच् प्रत्यय होता है ।

### (४६) अमेदीर्घश्च ।

अर्थः— अम गत्यादिषु इत्येतस्माद्धातोः टिषच् प्रत्ययो भवति ।

धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्— आमिषम् = मांसम् । आखेटम्, आहार, उत्कोचः सुखद-वस्तु ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—टिषच् (धातोर्दीर्घश्च) । अमन्ति गच्छन्ति येन तत् आमिषं मांसं वा । अथवाऽमन्ति रोगिणो भवन्ति येन भक्षितेन तदामिषम्, इत्येकार्थः ।।

हिन्दीः—अम धातु से टिषच् प्रत्यय होकर धातु को दीर्घ हो जाता है ।

### (४७) रुहेर्वृद्धिश्च ।

अर्थः— रुह बीजजन्मनिप्रादुर्भावे च धातोः टिषच् प्रत्ययो भवति । धातोश्च वृद्धिर्जायते ।

• उदाहरणम्:— रौहिषम् = मृगविशेषः, तृणविशेषः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—टिषच् (धातोर्वृद्धिश्च) । रुहन्त्युत्पद्यन्ते यानि तानि रौहिषाणि तृणानि; रौहिषो मृगभेदो वा ॥

हिन्दी:— रुह धातु से टिषच् प्रत्यय होता है और धातु को वृद्धि हो जाती है ।

### (४८) तवेर्णिद्वा ।

अर्थ:— तव इति बलार्थे सौत्रो धातुः एतस्मात् टिषच् प्रत्ययो भवति स च विकल्पेन णित् भवति

उदाहरणम्:— ताविषी, तविषी, नदी, बलं सेना भूमिर्वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— 'तव' इति सौत्रो धातुस्तस्माट् टिषच् णिद्विकल्पेन भवति । तवतीति (ताविषः, तविषः बलं सूर्यो वा । षित्त्वात् स्त्रियां डीषि) ताविषी, तविषी नदी बलं सेना भूमिर्वा ॥

हिन्दी:—सूत्र पठित इस तव धातु से टिषच् प्रत्यय होता है और यह विकल्प से णित् होता है ।

### (४९) नञि व्यथेः ।

अर्थ:— नञि उपपदे व्यथ भयसंचलनयोः इत्यस्माद्धातोः टिषच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— अव्यथिषः = समुद्रः सूर्यो वा । स्त्रीत्वे, अव्यथिषी = पृथिवी, रात्रिः, निशीथः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—न व्यथत इति अव्यथिषः समुद्रः सूर्यो वा । अव्यथिषी पृथिवी रात्रिर्वा ॥

हिन्दी:— नञ् उपपद होने पर व्यथ धातु से टिषच् प्रत्यय होता है ।

### (५०) किलेर्बुक् च ।

अर्थ:— किल श्वैत्य क्रीडनयोः इत्येतस्माद्धातोः टिषच् प्रत्ययो भवति तथा च धातोर्बुगागमो जायते ।

उदाहरणम्:—किल्विषम् = पापम्, त्रुटिः, अपराधः, क्षतिः रोगः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—किलति क्रीडति विचारशून्यतया कार्येषु प्रवर्तते येन तत् किल्विषं पापम् ॥



हिन्दीः— किलघातु से टिषच् होकर बुगागम होता है ।

(५१) इषिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिमन्दिचन्दितिमिमिहि

मुहिमुचिरुचिरुधिबन्धिशुषिभ्यः किरच् ।

अर्थः— किरच् प्रत्ययाधिकारः “अजिरशिशिर शिथिलेति यावत् । इषु इच्छायाम्, मदी हर्षे, मुद हर्षे, खिद दैन्ये, छिदिर् द्वैधीकरणे, भिदिर् विदारणे, मदि अभिवादनस्तुत्योः, चदि आह्लादने दीप्तौ च, तिमआर्द्रीभावे मिह सेचने, मुह वैचित्ये, मुचि कल्कने, रुच दीप्तावभिप्रीतौ च, रुधिर आवरणे, बन्धबन्धने, शुष शोषणे इत्येतेभ्यो घातुभ्यः किरच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— इषिरः = अग्निः । मदिरा = मद्यम्, खज्जनपक्षी, दुर्गानामान्तरम् । मुदिरा = कामुको, मेघः, प्रेमी, भेकः । खिदिरः = चन्द्रमाः, संन्यासी, दरिद्रः । छिदिरः = असिः कुठारः, शब्दः, अनलः, रज्जुः । भिदिरम् = बज्रम् । मन्दिरम् = गृहं नगरं स्थानं, शिविरम् देवालयः । चन्दिरम् = चन्द्रमाः हस्ती वा । तिमिरम् = नेत्ररोगोऽन्धकारो वा, जंग मोर्चा । मिहिरः = सूर्यः, पयोदः, शशी, पवनः वृद्धपुरुषः । मुहिरः = प्रियपदार्थः, असभ्यजनो वा, कामदेवः बालिशः । मुचिरः = दानशीलः, देवता, गुणः, अनिलः । रुचिरम् = शोभनम्, उज्ज्वलम्, स्वादिष्टः, मधुरम्, क्षुधावर्धकम्, पुष्टिकरम् । रुधिरम् = शोणितम्, केसरः, जाफरान । बधिरः = श्रोत्रविकलः । शुषिरम् = छिद्रमाकाशो वा वाद्यविशेषः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—इत्यादि (भ्यः) षोडशधातुभ्यः किरच् । इच्छन्तीष्टं साध्नुवन्त्यनेनेति इषिरः अग्निः वा । माद्यति मत्तो भवति यया सा मदिरा सुरा मद्यम् (वा) । मोदतेऽसौ मुदिरः कामुको वा । मोदन्तेऽनेनेति मुदिरो मेघः (वा) । खिद्यति येन स खिदिरः चन्द्रमा वा । छिनत्ति येन स छिदिरः असिः कुठारो वा । भिनत्ति येनेति भिदिरं वज्रम् (वा) । मन्दन्ते स्तुवन्ति स्वपन्ति वा यस्मिंस्तत् मन्दिरं गृहं नगरं वा । चन्दन्त्याह्लादयन्ति येन स चन्दिरः चन्द्रमा हस्ती वा । तेमत्यार्द्रीभवत्यस्मिन् तत् तिमिरम् नेत्ररोगो वा । यो मेहयति सेचयति पृथिवीं मेघजलेन स मिहिरः सूर्यो वा । मुह्यति यस्मै यो वा मुह्यति स मुहिरः काम्यः पदार्थोऽसभ्यो जनो वा । यो मुञ्चति स्वपदार्थमन्येभ्यो ददाति स मुचिरः दानशीलो वा । यद्रोचते प्रीतिकरं भवति तद् रुचिरं शोभनम् । (वाच्यलिंगत्वाद्

रुचिरं वस्त्रम्, रुचिरः पुत्रः, रुचिरा कन्या वा । रुध्यते चर्मणा यत्तत् रुधिरं शोणितम् (वा) । बध्यते शब्दश्रवणात्रिरुध्यते स बधिरः श्रोत्रविकलः (वा) । किलच् प्रत्ययस्य कित्वात् अनिदिताम्० (६/४/२४) इति नलोपः । शुष्यन्ति पदार्था येन तत् शुषिरं छिद्रमाकाशो वा ॥

हिन्दीः— इषु आदि धातुओं से किरच् प्रत्यय होता है ।

### (५२) अशर्नित् ।

अर्थः— अश भोजने इत्येतस्माद्धातोः किरच् प्रत्ययो भवति स च नित् जायते ।

उदाहरणम्ः— अशिरः = अग्निः, भास्वान्, वायुः, पिशाचः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अश्नाति यः पदार्थान् सः अशिरः अग्निः (वा); धृष्टतयाऽश्नाति वा अशिरः दुर्जनः (वा) ॥

हिन्दीः— अश धातु से किरच् प्रत्यय होता है और वह नित् होता है ।

### (५३) अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः ।

अर्थः— अज गतिक्षेपणयोः, शश प्लुतगतौ, श्रथविमोचने, ष्टा गतिनिवृत्तौ, स्फारी वृद्धौ, ष्टा गतिनिवृत्तौ, खद स्थैर्ये हिंसायाम् च, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो यथासंख्यं, अजिर-शिशिर-शिथिल-स्थिर-स्फिर स्थविर-खदिर शब्दाः किरच् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्ः— अजिरम् = अंगनम्, आँगन इति प्रसिद्धं, शरीरम् इन्द्रियगम्यवस्तु, वायुः, भेकः । शिशिरम् = ऋतु हिमं शीतलम् द्रव्यं वा । शिथिलम् = मृदु, परित्यक्तम्, असमर्थः । स्थिरम् = निश्चलम्, शान्तम्, शाश्वतम् । मौनं विश्वासयोग्यम्, निष्करुणम् । स्फिरः = प्रवृद्धः प्रभावः, प्रचुरम् असंख्यम्, विस्तृतम् । स्थविरः = वृद्धः भिक्षुकः, ब्राह्मणाभिधेयम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अजिरादयः सप्त किरच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अजन्ति गच्छन्ति यत्र तत् अजिरम् अङ्गनं गृहाग्रभागः 'आंगन' इति प्रसिद्धम् (वा) (निपातनादजेर्वीभावाभावः) । शशति दिनाल्पत्वाच्छीघ्रं गच्छति तत् शिशिरम् हिमं शीतलं वस्तु वा । (धातोरुपधाया इत्वं निपात्यते) । श्रथति विमुञ्चति पुरुषार्थमिति शिथिलः पुरुषः, शिथिला कन्या, शिथिलानि तृणानि मृदूनीत्यर्थः । धातोरुपधाया इत्वं रेफस्य लोपः प्रत्ययस्थस्य रेफस्य लत्वं च निपात्यते । गमनागमननिवृत्त्या तिष्ठतीति स्थिरं निश्चलम् । धातोरकारलोपः ।

स्फायते प्रवर्द्धते (यः) स स्फिरः प्रभूतं वा । आय्भागस्य लोपो (ऽत्र) निपातनम् ।  
गमनेऽसमर्थत्वात् तिष्ठतीति स्थविरः वृद्धो भिक्षुको वा । धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च ।  
खदति हिनस्तीति खदिरः वृक्षभेदो वा ।

बाहुलकात्—यः शते स शिविरः; शेरते यस्मिन् तत् शिविरं स्थानं वा ।  
'शीङ्' धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च ॥

हिन्दी— अजिर आदि शब्द किरच् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

(५४) सलिकल्यनिमहिभडिभण्डिशण्डिपिण्डितुण्डिकुकि—

भूभ्य इलच् ।

अर्थः— षल गतौ, कल संख्याने, अन जीवने, मह पूजायाम्,  
भडहिंसायाम् इति सौत्रो धातुः मडि परिभाषणे, शडिरुजायां संघाते च, पिडि  
संघाते, तुडि तोडने, कुक आदाने, भू सत्तायाम्, इत्येतेभ्यो धातुभ्य इलच्  
प्रत्ययो भवति । इलचोऽधिकारो मिथिलादयश्चेति यावत् ।

उदाहरणम् :—सलिलम् = जलम् । कलिलम् = गहनम्, महद्राशिः,  
अव्यवस्थितम् । अनिलः = वायुः, वातदोषः, वायुरोगः । महिलः = पुमान्,  
षण्डेस्थानम्, स्त्रियां, महिला । भडिलः = शूरः, सेवकः नेता । भण्डिलः =  
कल्याणं, सौभाग्यशाली, दूतः, शिल्पी । शण्डिलः = रोगी, ऋषिविशेषो वा ।  
पिण्डिलः = गणकः, सेतुः । तुण्डिलः = उच्चनाभि जनः वाचालः । कोकिलः =  
पिकः, जाज्वल्यमानकाष्ठम् । भविलः = भवितुं योग्यं, प्रेमी, कामी । बाहुलकात्  
= कुटिलः, क्रूरः, कपटी, अविश्वासी ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—सल्यादिभ्य इलच् । सलति गच्छतीति सलिलं  
जलं वा । कलति सङ्ख्याति तत् कलिलं मिश्रं दुःखेन साध्यं गहनमिति वा ।  
अनिति जीवति जीवयति वा स अनिलः वायुर्वा । यो महयति यं महयन्ति येन  
वा मह्यते पूज्यते स महिलः पुमान्, महिलं स्थानम्, महिला स्त्री वा । बाहुलकाद्  
इलच इकारस्यैकारे सति महेला स्त्री इत्यपि सिद्धं भवति । 'भड' इति सौत्रो  
धातुः । भडति हिनस्तीति भडिलः शूरो वा । भडति परिचरति स्वामिनमिति भडिलः  
सेवकः । भण्डयति परिहसति येन स भण्डिलः कल्याणं वा । शण्डति रोगयुक्तो  
भवतीति शण्डिलः ऋषिविशेषो वा, यस्य गोत्रापत्यं 'शाण्डिल्यः' इति प्रसिद्धम् ।  
पिण्डति सङ्घातं करोति स पिण्डिलः गणको वा । तुण्डति तोडति पृथक् करोति

स तुण्डिलः उच्चनाभिर्जनो वा । कोकत आदत्तेऽसौ कोकिलः पक्षिविशेषो वा ।  
यो भवति स भविलः भवितुं योग्यो वा ।

बाहुलकात्—कुटति कौटिल्यं करोति स कुटिलः क्रूरकर्मा वा ।।

हिन्दीः— षल आदि धातुओं से इलच् प्रत्यय होता है ।

### (५५) कमेः पश्च ।

अर्थः— कमु कान्तौ धातोः इलच् प्रत्ययो भवति धातोश्चान्तस्य  
पकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— कपिलः = वर्णभेदो मुनिविशेषो वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कमेरिलच् मस्य पः । कामयतेऽसौ कपिलः  
वर्णभेदो मुनिविशेषो वा ।।

हिन्दीः— कमु धातु से इलच् प्रत्यय होता है और धातु के अन्त को  
पकारादेश होता है ।

### (५६) गुपादिभ्यः कित् ।

अर्थः— गुपू रक्षणे इत्यादिभ्यो धातुभ्य इलच् प्रत्ययो भवति स च किज्  
जायते ।

उदाहरणम् ?—गुपिलः = राजा, रक्षकः । तिजिलः = चन्द्रमाः । गुहिलम्  
= वनम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—इलचः कित्त्वं गुणनिषेधार्थम् । गोपायति रक्षति  
प्रजा इति गुपिलः राजा वा । तेजते तीक्ष्णीकरोति तिज्यते सह्यते वा सर्वैः स  
तिजिलः चन्द्रमा वा । गूहते वृक्षैराच्छादितो भवतीति गुहिलं वनं वा ।

हिन्दीः— गुपू आदि धातुओं से इलच् प्रत्यय होता है और वह कित् होता  
है ।

### (५७) मिथिलादयश्च ।

अर्थः— मिथिलादयश्च शब्दा इलच् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम् :— मिथिला = विदेहानां राज्ञानगरी । गतिला = वेत्रलता ।  
तकिला = ओषधिः, धूर्ता । चण्डिला = काचिन्नदी, नापितपत्नी । पथिलः =  
पथिकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मिथिलादय इलच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मथ्यते

या सा मिथिला, मथ्यन्ते शत्रवो यत्र सा मिथिला विदेहानां राज्ञां नगरी वा ।  
(धातोर) अकारस्येत्त्वं निपात्यते । गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति यां सा गतिला वेत्रलता  
वा । गमेस्तकारान्तादेशः । या तंकति कृच्छ्रेण जीवति सा तकिला ओषधिर्वा ।  
(धातोर) नलोपः । चमति भक्षयतीति चण्डिला काचिन्नदी वा । धातोर्दुगागमः ।  
यः पथति निरन्तरं गच्छति स पथिलः पथिको वा, इत्यादि ॥

हिन्दीः— मिथिला आदि शब्द इलच् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

### (५८) पतिकठिकुटिगडिगुडिदंशिभ्य एरक् ।

अर्थः— पल्लु गतौ, कठ कृच्छ्र जीवने, गडसेचने, गुडरक्षायां, दंश दशने  
इत्येतेभ्यो धातुभ्य एरक् प्रत्ययो भवति । एरगधिकारः कबेरोतच् पश्चेति सूत्र-  
पर्यन्तम् ।

उदाहरणम् :— पतेरः = गन्ता, पक्षी, छिद्रम् । कठेरः = कारागारिकः ।  
कुठेरः = पर्णाशः कटहल इति भाषायाम् । गडेरः = मेघः गुडेरः = रक्षकः, पिण्डम्,  
शकलम्, ग्रासः । दशेरः = हिंसक जीवः, उपद्रवी, विषधरंजन्तुः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—पतति गच्छतीति पतेरः गन्ता पक्षी वा । कठति  
कृच्छ्रेण जीवतीति कठेरः कारागारिको वा । कुठेरः कृच्छ्रजीवी पर्णाशो वा  
'कटहर' इति प्रसिद्धम् । गडति सिञ्चतीति गडेरः मेघो वा । गुडति रक्षति स  
गुडेरः रक्षकः । दशति दष्ट्राभ्यामिति दशेरः हिंसको जीवो वा । (कित्त्वाद)  
अनुनासिकलोपः ॥

हिन्दीः— पल्लु आदि धातुओं से एरक् प्रत्यय होता है ।

### (५९) कुम्बेर्नलोपश्च

अर्थः— कुबि आच्छादने इत्येतस्माद्धातोः एरक् प्रत्ययो भवति तथा च  
कुम्बेर्नलोपो जायते ।

उदाहरणम् :— कुबेरः = धनाध्यक्षः, विद्वान्, उत्तरदिक्पतिः, रुद्रसुहृत् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कुम्बत्यन्यानाच्छादयतीति कुबेरः धनाध्यक्षो विद्वान्  
वा । इदित्त्वादप्राप्तो नलोप एरकि विधीयते ॥

हिन्दीः— कुबि धातु से एरक् प्रत्यय होता है तथा धातु के नकार का  
लोप हो जाता है ।

## (६०) शदेस्तश्च ।

अर्थः— शद्लु शातनेऽस्माद्धातोः एरक् प्रत्ययो भवति धातोर्दकारस्य च तकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— शतेरः = शत्रुः, विनाशकः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— शीयते शातयति दुःखाकरोतीति शतेरः शत्रुर्वा । धातोर्दकारस्य तकारादेशः ।

हिन्दीः— शद्लु धातु से एरक् प्रत्यय होता है और धातु के दकार को तकारादेश हो जाता है ।

## (६१) मूलेरादयः ।

अर्थः— मूलेरादि शब्दा निपात्यन्ते यथा मूल प्रतिष्ठायां गुध परिवेष्टने, गुह संवरणे, मुह वैचित्ये-इत्यादिभ्यो धातुभ्य एरक् प्रत्ययो निपात्यते ।

उदाहरणम्— मूलेरः = भूपतिः, जटामांसी । गुधेरः = रक्षकः । गुहेरः = लोहघातनः, अभिभावकः । मुहेरः = मूर्खः, कामदेवः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— मूलेरादय एरक् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । यो मूलति सर्वोपरि तिष्ठति स मूलेरः भूपतिर्वा । गुधति सर्वतो वेष्टयतीति गुधेरः रक्षको वा । गूहते येन स गुहेरः लोहघातनो वा । मुह्यति विक्षिप्त इव भवतीति मुहेरः मूर्खः (वा); मुह्यत्यनेन वृषभादिरिति वा मुहेरः कणमर्दनादौ वृषभमुखबन्धनम् । 'मुहेर' इत्येव भाषायां प्रसिद्धम् ।।

हिन्दीः— मूलेर् आदिशब्द एरक् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

## (६२) कबेरोतच् पश्च ।

अर्थः— कब्रुवर्णे इत्यस्माद्धातोः ओतच् प्रत्ययो भवति धातोश्च पकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— कपोतः = पक्षी विशेषः

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— ओतच्प्रत्ययो बकारस्य पकारश्च । कबते विचित्रवर्णो भवतीति कपोतः, पक्षिभेदो वा ।।

हिन्दीः— कब्रु धातु से ओतच् प्रत्यय होता है और धातु को पकारादेश हो जाता है ।

## (६३) भातेर्डवतुप् ।

अर्थः— भा दीप्तौ इत्यस्माद्धातोः डवतुप् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— भवान्<sup>१</sup> = सर्वनाम वाचकः, सर्वनामसंज्ञकश्च अयं शब्दः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— भाति दीप्तो भवति दीपयति वा स भवान् ।  
सर्वनामवाचकः सर्वनामसंज्ञकश्चायं शब्दः ॥

हिन्दीः— भा धातु से 'डवतुप्' प्रत्यय होता है ।

### (६४) कटिचकिभ्यामोरन् ।

अर्थः— "कठ कृच्छ्र जीवने", "चक तृप्तौ प्रतिघाते च" इत्येताभ्यां धातुभ्यां ओरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :— कठोरः = कठिनः पूर्णः, क्रूरः, तीक्ष्णः । चकोरः = पक्षिविशेषः, चातकः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कठति कृच्छ्रेण जीवति येन स कठोरः, कठिनः पूर्णो वा । चकते तृप्यति स चकोरः, पक्षिविशेषो वा ॥

हिन्दीः— कठ और चक धातुओं से ओरन् प्रत्यय होता है ।

### (६५) किशोरादयश्च ।

अर्थः— किशोरादयः शब्दा ओरन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम् :—ओरन्निति वर्तते । किशोरः<sup>२</sup> = अश्ववत्सः, वत्सः, तरुणः सूर्यः । सहोरः<sup>३</sup> = साधुः । गौरः = अरुणः, श्वेतः, पीतः, निर्मलः श्वेतसर्षपः, चन्द्रः, महिषभेदः, मृगविशेषः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—किशोरादय ओरन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । किं शृणाति हिनस्तीति किशोरः, अश्वशावको वा । किमो मलोपः 'शृ' धातोष्टिलोपश्च निपातनम् । सोढुं शीलः सहोरः, साधुर्वा । गायति शब्दं करोतीति गौरः । अरुणे श्वेते पीते निर्मले च वाच्यलिंगः—गौरः कुमारः, गौरी कन्या, गौरं कुलम्, गौरं कमलम्, गौरः सर्षपः इत्यादि । 'गै' धातोराकारादेशे कृत ओकारेण सह वृद्ध्येकादेशः । आयादेशस्त्वात्वाप्राप्तौ भवति, इत्यादि ॥

१—भवान् = भा + डवतुप् अत्र डित्यनुबन्धकरणसामर्थ्यात् टिलोपः प्रतिपद्यते ।

२— किशोरः = अत्र किम्पूर्वकं शृ हिंसायां इत्यस्माद्धातोः ओरन्प्रत्ययः टिलोपोनिपात्यते तथा च किमो मकारस्यापि लोपे सति रूपसिद्धिः

३— सहोरः = षह मर्षणे धातोः ओरन् प्रत्ययः तथा च प्रत्ययात्पूर्वं धात्वादेः षः सः इत्यनेन षत्वस्य सत्वम् ।

हिन्दी:— किशोरादि शब्द ओरन् प्रत्ययान्त पढ़े जाते हैं ।

### (६६) कपिगडिगण्डिकटिपटिभ्य ओलच् ।

अर्थ:— कपि सञ्चलने, गडसेचने, गडि वदनैकदेशे, कटे वर्षा वरणयोः, पट गतौ इत्येतेभ्यो धातुभ्य ओलच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— कपोलः = मुखैकदेशः । गडोलः = गुडकः, वदनैकदेशः, आम शर्करा । गण्डोलः = गुडकः, वदनैकदेशः, पूरितमुखम् आमशर्करा । कटोलः = कटुश्चपलः, तित्तस्वादुः, चाण्डालः । पटोलः = फल विशेषः, परवल इति भाषायाम् वस्त्रभेदो वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— कम्पते चलति स कपोलः, वदनैकदेशो वा । सूत्रे निर्देशादेव नलोपः । गडति सिंचति स गडोलः । गण्डति स गण्डोलः, वदनैकदेशो वा । गडोलगण्डोलौ वा । कटति वर्षत्यावृणोति वा स कटोलः, कटुश्चाण्डालो वा । पटति गच्छति स पटोलः, फलविशेषो वस्त्रविशेषो वा ।

बाहुलकात्— कण्डति माद्यतीति कण्डोलः, चाण्डालो वा ।।

हिन्दी:— कपि आदि धातुओं से ओलच् प्रत्यय होता है ।

### (६७) मीनातेरुरन् ।

अर्थ:— मीञ् हिंसायाम् धातोः ऊरन् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्:— मयूरः = अहिभुक्, पुष्पविशेषः, कविविशेषः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— मीनाति हन्तीति मयूरः, पक्षिविशेषो वा ।

बाहुलवचनात्— मीनातेरात्त्वनिषेधः, धातोर्गुणादेशः ।।

हिन्दी:— मीञ् धातु से ऊरन् प्रत्यय होता है ।

### (६८) स्यन्देः सम्प्रसारणं च ।

अर्थ:— ऊरन्नित्युनवर्त्तते । स्यन्दू प्रस्रवणे इत्येतस्माद्धातोः ऊरन् प्रत्ययो भवति धातोश्च सम्प्रसारणं जायते

उदाहरणम्:— सिन्दूरम् = रक्त चूर्णं वृक्षविशेषो वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— स्यन्दते प्रस्रवति तत् सिन्दूरम्, रक्तचूर्णं वृक्षभेदो वा । ऊरन्प्रत्यये यकारस्य संप्रसारणम् ।।

हिन्दी:— स्यन्दू धातु से ऊरन् प्रत्यय होता है और उसको सम्प्रसारण भी होता है ।



(६६) सितनिगमिसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन् ।

अर्थः— वक्ष्यति मुनिवर आप्नोतेर्ह्रस्वश्च । तत्र यावत् तुत्रधिकारः । सिञ् बन्धने, तनु विस्तारे, गम्लृगतौ, मसी परिणामे, षच समवाये, अव गतिरक्षणाद्यर्थेषु, डुधाञ् धारणपोषणयोः, क्रुश आह्वाने रोदने च इत्येतेभ्यो धातुभ्यस्तुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— सेतुः = समुद्रः, उन्नतमार्गः, सीमाचिह्नम्, संकीर्णगिरिपथः, सीमा । अवरोधः, निश्चितविधिः, ओम्शब्दः । तन्तुः = सूत्रम्, सन्ततिः, मकरः, परमात्मा, ऊर्णनाभिः जालम् । गन्तुः = पथिकः, कामुकः । मस्तुः = दधिजलम्, तक्रम् । सक्तुः = पक्वयवादिचूर्णम् । ओतुः = विडालः । धातुः = सुवर्णादिकम्, शरीरस्थवातादिः, मूलभागः रसः, त्रिदोषकम्, खनिजवस्तु, क्रियामूलम्, आत्मा, परमात्मा, ज्ञानेन्द्रियम्, अस्थि । क्रोष्टुः = शृगालः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—सिनोति बध्नातीति सेतुः, समुद्रो वा । तितुत्रतथ० (७/२/६) इतीट् निषेधः । तनोति विस्तृणोतीति तन्तुः, सूत्रं वा । वरामुत्तमां विद्यां तनोति स वरतन्तुः मुनिः । वरतन्तुना प्रोक्तो 'वारतन्तवीयो' ग्रन्थः । गच्छतीति गन्तुः, पथिको वा । समन्ताद् गच्छति भ्रमतीति आगन्तुः, अभ्यागतो वा । मस्यति परिणमतीति मस्तुः, दधनि निस्सृतमुदकं वा । सच्यन्ते समवेताः क्रियन्ते ते सक्तवः, पक्वयवादिचूर्णं वा । अवति रक्षणादिकं करोति स ओतुः, विडालो वा । (बाहुलकादङ्कित्यपि) 'अव' धातोः ज्वरत्वर० (६/४/२०) इति सूत्रेणोपधा वकारयोरुट् । दधाति धरति पोषति वा स धातुः, अश्मनो विकारः सुवर्णादिः शरीरस्थवातादिर्वा । क्रोशत्याह्वयति रोदिति वा सं क्रोष्टुः, क्रोष्टा शृगालो वा ।।

हिन्दीः— सिञ् आदि धातुओं से तुन् प्रत्यय होता है ।

(७०) वसेरगारे णिच्च ।

अर्थः— वस निवासे इत्येतस्माद्धातोः तुन् प्रत्ययो भवति स च णित् जायतेऽगारे ऽभिधेये ।

उदाहरणम्— वास्तु = गृहम्, भवनभूखण्डम् । वस्तु = द्रव्यम्, वैभवम्, सम्पत्तिः, प्रकृतिः, सामग्री, योजना, वास्तविकम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— वसन्ति प्राणिनो यत्र तद् वास्तु, गृहं वा । अगारादन्यत्र णित्त्वाभावः । वसन्ति येन तद् वस्तु, द्रव्यं वा ।।

हिन्दी:— अगार वाचक होने पर वस धातु से तुन् प्रत्यय होता है और वह णित् हो जाता है।

### (७१) पः किच्च ।

अर्थ:— पा पाने इत्येतस्माद्धातोः तुन् प्रत्ययो भवति स च कित् जायते ।

उदाहरणम् :— पीतुः<sup>१</sup> = अग्निः सूर्यो यूथपतिः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—पिबत्युदकादिकं पाति प्राणिनो रक्षति वा स पीतुः, अग्निः सूर्यो वा । कित्वादीत्वम् ॥

हिन्दी:— पा धातु से तुन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### (७२) अर्त्तेश्च तुः ।

अर्थ:— ऋगतौ इत्येतस्माद्धातोः तुः प्रत्ययो भवति स च कित् जायते ।

उदाहरणम्:— ऋतुः = वसन्तादिः, स्त्रीणां, रजोदर्शनसमयः, युगारम्भः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—चकारात्तुः किद्भवति । पुनः पुनर्ऋच्छति गच्छत्यागच्छतीति ऋतुः, वसन्तादिः स्त्रीणां रजःपतनकालो वा ॥

हिन्दी:— ऋ धातु से तु प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

### (७३) कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च ।

अर्थ:— कमु कान्तौ, मनु अवबोधने, जनीप्रादुर्भावे, गै शब्दे, भा दीप्तौ, या प्रापणे, हि गतौ वृद्धौ च इत्येतेभ्यो धातुभ्यस्तुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— कन्तुः = कामः चित्तं धान्यं कुरिसम् । मन्तुः = अपराधः, मनुष्यः, मनुष्यजातिः, बुद्धिः । जन्तुः = जीवः, पशुः, आत्मा, व्यक्तिः निकृष्टपशुः । गातुः = गाथकः, गीतम्, गायकः, गन्धर्वः, पिकः, भ्रमरः । भातुः = सूर्यः । यातुः = अध्वगः, कालः, वायुः, पिशाचः, राक्षसः । हेतुः = कारणम्, उद्देश्यम्, प्रयोजनम्, उपकरणम्, तर्कम्, तर्कशास्त्रम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— कामयते येन स कन्तुः, कामश्चित्तं वा । मन्यते जानाति वा येन स मन्तुः, अपराधो वा । जन्यते शरीरादिधारणेन प्रार्दुर्भवति स जन्तुः जीवः । गायति षड्जादिस्वरान् आलापयति स गातुः गाथकः, गाते गच्छतीति गातुः, पथिको वा भृंगगन्धर्वो वा । भाति प्रकाशयतीति भातुः, सूर्यो

१— पीतुः = अत्र घुमास्थागापाजहातिसां उलि इत्यनेन आकारस्य ईत्वम् ।

वा । याति प्रापयतीति यातुः, अध्वगः कालो वा । हिनोति येन यो वा कार्यरूपेण वर्धतेऽसौ हेतुः कारणम् ।।

हिन्दीः— कमु आदि धातुओं से तु प्रत्यय होता है ।

### (७४) चायः की ।

अर्थः—चायृ पूजा निशामनयोः इत्येतस्माद्धातोः तुः प्रत्ययो भवति । धातोश्च सर्वादेशः 'की' जायते ।

उदाहरणम् :—केतुः = ग्रहः, पताका, प्रमुखः धूमकेतुः, चिहनम्, उज्ज्वलता प्रकाश रश्मिः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—चायते पूजयति निशामयति श्रावयति वा स केतुः, ग्रहः पताका वा । धूमकेतुः उत्पातः ।।

हिन्दीः— चायृ धातु से तु प्रत्यय होता है और धातु को 'की' सर्वादेश हो जाता है ।

### (७५) आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ।

अर्थः— आप्लृ व्याप्तौ इत्येतस्माद्धातोः तुः प्रत्ययो भवति धातोश्च ह्रस्वो जायते ।

उदाहरणम्:— अप्तुः = शरीरम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—आप्नोति व्याप्नोति सर्वान् पदार्थानिति अप्तुः, शरीरं वा । तुप्रत्यये 'आप्लृ' धातोर्ह्रस्वत्वम् ।।

हिन्दीः— आप्लृ धातु से तु प्रत्यय होता है और धातु को ह्रस्वादेश हो जाता है ।

### (७६) कृञः कतुः ।

अर्थः— डुकृञ् करणे इत्येतस्माद्धातोः, कतुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— क्रतुः = बुद्धिर्यज्ञः, शक्तिः, योग्यता, विष्णुविशेषणम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—'कृञ्' धातोः कतुः प्रत्ययो भवति । यः क्रियते यया करोति वेति क्रतुः, प्रज्ञा यज्ञो वा । कित्वाद् गुणाभावे यणादेशः ।

हिन्दीः— कृ धातु से कतु प्रत्यय होता है ।

## (७७) एधिवह्योश्चतुः ।

अर्थः— एध वृद्धौ, वह प्राणणे इत्येताभ्यां धातुभ्यां चतुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— एधतुः = पुरुषः, अग्निः । वहतुः = अनङ्वान्, बलीबर्दः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—एधते वद्धतेऽसौ एधतुः, पुरुषो वा । वहति भारमिति वहतुः, अनङ्वान् वा । चित्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

हिन्दीः— एध और वह धातुओं से चतु प्रत्यय होता है ।

## (७८) जीवेरातुः ।

अर्थः— जीव प्राणधारणे धातोः आतुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— जीवातुः = जीवनम् औषधं, भोजनं, प्राणः, पुनर्जीवनम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—जीव्यते येन यो वा जीवति स जीवातुः, जीवनम् औषधं वा ॥

हिन्दीः— जीव धातु से आतु प्रत्यय होता है ।

## (७९) आतृकन् वृद्धिश्च ।

अर्थः— जीव धातोः आतृकन् प्रत्ययो भवति तस्य च धातोर्वृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्— जैवातृकः = आयुष्मान्, शशी, कर्पूरः, सुतः, औषधम्, कृषीवलः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— 'जीव' धातोरातृकन् प्रत्ययस्तस्मिन् सति वृद्धिश्च भवति । यो जीवति पूर्णावस्थापर्यन्तं स जैवातृकः आयुष्मान् निशाकरो वा ॥

हिन्दीः— जीव धातु से आतृकन् प्रत्यय होता है और धातु को वृद्धि हो जाती है ।

## (८०) कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्य ऊः स्त्रियाम् ।

अर्थः— कृष विलेखने, चमु अदने, तनुविस्तारे धनधान्ये, सृजविसर्गे, खर्ज पूजायाम्, इत्येतेभ्यो धातुभ्य ऊः प्रत्ययो भवति स्त्रियाम् = स्त्रीलिंगाभिधेये । वक्ष्यत्यग्रे "दरिद्रातेर्यालोपश्चेति" सूत्रम् । तत्र पर्यन्तमूप्रत्ययाधिकारः प्रवर्तते ।

उदाहरणम्— कर्षूः = शुष्कगोमयोऽग्निर्नदी वा । चमूः = शत्रुभक्षिणी सेना, सेना भागविशेषः । तनूः = शरीरम् । धनूः = शस्त्रम् । सर्जूः = वैश्यः । खर्जूः = कण्डूः, खाज इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कृष्णादिभ्य ऊः प्रत्ययः । कर्षत्याकर्षति पदार्थानिति कर्षूः, शुष्कगोमयः अग्निर्नदी वा । चमति भक्षयतीति चमूः, शत्रुभक्षिणी सेना वा । तनोति कार्याणि येन (यया वा) वा तनूः, शरीरं वा । दधातिधनमर्जयति (येन) स धनूः, शस्त्रं वा । सर्जति उपार्जति कार्याणीति सर्जूः, वैश्यो वा । खर्जति पीडयतीति खर्जूः, कण्डूवा ।।

हिन्दीः— कृष आदि धातुओं से स्त्रीलिंग में ऊ प्रत्यय होता है ।

### (८१) मृजेर्गुणश्च ।

अर्थः— मृजूष् शुद्धौ इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति धातोश्च गुणो जायते ।

उदाहरणम्— मर्जूः = शुद्धिः रजकः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—मार्ष्टि शोधयतीति मर्जूः, शुद्धिर्वा । ऊप्रत्ययस्याकित्त्वान्नित्यापि प्राप्ता वृद्धिर्गुणेन बाध्यते ।।

हिन्दीः— मृजूष् धातु से ऊ प्रत्यय होकर धातु को गुण हो जाता है ।

### (८२) खड्ङ्ङ्वा ।

अर्थः— खड् भेदने इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति प्रत्ययस्य च वा डुङ् आगमो जायते ।

उदाहरणम् :— खड्ङ्ङुः खड्ङ्ङुः = बाहु जडघयोराभूषणम् । मृतशय्या वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—खडति भिनत्तीति खड्ङ्ङुः, खड्ङ्ङुः, बाहुजडघयोराभूषणं मृतशय्या वा ।।

हिन्दीः— खड् धातु से ऊ प्रत्यय होता है और प्रत्यय को विकल्प से डुङ् आगम हो जाता है ।

### (८३) वहर्धश्च ।

अर्थः— वह प्रापणे इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति धातोर्हकारस्य च धकारादेशो जायते ।

उदाहरणम् :— वधूः = नवोढा स्त्री, पत्नी, पुत्रवधूः अनुजभार्या, पशुस्त्री ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—वहति सुखानि प्रापयतीति वधूः, नवोढा स्त्री वा ।।

हिन्दीः— वह धातु से ऊः प्रत्यय होता है और धातु के हकार को धकारादेश हो जाता है ।

## ( ८४ ) कषेश्छश्च ।

अर्थः— कष हिंसायाम् इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति धातोश्च छकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— कच्छूः = पामा, खाज इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कषति हिनस्ति दुःखयतीति कच्छूः, पामा वा । 'खाज' इति प्रसिद्धा । षकारस्य छकारः ॥

हिन्दीः— कष धातु से ऊ प्रत्यय होता है और धातु को छकारादेश हो जाता है ।

## ( ८५ ) णित्कशिपद्यर्तेः ।

अर्थः— कश गतिशासनयोः, पद गतौ, ऋ गति प्रापणयोः, इत्येतेभ्यो धातुभ्य ऊः प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययो णित् सम्पद्यते

उदाहरणम्—काशूः = रुग्णः, अव्यक्तवचनम्, भक्तिः, प्रभा भल्लविशेषः । पादूः = उपानाहौ । आरूः = पिंगलः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—कश्यादिभ्य ऊ णिद्भवति । कष्टे गच्छति शास्ति वेति काशूः, विकलधातुर्जनः शक्तिर्वा । पद्यन्ते गच्छन्ति यया सा पादूः, उपानहौ वा । ऋच्छति प्राप्नोति स आरूः, पिंगलो वा ॥

हिन्दीः— कश आदि धातुओं से ऊ प्रत्यय होता है । और वह णित् हो जाता है ।

## ( ८६ ) अणो डश्च ।

अर्थः— अण शब्दे इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति धातोरन्तस्य च डकारादेशो जायते । ऊ प्रत्ययश्च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— आडूः = नौका ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—अणति शब्दयतीति आडूः, जलगामिद्रव्यं वा । णस्य डः ॥

हिन्दीः— अण धातु से ऊ प्रत्यय होता है और धातु के अन्त को डकारादेश हो जाता है तथा ऊ प्रत्यय णित् होता है ।

( ८७ ) नञिलम्बेर्नलोपश्च ।

अर्थः— लबि शब्दे इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्यो भवति नञि उपपदे सति ।  
तस्य धातोर्नकारस्य लोपो जायते तथा च ऊ प्रत्ययो णित् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— अलाबूः<sup>१</sup> = तुम्बी

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—ऊप्रत्यये लम्बधातोर्नलोपो भवति । न लम्बतेऽथो  
न स्रवति गच्छति सा अलाबूः, तुम्बी वा ॥

हिन्दीः— न उपपद होने पर लबिधातु से ऊ प्रत्यय होकर नोपपद के  
नू का लोप होता है तथा धातु के नुम् का लोप भी हो जाता है ।

( ८८ ) के श्र एरङ् चास्य ।

अर्थः— क उपपदे सति शृ हिंसायाम् धातोः ऊः प्रत्ययो भवति धातोश्च  
एरङ् आदेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— कशेरुः = तृणकन्दम्, रीढ़ की अस्थि, तृण विशेषः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—ककारोपपदात् 'शृ' धातोरुप्रत्ययस्तस्मिन्  
प्रकृतेरेरङ्आदेशः । कं शास्ति स कशेरुः, तृणकन्दं वा; बहुलवचनादुप्रत्ययस्य  
ह्रस्वे कृते कशेरुः इति ह्रस्वान्तोऽपि दृश्यते ॥

हिन्दीः— क उपपद होने पर शृ धातु से ऊ प्रत्यय होकर धातु को  
एरङ् आदेश हो जाता है ।

( ८९ ) त्रो दुट् च ।

अर्थः— तृ प्लवन संतरणयोः इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति तथा  
च धातोर्दुडागमो जायते ।

उदाहरणम्— तर्दूः = दारुकरः पुरुषो, यष्टिर्वा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः—तरति येन यया वा सा तर्दूः, दारुहस्तः पुरुषो  
यष्टिर्वा । प्रत्ययस्य दुडागमः ॥

हिन्दीः— तृ धातु से ऊ प्रत्यय होता है और धातु को दुडागम हो जाता  
है ।

१— अलाबूः = न + लम्ब + ऊ = अ + लब् + ऊः ।

अलाबूः अत्र णिद्वद् भावेन "अत उपधाया" इति वृद्धौ रूपसिद्धिः ।

## (६०) दरिद्रातेर्यालोपश्च ।

अर्थः— दरिद्रा दुर्गतौ इत्येतस्माद्धातोः ऊः प्रत्ययो भवति । धातोश्च इकाराकारवर्णयोर्लोपो जायते ।

उदाहरणम्— दर्द्रः = कुष्ठभेदः, पामा, त्वग्रोगः ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— 'दरिद्रा' धातोरुप्रत्यये 'इ' 'आ' इत्येतयोर्वर्णयोर्लोपः । दरिद्राति दुर्गतिं करोतीति दर्द्रः, कुष्ठभेदो वा । मृगय्यादित्वात् (उ० १/३७) 'रि' 'आ' इत्यनयोर्लोपे दद्रुः इत्यपि सिद्धम् । अत्र सूत्रेऽपि 'रि' 'आ' इत्येतयोर्लोपे दद्रूरिति भवति ।।

हिन्दीः— दरिद्रा धातु से ऊ प्रत्यय होता है और धातु के इकार व आकार वर्णों का लोप हो जाता है ।

## (६१) नृतिशृध्योः कूः ।

अर्थः— कूप्रत्ययाधिकारो ऽ न्दृम्फू जम्बूकेति यावत् । नृती गात्रविक्षेपे, शृधु शब्दकुत्सायाम् इत्येताभ्यां धातुभ्यां कूः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— नृतूः = नर्तकः । शृधूः = अपानवायुः, बुद्धिः, गुदा ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— नृत्यतीति नृतूः, नर्तकः (वा) । शर्धते कुत्सितं शब्दयतीति शृधूः, अपानवायुर्वा । प्रत्ययस्य कित्वाद् गुणनिषेधः ।।

हिन्दीः— नृती तथा शृधु धातुओं से कू प्रत्यय होता है ।

## (६२) ऋतेरम् च ।

अर्थः— ऋत इति सौत्रिको धातुः घृणार्थे । एतस्मात् कूः प्रत्ययो भवति । धातोश्चामागमो जायते ।

उदाहरणम्— रतूः<sup>१</sup> = सत्यं, दिव्यनदी ।

स्वामिदयानन्द वृत्तिः— 'ऋत' इति सौत्रो धातुः । ऋतीयते घृणां करोतीति रतूः, सत्यं दिव्यनदी वा । धातोरमागमः ।

हिन्दीः— सूत्र पठित ऋत धातु से कू प्रत्यय होकर धातु को अमागम हो जाता है ।

१— रतूः = ऋत + कूः

ऋ + अम् + त् + ऊः

रतूः अत्र कित्वाद् गुण निषेधे सति यणादेशे रूप सिद्धिः ।



(६३) अन्दूदृम्फूजम्बूकम्बूकफेलूककन्धूदिधिषूः ।

अर्थः— अदि बन्धने, दृम्फ उत्क्लेशो, जमु अदने, कमु कान्तौ, कफपूर्वकं ला आदाने, कर्क पूर्वकं डुधाञ् धारणपोषणयोः, दिधि पूर्व षो अन्तकर्मणि इत्येतेभ्यो धातुभ्यो यथासंख्यं अन्दूः दृम्फूः, जम्बूः, कम्बूः, कफेलूः, कर्कन्धूः दिधिषूः इत्येते शब्दाः कूः प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— अन्दूः = हस्तिबन्धनी, शृंखला, जञ्जीर इति भाषायाम्, नूपुरम् । दृम्फूः = सर्प जातिः । जम्बूः = जम्बुवृक्षः, जम्बु फलम्, द्वीपविशेषः । कम्बूः = चौरः । कफेलूः = औषधविशेषः । कर्कन्धूः = बदरीफलम् । दिधिषूः = पूनर्भूः पुनर्विवाहिता स्त्री, अविवाहिताग्रजा यस्याश्चानुजा विवाहिता

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अन्दूप्रभृतयः शब्दाः कूप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अन्दति बध्नाति येन यया वा सा अन्दूः, हस्तिबन्धनी शृंखला वा । 'जंजीर' इति प्रसिद्धा । दृम्फत्युत्कृष्टं क्लेशं ददातीति दृम्फूः, सर्पजातिर्वा । (निपातनादनुनासिक लोपाभावः ।) जमन्ति भक्षयन्ति यां सा जम्बूः, वृक्षविशेषजातिर्वा । धातोर्बुगागमः । बाहुलकादूप्रत्ययस्य ह्रस्वे कृते जम्बुः इत्यपि दृश्यते । कामयते स कम्बूः, परद्रव्यापहारी वा । धातोर्बुक् । कफं श्लेष्माणं लात्याददातीति कफेलूः, ओषधिविशेषो वा । एकारान्तत्वं कफशब्दस्य निपातनम् । कर्क कण्टकं दधाति धरतीति कर्कन्धूः, बदरीफलं वा । कित्त्वादाकारलोपः उपपदस्य नुगागमो निपातनम् । दिधिं धैर्यमिन्द्रियदौर्बल्यात् स्यति त्यजतीति दिधिषूः, पुनर्भूवा । निपातनात् षत्वम् ।।

हिन्दीः— अन्दू आदि शब्द कू प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

(६४) मृग्रोरुतिः ।

अर्थः—मृङ् प्राणत्यागे, गृ निगरणे इत्येताभ्यां धातुभ्यां उतिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— मरुत् = पवनः, मनुष्यः, वायुदेवः, देवता क्षुपविशेषः । गरुत् = गरुड़ पक्षी, शकुनिपक्षाणि, निगरणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रियते मारयति वा स मरुत्, मनुष्यजातिः पवनो वा । गिरति निगलतीति गरुत्, पक्षी वा ॥

हिन्दीः— मृङ् तथा गृ धातुओं से उति प्रत्यय होता है ।

### (६५) प्रो मुट् च ।

अर्थः— उति प्रत्ययोऽनुवर्ततेऽत्र गृ निगरणे धातोरुतिः प्रत्ययो भवति प्रत्ययस्य च मुडागमो जायते ।

उदाहरणम् :— गर्मुत् = सुवर्णम्, तृणम्, नरकुलभेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गिरति येन तत् गर्मुत्, सुवर्णं तृणजातिभेदो वा ॥

हिन्दीः— गृ धातु से उति प्रत्यय होता है और प्रत्यय को मुडागम हो जाता है ।

### (६६) हृषेरुलच् ।

अर्थः— हृष तुष्टौ इत्यस्माद्धातोः उलच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— हर्षुलः = मृगः, कामः, स्नेही ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हृष्यति तुष्टो भवतीति हर्षुलः, मृगः कामी वा ।

बाहुलकात्— चटति वर्षत्यावृणोति वा स चटुलः शोभनो वा ॥

हिन्दीः— हृष धातु से उलच् प्रत्यय होता है ।

### (६७) हस्रुहियुषिभ्य इतिः ।

अर्थः— ह्रञ् हरणे, सृगतौ रुहबीजजन्मनि प्रादुर्भावे च, युष सौत्रो धातुः, इत्येतेभ्यो धातुभ्य इतिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— हरित् = दिक्, वर्णः, तृणम्, अश्वविशेषः, सिंहः, सूर्यः, विष्णुः । सरित् = नदी, सूत्रम् । रोहित् = लताविशेषः, हरिणीवा । योषित् = स्त्री, तरुणी, बाला ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आहरति गृह्णाति द्रव्यमिति हरित्, दिक् वर्णस्तृणमश्वविशेषो वा । सरति गच्छतीति सरित्, नदी वा । रोहति प्रादुर्भवतीति

रोहित्, लताविशिष्टा हरिणी वा । 'युष' इति सौत्रो धातुः, अथवा 'जुष' इत्यस्य वर्णविकारेण पाठः । (युष्यते) जुष्यते सेव्यते प्रीणयति वा सा योषित्, स्त्री वा ॥

हिन्दी:— हज् आदि धातुओं से इति प्रत्यय होता है ।

### (६८) ताडेर्णिलुक् च ।

अर्थ:—उपरिसूत्रादितिप्रत्ययानुवृत्तिरागच्छति । तड आघाते इत्येतस्माद् प्यन्ताद् धातोः इतिः प्रत्ययो भवति णेर्लुक् च जायते ।

उदाहरणम्:— तडित् = विद्युत्

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ताडयति पीडयतीति तडित्, विद्युद्वा । प्रत्ययलक्षणेन णिलोपेऽपि वृद्धिः स्यादिति तुग्विधीयते ॥

हिन्दी:— तड प्यन्त धातु से इति प्रत्यय होता है और णि का लुक् हो जाता है ।

### (६९) शमेर्ढः ।

अर्थ:— शमु उपशमे इत्येतस्माद्धातोः ढः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— शण्डः = वृषभः, सांङ् इति भाषायाम् नपुंसकम् मत्तपुरुषः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शाम्यति शान्तो भवतीति शण्डः, स्वतन्त्रो वृषभः

'सांङ्' इति प्रसिद्धः, नपुंसकं वा ॥

हिन्दी:— शमु धातु से 'ढ' प्रत्यय होता है ।

### (१००) कमेरठः ।

अर्थ:— कमु कान्तौ इत्येतस्माद्धातोः अठः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— कमठः = कच्छपः, पात्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कामयतेऽसौ कमठः, कच्छपो वा; कमठमिति भाण्डभेदो वा ।

बाहुलकात्—जीर्यत्यवस्थाहीनो भवतीति जरठः, पाण्डुरंगो वा । (शम्यतीति) शमठः, शान्तो वा ॥

हिन्दी:— कमु धातु से अठ प्रत्यय होता है ।

### (१०१) रमेवृद्धिश्च ।

अर्थ:— अठ इत्यनुवर्तते । रमु क्रीडायाम् इत्यस्माद्धातोः अठः प्रत्ययो भवति । धातोश्चवृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्:— रामठम् = हिंगुः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रमतेऽस्मिन्निति रामठं, हिङ्गुर्वा । अठप्रत्यये 'रम' धातोर्वृद्धिः ॥

हिन्दी:— रमु धातु से अठ प्रत्यय होता है और धातु को वृद्धि होती है ।

### (१०२) शमेः खः

अर्थ:— शमु उपशमे इत्येतस्माद्धातोः खः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— शंखः = निधिभेदः, जलजं, ललाटास्थि बहुलवचनात् खकारस्य न इत्संज्ञा सम्पद्यते । अन्येऽपि शंखार्थाः = करिदन्तयोर्मध्यभागः, मारुवाद्यम्, राक्षसविशेषः स्मृतिकार विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शाम्यतीति शंखः, निधिभेदः, जलजं, ललाटास्थि-वा । बहुलवचनात् खकारस्येत्संज्ञा (ईनादेशश्च) न भवति ॥

हिन्दी:— शमु से ख प्रत्यय होता है ।

### (१०३) कणेषुः ।

अर्थ:— कण शब्दे इत्येतस्माद्धातोः ठः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम् :— कण्ठः = गलः, ध्वनिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कणति येन शब्दं करोतीति कण्ठः गलो, ध्वनिर्वा ॥

हिन्दी:— कण धातु से ठ प्रत्यय होता है ।

### (१०४) कलस्तृपश्च ।

अर्थ:—वक्ष्यत्याचार्यश्छोगुग्घस्वश्चेति सूत्रम् । तत्र पर्यन्तं कल-प्रत्ययाधिकारः प्रवर्तते । तृप प्रीणने इत्यस्माद्धातोः कलप्रत्ययो भवति चकारात् तृफ धातोश्चापि कल प्रत्ययो जायते ।

उदाहरणम् :— तृपला = लता । तृफला = त्रिफला इत्योषधिविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘तृप’ धातोः कलप्रत्ययः । तृप्यति यया सा तृपला, लता वा । अत्र सूत्रे चकारग्रहणात् ‘तृफ’ धातोरपि कल प्रत्ययः, तेन तृफला इत्यपि सिद्धम् । तृफला, त्रिफला इत्योषधिविशेषपर्यायौ ।

बाहुलकात्— काम्यतेऽसौ कमलः; कमलं पद्यं वा, उदकं ताम्रमौषधं च । मृगभेदः कमलः, कमला श्रीः पतिप्रिया वा । मण्डति भूषयति प्रतिपादयति वा स मण्डलः; मण्डलं चक्राकारं देशभेदो बिम्बं कदम्बः कुष्ठं यज्ञभेदः श्वा च । कुण्डति दहतीति कुण्डलम्, वलयं पाशं कर्णभूषणं वा । पटति गच्छतीति पटलः अक्षिरोगः, तिलकं वा । छ्यति छिनत्ति पराभिप्रायमिति छलम्, (व्याजो वा) इत्यादि ॥

हिन्दीः—तृप और तृफ धातुओं से कल प्रत्यय होता है ।

### (१०५) शपेर्बश्च ।

अर्थः— शप आक्रोशे इत्येतस्माद्धातोः कल प्रत्ययो भवति धातुपकारस्य च बकारादेशो जायते ।

उदाहरणम् :— शबलः, वर्णभेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शपत्याक्रोशति स शबलः, वर्णभेदो वा ॥

हिन्दीः— शप धातु से कल प्रत्यय होकर धातु के पकार को बकारादेश होता है ।

### (१०६) वृषादिभ्यश्चित् ।

अर्थः— वृषादिभ्यः धातुभ्यः कलः प्रत्ययो भवति स च चिज्जायते ।

उदाहरणम्— वृषलः = शूद्रः, हयः, लशुनम्, दुष्टः अधार्मिकः । कुशलः = निपुणः समृद्धः, यथार्थवादी, अभिज्ञः । पललम् = तिलचूर्णं पक्वं मांसं वा । कालमापमानम्, तरलद्रव्यमानम्, कर्षतोलम् । देवलः = धार्मिकः पुरुषः, निम्नकोटि ब्राह्मणः । सरलः = अकुटिलः, उदारः, सत्यपरः । धवलः = श्वेतः, पवित्रः, सुन्दरः, वृषभश्रेष्ठः चीनकपूरम् । वृषादीनाञ्चेति आकृतिगणः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृषादिधातुभ्यः कलप्रत्ययश्चिद् भवति । वर्षति सिञ्चतीति वृषलः, शूद्रो वा; तस्य स्त्री वृषली । कोशति श्लिष्यति व्यवहर्तुं जानातीति वा कुशलः निपुणः; कुशलं क्षेममिति वा । बाहुलकाद् गुणे कोशलः इति, देशभेदो वा । पलति गच्छति येन तत् पललम्, तिलचूर्णं पक्वं मांसं वा । दीव्यत्यधर्मिणो विजिगीषतीति देवलः धार्मिकः । सरति सर्वत्र गच्छतीति सरलः अकुटिलः, उदारो वा । धावति गच्छति शुद्धो भवति वा स धवलः श्वेतः, शुद्धो वा । 'धाबु' धातोर्बाहुलकाद्घस्वत्वम् । मुस्यति खण्डयति मोषयति चोरयति वा स मुसलः, मुषलो वा । मुशलं, मुसलमिति लोहाग्रभागिकुट्टनसाधनम् । मुषलश्चौरो वा । वृषादेराकृतिगणत्वात्—केवल—कबल—तरल—अनल—जम्भल—मेशल—मर्दलादयोऽपि शब्दा द्रष्टव्याः ।।

हिन्दीः— वृष आदि धातुओं से कल प्रत्यय होता है और वह चित् हो जाता है ।

### (१०७) कमेर्बुक् ।

अर्थः— कमु कान्तौ इत्यस्माद्धातोः कल प्रत्ययो भवति धातोश्च बुगागमो जायते ।

उदाहरणम्—कम्बलः—ऊर्णामयः प्रावारः, उदकं, सारना, मृगविशेषः, भित्तिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—काम्यतेऽभीप्स्यते यः स कम्बलः ऊर्णाविकारः, उदकं वा । 'कम' धातोः कलप्रत्यये बुक् (आगमः) ।।

हिन्दीः—कम धातु से कल प्रत्यय होता है और धातु को बुगागम हो जाता है ।

### (१०८) लंगेर्वृद्धिश्च ।

अर्थः— लङि गतौ इत्येतस्माद्धातोः कल प्रत्ययो भवति धातोश्च वृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्— लाङ्गलम् = हलम्, ताडपादपः, शिश्नम् । पुष्प भेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लंगन्ति प्राप्नुवन्त्यन्नादिकं येन तत् लाङ्गलम्, हलं वा ।

बहुलवचनात्—कन्दत्याह्वयति सा कदली वृक्षभेदः, 'केला' इति प्रसिद्धा वा । बाहुलकाद्घातोर्नलोपः ॥

हिन्दीः— लगी धातु से कल प्रत्यय होता है और धातु को वृद्धि हो जाती है ।

### (१०६) कुटिकशिकौतिभ्यो मुट् च

अर्थः— कुट कौटिल्ये, कश गति शासनयोः, कु शब्दे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः

कलः प्रत्ययो भवति । प्रत्ययस्य च मुडागमो जायते ।

उदाहरणम्— कुट्मलम् = कलिका । कश्मलम् = पापम्, अकीर्तिकरम् ।  
कोमलः = मृदुः जलं मनोहरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुटादिभ्यो विहितस्य कलप्रत्ययस्य मुट् । कुटतीति कुट्मलः; बाहुलकात् कुण्डति दहतीति कुड्मलः, किञ्चिद्विकसितपुष्पनाम्नी वा । कष्टे गच्छति शास्ति वा स कश्मलः कश्मलं, कल्मषं पापं वा । कौति शब्दयतीति कोमलः, कोमलं, मृदु जलं वा ।

बाहुलकात्—पिङ्क्ते वर्णयतीति पिङ्गलः, वर्णभेदो वा ।

हिन्दीः— कुटादि धातुओं से कल प्रत्यय होता है और प्रत्यय को मुडागम हो जाता है ।

### (११०) मृजेष्टिलोपश्च ।

अर्थः— मृजूष् शुद्धौ इत्येतस्माद्घातोः कलप्रत्ययो भवति धातोश्च टिलोपो जायते ।

उदाहरणम्— मलम् = पुरीषं, पापं वा, धूलिः, गोमयम् कर्पूरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यन्मृज्यते शोध्यते तत् मलम्, पुरीषं पापं कृपणः पुरुषो वा ॥ 'मृज' धातोष्टिलोपः ॥

हिन्दीः—मृजूष् धातु से कल प्रत्यय होता है और धातु के टिभाग का लोप हो जाता है ।

## (१११) चुपेरच्चोपधायाः ।

अर्थः— चुप मन्दायांगतौ इत्येतस्माद्धातोः कलप्रत्ययो भवति ।  
धातोरुपधायाश्चादादेशो जायते ।

उदाहरणम्— चपलम् = चञ्चलम् क्षणिकं, शीघ्रं विचारशून्यः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चोपति मन्दं मन्दं गच्छति स चपलः, क्षणिकं शीघ्रं वा; चपला, पिप्पली विद्युद्वा । धातोरुकारस्याकारादेशः ।

हिन्दीः— चुप धातु से कल प्रत्यय होता है और धातु के उपधा को अदादेश हो जाता है ।

## (११२) शकिशम्योर्नित् ।

अर्थः— शकृ शक्तौ, शमु उपशमे इत्येताभ्यां धातुभ्यां कलः प्रत्ययो भवति स च नित् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— शकलम् = खण्डः, मत्स्यभेदः, बल्कलम् मत्स्यत्वक् ।  
शमलम् = अशुद्धम्, विष्टा, पापम्, नैतिकमलिनता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शक्नोतीति शकलः, खण्डो मत्स्यभेदो वा । शाम्यतीति शमलः, अशुद्धं वा ।

हिन्दीः— शकृ और शमु धातुओं से कल प्रत्यय होता है और वह नित् होता है ।

## (११३) छो गुग्घ्रस्वश्च ।

अर्थः— छो छेदने इत्यस्माद्धातोः कलप्रत्ययो भवति । धातोश्च गुगागमो ह्रस्वत्वं च जायते ।

उदाहरणम्— छगलः = छागो, बर्करो वा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—छ्वति छिनतीति छगलः, छागो बर्करो वा ।  
धातोरुगुगागमो ह्रस्वश्च ।।

हिन्दीः— छो धातु से कल प्रत्यय होता है और धातु को गुगागम व ह्रस्वभाव हो जाता है ।



(११४) जमन्ताड्डः ।

अर्थः— जम् इति प्रत्याहारग्रहणम् । अतएव जमडणन इत्येतेषु वर्णेषु एकोऽपिवर्णो यस्य धातोरन्ते तदन्ताद्धातोर्दः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— दण्डः = यष्टिः, लगुडः राजचिह्नम् करिशुण्डम्, कमलवृन्तम्, व्यूहः वशीकरणम् । रण्डा = विधवा, पुंश्चली, मूर्खा । खण्डः = विभागः शर्करा वा, अस्थि भंगम् ग्रन्थानुभागः, समुच्चयः, स्तनैकदोषः । भण्डः = ओदनजलम् । बण्डः = छिन्नकरः । अण्डः = प्राण्यंगावयवः, मृगनाभिः, वीर्यम्, शिवः । षण्डः = नपुंसकः, वनं, गोपः समूहोऽनडवान् । गण्डः = कपोलः, व्याधिविशेषः सन्धिः, ग्रन्थिः, चिह्नम्, मूत्राशयः नायकः, हयाभूषणैकभागः, चण्डः = हिंसकः तीव्रः, क्रोधी, उष्णम् सक्रियः । पण्डाः = नपुंसकः, बुद्धिः, बुद्धिमत्ता, ज्ञानम्, विज्ञानम् । फण्डः = पन्थाः, फण्डमुदरं वा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जमिति प्रत्याहारग्रहणम् । ज, म, ड, ण, न इत्येते वर्णा अन्ते यस्य तस्माड्डः प्रत्ययो भवति । बहुलवचनादित्संज्ञानिषेधः । दाम्यन्त्युपशाम्यन्त्यनेन स दण्डः, यष्टिभेदो वा । रमतेऽसौ रण्डा, विधवा नारी वा । खण्डतेऽवदीर्यतेऽसौ खण्डः विभागो, मिष्टभेदो वा 'खाण्ड' इति प्रसिद्धः, भिन्नः पदार्थो वा । मन्यते जानातीति मण्डः । 'मण्डा धात्री समाख्याता, मण्डं पक्वौदनोदकम् (इति) । वनति शब्दयति सम्भजति वा स वण्डः, छिन्नहस्तको वा । अमन्ति संप्रयोगं प्राप्नुवन्ति येन सः अण्डः प्राण्यंगावयवो वा । सनोति ददातीति षण्डः, नपुंसको वनं गोपः सङ्घातो वा । गच्छतीति गण्डः कपोलः, व्याधिविशेषो वा । चणति ददातीति चण्डः, हिंसकस्तीव्रो कोपना स्त्री चण्डी । 'चडि कोपे' इत्यस्य घञन्तोऽपि चण्डः क्रोधी । पणायति व्यवहरति स्तौति वा स पण्डः नपुंसकः; पण्डा बुद्धिर्वा । फणति गच्छत्यत्रेति फण्डः पन्थाः; फण्डम् उदरं वा ।।

हिन्दीः— जिस धातु के अन्त में जम् अर्थात् वर्गों के पञ्चमवर्ण में हो उससे ड प्रत्यय होता है ।

(११५) क्वादिभ्यः कित् ।

अर्थः—उप्रत्ययोऽनुवर्तते । कवर्गादिभ्यो धातुभ्यो उः प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—कुण्डम् = पत्यौजीविते परपुरुषात्समुद्भूतः पुत्रः, यज्ञाग्नि धारण पात्रविशेषः स्थानविशेषो वा, जलाधारविशेषो वा कमण्डलु । काण्डम् = अवसरः, अनुभागः, अंशः पर्वः, स्कन्धः, वृन्तम् । गुडः= इक्षुपाकः पिण्डम्, कन्दुकम् ग्रासः, करिवर्म घुण्डः= भ्रमरः ।।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कवर्गादिधातुभ्यो उः कित् भवति । कुणति शब्दयत्युपकरोति वा स कुण्डः, पत्यौ जीवति पुरुषान्तरादुत्पन्नः पुत्रो जलाधारविशेषो वा । कुण्डा कुण्डिका वा । काम्यते जनैस्तत् काण्डम् ग्रन्थैकदेशः परिमाणविशेषो वाणोऽवसरो वा । गवतेऽव्यक्तशब्दं करोतीति गुडः, गोल इक्षुपाको वा । घोणते भ्राम्यतीति घुण्डः, भ्रमरो वा ।

हिन्दीः— कवर्गादि धातुओं से उ प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

(११६) स्थाचतिमृजेरालज्वालजालीयचः ।

अर्थः— ष्टा गतिनिवृत्तौ, चतेयाचने, मृजूष् शुद्धौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो यथासंख्यं आलच्, वालञ्, आलीयच् प्रत्यया भवन्ति ।

उदाहरणम्:— स्थालम् = भोजनपात्रम्, थालइतिविख्यातम्, पाकयोग्यपात्रम् । चात्वालः = यज्ञकुण्डं दर्भो वा । मार्जालीयः = विडालः, शूद्रः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(तिष्ठतेरालच् ।) तिष्ठन्त्यस्मिन् तत् स्थालम्, पात्रभेदो वा 'थाल' इति प्रसिद्धम्; स्थाली सूपादिपचनी । गौरादित्वात् (अ० ४/१/४१) डीष् । 'चत्' धातोर्वालञ् । चतते याचतेऽसौ चात्वालः, चात्वालं यज्ञकुण्डं दर्भो वा । 'मृजे' रालीयच् । मार्ष्टीति मार्जालीयः, विडालो वा ।।

हिन्दीः— ष्टा आदि तीन धातुओं से यथासंख्य आलच् आदि तीन प्रत्यय होते हैं ।

(११७) पतिचण्डिभ्यामालञ् ।

अर्थः—पत्लु गतौ, चडि कोपे, इत्यंताभ्यां धातुभ्यां आलञ् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— पातालम् = पादतलदेशविशेषो वा, गर्तम्, छिद्रम्, वडवानलः । चाण्डालः = मातंगः, क्रोधी, अधमः, पतितः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पातालः, देश (विशेषः) (वा); पादस्य तले वर्तते इति वा पातालः । पृषोदरादित्वात् (अ० ६/३/१०८) सिद्धः । चण्डति कुप्यतीति चाण्डालः, मातंगो वा; चण्डं कुपितमलं भूषणमस्येति समासेऽपि चाण्डालः सिद्धः ॥

हिन्दीः— पत्लु और चडि धातुओं से आलञ् प्रत्यय होता है ।

(११८) तमिविशिविडिमृणिकुलिकपिपलिपञ्चिभ्यः कालन् ।

अर्थः— तमु काङ्क्षायाम्, विश प्रवेशने, विड आक्रोशे, मृण हिंसायाम्, कुल संख्याने बन्धुषु च, कपि सञ्चलने, पल गतौ, पचि व्यक्तोकरणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कालन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— तमालः = वृक्षविशेषः, खड्गः, चन्दनस्य साम्प्रदायिक-तिलकम् । विशालः = महान्, पुमान् । विडालः = मार्जारः । मृणालम् = पद्ममूलम्, सुगन्धिघासमूलम् । कुलालः = कुम्भकारः, वनकुक्कुटः । कपालम् = नृशिरो घटखण्डो वा । पलालम् = निष्फलानि, ब्रीहितृणानि, प्यार, पुआल इति प्रसिद्धम् । पञ्चालाः = देशविशेषाः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ताम्यन्ति काङ्क्षन्ति यं स तमालः, वृक्षभेदो वा । विशति सर्वत्रेति विशालः ।

‘विशाला मानिनी भार्या विशालः सुन्दरः पुमान् ।

विशालोज्जयिनी प्रोक्ता विशालं च बृहद् गृहम् ॥ (इति ॥)

विडत्याक्रोशतीति विडालः, मार्जारो वा; स्त्री विडाली । मृणति हिनस्तीति

मृणालः, मृणालं पदममूलं वा । कोलति सङ्घातयतीति कुलालः, कुम्भकारो वा । कम्पते येन तत् कपालम्, नृशिरो घटखण्डो वा । पत्यते प्राप्यतेऽसौ पलालः, निष्फलानि ब्रीहितृणानि वा 'पियार' इति प्रसिद्धम् । पञ्चति व्यक्तं करोतीति पञ्चालः, देशविशेषो वा ।

**बहुलवचनात्—** 'शो' धातोरपि कालन् । श्यन्ति सूक्ष्माणि कार्याणि कुर्वन्त्यत्र सा शाला, गृहम् (वा) ॥

**हिन्दीः—** तमु आदि धातुओं से कालन् प्रत्यय होता है ।

### (११६) पतेरंगच् पक्षिणि ।

**अर्थः—** गन्गाम्यद्योरिति सूत्रं वक्ष्यति, इत्येतस्मात्सूत्रात्प्राक् अंगच् प्रत्ययाधिकारो वेदितव्यः । पत्लृ गतौ इत्यस्माद्धातोरंगच् प्रत्ययो भवति पक्षिण्यभिधेये सति ।

**उदाहरणम् :—** पतंगः = पक्षी, सूर्यः, अग्निः अश्वः शलभः, शालिभेदः, पक्षिणि प्रोच्यमानेऽपि बाहुलकात् सामर्थ्यात् एतेऽन्येऽर्था अपि वाच्या भवन्ति ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः—**पक्षिण्यभिधेये 'पत' धातोरंगच् प्रत्ययो भवति । पतति गच्छतीति पतंगः पक्षी । पक्षिणीत्युच्यमानेऽपि बाहुलकात्— 'पतङ्गः सूर्योऽग्निरश्वः शलभः शालिभेदो वा' इत्यादीनामपि नामानि भवन्ति ॥

**हिन्दीः—** पत्लृ धातु से पक्षी अर्थ में अंगच् प्रत्यय होता है ।

### (१२०) तरत्यादिभ्यश्च ।

**अर्थः—**तृ प्लवन संतरणयोः इत्यादिभ्य आकृतिगणाख्येभ्यो धातुभ्योऽगच् प्रत्ययो भवति ।

**उदाहरणम् :—** तरंगः = ऊर्मिर्वस्त्रं, ग्रन्थाध्यायः, कूर्दनम् । लवंगः— ओषधिर्वा, लौंग इति भाषायाम् लवंगक्षुपः ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः—**तरति प्लवत्यनेन स तरङ्गः, जलोर्मिर्वस्त्रं भङ्गा वा । लुनात्यनेन स लवंग, ओषधिर्वा । तरत्याद्याकृतिगणः ॥

**हिन्दी :—** तृ आदि आकृति गणाख्य धातुओं से अंगच् प्रत्यय होता है ।

(१२१) विडादिभ्यः कित्।

अर्थः— विट् आक्रोशे इत्यादिभ्यो धातुभ्यांङ्गच् प्रत्ययो भवति किच्च स जायते।

उदाहरणम्:— विडंगः = ओषधिविशेषः, शाकविशेषः। मृदंगः = वाद्यविशेषः, वंशः। कुरंगः = हरिणः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विडत्याक्रोशतीति विडंगः, ओषधिविशेषो वा। मृदनाति यं स मृदंगः, वाद्यभेदो वा। किरति विक्षिपतीति कुरंगः, हरिणो वा; कुरंगी हरिणी। स्त्रियां गौरादित्वात् (अ० ४/१/४१) डीष्। बाहुलकाद् ऋकारस्योत्वं रपरत्वं च॥

हिन्दी:— विट् आदि धातुओं से अंगच् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है।

(१२२) सृवृजोर्वृद्धिश्च।

अर्थः— सृ गतौ, वृज् वरणे, इत्येताभ्यां धातुभ्यामंगच् प्रत्ययो भवति धात्वोश्च वृद्धिर्जायते।

उदाहरणम्:— सारंगः = पक्षी, मृगः, भृंगः अनेक वर्णः। सिंहः, करी, पिकः, राजहंसः मयूरः, मेघः, परिधानम्, केशः। वारंगः = खड्गादिमुष्टिः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सृवृज्यामंगच् धातोर्वृद्धिश्च। सरति सर्वत्र गच्छतीति सारंगः, पक्षी हरिणो भृंगो वा। यो वृणोति गृह्णाति स वारंगः, खड्गादिमुष्टिर्वा॥

बाहुलकात्—नृणाति नयति स नारंगः, रसः पिप्पलीवृक्षः फलभेदो वा॥

हिन्दी:— सृ और वृज् धातुओं से अंगच् प्रत्यय होता है और धातुओं को वृद्धि होती है।

(१२३) गन्गाम्यद्योः।

अर्थः— गणशकुनौ, इतिसूत्रं वक्ष्यति इत्यस्मात् प्राक् गन्प्रत्ययोऽनुवर्तते। गन्त् गतौ अद् भक्षणे इत्येताभ्यां धातुभ्यां गन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— गंगा = मन्दाकिनी। अद्गः = पुरोडाशः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गच्छतीति गंगा, नदीभेदो वा। अत्ति वाऽद्यते भक्ष्यतेऽसौ अद्गः पुरोडाशो वा।

बाहुलकात्— 'अम गत्यादिषु' इत्यस्मादपि गन् । (अमति) गच्छति प्राप्नोति कर्माणि विषयान् वा येन तत् अंगम्, गात्रमुपायः प्रतीकमप्रधानं देशविशेषो वा ।

हिन्दी:— गम्लू और अद धातुओं से गन् प्रत्यय होता है । आगे 'गणशकुनौ यह सूत्र कहा है उससे पहले-पहले गन् प्रत्यय का अधिकार है ।

### (१२४) छापूखडिभ्यः कित् ।

अर्थ:— छो छेदने, पूज् पवने, खडभेदने इत्येतेभ्यो धातुभ्यो गन् प्रत्ययो भवति स च कित् जायते ।

उदाहरणम्:— छागः = बर्करः, मेषराशिः । पूगः = क्रमुकः, समुच्चयः, समाजः निगमः, प्रकृतिः, गुणः । खड्गः = चन्द्रहासः, गण्डकशृङ्गं गण्डकोवा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—छादिभ्यो गन् किद् भवति । छिनतीति छागः, बर्करो वा । पूयते मुखं येन स पूगः, क्रमुकः फलविशेषः 'सुपारी' इति प्रसिद्धः, समूहो वा । खडति भिनत्ति येन स खड्गः शस्त्रं, गण्डकः 'गेंडा' इति प्रसिद्धः ।

बाहुलकात्—सेटत्यनाद्रियते स षिङ्गः, चञ्चलमना हारमध्यस्थो मणिर्या । बहुलवचनादेव सत्वनिषेधः ।।

हिन्दी:— छो आदि धातुओं से गन् प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

### (१२५) भृजः किन्नुट् च ।

अर्थ:— डुभृज् धारणपोषणयोः इत्यस्माद्धातोः गन् प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययः कित् सम्पद्यते तस्य च नुडागमो जायते ।

उदाहरणम्:— भृंगः = भ्रमरः, पक्षिविशेषः, कामुकः, स्वर्णकलशम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भृज्धातोर्गन् प्रत्ययः कित् तस्य च नुट् । बिभर्ति धरति पुष्यति वा स भृंगः, भ्रमरो वा ।

हिन्दी:— डुभृज् धातु से गन् प्रत्यय होता है और वह कित् होकर नुडागम सम्पन्न होता है ।

### (१२६) शृणातेर्ह्रस्वश्च ।

अर्थ:—शृ हिंसायाम् इत्येतस्माद्धातोर्गन् प्रत्ययो भवति । धातोश्च ह्रस्वादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—शृंगम् = विषाणं, शिखरं, मत्स्यविशेषः ओषधिविशेषः, कामोद्रेकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कित् नुट् चेत्यनुवर्तते । शृणाति हिनस्ति येन तत् शृंगम्, विषाणं पर्वताग्रं मत्स्यभेद ओषधिभेदः सुवर्णभेदो वा ।।

हिन्दीः— शृ धातु से गन् प्रत्यय होता है और शृ को ह्रस्वादेश हो जाता है ।

### (१२७) गण् शकुनौ ।

अर्थः—शृ हिंसायाम् धातोः गण् प्रत्ययो भवति शकुनावभिधेये । शकुनिः पक्षी पूर्ववन्नुट् च णित्त्वाद्धातोर्वृद्धिरपि ।

उदाहरणम्:— शाङ्गः = पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गण्प्रत्ययस्य णित्त्वाद्धातोर्वृद्धि पूर्ववन्नुट् च । शृणातीति शाङ्गः, पक्षी (वा); बाहुलकात् प्रत्ययस्यादावकारागमेन शारंगः इत्यपि सिद्धं भवति ।।

हिन्दीः—पक्षीवाच्य होने पर शृ धातु से गण् प्रत्यय होता है ।

### (१२८) मुदिग्रोर्गगौ ।

अर्थः— मुद हर्षे, गृ शब्दे इत्येताभ्यां धातुभ्यां यथासंख्यं गग्-गौ प्रत्ययौ भवतः ।

उदाहरणम्:— मुद्गः = अन्नविशेषः, आच्छादकम् सामुद्रिक पशुविशेषः । गर्गः = ऋषिविशेषः, ब्रह्मैकपुत्रः, अनडवान् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘मुद्’ धातोर्गक् । मोदतेऽसौ मुद्गः, अन्नभेदो वा । मुद्गान् लाति गृहणातीति ‘मुद्गलो’ मुनिः, यस्य गोत्रापत्यं ‘मौद्गल्यः’ इति प्रसिद्धम् । ‘गृ’ धातोर्गः प्रत्ययः गृणात्युपदिशतीति गर्गः, ऋषिविशेषो वा ।

हिन्दीः— मुद् और गृ धातुओं से यथाक्रम गक् और ग प्रत्यय होते हैं ।

### (१२९) अण्डन् कृसृभृञः ।

अर्थः— डुकृञ् करणे, सृ गतौ, डुभृञ् धारणपोषणयोः, वृञ् वरणे इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽण्डन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— करण्डः = असिः, मधुमक्षिकागृहं, वर्तकविशेषः वंशविकारपात्रम्, पिटारी इति प्रसिद्धा । भरण्डः = पक्षी, दुश्चरित्रः पुरुषः सरीसृपः

धूर्तः, अलंकरणविशेषः। भरण्डः = स्वामी, राजा, वृषभः, कीटः। वरण्डः = मुखरोगः सन्दोहः, तृणसमूहः, बरामदा।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—कृजादिभ्योऽण्डन् प्रत्ययः। क्रियतेऽसौ करण्डः पुष्पभाण्डभेदः, करण्डो वंशविकारपात्रम्, 'पिटारी' इति प्रसिद्धा। सरति गच्छतीति सरण्डः, पक्षी वा। बिभर्ति पुष्यतीति भरण्डः स्वामी। वृणोति स्वीकरोतीति वरण्डः मुखरोगः, सन्दोहो वा।।

**बाहुलकात्**—तरति येन स तरण्डः, जलतरणसाधनं वा। वनति संभजति धर्ममिति वतण्डः, ऋषिविशेषो वा। धातोस्तकारान्तादेशः। छमति भक्षयतीति छमण्डः मातापितृशून्यो वा। शेतेऽसौ शयण्डः, विषयो वा। इत्यादयः शब्दा बहुलवचननादेव सिद्धा भवन्ति।।

**हिन्दी**— डुकृञ् आदि धातुओं से अण्डन् प्रत्यय होता है।

### (१३०) शृद्धभसोऽदिः।

**अर्थः**— अदिरित्ययमधिकार एतेस्तुट् चेत्यग्रिमसूत्र पर्यन्तम्। शृ हिंसायाम्, दृविदारणे, भस भर्त्सनदीप्त्योः इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽदिः प्रत्ययो भवति।

**उदाहरणम्**— शरत् = ऋतुविशेषः, कालविशेषो वा। दरत् = हृदयं, तटं, भयम्, अचलः, शिला। भसत् = जघनम्, सूर्यः, मांसं, समयः, योनिः, प्लवः।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—शृद्धभसधातुभ्योऽदिः प्रत्ययः। शृणाति हिनस्त्यस्मिन्निति शरत्, कालविशेष ऋतुर्वा। दीर्यतेऽसौ दरत्, हृदयं कूलं वा। बभस्ति भर्त्सयति प्रकाशते वा स भसत्, जघनं वा।

**बाहुलकात्**— पर्षति स्निह्यति प्रीतिकरं प्रसन्नं भवति चित्तमस्यां सा पर्षत्, सभा समाजो वा।।

**हिन्दी**— शृ आदि धातुओं से अदि प्रत्यय होता है।

### (१३१) दृणातेः षुग्घस्वश्च।

**अर्थः**— अदिरनुवर्तते। दृ विदारणेधातोः अदि प्रत्ययो भवति। धातोश्च षुगागमो हस्वश्च जायते।

**उदाहरणम्**— दृषत् = पाषाणः, शिला, पेषणी प्रस्तरः।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**— दीर्यतेऽसौ दृषत्, पाषाणो वा। अदिप्रत्यये



धातोर्ह्रस्वः षुगागमश्च भवति ।।

हिन्दीः— दृ धातु से अदि प्रत्यय होता है और धातु को षुगागम व ह्रस्व भाव होता है ।

### (१३२) त्यजितनियजिभ्यो ङित् ।

अर्थः— अदिरनुवर्त्तते । त्यज्‌हानौ, तनुविस्तारे, यज देवपूजासंगतिकरण-दानेषु इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽदिः प्रत्ययो भवति स च ङित् जायते ।

उदाहरणम्ः— त्यद् = क्लेशादिहीनः, ब्रह्म, सर्वनाम । तद् = विस्तृतः, ब्रह्म, सर्वनाम । यद् = संगतः ब्रह्म, सर्वनाम ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—त्यजति क्लेशादिहीनो भवतीति त्यद् । तनुते विस्तृतो भवतीति तद् । यजति सर्वैः पदार्थैः संगतो भवतीति यद् । ब्रह्मणो नामानि त्रयाणि । त्यदादीनां सर्वनामसञ्ज्ञा भवति, तेन सामान्यवाचकास्त्य-दादयः ।।

हिन्दीः— त्यज् आदि धातुओं से अदि प्रत्यय होकर ङित् हो जाता है ।

### (१३३) एतेस्तुट् च ।

अर्थः— इण् गतौ इत्येतस्माद्धातोः अदिः प्रत्ययो भवति तस्य च तुडागमो जायते ।

उदाहरणम्ः— एतद् = सर्वनामवाचकः, प्राप्तम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘इण्’ धातोरदिः प्रत्ययस्तस्य तुडागमश्च । एति प्राप्नोतीति एतत् । अस्यापि सर्वनामसञ्ज्ञा ।

हिन्दीः— इण् धातु से अदि प्रत्यय होता है और उसको तुडागम हो जाता है ।

### (१३४) सत्तेरटिः ।

अर्थः— सृ गतौ धातोः अटिप्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— सरट् = वायुर्मघः, सरीसृपः, मधुमक्षिका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरति गच्छतीति सरट्, वायुर्मघो वा । ‘सृ’धातोरटिः प्रत्ययः ।।

हिन्दीः— सृ धातु से अटि प्रत्यय होता है ।

### (१३५) लङ्घेर्नलोपश्च ।

अर्थः— अटिरित्यनुवर्तते। लघि शोषणे धातोरटि प्रत्ययो भवति धातोर्नकारस्य च लोपो जायते।

उदाहरणम्:— लघट् = वायुः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लङ्घति शोषयतीति लघट्, वायुर्वा । धातोर्नलोपः ।।

हिन्दीः— लघि धातु से अटि प्रत्यय होता है और धातु के नकार का लोप हो जाता है।

### (१३६) पारयतेरजिः ।

अर्थः— अजिरयं याति भियः षुग्घस्वश्चेति यावत् । पृ पूरणे धातोरजिः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— <sup>१</sup> पारक् = सुवर्णम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पारयति कर्म समापयतीति पारक्, सुवर्णं वा । चौरादिकात् 'पारि' धातोरजिः प्रत्ययः ।।

हिन्दीः— पृ धातु से अजि प्रत्यय होता है।

### (१३७) प्रथेः कित् सम्प्रसारणं च ।

अर्थः— प्रथविस्तारे धातोरजिः प्रत्ययो भवति स च कित् सम्पद्यते, धातोश्च सम्प्रसारणं जायते।

उदाहरणम्:— पृथक् = नानात्वम्, एकतः, एकाकी परित्यज्य

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रथयति सङ्घाताद् विस्तृतो भवतीति पृथक्, नानात्वं वा । स्वरादिपाठाद् (अ० १/१/३६) अव्ययत्वम् ।।

हिन्दीः— प्रथ धातु से अजि प्रत्यय होता है और कित् होता है। तथा धातु को सम्प्रसारण होता है।

### (१३८) भियः षुग्घस्वश्च ।

अर्थः— जिभी भये इत्येतस्माद्धातोरजिः प्रत्ययो भवति धातोश्च षुगागमो हस्वश्च जायते।

उदाहरणम्:— भिषक् = वैद्यः, विष्णुनाम ।

१-पारक् = पृ + अजिः = पृ + णिच् + अज्

पारि + अज्

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बिभेत्यसौ भिषक्, वैद्यो वा । 'सुमंगलभेषाजाच्च'  
(अ० ४/१/३०) इति निपातनाद् गुणे कृते भेषजम् । भेषजमेव भेषज्यम् ॥

हिन्दीः— जिभी धातु से अजि प्रत्यय होता है और धातु को षुगागम तथा ह्रस्व भाव हो जाता है ।

### (१३६) युष्यसिभ्यां मदिक् ।

अर्थः— युष सेवने, असु प्रक्षेपणे इत्येताभ्यां धातुभ्यां मदिक् प्रत्ययो भवति । युष इति सौत्रो धातुः ।

उदाहरणम्ः— युष्मत् = सेवयिता । अस्मत् = अन्यप्रक्षेप्ता

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—योषति सेवतेऽसौ युष्मद् । 'युष' सौत्रो धातुः ।  
अस्यति प्रक्षिपत्यन्यमिति अस्मद् । सर्वनामवाचकाविमौ ।

हिन्दीः— युष तथा असु धातुओं से मदिक् प्रत्यय होता है ।

### (१४०) अर्तिस्तुसुहुसृ धृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन् ।

अर्थः— ऋगतौ, ष्टुञ् स्तुतौ, षु प्रसवैश्वर्ययो, हु दानादानयोः सृगतौ  
धृङ् अवस्थाने क्षिष्ये क्षुशब्दे, भा दीप्तौ, या प्रापणे, वा गतिगन्धनयोः, पद  
गतौ, यक्ष पूजायां, णीञ् प्रापणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो मन् प्रत्ययो भवति ।  
मन्प्रत्याधिकारोऽविसिविसिशुषिभ्यः कित् पर्यन्तम् ।

उदाहरणम्ः— अर्मः = नेत्ररोगः । स्तोमः = स्तोत्रम्, सूक्तम्, यज्ञः, संग्रहः  
संख्या । सोमः = कर्पूरः चन्द्रमाः वारि, वायुः प्रकाशमयूखः कुबेरः, शिवः, यमः ।  
होमः = यज्ञः । सर्मः = गमनम् गतिः । धर्मः<sup>१</sup> = न्यायः, सत्याचारः, कर्तव्यः,  
परोपकारः, प्रकृतिः, अधिकारः, यज्ञः, सत्संगः, भक्तिः रीतिः । क्षेमम् = कुशलम्,  
शान्तिः कल्याणम्, त्राणम् । क्षोमम् = कौशेयवस्त्रं, दुकूलं, गृहोपरि प्रकोष्ठम्, ।  
भामः = क्रोधः, सूर्यो दीप्तिर्वा । यामः = प्रहरः, धैर्यम्, नियन्त्रणम् । वामः =  
शोभनः, दुष्टः, पार्श्वभेदः, जन्तुः, शिवः, कामदेवः, अहिः, सम्पदा । पदमम् =  
कमलं, निधिः, शंखोवा । यक्ष्मः = राजरोगः । नेमः<sup>२</sup> = प्रकारमूलम्, अर्द्धवाची  
तु, सर्वनामसंज्ञकः, भागः, विवरम्, कालः, ऋतुः, सीमा, छलम्, सायम् मूलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोति सः अर्मः, चक्षुरोगो वा । स्तौति

\*१-धर्मः— धृ + मन् अत्रानुबन्ध लोपे सार्वधातुकार्द्धातुकयोरित्यनेन गुणे  
च जाते रूपसिद्धिः ॥

\*२ नेमः = नी + मन् अत्रापि अनुबन्ध लोपे गुणे च जाते रूपावतारः ॥

येन स स्तोमः, सङ्घातो वा । सवत्यैश्वर्यहेतुर्भवतीति सोमः, कर्पूरश्चन्द्रमा वा । हूयते दीयतेऽसौ होमः, यज्ञो वा । स्त्रियते गम्यते स सर्मः, गमनम् (वा) । ध्रियते सुखप्राप्तये सेव्यते स धर्मः, पक्षपातरहितो न्यायः सत्याचारो वा । क्षयत्यज्ञानं नाशयतीति क्षेमम्, कुशलं वा । क्षौति शब्दयतीति क्षोमम्, वस्त्रभेदो वा; दुकूलम् अतसीकुसुमं च । भाति प्रकाशतेऽसौ भामः, क्रोधः सूर्यो दीप्तिर्वा । यायते प्राप्यते स यामः, प्रहरो वा । वाति गच्छति गन्धनं वा गृह्णातीति वामः, शोभनः दुष्टः पार्श्वभेदो वा । पद्यते प्राप्नोतीति पदमं, कमलं निधिः शङ्खो वा । यक्षयते पूजयतीति यक्ष्मः, राजरोगो वा । नयतीति नेमः, प्राकारमूलं वा; अर्द्धवाची तु सर्वनामसञ्ज्ञकः ॥

हिन्दी:— ऋ आदि धातुओं से मन् प्रत्यय होता है ।

### (१४१) जहातेः सन्वदाकारलोपश्च ।

अर्थ:— ओहाक् त्यागे धातोर्मन् प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययः सन्वत् सम्पद्यते धातोश्चाकारलोपो जायते ।

उदाहरणम्:— जिह्वः = कुटिलः, मन्दः प्रमादी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मनित्यनुवर्तते । जहाति त्यजतीति जिह्वः, कुटिलो मन्दो वा ॥

हिन्दी:— ओहाक् धातु से मन् प्रत्यय होता है । वह सन्वत् हो जाता है । तथा धातु के आकार का लोप हो जाता है ।

### (१४२) अवतेष्टिलोपश्च ।

अर्थ:— अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थ याचन क्रियेच्छा दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादान भाग वृद्धिषु, इत्यस्माद्धातोर्मन् प्रत्ययो भवति मन् प्रत्ययस्य च टिलोपो जायते ॥

उदाहरणम्:— ओम् = प्रणव आरम्भोऽनुमतिः, आदेशः, मांगलिकता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मन्प्रत्ययस्य टिलोपो धातोरुपधावकारयोरुद् । अवति रक्षादिकं करोतीति ओम्, प्रणव आरम्भोऽनुमतिर्वा । चादिषु (अ० १/४/५७) पाठादस्याव्ययत्वम् ॥

\*१ ओम् = अक् + मन् अत्र "ज्वरत्वर....." इत्यनेन ६/४/२०

अक् अकारस्य तथा च व् रूपोपधायाः स्थाने ऊठादेशः सम्पद्यते ॥

हिन्दीः— अव धातु से मन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय के टि भाग का लोप हो जाता है।

(१४३) ग्रसेरा च।

अर्थः— ग्रसु अदने धातोर्मन् प्रत्ययो भवति धातोश्च आकारादेशो जायते।

उदाहरणम् :— ग्रामः<sup>२</sup> = वंशः, जातिः, शाला, समुदायः, जीवावासः, संग्रामः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मन्। ग्रसतेऽति यो वा ग्रस्यते स ग्रामः, शालासमुदायः प्राणिनिवासो वा; सङ्ग्रामो युद्धं वा। शालीनां ग्रामः समूहः 'शालिग्रामः' एवं शब्दग्रामः। ग्रामो गानविद्यायां स्वरभेदश्च।।

हिन्दीः— ग्रस धातु से मन् प्रत्यय होता है और धातु को आकारादेश हो जाता है।

(१४४) अविसिविसिशुषिभ्यः कित्।

अर्थः— अव रक्षणाद्यर्थेषु, षिवु तन्तुसन्ताने षिञ् बन्धने, शुष शोषणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो मन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते।

उदाहरणम् :— <sup>१</sup>ऊमम् = नगरम्। <sup>२</sup>स्यूमः = रश्मिः, प्रकाशः। सिमः = सर्वः। शुष्मः। शुष्मम् = अग्निर्वायुः बलम् सूर्यः पक्षी सामर्थ्यम् प्रकाशः।।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मन् कित्। अवति रक्षणादिकं भवति यत्र तत् ऊमम्, नगरं वा; टापि कृते बाहुलकाद्घस्वे च 'उमा', (अतसी) विशिष्टा स्त्री वा। सीव्यति तन्तून् संतनोतीति स्यूमः, रश्मिर्वा सिनोति बध्नातीति सिमः, सर्वनामसंज्ञः सर्वपर्यायः। शुष्यति निस्सारं करोतीति शुष्मम्, अग्निर्वायुर्वा।

हिन्दीः— अव आदि धातुओं से मन् प्रत्यय होता है, और वह कित् हो जाता है।

(१४५) इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्।

\* २ ग्रामः = ग्रसु + मन् अत्र धातोः सकारास्य आकारादेशः मन् इति अनुबन्ध लोपे ग्रामः सिद्धयति।

१ ऊमम् = अक् + मन् अत्रानुबन्धलोपे ऊठादेशे

२ स्यूमः सिक् + मन् — वकारस्य ऊट्।

अर्थः— एष मक्प्रत्ययाधिकारोऽग्रे “घर्म ग्रीष्मौ” सूत्रपर्यन्तं गमिष्यति । इषु इच्छायां, युधि सम्प्रहारे, इन्धी दीप्तौ, दसु उपक्षये, श्यैङ् गतौ धूञ् कम्पने, षूङ् प्राणिगर्भविमोचने, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो मक् प्रत्ययो भवति ।।

उदाहरणम्:— इष्मः = कामः वसन्तर्तुर्वा । युध्मः = बाणः । इध्मः = समिद्धः, समिधा । दस्मः = यजमानः । श्यामः = हरितः कृष्णो वा । धूमः = अग्निसम्भवः, मेघः, उल्का पांशुः डक्कारः । सूमः = सूक्ष्मोऽन्तरिक्षं, जलम्, दुग्धम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—य इच्छति य इष्यते (वा) स इष्मः, कामो वसन्त ऋतुर्वा । युध्यते यो येन स युध्मः, बाणो वा । य इन्धे दीप्यते वा येनेन्धे स इध्मः, समिधः (वा) । दस्यत्युपक्षयति दुःखयति वा स दस्मः, यजमानो वा । शयायति गच्छति प्राप्नोति वा स श्यामः, हरितः कृष्णो वा; अप्रसूता स्त्री ‘श्यामा’ लतौषधी वा, इत्यादि । धूनोति कम्पयतीति धूमः, अग्निसम्भवो वा । सूते जनयति प्राणिगर्भं विमुञ्चतीति सूमः, अन्तरिक्षं वा ।

बाहुलकात्—ईर्त्तर्गच्छति कम्पते वा तत् ईर्मम्, व्रणं वा । क्षौति शब्दयतीति सा क्षुमा, अतसी वा । जजन्ति जायते तत् जन्म, उत्पत्तिर्वा, (इत्यादि) ।।

हिन्दीः— इषु आदि धातुओं से मक् प्रत्यय होता है ।

### (१४६) युजिरुचितिजां कुश्च ।

अर्थः— युज समाधौ, रुच दीप्तावभिप्रीतौच, तिज निशाने एतेभ्यो धातुभ्यो मक् प्रत्ययो भवति धातोश्च कुरादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—\*युग्मम् = युगलम्, दम्पती, संगमः श्लोकार्धम्, मिथुनराशिः । \*रुक्मम् = सुवर्णं, वर्णभेदः, अयः । तिग्मम् = तीक्ष्णम्, उष्णम्, उत्तेजकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मक् । युज्यते तत् युग्मम्, द्वयोरेककर्मणि सम्बन्धः । रोचते प्रदीप्तवर्णो भवति स रुक्मः, वर्णभेदो वा; तद्वर्णयोगाद् रुक्मं सुवर्णम्; रुक्मो वर्णोऽस्यास्तीति ‘रुक्मिणी’ स्त्री । तेजते छिनत्तीति तिग्मम्, तीक्ष्णम् (वा) । विशेष्यलिङ्गोऽयं शब्दः—तिग्मा धीः; तिग्मः तीव्रो वा ।।

\*१ युग्मम् = युज् + मक् अत्र मक् प्रत्यये सतिधातोः जकारस्य कुत्वादेशे जश्त्वे सिद्धयति

\*२ रुक्मम् = रुच् + मक् अत्र मक् प्रत्ययश्चकारस्य च कुत्वं सम्पद्यते ।

हिन्दीः— युज आदि धातुओं से मक् प्रत्यय होता है, और धातुओं को क् आदेश होता है।

(१४७) हन्तेर्हि च।

अर्थः—हन् हिंसागत्योः, इत्यस्माद्धातोर्मक् प्रत्ययो भवति धातोश्च हिरादेशो जायते।

उदाहरणम्ः—हिमम् = हेमन्तर्तुः, तुषारः, चन्दनं, रात्रिः पंकजम्, हैयंगवीनं, मुक्ता।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मक्। हन्त्युष्णं दुर्गंधिं वा तत् हिमम्, हेमन्त ऋतुस्तुषारश्चन्दनं वा; महत् हिमं 'हिमानी'। डीष् आनुक् (च)।।

हिन्दीः— हन् धातु से मक् प्रत्यय होता है, और धातु को हि आदेश हो जाता है।

(१४८) भियः षुग् वा।

अर्थः— जिभी भये इत्येतस्माद्धातोः मक् प्रत्ययो भवति धातोश्च षुगागमो वा जायते।

उदाहरणम्ः— भीमः= भयानकः, पाण्डुपुत्रो वा। भीष्मः = भयानकः, भीष्मो बालब्रह्मचारी वा।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बिभेति बिभ्यति या यस्मात् यस्या वा स भीमः भीमा वा; भीष्मः, भीष्मा वा। भीमो भयानकः, पाण्डुपुत्रो वा। भीमा भयानका सेना यस्य स 'भीमसेनः', एवं 'भीष्मसेनः' वा।।

हिन्दीः— जिभी धातु से मक् प्रत्यय होता है और धातु को षुगागम विकल्प से हो जाता है

(१४९) घर्मग्रीष्मौ।

अर्थः— घृक्षरणे, ग्रस उपक्षये इत्येताभ्यां धातुभ्यां मक् प्रत्ययो निपात्यते।

उदाहरणम्ः—<sup>१</sup> घर्मः = यज्ञः, आतपः, ग्रीष्मः, ऋतु, स्वेदः, कटाहः।  
<sup>२</sup> ग्रीष्मः, = उष्णकालः, ग्रीष्मता।

\* १ घर्मः = घृ + मक् अत्र मक् प्रत्ययो गुणश्च निपात्यते।

\* २ ग्रीष्मः = ग्रस् + मक् अत्र ग्रस् इत्येतस्य ग्रीभावः षुगागमश्च निपात्यते।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—मक्प्रत्ययान्तो निपात्यते । जिघर्त्ति क्षरति नश्यति दीप्यते वा प्राणिनो जगद्वा येन स घर्मः, यज्ञ आतपो ग्रीष्म ऋतुः स्वेदो वा । ग्रसते शीतं रसादिकं वा स ग्रीष्मः, अत्युष्णकालो वा । 'ग्रस' धातोर्ग्रीभावः पुगामश्च निपातनात् ।।

**हिन्दीः**— घर्म और ग्रीष्म शब्द मक् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

(१५०) **प्रथेः षिवन्षवन्ष्वन्ः सम्प्रसारणं च ।**

**अर्थः**— प्रथविस्तारे ऽस्माद्धातोः षिवन्, षवन्, ष्वन् प्रत्यया भवन्ति ।  
धातोश्च सम्प्रसारणं सम्पद्यते ।

**उदाहरणम्**—<sup>१</sup>पृथिवी = भूमिरन्तरिक्षं वा । पृथ्वी = भूमिरन्तरिक्षं । पृथ्वी = भूमिरन्तरिक्षम् ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—प्रथते विस्तीर्णा भवतीति पृथिवी, पृथ्वी, पृथ्वी, भूमिरन्तरिक्षं वा इत्येकार्थास्त्रयः ।

**हिन्दीः**— प्रथ धातु से षिवन्, षवन् और ष्वन् प्रत्यय होते हैं, और धातु को सम्प्रसारण होता है ।

(१५१) **अशुप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन् ।**

**अर्थः**— अशूङ् व्याप्तौ, प्रुष प्रीतौ, लट बाल्ये, कण गतौ, खट काङ् क्षायाम्, विश प्रवेशने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्वन् प्रत्ययो भवति ।

**उदाहरणम्**—अश्वः = तुरंगोऽग्निर्वा । प्रुष्वः = ऋतुः सूर्यः, जलबिन्दुः । लट्वाः = करञ्जभेदः, फलं वाद्यं, पक्षिविशेषो वा, कंसरः, व्यभिचारिणीस्त्री, दुष्टः । कण्वः = पापं मुनिः । खट्वा = शय्या, झूला । विश्वः = संसारः, प्रत्येकः ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—अशनुते व्याप्नोतीति अश्वः, तुरंगो वह्निर्वा, अजादिपाठात् (द्र०—अ०४/१/४) स्त्रियाम् अशवा । यः प्रुष्णाति स्निह्यति सिञ्चति पूरयति वा स प्रुष्वः, ऋतुः सूर्यो वा । लटति बाल इव भवति सा लट्वा, नियतस्त्रीलिंगः, करञ्जभेदः फलं वाद्यं पक्षिभेदो वा । कणति निमीलति चेष्टतेऽसौ कण्वः, कण्वं पापं, कण्वो मुनिर्वा, येनादावध्यापिता काण्वी शाखेति प्रसिद्धा वा । खट्यते काङ्क्ष्यते या सा खट्वा शय्याभेदो वा । विशति सर्वत्र

\*१. पृथिवी = प्रथ् + षिवन् पृथिव + डीष् अत्र सम्प्रसारण भावः । षिद् गौरादिभ्यश्चेत्यनेन डीष् कृते पृथिवी ।



स विश्वः, विश्वं जगत्, विश्वा अतिविषा वां । सर्वादिपाठात् सर्वनामसंज्ञश्च ॥

(१५२) इण्शीभ्यां वन् ।

वन्निति शेवायहजिहेतिसूत्रपर्यन्तं प्रवर्तते ।

अर्थः— इण् गतौ शीङ् स्वप्ने इत्येताभ्यां धातुभ्यां वन् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्— एवः = अवधारणे ऽव्ययम् । शेवः = सुखं, मेद्रं, सर्पः, शिश्रु उच्युंगता, निधिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एति प्राप्नोतीति एवः; बाहुलकात् एव इत्यवधारणेऽव्ययम् ।

शेतेऽसौ शेवः, सुखं मेद्रं वा ॥

हिन्दीः— इण् तथा शीङ् धातुओं से वन् प्रत्यय होता है ।

(१५३) सर्वनिघृष्वरिष्वलष्वशिवपद्मप्रह्वेष्वेतन्त्रे ॥

अर्थः— सृ गतौ निपूर्वकं घृषु संघर्षे रिवहिंसायां, लष कान्तौ, शीङ् स्वप्ने, पदगतौ प्रपूर्वकं ओहाक् त्यागे, ईषगतिहिंसा दर्शनेषु, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्रमशः सर्वः निघृष्वः रिष्वः, लष्वः, शिवः, पद्मः प्रह्वः ईष्वः इत्येते शब्दा वन प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्—सर्वः = निखिलम्, विष्णुः, शिवः । निघृष्वः = गुणाभावः, खुरं वा । रिष्वः = हिंसकः । लष्वः = कामुकः, नर्तकः, तटः, अभिनेता । शिवः = ईश्वरः, भद्रं, सुखं जलं लिंगम् वेदः मोक्षः शुभग्रहयोगः, सुरः, पारा, गुग्गुलम् । पद्मः = भूलोकः, रथः, मार्गः । प्रह्वः = नम्रः, दीनः, सुशीलः, अनुरक्तः, आसक्तः, भक्तः । ईष्वः = आचार्यः, कामदेवः, वसन्तर्तुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सर्वादयो वन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । सरतीति सर्वः, संपूर्णवाची सर्वनामसंज्ञी विशेषणम् । नितरां घर्षति पिनष्टीति निघृष्वः, खुरं वा । गुणाभावः । रेषति हिनस्तीति रिष्वः हिंसकः । लषति कामयतेऽसौ लष्वः, नर्तको वा । शेतेऽसौ शिवः; शिव ईश्वरः; शिवं भद्रं सुखमुदकं च; 'शिवा' हरीतकी । धातोर्ह्रस्वत्वम् । पद्यन्ते गच्छन्त्यत्रेति पद्वः, भूलोको वा । प्रजहाति त्यजति स प्रह्वः, नम्रो वा । अकारलोपे निपातनम् । ईषते हिनस्त्यज्ञानमिति ईष्वः, आचार्यो वा । 'अतन्त्र' इति किम् ? सर्ता सारक इत्यादि सूत्रेषु पठिताः सर्वादिशब्दा यौगिका मा भूवन् ।

बाहुलकात्—हसति शब्दयतीति हस्वः, वामन एकमात्रो वर्णो वा ॥

हिन्दी:— सू आदि धातुओं से सर्व आदि शब्द वन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं।

### (१५४) शेवायहाजिहा ग्रीवाऽप्वामीवाः।

अर्थ:— शीङ् स्वप्नेयज देवपूजासंगतिकरणदानेषु जिजये, गृ निगरणे आप्लु व्याप्तौ, मीञ् हिसायां इत्येतेभ्यो धातुभ्यः शेवा, यहा, जीहा ग्रीवा, अप्वा, मीवः इत्येते शब्दा वन प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते।

उदाहरणम्:— शेवा = लिंगाकृतिः। यहा = यज्ञः यजमानो वा। जिहा = इन्द्रियं रसना अग्निशिखा। ग्रीवा = गलः। अप्वा = कण्ठ स्थानम्। मीवः = उदरकृमिः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शेवादयो वन्नन्ता निपात्यन्ते। शेतेऽसौ शेवा, लिंगाकृतिर्वा। यजतीति यहा, यजमानो वा। जकास्य हकारः। जयति यया स जिहा, इन्द्रियं वा। धातोर्हुक्। निगलति यया सा ग्रीवा, शरीरांगं वा। धातोर्ग्रीभावः। आप्नोति यया सा अप्वा, कण्ठस्थानं वा। (धातोर्हस्वत्वम्।) मीनाति हिनस्तीति मीवः, उदरकृमिर्वा। (गुणाभावो निपात्यते)।।

हिन्दी:— शीङ् आदि धातुओं से शेवा आदि शब्द वन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं।

### (१५५) कृगृशृदृभ्यो वः।।

अर्थ:— कृविक्षेपे, गृ निगरणे, शृ हिंसायाम्, दृ विदारणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो वः प्रत्ययो भवति। वः प्रत्ययोऽयं पादपर्यन्तं विद्यते।।

उदाहरणम्:— कर्वः<sup>१</sup> = कामः। गर्वः = अहंकारः। शर्वः = परमेश्वरः सुखं शिवः, विष्णुः। दर्वः = हिंसकः पुरुषः पिशाचः चमसः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्षिपति चित्तमिति कर्वः, कामो वा। गिरतीति गर्वः, अहंकारो वा। शृणाति दुःखमिति शर्वः परमेश्वरः, सुखं वा। दृणाति विदारयति प्राणिन इति दर्वः, हिंसको जनो वा।।

हिन्दी:— कृ आदि धातुओं से वः प्रत्यय होता है।

\* १ कर्वः कृ + व अत्र "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" इत्यनेन गुणे भूते कर्वः सिद्धयति।

= जलं, मद्यम्, पक्तृता, सरस्वती, आहारः । १६—माला = स्रक् रेखा, पंक्तिः, समुच्चयः ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—ऋज्राद्येकोनविंशतिः शब्दा निपात्यन्ते । अर्जति गच्छति तिष्ठति वा स ऋज्रः, नायको वा । गुणाभावः । इन्दति परमैश्वर्यवान् भवतीति इन्द्रः, समर्थोऽन्तरात्माऽऽदित्यो योगी वा । अंगति गच्छतीति अग्रम्, प्रधानमुपरिभागो वा । (धातोर्नलोपः ।) वजति प्राप्नोति प्राप्यते वा स वज्रः, हीरकं शस्त्रं वा । वपति धर्ममिति विप्रः, मेधावी वा । (धातोरुपधाया इत्वम् ।) कुम्बत्याच्छादयतीति कुब्रम्, अरण्यं वा । चुम्बति यो येन वा तत् चुब्रम्, मुखं वा । अत्रोभयत्र इदितोऽपि नलोपः (निपातनात्) । यः क्षुरति विलिखति येन वा छिनतीति स क्षुरः, छेदनद्रव्यं कोकिलाक्षं गोक्षुरो लोमच्छेदकं नापितशस्त्रं वा । खुरति छिनत्ति यो येन वा स खुरः, शफं वा । अत्रोभयत्र रनि रेफलोपो गुणाऽभावश्च । भन्दते कल्याणं करोतीति भद्रम्, कल्याण (प्रद) म् । नकारलोपः । उच्यति समवैतीति उग्रः, महेश्वर उत्कटः क्षत्रं वा । (चकारस्य गकारः ।) बिभेत्यस्मात् स भेरः, भेरी दुन्दुभिर्वा । गौरादित्वान् डीष् ; पक्षे भेरशब्दस्य लत्वम् = भेलो, जलतरणद्रव्यं वृद्धकायः कातरो वा । शुच्यते पवित्रीभवतीति शुक्रम्, ब्रह्माग्निराषाढः प्राणिबीजं नेत्ररोगो वा; अस्यैव व्यवस्थितविभाषया पक्षे लत्वम् = शुक्लः, श्वेतं रजतं वा । (उभयत्र चकारस्य कुत्वम् ।) गवतेऽव्यक्तं शब्दयतीति गौरः, श्वेतो रक्तवर्णो वा; 'गौरी' स्त्री । (धातोर्वृद्धिः ।) डीष् । वनति सम्भजतीति वन्रः विभागी! एति गच्छति यया स इरा, उदकं मद्यं वा । (गुणाभावः ।) 'इरावान्' समुद्रः, 'ऐरावती' नदी । इरया मद्येन माद्यतीति 'इरम्मदः । माति मानहेतुर्भवतीति माला पुष्पादिस्रक्; मालं क्षेत्रम्; मालो जनः । (प्रत्ययरफस्य लत्वम् ।)

**बाहुलकात्**—तितिक्षते येन तत् तीव्रम्, तीक्ष्णं वा । जस्य वो दीर्घत्वं च धातोः ।।

**हिन्दीः**—ऋज आदि धातुओं से ऋज्र—आदि रन् प्रत्ययान्त निपातित होते हैं ।

**३०— समिकस उकन् ।**

**अर्थः**—उकन्ननुवृत्तिर्भयः क्रुकन्निति यावत् । सम्युपपदे कस गतौ धातोः उकन् प्रत्ययो भवति ।

**उदाहरणम्**— सङ्कसुकः = चञ्चलः दुष्टः परिवर्तनशीलः संदिग्धः निर्बलः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सम्यक् कसति गच्छतीति संकसुकः संशयमा-  
पन्नश्चञ्चलो दुर्जनो वा ॥

हिन्दीः—सम् उपपद होने पर कस धातु से उकन् प्रत्यय होता है ।

### ३१—पचिनशोर्णुकन्कनुमौ च ।

अर्थः— डुपचष् पाके णश् अदर्शने इत्येताभ्यां धातुभ्यां णुकन् प्रत्ययो  
भवति तथा च पचेः क आदेशो जायते णश्धातोश्च नुमागमः प्रतिपद्यते ।

उदाहरणम्— पाकुकः = सूदः । नंशुकः = अणुवाचकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘पच नश्’ धातुभ्यां णुकन् प्रत्ययः । पचधातोश्चस्य  
कः, नशंधातोर्नुम्च । पचतीति पाकुकः, सूपकारो वा । नश्यतीति नंशुकः, अणु  
वाचको वा ॥

हिन्दीः— डुपचष् और णश् धातुओं से क्रमशः णुकन् प्रत्यय होता है ।  
षच् को कादेश णश् को नुमागम होता है ।

### ३२— भियः क्रुकन् ।

अर्थः— जिभी भये धातोः क्रुकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—भीरुकः = कातरः दीनः, ऋक्षः घूकः, इक्षुविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यो बिभेति स भीरुकः, कातरो वा ॥

हिन्दीः—जिभी धातु से क्रुकन् प्रत्यय होता है ।

### ३३—क्वुन् शिल्पि संज्ञयोरपूर्वस्यापि ।

अर्थः— क्वुन् वर्तते उदकञ्चेतिपर्यन्तम् । शिल्पिनि वाच्ये संज्ञायां  
चोपपदपूर्वकमनुपपद पूर्वकं च धातुमात्रात् क्वुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—रजकः\* = पटपावकः । इक्षुकुट्टकः = गौडिकः । तक्षकः  
= वर्धकिः, शिल्पी, सूत्रधारः, पातालीयनागविशेषः । ध्रुवकः = गर्भमोचकः  
गीतारम्भपदम्, स्कन्धः स्थूणा भूतः । अग्रकम् = रवनिद्रव्यविशेषः । चरकः  
= वैद्यक शास्त्रावबोधकः । चषकः = पानपात्रम्, शालम् । भञ्जकः = मीनविशेषः,  
प्राकारः । त्रोटकः, पेषणकः । शालभञ्जिका = क्रीडा । काष्ठपुञ्जिका = क्रीडा ।  
पुष्पप्रचायिका = क्रीडा । शुनकः = कुक्कुरः । ऋषि विशेषः । भषकः = श्वा ।

\*१—रजकः = रञ्ज् + क्वुन् अत्र युवोरनाकौ इत्यनेन ‘वु’ इत्येतस्य अक  
सर्वत्र सम्पद्यते ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शिल्पिनि संज्ञायां च गम्यमानायां सोपपदाद् अनुपपदाद्वा सामान्याद्घातोः क्वुन् भवति। (शिल्पिनि—) रजतीति रजकः, वस्त्रशोधको वा। इक्षून् कुट्टयतीति इक्षुकट्टकः, गौडिकस्येयं संज्ञा। तक्षति तनूकरोतीति तक्षकः वर्धकिः, शिल्पी (वा। धुनोति कम्पयतीति) ध्रुवकः गर्भमोचको जनः, संज्ञा वा। अभ्रति गच्छति येन तत् अभ्रकम्, औषधं संज्ञा वा। चरतीति चरकः, वैद्यकशास्त्रं गन्ता वा। चषति भक्षयत्यस्मिन्निति चषकं पानपात्रं, शालं वा। भञ्जतीति भञ्जकः, मत्स्यभेदः प्राकारो वा। शालान् भञ्जन्ति यस्यां सा शालभञ्जिका क्रीडा। काष्ठं पुत्रीयति यस्यां सा काष्ठपुत्रिका, क्रीडा वा। पुषैः प्रचायन्ते पूजयन्ति यस्यां सा पुष्पप्रचायिक क्रीडा वा। शुनति गच्छतीति शुनकः श्वा (वा) भषति भर्त्सयतीति भषकः, श्वा वा।

बाहुलकाद्— आमलते समन्ताद्धारयतीति आमलकः, वृक्षभेदः (वा) ; गौरादित्वान् डीष् = 'आमलकी', कलामंशंपाति रक्षतीति कलापकः, चन्द्रमा वा। मल्लते गन्धं धरतीति मल्लिका, पुष्पजातिर्वा। कन्यते दीप्यते काम्यतेऽभीप्स्यते वा तत् कनकं, सुवर्णं वा। कटत्यावृणोत्यंगमिति कटकम्, आभूषणं वा 'कड़ा' इति प्रसिद्धं, शिखरं राजधानी नितम्बं वा। इत्यादिषु शिल्पिसंज्ञयोः क्वुन् बोध्यः।।

हिन्दीः— शिल्पी वाच्य तथा संज्ञा वाच्य होने पर उपपद व अनुपपद होने पर धातु मात्र से क्वुन् प्रत्यय होता है।

३४— रमेरश्च लो वा।

अर्थः— रमुक्रीडायां धातोः क्वुन् प्रत्ययो भवति, धातोः रेफस्य लत्वं विभाषा जायते।

उदाहरणम्ः— रमकः = रमणशीलः। लमकः = रमणशीलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रमतेऽसौ रमकः, रमणशीलो वा; लमकः अपि स एव।।

हिन्दीः— रमु धातु से क्वुन् प्रत्यय होता है और रेफ को लत्व विकल्प से हो जाता है।

३५— जहातेर्द्वे च।

अर्थः— ओहाक् त्यागे धातोः क्वुन् प्रत्ययो भवति, धातोश्च द्वित्वं जायते।

उदाहरणम्ः— जहकः = त्यागी। कालः, बालकः सर्पत्वक्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जहाति त्यजति हानिं करोतीति जहकः, त्यागी कालो वा ॥

हिन्दीः— ओहाक् धातु से क्वुन् प्रत्यय होता है और धातु को द्वित्व हो जाता है ।

### ३६— ध्मो धम च ।

अर्थः— ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः धातोः क्वुन् प्रत्ययो भवति धातोश्च धमादेशो जायते ।

उदाहरणम्— धमकः = कर्मकारः, लोहकारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— धमति शब्दं करोतीति अग्निं वा संयुनक्ति स धमकः, कर्मकारो वा ॥

हिन्दीः— ध्मा धातु से क्वुन् प्रत्यय होता है और धातु को धमआदेश हो जाता है ।

### ३७— हनो वध च ।

अर्थः— हन हिंसागत्योः धातोः क्वुन् प्रत्ययो भवति धातोश्च वधादेशो जायते ।

उदाहरणम्— वधकः = हिंसकः,

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हन्तीति वधकः हिंसकः ॥

हिन्दीः— हन् धातु से क्वुन् प्रत्यय होता है और धातु को वध आदेश हो जाता है ।

### ३८— बहुलमन्यत्रापि ।

अर्थः अन्येभ्योऽपि धातुभ्यो बहुलं क्वुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— कुहकः = दाम्भिकः, नीहारः, ऐन्द्रजालिकः । भिदकः=कृपाणः । छिदकम् = वज्रः, हीरकम् । कृतकम् = विनिर्मितम्, कृत्रिमम्, मिथ्या । रुचकम् = मातुलंगकम्, सुन्दरं, दन्तः, स्वर्णाभूषणम्, पौष्टिकम्, माला, कृष्णलवणम् । लंगकः = प्रियः, संघः । उज्जकः = योगी, मेघः । भक्तः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बहुलवचनादन्यत्रापि क्वुन् । कुहयति विस्मयं कारयतीति कुहकः, दाम्भिको, नीहारो वा । कृन्तति छिनत्तीति कृतकं, मिथ्या वा । भिनत्ति येन स भिदकः, खड्गो वा । छिनत्ति येन तत् छिदकं, वज्रो वा । रोचतेऽनेन तत् रुचकम्, मातुलुंगकं वा, 'बिजौरा नींबू इति प्रसिद्धं वा । लंगति गच्छतीति लङ्गकः, प्रियो वा । उज्जत्युत्सृजतीति उज्जकः योगी मेघो वा ॥

३६— कृषेवृद्धिश्चोदीचाम् ।

अर्थः—कृष विलेखने इत्यस्माद्धातोः क्वुन् प्रत्ययो भवति उदीचामाचार्याणां मतेन धातोर्वृद्धिजायते ।

उदाहरणम्:— कार्षकः = कृषीबलः । कृषकः = कृषीबलः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृषतीति कार्षकः, कृषकः वा कृषीबलः ॥

हिन्दीः— कृषधातु से क्वुन् प्रत्यय होता है और उदीच् आचार्य के मत में धातु को वृद्धि हो जाती है ।

४०—उदकञ्च ।

अर्थः— उन्दीक्लेदने धातोः क्वुन् प्रत्ययो निपात्यते ।

उदाहरणम्:— उदकम् = जलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— उनक्ति क्लेदयतीति उदकं जलं वा ॥

४१— वृश्चिकृषोः किकन् ।

अर्थः— किकन्नधिकारः स्यमेः सम्प्रसारणं चेति यावत् । ओवृश्चु छेदने कृष विलेखने धातुभ्यां किकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—वृश्चिकः = विषी, शूककीट, वृश्चिकराशिः, कर्कटः सलोमकीटः गोमयकीटः । कृषिकः = फालः, कृषकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृश्चति छिनतीति वृश्चिकः विषी जीवविशेषः, शूककीटो वा, 'केंचुआ' इति प्रसिद्धः । कृषति येन स कृषिकः, फालो वा ॥

हिन्दीः— ओवृश्चु तथा कृष धातुओं से किकन् प्रत्यय होता है ।

४२—प्राडि पणिकषः ।

अर्थः— प्राडि ह्युपपदे पण व्यवहारे स्तुतौ च कष हिसांयां धातुभ्यां किकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— प्रापणिकः = पण्यविक्रयी, व्यापारी । प्राकषिकः = पारदारिकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रकर्षेण समन्तात् पणायत्यसौ प्रापणिकः, पण्यविक्रयी वा । प्राकषति हिनस्तीति प्राकषिकः, पारदारिको वा ॥

हिन्दीः— प्राड् उपपद होने पर पण तथा कष धातुओं से किकन् प्रत्यय होता है ।

४३— मुषेर्दीर्घश्च ।

अर्थः—मुषस्तेये धातोः किकन् प्रत्ययो भवति धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्:— मूषिकः = आखुः, चौरः, शिरीषतरुः, देशविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मुष्णाति पदार्थानिति मूषिकः आखुर्वा; स्त्रियां 'मूषिका' । अजादित्वात् (अ० ४/१/४) टाप् ॥

हिन्दीः— मुष धातु से किकन् प्रत्यय होता है और धातु को दीर्घ हो जाता है ।

#### ४४— स्यमेः सम्प्रसारणञ्च ।

अर्थः— स्यमु शब्दे धातोः किकन् प्रत्ययो भवति धातोश्च सम्प्रसारणं चकारात् दीर्घत्वं च जायते ।

उदाहरणम्ः— सीमिकः = वृक्षविशेषः, पिपीलिका, बामी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्यमति शब्दयतीति सीमिकः, वृक्षभेदो वा ॥

हिन्दीः—स्यमु धातु से किकन् प्रत्यय होता है और धातु को सम्प्रसारण तथा दीर्घ हो जाता है ।

#### ४५—क्रिय इकन्

अर्थः—डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये धातोः इकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—क्रियिकः = पण्यकः, क्रेता, व्यापारी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्रीणाति द्रव्येण पदार्थान्तरं ददाति गृह्णाति वा स क्रयिकः क्रेता; विक्रयिको विक्रेता ॥

हिन्दीः—डुक्रीञ् धातु से इकन् प्रत्यय होता है ।

#### ४६—आडि पणिपनि पतिखनिभ्यः ।

अर्थः—इकन्निति वर्तते । आडि उपपदे पणपन व्यवहारे स्तुतौ च पल्लु गतौ खनु अवदारणे इत्येतेभ्यो धातुभ्य इकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—आपणिकः = वैश्यः, वितरकः, विक्रेता । आपनिकः = म्लेच्छजातिः, पत्रानीलम् । आपतिकः = श्येनः । आखनिकः<sup>१</sup> = कुद्दालम, खनिकः, चौर मूषिकः, शूकरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(आ) समन्तात् पणायति व्यवहरति स आपणिकः, वैश्यो वा । आपणेन व्यवहरतीति तद्धिते ठकि सिद्धे नित्स्वरार्थं वचनम् । आपनायतीति आपनिकः, म्लेच्छजातिर्वा । (आ) समन्तात् पततीति आपतिकः, श्येनो वा । (आ) समन्तात् खनतीति आखनिकः, मूषिको वराहो वा ॥

हिन्दीः—आड् उपपद होने परपण आदि धातुओं से इकन् प्रत्यय होता है ।

\* १ आखनिकः — आ + खन् + इकन्—

आखनिकः सिद्धः ।



४७— श्यास्त्याहृजविभ्य इनच् ।

अर्थः—इनजधिकारो बहुलमन्यत्रा प्येतावत्पर्यन्तम् । श्यैङ् गतौ, स्त्यै शब्दसंघातयोः, हृञ् हरणे, अव रक्षणाद्यर्थेषु धातुभ्य, इनच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—श्येनः = आपतिकः, बाज इति भाषायाम् । स्त्येनः = चौरः । हरिणः = मृगः, श्वेतवर्णः, हंसः, दिनमणिः, विष्णुः, शिवः । अविनः = अध्वर्युः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्यायति गच्छतीति श्येनः, पक्षिभेदो वा । सत्यायति शब्दयति संघातयतीति स. सत्येन, चौरो वा । हरतीति हरिणः मृगः, पाण्डुवर्णो वा; स्त्रियां 'हरिणी' सुन्दरी छन्दोभेदो हरितवर्णा वा । अवति रक्षणादिकं करोतीति अविनः, अध्वर्युर्वा ॥

हिन्दीः— श्यैङ् आदि धातुओं से इनच् प्रत्यय होता है ।

४८— वृजेः किच्च ।

अर्थः—वृजी वर्जने धातोः इनच् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— वृजिनम् = पापम्, कुटिलम्, केशः, दुःखम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इनच् कित् । वृक्ते वर्जयतीति वृजिनः, केशः पापं वक्रो वा ॥

हिन्दीः—वृजी धातु से इनच् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

४९— अजेरज<sup>१</sup> च ।

अर्थः— अज गतिक्षेपणयोः धातोः इनच् प्रत्ययो भवति धातोश्च अजादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—अजिनम् = चर्म, मृगत्वक् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अजति गच्छति क्षिपति वा तत् अजिनम्, चर्म वा । अजादेशो वीभावनिवृत्त्यर्थः ॥

हिन्दीः— अज धातु से इनच् प्रत्यय होता है और धातु को अजादेश हो जाता है ।

\* १ अजेरज च = अत्र अजेर्व्यघञपोः इत्यनेन सूत्रेण वीभावः प्राप्नोति तद् बाधनार्थं सूत्रे अजादेशं चकार आचार्यपाणिनिः ।

## ५०— बहुलमन्यत्रापि ।

अर्थः— अन्येभ्योऽपि धातुभ्यो बहुलमिनच् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— कठिनम् = कठोरम् । बर्हिणः = मयूरः । कुण्डिलः = ऋषिः, नगरविशेषः, विदर्भदेशस्य राजधानी । फलिनः = तरुः, फलवृक्षः, पनसतरुः । नलिनम् = कमलम्, कुमुदम्, जलम्, नीलक्षुपः । मसिनम् = सुपिष्टम्, कज्जलम् । मलिनः = मलान्वितः, श्यामः, पापी, निकृष्टः । दिनम् = वासरः, द्रुहिणः = ब्रह्मा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कठति कृच्छ्रेण जीवतीति कठिनम्, कठोरं वा । कुण्डते दहतीति कुण्डिनः, ऋषिर्वा, यस्यापत्यं 'कौण्डिन्यः' । बर्हते प्रधानो भवतीति बर्हिणः, मयूरो वा । फलति विशीर्णो भवतीति फलिनः, फलवान् वृक्षो वा । नलति गन्धयुक्तो भवतीति नलिनम् कमलं वा । मस्यति परिणमतीति मसिनम्, सुपिष्टं वा । मलते धरतीति मलिनः, मलयुक्तो वा । द्रुह्यति जिघांसतीति द्रुहिणः, ब्रह्मा वा । अन्धकारं द्यत्यवखण्डयतीति दिनम्, दिवसं वा । इनचः कित्त्वादाकारलोपः ॥

हिन्दीः— अन्य धातुओं से भी इनच् प्रत्यय होता है । और वह कित् हो जाता है ।

## ५१—द्रुदक्षिभ्यामिनन् ।

अर्थः— द्रु गतौ दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे चैताभ्यां धातुभ्यामिनन् प्रत्ययो भवति । अयमिनन्नधिकारो महेरिण्चेति प्रवर्तते ।

उदाहरणम्— द्रविणम् = धनम्, पराक्रमम्, सुवर्णम्, वीरता, वातः । दक्षिणः = आशुकारी, सरलः, योग्यः, कुशलः, सक्षमः, सत्यः, वशवर्ती, निष्पक्षः, रुचिकरः, शिष्टपुरुषः, आज्ञानुवर्ती । दक्षिणा = दानम्, प्रतिष्ठा, उपहारः, शुल्कम्, पयोवतीगौः, दक्षिणदिक्, दक्षिणभारतम् पारिश्रमिकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—द्रवति गच्छति द्रुयते प्राप्यते वा तद् द्रविणम्, द्रव्यं सुवर्णं पराक्रमो वा । दक्षते वर्धते शीघ्रकारी भवति वा स दक्षिणः, सरलो

\*१ दिनम् = दो (अवखण्डने) + इनच् अत्र आदेच उपदेशेऽशिति इत्यनेन आकारादेशे विहिते कित्वात् आतो लोप इति चेति आकारलोपे दिनं सिद्धम् ।

अवामभागः परतन्त्राऽनुवर्तनश्च, स्त्रियां दक्षिणा दानं, प्रतिष्ठा वा ॥

हिन्दीः—द्रु तथा दक्ष धातुओं से शीघ्रतार्थ में इनन् प्रत्यय होता है।

५२— अर्त्तः किदिच्च ।

अर्थः— ऋ गतौ धातोरिनन् प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययः कित्सम्पद्यते धातोश्चेदादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—<sup>१</sup>इरिणम् = शून्यम् ऊषरभूमिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छन्ति गच्छन्ति यत्र यस्माद्वा जनास्तत् इरिणम् शून्यम्, ऊषरभूमिर्वा ॥

हिन्दीः— ऋ धातु से इनन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है तथा धातु को इदादेश होता है ।

५३— वेपितुहयोर्हस्वश्च ।

अर्थः— टुवेपृ कम्पने तुहिर् अर्दने अर्द गतौ याचने च

इत्येताभ्यां धातुभ्यामिनन् प्रत्ययो भवति धात्वोश्च हस्वादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—विपिनम्<sup>२</sup> = वनम्, वाटिका । तुहिनम् = हिमम्, ओस, कुहरम, ज्योत्स्ना ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यत् वेपते कम्पते यत्र वा तद् विपिनम्, गहनं वा । तोहति गच्छति याचते वा तत् तुहिनम्, हिमं वा । गुणे कृते हस्वः ॥

हिन्दीः—टुवेपृ तथा तुहिर् धातुओं से इनन् प्रत्यय होता है । और धातु को हस्वादेश हो जाता है ।

५४— तलिपुलिभ्यां च ।

अर्थः— तल प्रतिष्ठायां पुल महत्वे धातुभ्यां-इनन् प्रत्ययो भवति धातोश्च हस्वादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—<sup>३</sup>पुलिनम् = वारिसामीप्यम्, सैकतम्, लघुद्वीपम् नदीतटम्-१ ।

<sup>१</sup>तलिनम् = विरलम्, पृथग्भूतम् स्वल्पम्, स्वच्छम् सूक्ष्मम् निम्नस्थितं विषृम् ।

\*दूरिणम् = ऋ + इनन् = अत्र इदादेश उरण् रपरः इति नियमेन रेफसहितः सञ्जायते तथा च अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेडपि ८/४/२ इत्यनेन णत्व प्रपद्यते

२- विपिनम् = वेप् + इनन् + सु विप् + इन + अम् अत्रामिपूर्वः सूत्रेण पूर्वरूपे सतिरूपसिद्धिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तालयति प्रतितिष्ठतीति तलिनम्, विरलं पृथग्भूते स्वल्पं स्वच्छं वा । पोलयति महान् भवतीति पुलिनम्, जलसामीप्यं वा ॥

हिन्दीः— तल तथा पुल धातुओं से इनन् प्रत्यय होता है और धातु को ह्रस्वादेश हो जाता है ।

### ५५— गर्वरत उच्च ।

अर्थः— गर्व गतौ धातोः इनन् प्रत्ययो भवति धातोः अकारस्य चोकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— गुर्विणी = गर्भिणी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गर्वति प्राप्नोति गर्वयति मुञ्चति वा सा गुर्विणी गर्भिणी वा ।

हिन्दीः— गर्व धातु से इनन् प्रत्ययो होता है और धातु के अकार को उकारादेश हो जाता है ।

### ५६— रुहेश्च ।

अर्थः— रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च इत्यस्माद्धातोः इनन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— रोहिणः = चन्दन वृक्षः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोहति वीजेन जायते स रोहिणः; प्रज्ञादित्वाद् (अ० ५/४/३८ स्वार्थे) अण् = रौहिणः; चन्दनवृक्षो वा । जातिवाचकात् स्त्रियां डीष् रोहिणी, गौर्वा ॥

हिन्दीः— रुह धातु से इनन्प्रत्यय होता है ।

### ५७— महेरिनण् च ।

अर्थः— मह पूजायां धातोः इनण् प्रत्ययो भवति चकारात् इनन् च ।

उदाहरणम्ः— माहिनम् = पूज्यम् । महिनम् = पूज्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—महति मह्यते पूज्यते वा तत् माहिनम् ; महिनम् राज्यं वा । चादिनजनुवर्तते ॥

हिन्दीः—मह धातु से इनन् प्रत्यय होता है और इनण् भी ।

### ५८— क्विप् वचिप्रच्छिश्रिसुद्रुप्रुज्वां दीर्घोऽसम्प्रसारणं च ।

अर्थः— क्विबधिकार स्तनोतेरनश्च वः इति सूत्रपर्यन्तम् । वच

परिभाषणे, प्रच्छ ज्ञीप्सायां श्रिञ् सेवायां सु गतौ दु गतौ पु गतौ जु गतौ इति, सौत्रो धातुरित्येतेभ्यो धातुभ्यः क्विप् प्रत्ययो भवति धातूनां च दीर्घो जायतेऽसम्प्रसारणं च ।

उदाहरणम्:— वाक्<sup>१</sup> = वाणी, शब्दः पदावली वचनम्, भाषा, वार्ता, उक्तिः, प्रतिज्ञा च पदोच्चयः विश्वासः सरस्वती । प्राट् = शिष्यः, प्रश्नकर्ता, निरीक्षकः । श्रीः = लक्ष्मीः, ईश्वर रचना, सृष्टिः, शोभा राजसत्ता, प्रतिष्ठा, सौन्दर्यम्, वर्णः, रूपम्, विष्णुपत्नी, गुणः श्रेष्ठता बुद्धिः, तरुः कमलम्, अतिमानवशक्तिः, धर्मार्थकामत्रयम्, रामठम्, विल्ववृक्षः । सूः = यज्ञसाधनम् । प्रूः = स्वर्णम् । कटप्रूः = कामुकः, कीटः । जूः = शशकः हयः, बलीवर्दः, नभः ज्ञानम्, गतिः राक्षसी पर्यावरणं, सरस्वती विशेषणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वक्ति शब्दानुच्चारयति यया सा वाक् । पृच्छतीति प्राट् । शब्दं पृच्छतीति 'शब्दप्राट्' शिष्यो वा; शब्दप्राशौ, शब्दप्राशः । छ्वोः शूडनुनासिके च । (अ० ६/४/१६) इति छस्य शः । श्रयति श्रीयते वा सा श्रीः, ईश्वररचना शोभा वा । या स्रवति यस्या वा सा सूः, यज्ञसाधनं वा । द्रूयते प्राप्यते दुःखमनर्या साद्रूः, हिरण्यं वा । कटेन कटिभागेन प्रवते गच्छतीति कटप्रूः कामुको जनः कीटो वा । जवति शीघ्रं गच्छतीति जूः, शशोऽश्वो वृषभ आकाशं विधा वा ॥

बाहुलकात्—प्रवर्षन्ति मेघा यस्यां सा प्रावृट् ऋतुः । 'द्वारयति संवृणोति यया सा द्वाः द्वारौ । उदकेन श्वयति वर्धते तत् उदशिवत्, तक्रं वा । ऋचन्ति स्तुवन्ति यया सा ऋक् ॥

हिन्दीः— वच आदि धातुओं से क्विप् होता है तथा धातुओं को सम्प्रसारण न होकर दीर्घ हो जाता है

### ५६— आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ।

अर्थः—आप्तृ व्याप्तौ धातोः क्विप् प्रत्ययो भवति धातोश्च ह्रस्वादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— आपः = जलम् कित्विषम् ।

\*१—वाक् = वच् + क्विप् + सु = सर्वापहारी लोपः क्विप् प्रत्ययस्य, वच् + सु दीर्घत्वे कुत्वे सुलोपे च रूप सिद्धिः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आप्नुवन्ति शरीरमिति आपः । अस्य नित्यं बहुवचनत्वं स्त्रीत्वं च । अपः अदिभः, अद्भ्यः इत्यादि ।।

हिन्दीः— आप्लु धातु से क्विप् प्रत्यय होकर हस्वादेश होता है

६०— परौ व्रजेः षश्च पदान्ते ।

अर्थः— परि उपपदे व्रज गतौ धातोः क्विप् प्रत्ययो भवति धातोश्च पदान्ते षकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— परिव्राट् = संन्यासी, तपस्वी । परिव्राड् = संन्यासी, तपस्वी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्विप् । परितः सर्वतो व्रजति स परिव्राट्, संन्यासी वा परिव्राजौ, परिव्राजः ।।

हिन्दीः— परि पूर्वक व्रज् धातु से क्विप् प्रत्यय होकर धातु के पदान्त को षकारादेश होता है ।

६१— हुवः श्लुवच्च ।

अर्थः— हु दाना—दानयोः धातोः क्विप् प्रत्ययो भवति धातोश्च श्लुवत् कार्यम् जायते तथा च दीर्घत्वम् ।

उदाहरणम्ः— १जुहूः = सुग्विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः जुहोति ददात्यति वा यया सा जुहूः, सुग्भेदो वा ।।

हिन्दीः— हु धातु से क्विप् प्रत्यय होता है और धातु को दीर्घ होकर श्लुवत् कार्य हो जाता है ।

६२— सुवः कः ।

अर्थः— सु गतौ धातोः कः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— १सुवः = चमसम्, यज्ञसाधनम् निर्झरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्रवति घृतमस्मात् स सुवः, यज्ञसाधनं वा ।

१—जुहूः = हु + क्विप् अत्र क्विष्कृते सति धातोर्दीर्घत्वं क्विपः सर्वापहारी लोपः श्लुवद्भावेन श्लौ—इति द्वित्वे पूर्वोऽभ्यासः ह्रस्वः, कुहोश्चुः इति अभ्यास चुत्वे अभ्यासे चर्च इति जश्त्वे स्वादिसमुत्पत्तौ विसर्गी भूते रूपसिद्धिः ।

२ सुवः = सु + क अत्र अचिश्नु धातु भ्रुवांय्वोरियडुवडौ इति उवडादेशो रूपसिद्धिः ।

हिन्दीः— सु धातु से क प्रत्यय होता है ।

६३—चिक च ।

अर्थः— सु गतौ धातोः चिक् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— सुक्<sup>१</sup> = यज्ञोचितवस्तु, सुवा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— 'सु' धातोश्चिक् प्रत्ययोऽपि भवति । घृतमस्याः  
स्रवति सा सुक्, यज्ञोचितद्रव्यं वा ॥

बहुलवचनात्—ध्रुवति स्थिरं भवतीति ध्रुवम्, निश्चलं वा ॥

हिन्दीः— सु धातु से चिक प्रत्यय होता है ।

६४— तनोतेरनश्च वः ।

अर्थः— तनु विस्तारे धातोः चिक प्रत्ययो भवति तनोश्च अनः स्थाने  
वकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— त्वक् = चर्म, त्वचा, वल्कलम्, आवरणम्, स्पर्शज्ञानं ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तनोति विस्तृता भवतीति त्वक्, शरीरावरणं चर्म  
बल्कलं वा । त्वचौ, त्वचः ।

हिन्दीः— तनु धातु से चिक् प्रत्यय होता है और तनु के अन के स्थान  
में वकारादेश होता है ।

६५—ग्लानुदिभ्यां डौ ।

अर्थः—ग्लै हर्षक्षये णुद प्रेरणे धातुभ्यां डौ प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—ग्लौः = चन्द्रमाः, कर्पूरः । नौः = नौका, जलतरणसा-  
धनम्, नक्षत्रपुञ्जविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ग्लायति हर्षक्षयं करोतीति ग्लौः, चन्द्रमा वा ।  
नुदति प्रेरयतीति नौः, जलतरणसाधनं वा ॥

हिन्दीः— ग्लै और णुद धातुओं से डौ प्रत्यय होता है ।

\*१—स्रुवः = सु + चिक् = च्

स्रुच् + सु हल्ङयाब्भूत्रेण सुसलोपे चोक्ः कुत्वे रूपसिद्धिः ।

२ ग्लौः = ग्ला + डौ अत्र डित्यनुबन्ध करणसामर्थ्यात् टिलोपे कृते  
रूपसिद्धिः ।

६६—च्चिरव्ययम्<sup>१</sup>।

अर्थः— च्चि प्रत्यायान्ताः शब्दा अव्ययसंज्ञका भवन्ति।

उदाहरणम्:— अग्लौ ग्लौः सम्पद्यते इति। ग्लौ करोति = अचन्द्र चन्द्र होता है। ग्लौ भवति = अचन्द्र चन्द्र होता है। ग्लौ स्यात् = अचन्द्र चन्द्र होता है।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अत्रस्थ एजन्तप्रत्यायान्तश्च्यन्त एवाव्ययसंज्ञो भवति एतेन नियमेनोणादीनां व्युत्पन्नपक्षे कृन्मेजन्तः (अ० १/१/३८) इत्यनेनाच्च्यन्तानामव्ययसंज्ञा न भवति। अग्लौ ग्लौः सम्पद्यते इति ग्लौकरोति, ग्लौभवति, ग्लौस्यात्, नौकरोति इत्यादि। 'ग्लौः नौः' अत्र केवलानामव्ययसंज्ञाऽभावाद्धिभक्तिलुङ् न भवति।।

हिन्दीः—च्चि प्रत्यायान्त शब्द अव्यय संज्ञक होते हैं।

## ६७—रातेर्ऌः

अर्थः—रा दाने धातोः ऌः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— राः = धनम्, हिरण्यम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—राति ददाति रायते दीयते वा सा राः, धनं सुवर्णं वा। रायौ, रायः। च्चिप्रत्यये 'रैकरोति' इत्यादि।।

हिन्दीः— रा धातु से ऌ प्रत्यय होता है।

## ६८— गमेर्ऌोः।

अर्थः— गम्त् गतौ धातोः ऌोः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— गौः = धेनुः, किरणः, सूर्यः, ज्या, पशुः, इन्द्रियम् स्वर्गः, विशिखः, गगनम्। सुखम्, वज्रम्, राशी भूमिः, वाणी, उदकम्, ऋक्षम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गच्छति यो यत्र यया वा सा गौः, पशुरिन्द्रियं सुखं किरणो वज्रं चन्द्रमा भूमिर्वाणी जलं वा। गौरिवाऽयो गमनं प्राप्तिर्वाऽस्येति 'गवयः' गोसदृशो वनपशुविशेषः; स्त्री 'गवयी'। गौरादित्वात् (अ० ४/१/४१) ऌीष्। च्चिप्रत्यये 'गोकरोति' इत्यादि।

बाहुलकात्— द्योतन्ते लोका अस्यां यया वा द्योतने सा द्यौः, अन्तरिक्षं वा। द्यावौ, द्यावः इत्यादि।।

१—अत्रस्थित एजन्तप्रत्यायान्तश्च्यन्त एवाव्ययसंज्ञको भवति।

एतेन नियमेनोणादीनां शब्दानां व्युत्पन्नपक्षे कृन्मेजन्त इत्यनेनाच्च्यन्तानामव्यय संज्ञा न सम्बद्यते।।



हिन्दीः— गम्लु धातु से डो प्रत्यय होता है।

६६—भ्रमेश्च डूः।

अर्थः— भ्रमुश्चलने चकारात् गम्लु गतौ इत्यस्मादपि धातुभ्यां डूः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्— भ्रूः नयनयोरुपरि भागः। \*अग्रेगूः = सेवकः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चाद् 'गम' धातोर्ङूः। भ्रमति चलतीति भ्रूः, नेत्रयोरुपरि रेखा वा। अग्रे गच्छतीति अग्रेगूः, सेवको वा।।

हिन्दीः— भ्रमु और गम्लु धातुओं से डू प्रत्यय होता है।

७०— दमेर्डोसिः।

अर्थः— दमु उपशमे धातोः डोसि प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्—दोः = बाहुः, अग्रभुजा।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स दोः, बाहुर्वा। दोषौ, दोषः।।

हिन्दीः—दमु धातु से डोसि प्रत्यय होता है।

७१—पणेरिज्यादेश्च वः।

अर्थः— पण व्यवहारे स्तुतौ च धातोः इजिः प्रत्ययो भवति, धातोश्चादेः वः सम्पद्यते।

उदाहरणम्—वणिक् = वैश्यः, व्यापारी।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पणायति व्यवहरतीति वणिक्, वैश्यो वा। वणिजौ, वणिजः। प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण् 'वाणिजः'।

हिन्दीः—पण धातु से इजि प्रत्यय होता है और धातु के आदि को वकार हो जाता है।

७२—वशः कित्।

अर्थः—वश कान्तौ धातोः इजिः प्रत्ययो भवति सच कित् सम्पद्यते।

उदाहरणम्—<sup>२</sup>उषिक् = आज्यम्, पावकः।

\*१ अग्रेगूः = अग्रे गम् + डू अत्र हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् इत्यनेन अग्रशब्दे या सप्तमी विभक्तिः सा अलुग्रूपेण राजते।

\*२ उषिक् = वश + इज् अत्र कित्वात् ग्रहिज्यावयिव्यधिवृष्टि ०६/१/१६ इत्यनेन सम्प्रसारण तथा च सम्प्रसारणाच्च पूर्वरूपत्वं सम्पद्यते।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—'इजिः कित् । वष्टि यं कामयते यः काम्यते वा स उशिक्, अग्निर्घृतं वा । उशिजौ, उशिजः ।।

हिन्दीः— वश धातु से इजि प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### ७३— भृञ् उच्च ।

अर्थः— डुभृञ् धारणपोषणयोः धातोः इजि प्रत्ययो भवति स च किञ्जायते धातोश्च उदादेशः ।

उदाहरणम्ः— भुरिक् = भूः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भरति सर्वं धरतीति भुरिक्, भूमिर्वा । भुरिजौ । भुरिजः ।।

हिन्दीः— डुभृञ् धातु से इजि प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है । तथा धातु को उदादेश हो जाता है ।

### ७४— जसिसहोरुरिन् ।

अर्थः— जसु मोक्षणे षह मर्षणे इत्येताभ्यां धातुभ्यां उरिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— जसुरिः = अशनिः । सहुरिः = सूर्यः भूमिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जस्यति मुञ्चति जासयति हिनस्ति वेति जसुरिः, वज्रं वा । सहते भारमिति सहुरिः, सूर्यो भूमिर्वा ।।

हिन्दीः— जसु और षह धातुओं से उरिन् प्रत्यय होता है ।

### ७५— सुयुरुवृञो युच् ।

अर्थ—युजधिकृतोऽयं "बहुलमन्त्रापि" पर्यन्तम् । षुञ् अभिषवे यु मिश्रणामिश्रणयोः रु शब्दे वृञ् वरणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो युच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— सवनः = चन्द्रमाः, यज्ञः । यवनः = मलेच्छ विशेषः । विदेशी, जंगली, गुञ्जनम् । रवणः = कोकिलः, वृक्ष विशेषः, प्राकारः, सेतुः उष्ट्रः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सवत्युत्पादयति सुनोति निस्सारयति रसान् वा स सवनः चन्द्रमा वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स यवनः, म्लेच्छभेदो वा । रौति शब्दयतीति रवणः, कोकिलः पक्षी वा । वृणोति स्वीकरोतीति वरणः, उदकं वृक्षभेदो वा ।।

हिन्दीः— षुञ् आदि धातुओं से युच् प्रत्यय होता है ।

१-सवनः = सु + यु अत्र युवोरनाकौ इत्यनेन युस्थाने अनादेशः सञ्जायते ।

७६— अशेरशच् ।

अर्थः—अशूङ् व्याप्तो धातोः युच् प्रत्ययो भवति ।

अशेश्च रशच् आदेशो जायते ।

उदाहरणम्:— रशना = नारीकटिभूषणम्, रज्जुः, प्रग्रहः, जिह्वा,

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—युच् धातो रशादेशश्च । अश्नुते व्याप्नोतीति रशना, स्त्रियाः कटिभूषणं वा । दन्त्यसान्तः । रसयत्यास्वादयति यया सा रसना जिह्वा । कृत्यल्युटो बहुलम् (अ० ३/३/११३) इति करणे ल्युः ॥

हिन्दी:— अशूङ् धातु से युच् प्रत्यय होता है और अश् को रशच् आदेश हो जाता है ।

७७— उन्देर्नलोपश्च ।

अर्थः— उन्दी क्लेदने धातोः युच् प्रत्ययो भवति । नकारस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्:—ओदनः = भक्तम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उनत्यार्दीभवतीति ओदनः, भक्तं वा ॥

हिन्दी:— उन्दी धातु से युच् प्रत्यय होता है और नकार का लोप हो जाता है ।

७८— गमेर्गश्च ।

अर्थः— गम्लृ गतौ धातोः युच् प्रत्ययो भवति गमेर्मकारस्य च गादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— गगनम् = अन्तरिक्षम्, शून्यम्, रवर्गः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मस्य गः । गच्छन्त्यस्मिन्निति गगनम्, आकाशं वा ॥

७९— बहुलमन्यत्रापि ।

अर्थः—अन्येभ्योऽपि धातुभ्यो बहुलं युच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— द्योतनः = दीपकः । स्यन्दनः = रथः । नयनम् = लोचनम्, मार्ग दर्शनम्, आकर्षणम्, प्रापणं शासनम् । चन्दनम् = सुगन्धिः, पाटीरवृक्षः । गोरोचनम् = औषधम् । असनः = पीतवर्णः, शालवृक्षः । राजातनः = कुसुमम् । श्रवणम् = कर्णः, नक्षत्रम्, अध्ययनम्, धनम् ख्यातिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अन्यधातुभ्योऽपि बहुलं युच् प्रत्ययो भवति । द्योततेऽसौ द्योतनः, प्रदीपो वा । स्यन्दते प्रस्रवति गच्छतीति स्यन्दनः, रथो वा । नयते प्राप्नोति रूपं येन तत् नयनम्, नेत्रं वा । चन्दत्याह्लादयतीति चन्दनम्, सुगन्धिर्वृक्षो वा । रोचतेऽसौ रोचना, गोरोचनमौषधं वा । अस्यति प्रक्षिपतीति असनः, पीतवर्णः शालवृक्षो वा । राजानमततीति राजातनः, पुष्यं वा । श्रृणोत्यनया सा श्रवणा; नक्षत्रं वा, (पुंसि श्रवणः, कर्णेन्द्रियं वा) । एवमन्येऽपि यथा प्रयोगं युच्चप्रत्ययान्ताः शब्दाः साध्याः ॥

हिन्दीः—अन्य धातुओं से भी बहुल करके युच् प्रत्यय होता है ।

८०—रञ्जेः क्युन् ।

अर्थः—रञ्ज रागे धातोः क्युन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—रजनम् = कुसुम्भम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रजति वस्त्राण्यनेन तत् रजनम्, कुसुम्भं वा; स्त्रियां ङीष् 'रजनी' हरिद्रा । ल्युट्प्रत्यये सति रञ्जनम् इत्येव भवति ।

बाहुलकात्—कल्पतेऽसौ कृपणः, लोभयुक्तो वा ॥

हिन्दीः—रञ्ज रागे धातु से क्युन् प्रत्यय होता है ।

८१—भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि । अत्र क्युन्ननुवर्तते ।

अर्थः—भू सत्तायां षूङ् प्राणिगर्भविमोचने धूञ् कम्पने भ्रस्ज पाके इत्येतेभ्यो धातुभ्यश्छन्दसि विषये बहुलं क्युन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—भुवनम् = लोकः, स्वर्गः, प्राणी, मनुष्यः, जलम्, चतुर्दशसंख्या । सुवनम् = ईश्वरः सूर्यः । निधुवनम् = रतिक्रीडा, क्षोभः, कम्पनम् । भृज्जनम् = अन्नभर्जनकपालम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्युन् । भवतीति भुवनम्, लोको वा । बहुलवचनाद् भाषायामपि प्रयुज्यते । सूते सूयते वा स सुवनः, ईश्वरः सूर्यो वा । धूनोति कम्पयतीति धुवनः, अग्निर्वा । निधुवनम्, रतिक्रीडा वा । यद् यस्मिन् वा भृज्जति परिपक्वं भवतीति भृज्जनम्, अन्नभर्जनकपालं वा ॥

हिन्दीः—भू सत्तायाम् "षूङ् प्राणिगर्भ विमोचने" धूञ् कम्पने" तथा "भ्रस्ज पाके" इन धातुओं से छन्दविषय = वेद विषय में बहुल करके क्युन् प्रत्यय होता है ।

८२— कृपृजिमन्दिनिधाजः क्युः ।

अर्थः—क्युप्रत्ययो हन्तेर्घुरच्सूत्रपर्यन्तंप्रवर्तते । । कृ विक्रमे पृ पालनपूरणयोः वृज्जी वर्जने मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु निपूर्वकं डुधाज् धारणपोषणयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्युः प्रत्यगो भवति ।

उदाहरणम्ः— किरणः<sup>१</sup> = रश्मिः । पुरणः = समुद्रः । वृजनम् = अन्तरिक्षम्, बलम्, पापम्, संकटं, गोचरभूमिभेदः । मन्दनम् = स्तोत्रम्, प्रशंसा । निधनम् = मृत्युः हानिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्रिपत्यन्धकारमिति किरणः (रश्मिर्वा) । पिपति पालयति पूरयति जलैः पूर्णो भवतीति वा स पुरणः, समुद्रो वा । वृक्ते वर्जयतीति वृजनम्, अन्तरिक्षं बलं वा । यो येन वा मन्दते स्तौति स्वपिति कामयते वा तत् मन्दनम्, स्तोत्रं वा । नितरां दधाति यत्तत् निधनम् मरणं वा । बाहुलकात् केवलादपि धनम् ।

हिन्दीः— कृ आदि धातुओं से क्यु प्रत्यय होता है

८३— धृषेर्धिषच् सञ्ज्ञायाम् ।

अर्थः— धृष प्रागल्भ्ये धातोः संज्ञायां विषये क्युः प्रत्ययो भवति धृषेश्च धिषजादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— धिषणा = बुद्धिः, भाषणम्, स्तुतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— धृष्णोति प्रागल्भ्यं ददाति स धिषणः गुरुः ; धिषणा बुद्धिर्वा । अत्र सञ्ज्ञाग्रहणेन ज्ञायते उणादयः सामान्यार्थं यौगिका भवन्तीति । सञ्ज्ञायास्तस्मिन्नर्थे रूढत्वात् । यदि च प्रकृतिप्रत्ययविभागेन उणादिभ्यो यौगिकोऽर्थो न निस्सरेत्, तर्हि सर्व उणादिस्थाः शब्दाः सञ्ज्ञावाचका एव स्युः । पुनः सञ्ज्ञाग्रहणमनर्थकं स्यात् । ।

हिन्दीः— धृष प्रागल्भ्ये धातु से संज्ञा विषय में क्यु प्रत्यय होता है तथा धृष के स्थान में धिषच् आदेश होता है ।

८४— हन्तेर्घुरच् ।

अर्थः— हन् हिंसागत्योः धातोः क्युः प्रत्ययो भवति धातोश्च घुरच्

\*१—किरणः= कृ + क्यु अत्र “ऋत इद्धातोः उरण् रपर इति रपरत्वं भूते तथा च युस्थाने अनादेशो णत्वे किरणः प्रसिद्धयति

आदेशो जायते।

उदाहरणम्:— घुरणः = शब्दः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हन्ति हननेन वा प्रादुर्भवति स घुरणः, शब्दो वा।।

हिन्दी:— हन् धातु से क्यु प्रत्यय होता है तथा हन के स्थान में घुरच् आदेश होता है।

८५— वर्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च।

अर्थ:— वर्तमाने काले पृषु सेचने बृह वृद्धौ मह पूजायां गन्तु गतौ इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽति प्रत्यान्ताः पृषद्, बृहत्, महत्, जगत् शब्दा निपात्यन्ते शतृवच्च कार्यं जायते।

उदाहरणम्:—पृषत् = बिन्दुः मृगविशेषः। बृहत् = महत्यर्थे, दृढम्। जगत् = संसारः, वायुः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पृषदादयो वर्तमानार्थवाचका अतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते, शतृवच्चैषां कार्यं भवतीति। पर्षति सिञ्चति हिनस्ति वा तत् पृषत् मृगविशेषो बिन्दुर्वा। पृषती, पृषन्ति; स्त्रियां पृषती। बर्हति वर्धतेऽसौ बृहत् महत्यर्थे त्रिलिंगः; स्त्रियां 'बृहती' छन्दोभेदो वा। महति पूजयति पूज्यते वा तत् महत् महान्; महतो भावो 'महिमा'; स्त्रियां डीप् 'महती', नारदस्य सप्ततन्त्री वीणा वा। गच्छतीति जगत्। धातोरर्जगादेशः। संसारे नपुंसकं, वायुर्वा जगत् पुंसि, जंगमवाचिनि त्रिलिंगः; स्त्रियां जगती छन्दोभेदो जनो वा।।

हिन्दी:— पृषादि धातुओं से अति प्रत्ययान्त पृषदादि शब्द निपातन किये जाते हैं।

८६— संश्चतृपद्वेहत्।

अर्थ:— सम, पूर्वकं चिञ् चयने तृप प्रीणने वि पूर्वकं हन हिंसागत्योः इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽति प्रत्ययान्ताः संश्चत् तृपत् वेहत् शब्दा निपात्यन्ते।

उदाहरणम्:— संश्चत् = कुहकः। तृपत् = छत्रम्। वेहत् = गर्भोपघातिनी गौः। वन्ध्याः गौः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एतेऽप्यतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। संश्चीयतेऽसौ संश्चत्, कुहको वा। संपूर्वस्य सुट् धातोरिकारलोपश्च। संश्चदिवाचरति संश्चायते धूमः, भृशादित्वात् क्यङ्। तृप्नोति प्रीणयतीति तृपत्, छत्रं वा। विशेषण हन्तीति वेहत्, विहन्ति गर्भमिति गर्भोपघातिनी गौर्वा। वेरुपसर्गस्यैकारादेशो

धातोश्च टिलोपः । पूर्वसूत्रात् पृथक्करणं शतृवदभावनिवृत्त्यर्थम् । तेन—वेहतौ, वेहतः ; संश्चतौ, (संश्चतः) इत्यादि सिद्धम् ।।

हिन्दीः— सम पूर्वक चिञ तथा तृप वि पूर्वक हन धातुओं से अति प्रत्ययान्त संश्चत्, तृपत् वेहत् शब्द निपातन किये जाते है ।

### ८७— छन्दस्यसानच् शुजूभ्याम् ।

अर्थः— असानच् छन्दस्यसानच् शुजूभ्याम् सन्वच्च याक्त् । शु सौत्रो धातुः जृ वयोहानौ इत्येताभ्यां धातुभ्यां वेदविषये असानच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— शवसानः = मार्गः यात्री । जरसानः = वृद्धजनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शवन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स शवसानः, मार्गो वा । जीर्यति वयसा हीनो भवतीति जरसानः, वृद्धो जनो वा ।।

बाहुलकाद्— दृणाति तमो विदारयतीति दरसानः, प्रकाशो वा । तरति येन स तरसानः, नौका वा । वृणोतीति वरसानः, कृतदारो वा ।।

हिन्दीः— शु तथा जृ धातुओं से वेद विषय में असानच् प्रत्यय होता है ।

### ८८— ऋञ्जिवृद्धिमन्दिसहिभ्यः कित् ।

अर्थः— ऋञ्जि भर्जने वृधु वृद्धौ मदि स्तुति मोद मदस्वंप्नकान्तिगतिषु षह मर्षणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो ऽसानच् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— ऋञ्जसानः = मेघः । वृधसानः = पुरुषः । मन्दसानः = अग्निः, प्राणी, निद्रा । सहसानः = मयूरः, यज्ञः, आहुतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋञ्जत्योषध्यादिकं पाचयतीति ऋञ्जसानः, मेघो वा । वर्धतेऽसौ वृधसानः, पुरुषो वा । मन्दते स्तुत्यादिकं करोतीति मन्दसानः, जीवोऽग्निर्वा । सहतेऽसौ सहसानः, मयूरो यज्ञो वा ।।

हिन्दीः— ऋजादि धातुओं से असानच् प्रत्यय होता है और कितवत् कार्य होता है ।

### ८९— अर्त्तगुणः शुट् च ।

अर्थः— ऋ गतौ धातोरसानच् प्रत्ययो भवति धातोः च गुणो जायते शुडागमश्च प्रत्ययस्य ।

उदाहरणम्ः— अर्शसानः = अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— य ऋच्छति प्राप्नोति सर्वान् स अर्शसानः, अग्निर्वा । धातोरुणः प्रत्ययस्य शुडागमश्च ।।

हिन्दीः— ऋ धातु से असानच् प्रत्यय होता है और धातु को गुण तथा प्रत्यय को शुट् का आगम होता है ।

### ६०—सम्यानच् स्तुवः ।

अर्थः—सम्युपपदे ष्टुञ् स्तुतौ धातोरानच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— संस्तवानः = वाग्मी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सम्यक् स्तौतीति संस्तवानः, वाग्मी वा ।

हिन्दीः— सम् उपपद रहते ष्टुञ् धातु से आनच् प्रत्यय होता है ।

### ६१—युधिबुधिदृशः किच्च ।

अर्थः—युध सम्प्रहारे बुध अवगमने दृशिर् प्रेक्षणे इत्येतेभ्यो धातुभ्य आनच् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— युधानः = शत्रुः, योद्धा, क्षत्रियजातिपुरुषः । बुधानः = आचार्यः, ऋषिः, प्राज्ञः, धर्मोपदेष्टा । दृशानः = लोकपालः, सूर्यः, आध्यात्मिक गुरुः ब्राह्मणः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— युध्यतेऽसौ युधानः, शत्रुर्वा । बुध्यते स बुधानः, आचार्यो वा । पश्यतीति दृशानः, लोकपालः सूर्यो वा ।

बाहुलकात्—कल्पते समर्थो भवतीति कृपाणः, खड्गो वा । पाषयति स्थूलो भवतीति पाषाणः, (दृषद् वा । बाहुलकाणित्त्वम्) । णित्वाद् वृद्धिः ।।

हिन्दीः— युधादि धातुओं से आनच् प्रत्यय होता है । तथा कित्त्वत् कार्य होता है ।

### ६२—हुर्छः सनो लुक् छलोपश्च ।

अर्थः—हुर्छा कोटिल्ये धातोरानच्संश्च प्रत्ययौ भवतः सनो लुग् जायते छकारस्य च लोपः ।

उदाहरणम्ः— \*जुहुराणः = चन्द्रमाः ।

\*१—जुहुराणः

हुर्छु + आनच् सन्

हुर्छु आन +

हुर् आन संन्यडोः इत्यनेन द्वित्वं

हुर् हुर् आन अभ्यासादिकार्यं

हु हुर् आन कुहोश्चुः

झु हुर् आन अभ्यासे चर्च

जुहुरान, जुहुराण अट्कुप्वाड

नुम्यवायइतिणत्वम् ।



स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हूर्च्छति कुटिलो भवतीति जुहुराणः, चन्द्रमा वा ।।

हिन्दीः—हुच्छा कौटिल्ये धातु से आनच् तथा सन् प्रत्यय होते हैं । सन् का लुक् तथा छकार का लोप होता है ।

### ६३—शिवतेर्दश्च ।

अर्थः—शिवता वर्णे धातोः सन् प्रत्ययो भवति आनच् च । सनो लुक् सम्पद्यते शिवतेस्तकारस्य च दकार आनच् च किद् भवति ।

उदाहरणम्ः—शिवदानः = पापीयान्, पवित्राचरणः, पुण्यात्मा, सद्गुणी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सनो लुक् तकारस्य दकारः । किदित्यनुवृत्तेर्गुण-निषेधः । श्वेततेऽसौ शिशिदानः, पापकर्मा वा ।।

हिन्दीः— शिवता धातु से सन् तथा आनच् प्रत्यय होते हैं सन् का लुक् धातु के तकार को दकारादेश होता है और आनच् कित्वत् हो जाता है ।

### ६४—मुचियुधिभ्यां सन्वच्च ।

अर्थः— मुच्ल् मोचने युध सम्प्रहारे इत्येताभ्यां धातुभ्यां आनच् प्रत्ययो भवति स च सन्वत् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— मुमुचानः = मोचकः, मेघः । युयुधानः = योद्धा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मुञ्चत्यसौ मुमुचानः मोचकः । युध्यतेऽसौ युयुधानः योद्धा ।।

हिन्दीः— मुच् तथा युध धातुओं से आनच् प्रत्यय होता है और वह सन्वत् होता है ।

### ६५—तृन् तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः सञ्ज्ञायां चानिटौ ।

अर्थः— शंसु स्तुतौ इत्यादिभ्यः क्षद संवृतौ सौत्रधातुः इति-एवं प्रकारेभ्यः तृन् तृचौ प्रत्ययौ अनिटौ भवतः संज्ञाया विषये ।

उदाहरणम्ः— शंस्ता = स्तोता शास्ता पण्डितः राजा । क्षत्ता = सारथिः द्वाररक्षकः वैश्यायां, शूद्राज्जातः । क्षता = मूसली पेषणप्रस्तरः, मुसलः । उन्नेता = ऋद्वत्कि, उत्थापकः । मन्ता = विद्वत्पुरुषः, ऋषिः परामर्शदाता, मुनिः । हन्ता = वधकः, चौरः, प्रहारकर्त्ता, लुण्ठकः । धाता = ईश्वरः, रचयिता । उपदेष्टा = गुरुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शंस्यादिभ्यः क्षदादिभ्यश्च यथाक्रमं तृन्तृचौ, तौ चानिटौ । शंसति स्तौतीति शंस्ता स्तोता । अप्तृन्तृच० (अ० ६/४/११) इति सूत्रे नप्तृप्रभृतेः पृथक् पाठादौणादिकयोस्तृन्तृचोर्ग्रहणं न भवति । तेन शंस्तरौ, शस्तरः इत्यादिषु दीर्घा न भवति । शास्ति शिक्षते धर्मादिकमिति शास्ता, पण्डितो वा । प्रशास्ता राजा, प्रशास्तरौ, प्रशास्तारः । परिगणनाद् दीर्घः । 'क्षद संवृतौ' इति सौत्रो धातुः । क्षदति संवृणोतीति क्षता, सारथि द्वारपालो वैश्यायां शूद्राज्जातो वा । क्षुनति संपिनष्टि येन स क्षोता, मुसलो वा । उन्नयति

कार्याणीति उन्नेता ऋत्विग्वा ।।

हिन्दी:— शंसु इत्यादि धातुओं से तथा क्षद (सौत्रिक) धातु से एवं इस प्रकार की अन्य धातुओं से तृन् तथा तृच् प्रत्यय होते हैं। तथा वे अनिट होते हैं संज्ञा विषय में।

### ६६— बहुलमन्यत्रापि ।

अर्थ:—अन्यत्रापि तृन्तृचौ प्रत्ययौ बहुलं भवतः ।

उदाहरणम्:— मन्ता = विद्वान् मनीषी । हन्ता = चौरः पीडकः, वधकः । धाता = ईश्वरः, स्वामी, पतिः । उपदेष्टा = गुरुः, आचार्यः, उपदेशकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(अन्यत्रापि बहुलं तृन्तृचौ भवतः ।) मन्यते जानात्यसौ मन्ता, विद्वान् (वा) । हन्तीति हन्ता, चौरो वा । (दधाति सर्वं जगदिति) धाता, ईश्वरो वा । उपदिशतीति उपदेष्टा गुरुः (वा) इत्यादि ।। ६६ ।।

हिन्दी— अन्य धातुओं से भी प्रायः करके तृन् और तृच् प्रत्यय हो जाते हैं ।

### ६७—नप्तृनेष्टृत्वष्टृ होतृ पोतृ भ्रातृ जामातृ मातृ पितृ दुहितृ ।

अर्थ:— इमे नप्त्रादयो दशशब्दाः तृन् तृच् प्रत्ययान्ताः

स्वर भेदान् निपात्यन्ते ।

नञ् पूर्वकं पतृ लृ गतौ, तृन्, नप्ता, णीञ् प्रापणे तृन् षुगागमे नेष्टा, त्विष दीप्तौ तृन् प्रत्ययः त्वष्टा, हुदानादानयोः तृन्प्रत्ययः होता, पूञ् पवने तृच् प्रत्ययः पोता, भ्राञ् दीप्तौ तृच् प्रत्ययः भ्राता, जाया पूर्वकं मा माने तृन्प्रत्ययः जामाता, मान पूजायां तृन्माता, पारक्षणे तृन् प्रत्ययः पिता, दुह प्रपूर्णे तृन् प्रत्ययो दुहिता इत्येते शब्दास्तृन्तृजन्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:—नप्ता<sup>१</sup> = पौत्रः । नेष्टा = ऋत्विक् । त्वष्टा = भानुः । होता = यजमानः । पोता = विष्णुः, ईश्वरः । भ्राता<sup>२</sup> = सहोदरः । जामाता = दुहितृ पतिः । माता<sup>३</sup> = जननी । पिता<sup>४</sup> = जनकः । दुहिता = पुत्री पुत्रः ।

\*१ नप्ता = न + पत् + तृन् = नप्तृ + सु = नप्ता

२ भ्राता = भ्राञ् + तृच् = अत्र जलोपे सति भ्रातृ + भ्राता

३ माता = मा + तृन् = मातृ + सु = माता

४ पिता = पा + तृन् = पातृ + सु — आकारस्य निपातनादित्वे सति

पिता सिद्धः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नप्रादयो दश तृन्तृजन्ता निपात्यन्ते । नपततीति नप्ता, पौत्रो दौहित्रो वा । 'नप्तुः पुत्रः प्रनप्ता स्यात्, नप्त्री पौत्री (सुतात्मजा) । नजः प्रकृतिभावः (धातोश्च टिलोपः) । नयतीति नेष्टा, ऋत्विग्वा । नयतेः षुक् । त्विष्यते दीप्यतेऽसौ त्वष्टा, सूर्यो वा । इकारस्याकारः । जुहोतीति होता, यजमानो वा । व्यापकत्वेन सर्वं पुनातीति पोता, विष्णुरीश्वरः (वा) । 'भ्राजते दीप्यतेऽसौ भ्राता, सोदर्यो वा । (धातोर) जकारलोपः । जाया कन्यां माति मिनोति मिमीते मार्जयति वा स जामाता, दुहितुः पतिः (वा) । (मिनोतेराकारादेशः) 'मृज' धातोः (वृद्धौ) सति रेफजकारलोपः । मानयति सत्करोतीति माता, उत्पादिका वा । (धातोराकारस्येत्वम्) । दोग्धि कार्याणि प्रपूरयतीति दुहिता, पुत्री वा । दुहितुरपत्यं 'दौहित्रः ॥

हिन्दीः— ये नप्रादि दश शब्द स्वर भेद से तृन् तृच् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते है ।

६८—सावसेऋन् ।

अर्थः— ऋन्प्रत्ययोऽयं "नञि च नन्देरिति यावत् प्रवर्तते । सूपपदेऽसुक्षेपणे धातोऋन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— स्वसा = भगिनी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुष्ट्वस्यतीति स्वसा, भगिनी वा ॥

हिन्दीः— सु शब्द उपपद रहते असु धातु से ऋन् प्रत्यय होता है ।

६९—यतेवृद्धिश्च ।

अर्थः— यती प्रयत्ने धातोः ऋन् प्रत्ययो भवति धातोश्च वृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्ः— याता = भ्रातृणां भार्याः परस्परं यातारो भवन्ति ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यततेऽसौ याता । भ्रातृणां भार्याः परस्परं यातारो भवन्ति ।

हिन्दीः—यती धातु से ऋन् प्रत्यय तथा धातु की उपधा में वृद्धि होती है ।

१००—नञि च नन्देः ।

अर्थः— नञि उपपदे टुनदि समृद्धौ धातोः ऋन् प्रत्ययो भवति बाहुलकेन वृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्ः—ननन्दा = पति भगिनी । ननान्दा = पति भगिनी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—न नन्दति तुष्यतीति ननान्दा । बाहुलकाद् वृद्ध्यभावे—  
ननन्दा, पत्युर्भगिनी वा ॥

हिन्दीः— नञ् उपपद रहते दुनदि धातु से ऋन् प्रत्यय होता है तथा  
बहुल करके वृद्धि होती है ।

### १०१—दिवेर्ऋ ।

अर्थः—दिवुक्रीडाद्यर्थेषु धातोः ऋ प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— देवा = पत्युः कनीयान् भ्राता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति देवा, पत्युः कनीयान्  
भ्राता वा ॥

हिन्दीः— दिवु धातु से ऋ प्रत्यय होता है ;

### १०२—नयतेर्डिच्च ।

अर्थः— णीञ् प्रापणे धातोः ऋ प्रत्ययो भवति स च डित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— ना=पुरुषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋप्रत्ययस्य डित्वाटिटलोपः । कार्याणि नयतीति  
ना, नरौ, नरः । (स्त्रियां 'नृनरयोर्वृद्धिश्च' इति शांर्गरवादिगणसूत्रात् ङीन्) नारी,  
बद्धकेशा वधूर्वा ॥

हिन्दीः— णीञ् धातु से ऋ प्रत्यय होता है तथा डित्वत् कार्य होता है ।

### १०३—सव्ये स्थश्छन्दसि ।

अर्थः— सव्योपपदे ष्टा गतिनिवृत्तौ धातोः ऋ प्रत्ययो भवति स च  
डित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—सव्येष्टः = वामस्थः, सूतः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—डित्वादाकारलोपः । सव्ये वामभागे तिष्ठतीति  
सव्येष्टा, सारथिर्वा । सप्तम्या अलुक् ॥

हिन्दीः— सव्य उपपद रहते स्था धातु से ऋ प्रत्यय होता है तथा डित्वत्  
कार्य होता है ।

### १०४— अर्तिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः ।

\*१ देवा = दिव् + ऋ अत्र इकारस्य गुणे भूते देवृ + सु = देवा सिद्ध्यति ।

अर्थः—अनिरयं क्षिपेः किञ्चेति पर्यन्तं प्रवर्तते। ऋ गतौ सृ गतौ धृञ् धारणे धमि इति सौत्र धातुः अम गत्यादिषु अशूङ् व्याप्तौ अव रक्षणाद्यर्थेषु तृ प्लवन सन्तरणयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽनिः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:—अरणिः = अग्नि प्रादुर्भावाय मथनीद्वेदारुणी। सरणिः = पन्थाः, क्रमः, विधिः सरल पंक्तिः, कण्ठरोगः। धरणिः = भूमिः मृत्तिका, नाडी। धमनिः = नाडी, नरकुलम्, शिरा ग्रीवा। अशनिः = विद्युत्, अस्त्रम्, विद्युद्दीप्तिः। अवनिः = पृथिवी, आकृतिः, नदी। तरणिः = सूर्यः, नौका, प्रकाशकिरणः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोति येन स अरणिः, अग्न्युत्पत्त्ये मथनी द्वे दारुणी वा। सरन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स सरणिः, मार्गो वा। प्यन्तात् 'स' धातोरनिः 'सारणिः' ; स्त्रियां 'सारणी। बाहुलकात्—शृणाति हिनस्तीति 'शरणिः'। धरति सर्वमिति धरणिः, पृथिवी वा। 'धमिः' सौत्रो धातुः। धमति प्रापयति रसादिकमिति धमनिः, नाडी वा। अमतीति अमनिः, गतिर्वा। येनाश्नाति योऽश्नुते व्याप्नोति वा स अशनिः, वज्रम् वा। अवति रक्षणादिकं करोतीति अवनिः, भूमिर्वा। तरति येन यया वा स सा वा तरणिः, सूर्यः कुमारी नौकौषधिभेदो वा।।

बाहुलकात्—रजतीति रजनिः, रात्रिर्वा। नलोपः। स्त्रियां रजनी' द्राक्षा हरिद्रा वा।।

हिन्दीः— "ऋ" आदि धातुओं से अनि प्रत्यय होता है।

१०५— आङि, शुषेसनश्छन्दसि।

अर्थः— आङ् पूर्वकं शुष शोषणे धातोः सन्नन्तादनिः प्रत्ययो भवति छन्दसि विषये।

उदाहरणम्:— 'आशुशुक्षणिः = अग्निः, वायुः।

१ आशुशुक्षणिः = आ + शुष् + सन् + अनि

आ + शु + शुष् + स् + अनि

अत्र षढोः कः सि इति कुत्वे "आदेश प्रत्ययोः" इत्यनेन सकारस्य मूर्द्धन्यादेश आशुशुक्ष + अनि + सु अतो गुणे इति पररूपे आशुशुक्षनि "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" इति णत्वे विसर्गी भूते आशुशुक्षणिः सिद्धयति।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सन्नन्तादाङ्पूर्वादनिः प्रत्ययः । समन्तात् शुष्यन्ति पदार्था येन स आशुशुक्षणिः, अग्निर्वा ॥

हिन्दीः— आङ् पूर्वक सन्नन्त शुष धातु से अनि प्रत्यय होता है ।

१०६—कृषेरदिश्च धः ।

अर्थः— कृष विलेखने धातोः अनिः प्रत्ययो भवति कृषेः ककारस्य धकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— धर्षणिः = पुंश्चली स्त्री । (कुलटा, स्वैरिणी, असती) ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृषतीति धर्षणिः, पुंश्चली स्त्री वा ; ङीष् 'धर्षणी' ॥

हिन्दीः— कृष धातु से अनि प्रत्यय होता है तथा धातु के ककार को धकारादेश होता है ।

१०७— अदेर्मुट् च ।

अर्थः— अदभक्षणे धातोरनि प्रत्ययो भवति तस्य च प्रत्ययस्य मुडागमो जायते ।

उदाहरणम्— अदमनिः = अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अतीति अदमनिः, अग्निर्वा ॥

हिन्दीः—अद धातु से अनि प्रत्यय होता है तथा उस प्रत्यय को मुट् आगम होता है ।

१०८— वृतेश्च ।

अर्थः— वृतु वर्तने धातोरनि प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— वर्तनिः = मार्गः, एकपदी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्तते यस्मिन्निति वर्तनिः मार्ग एकपदी वा ॥

हिन्दीः— वृतु धातु से अनि प्रत्यय होता है ।

१०९— क्षिपेः किच्च ।

अर्थः— क्षिप प्रक्षेपणे धातोः अनिः प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— क्षिपणिः = आयुधम्, जालम्, अरित्रम्, चप्पू इतिभाषायां ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्षिपत्यनेन शत्रून् स क्षिपणिः, आयुधं वा ॥

हिन्दीः— क्षिप धातु से अनि प्रत्यय होता है तथा कित्वत् कार्य होता

है ।

११०— अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः ।

अर्थः— अर्च पूजायां शुच शोके हुदानादानयोः सृप गतौ छदि संवरणे छर्द वमने धातुभ्य इसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—अर्चिः = दीप्तिः । शोचिः = ज्योतिः, ज्वाला । हविः = यज्ञ-योग्यं वस्तु, नीरम्, उष्णनवनीतम् । सर्पिः = घृतम् । छदिः = छादनं तृणादिछादनसाधनम् । छर्दिः = वमनं व्याधिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अर्चति येन तत् अर्चिः, दीप्तिर्वा । शोचति शोचयतीति शोचिः, प्रकाशो वा । हूयते यत्तत् हविः, होमयोग्यं वस्तु वा । यद् येन वा सर्पति तत् सर्पिः, घृतं वा । छादयति येन तत् छदिः, छादनं तृणादिछादनसाधनं वा । इस्मन्त्रन्० (अ० ६ ।४ ।६७) इति ह्रस्वादेशः । छर्दति यत्तत् छर्दिः, वमनं व्याधिर्वा ।।

बाहुलकात्—समन्तादवतीति आविः, प्राकट्यम् (वा) । अव्ययशब्दोऽयम् ।।

हिन्दीः— अर्चादि धातुओं से इसि प्रत्यय होता है ।

१११— बृहेर्नलोपश्च । इसि प्रत्ययो वर्तते ।

अर्थः— बृहि वृद्धौ धातोः इसिः प्रत्ययो भवति नकारस्य च लोपः सञ्जायते ।

उदाहरणम्—बर्हिः = दर्भः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बृहति वर्द्धते तद् बर्हिः, दर्भो वा ।।

हिन्दीः— बृहि धातु से इसि प्रत्यय होता है तथा नुम् के नकार का लोप होता है ।

११२— द्युतेरिसिन्नादेश्च जः ।

अर्थः— इसन् प्रत्ययः पिबतेस्थुक् यावत् वर्तते । द्युत दीप्तौ धालोः इसिन् प्रत्ययो भवति धातोश्चादेः जकारः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— ज्योतिः = अग्निः, प्रकाशः, सूर्यादिकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—द्योतते प्रकाशते तत् ज्योतिः, अग्निः सूर्यादिकं वा । ज्योति रधिकृत्य कृतो ग्रन्थो 'ज्योतिषम्' । 'संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वाद् वृद्धि-निषेधः ।।

हिन्दीः— द्युत धातु से इसिन् प्रत्यय होता है तथा धातु के आदि में जकार होता है ।

## ११३—वसौ रुचिः सञ्ज्ञायाम् ।

अर्थः— वसूपपदे रुच दीप्तौ प्रीतौ च धातोः इसिन् प्रत्ययो भवति नाम विषये ।

उदाहरणम्:— वसुरोचिः = यज्ञः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वसूनग्न्यादीन् रोचतेऽसौ वसुरोचिः, यज्ञो वा ।

बाहुलकात्— केवलादपि रोचिः, ज्वाला वा ॥

हिन्दीः— वसु उपपदे रहते रुच धातु से इसिन् प्रत्यय होता है नाम विषय में ।

## ११४— भुवः कित् ।

अर्थः— भू सत्तायां धातोः इसिन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— भुविः = सागरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इसिन् कित् । यो भवति यस्मिन् वा स भुविः, समुद्रो वा ॥

हिन्दीः— भू धातु से इसिन् प्रत्यय होता है वह कितवत् होता है ।

## ११५— सहो धश्च ।

अर्थः— षह मर्षणे धातोः इसिन् प्रत्ययो भवति हकारस्य च धकारः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— सधिः = बलीवर्दः, अनड्वान् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इसिन् । सहते भारमिति सधिः, अनड्वान् वा ॥

हिन्दीः— षह धातु से इसिन् प्रत्यय होता है और हकार को धकारादेश होता है ।

## ११६— पिबतेस्थुक् ।

अर्थः— पा पाने धातोः इसिन् प्रत्ययो भवति धातोश्च थुगागमो जायते ।

उदाहरणम्:—पाथिः = चक्षुः सागरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पिबति यो येन वा तत् पाथिः, चक्षुः समुद्रो वा ॥

हिन्दीः— पा धातु से इसिन् प्रत्यय होता है । तथा धातु को थुक् आगम होता है ।



११७— जनेरुसिः ।

अर्थः— उसिः प्रत्ययो "मुहेः किञ्चेति यावत् प्रवर्तते । जनी प्रादुर्भावे धातोः उसि प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— जनुः = जननम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायते यत्तत् जनुः, जननं वा । जनुषी, जनुषि ॥

हिन्दीः—जनी धातु से उसि प्रत्यय होता है ।

११८— मनेर्धश्छन्दसि ।

अर्थः— मनु अवबोधने धातोः छन्दसि विषये उसि प्रत्ययो भवति धातोश्च धकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्— मधुः = पवित्रवस्तु, वसन्तर्तुः, राक्षसभेदः, अशोकतरुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मन्यते बुध्यते यद् येन वा तत् मधुः, पवित्रद्रव्यं वा ॥

हिन्दीः— मनु धातु से वेद विषय में उसि प्रत्यय होता है और धातु के नकार के स्थान पर धकारादेश होता है ।

११९— अर्तिपृवपियजितनिधनितपिभ्यो नित् ।

अर्थः— ऋ गतौ पृ पालन पूरणयोः डुवप् बीज सन्ताने छेदने च यज देवपूजा संगति करणदानेषु तनु विस्तारे धन धान्ये तप सन्ताने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः उसि प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्—अरुः = सूर्यः, व्रणः । परुः = ग्रन्थिः, सन्धि, अंशः, उदधिः, स्वर्गः पर्वतः । वपुः<sup>१</sup> = शरीरम्, रूपम्, सौन्दर्यम्, रसः, प्रकृतिः । यजुः = वेदनाम । तनुः = गात्रम् । धनुः = कार्मुकम् । तपुः = भानुः, वह्निः, रिपुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोतीति अरुः, आदित्यो व्रणो वा । पिपर्ति येन तत् परुः ग्रन्थिर्वा । वपति बीजादिकमस्मात् तत् वपुः, शरीरं वा । यजति येन तद् यजुः, वेदविशेषो वा । तनोति कार्याण्यनेन तत् तनुः, शरीरं वा । दिधन्ति धनादिकं प्राप्नोति येन तत् धनुः, बाणक्षेपणं वा । तपति दुःखयतीति तपुः, सूर्योऽग्निः शत्रुर्वा ।

बाहुलकात्— 'मन' धातोरपि । मन्यते जानातीति मनुः, मनुषी ॥

\*१ वपुः = वप् + उस् = वपुस् + सु "स्वमोर्नपुंसकात् इत्यनेन सुलुकि सकारस्य च विसर्गजाते रूपसिद्धिः ।

हिन्दी:— ऋ आदि धातुओं से उसि प्रत्यय होता है तथा नित्वत् कार्य होता है।

### १२०—एतेर्णिच्च ।

अर्थ:—इण् गतौ धातोः उसि प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— आयुः = जीवनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—ईयते प्राप्यते यत्तत् आयुः, जीवनं वा । जटापूर्वात् 'जटायुः' । पक्षिराजः ॥

हिन्दी:— इण् धातु से उसि प्रत्यय होता है तथा णित्वत् कार्य होता है ।

### १२१—चक्षेः शिच्च ।

अर्थ:— चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि धातोः उसिः प्रत्ययो भवति स च शित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— चक्षुः = नेत्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—चक्षते रूपमनुभवन्त्यनेन तत् चक्षुः, नेत्रं वा । चक्षुषा गृह्यत इति 'चाक्षुषं' रूपम् ॥

हिन्दी:—चक्षिङ् धातु से उसि प्रत्यय होता है तथा वह शित् होता है ।

### १२२—मुहेः किच्च ।

अर्थ:— मुह वैचित्ये धातोः उसि प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— मुहुः = पौनःपुन्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—मुह्यति भ्रान्तो भवतीति मुहुः, पौनःपुन्येऽर्थेऽव्ययं वा ॥

हिन्दी:— मुह धातु से उसि प्रत्यय होता है तथा कित्वत् कार्य होता है ।

### १२३—कृगृशृवृञ्चतिभ्यः ष्वरच् । ष्वरच् प्रत्ययः पादान्तः ।

अर्थ:—कृ विक्षेपे गृ निगरणे शृ हिंसायां वृ विरणे चत याचने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः ष्वरच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— कर्वरः<sup>१</sup> = दुष्टः, व्याघ्रः । गर्वरः<sup>२</sup> = अहंकारः, नायकः । शर्वरी = रात्रिः । वर्वरः = साधारण पुरुषः । चत्वरम् = अंगनम् ।

\*१—कर्वरः = कृ + ष्वरच् अत्र गुणे जाते कर्-वर + सु = कर्वरः

\*२—गर्वरः = गृ + ष्वरच् = गर्वरः ।

(१५६) कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः ।।

अर्थः—युमिश्रणामिश्रणयोः, वृक्ष सेचने, तक्षतनु करणे, राजृ दीप्तौ, धवि गतौ घुअभिगमने प्रतिपूर्वकं दिवु क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति स्तुतिमोद मद स्वप्न कान्ति गतिषु इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— युवा = तरुणः स्वस्थः, उत्तमः लघुसन्ततिः । वृषा = बलीवर्दः, अनड्वान् वृषराशिः, हयः पीडा, इन्द्रः । तक्षा = वर्धकिः, सूत्रधारः, विश्वकर्मा । राजा = भूपः, चन्द्रः, इन्द्रः, युधिष्ठिरः, क्षत्रियः, यक्षः । धन्वा = धनुर्धारी, बाणक्षेपणं, कार्मुकं, मरुभूमिः समुद्रतटं कठोरभूमिः । द्युवा = सूर्यः । प्रतिदिवा = दिवसः, सूर्यः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स युवा, मध्यावस्थस्तरुणो जनो वा । वर्षतीति वृषा, सूर्यो वा । तक्षति तनूकरोति स तक्षा, वर्धकिर्वा । राजते प्राप्तो भवतीति राजा, भूपतिश्चन्द्रमा वा । धन्वति गच्छतीति धन्वा, बाणक्षेपणं वा । द्यौत्यभिगच्छतीति द्युवा, सूर्यो वा । प्रतिदीव्यन्ति यस्मिन् स प्रतिदिवा, दिवसो वा; बहुलवचनात् केवलादपि 'दिव' धातोः कनिन् । तेन दिवा, दिवानौ इत्याद्यपि सिद्धम् ।।

हिन्दीः— यु आदि धातुओं से कनिन् प्रत्यय होता है ।

(१५७) सप्यशूभ्यां तुट्च ।

अर्थः = षप् समवाये, अशूड व्याप्तौ, इत्येताभ्यां धातुभ्यां कनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— सप्त = संख्याविशेषः । अष्ट = संख्याविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सपति समवैतीति सप्तन्, संख्याभेदो वा । अश्नुते व्याप्नोतीति अष्टन्, संख्या वा ।

बाहुलकात्—पञ्चति व्यक्तीकरोतीति पञ्चन्, संख्यावाचको वा । दशतीति दशन्, संख्याविशेषो वा । नौतीति नवन् संख्या वा । बाहुलकाद् गुणः ।।

हिन्दीः— षप् और अशूड् धातुओं से कनिन् प्रत्यय होता है ।

(१५८) नजि जहातेः ।।

अर्थः—नजि उपपदे ओहाक् त्यागे इत्यस्माद्धातोः कनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— 'अहः = दिनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जहाति त्यजति पृथक्करोत्यन्धकारमिति अहः  
दिनम् ॥

हिन्दी:— नञ् उपपद हो तो ओहाक् धातु से कनिन् प्रत्यय होता है ।  
(१५६) श्वनुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेहन्कज्जन्नर्यमन्विश्वप्सन्परि-  
ज्वन्मातरिश्वन्मघवन्निति ।

अर्थः— टुओशिव गतिवृद्धयोः, उक्ष सेचने, पूष वृद्धौ, प्लीह गतौ, विश्व  
पूर्वकं प्सा भक्षणे, परिपूर्वकम् जु सौत्रको धातुः, मातृ पूर्वकं टुओशिव, मह  
पूजायाम्, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः श्वन्, उक्षन्, पूषन् प्लीहन् क्लेदन् स्नेहन्  
मूर्धन्, मज्जन् अर्यमन् विश्वप्सन्, परिज्वन्, मातरिश्वन्, महावन्, इत्येते  
शब्दाः कनिन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:— श्वा = कुक्कुरः । उक्षा<sup>१</sup> = वृषभः, अनड्वा । पूषा = सूर्यः,  
पवनः । प्लीहा = कुक्षिव्याधितिल्ली इति भाषायाम् । क्लेदा = चन्द्रमाः,  
धातोरुणः । स्नेहा = व्याधिः, वयस्यः, चन्द्रः । मज्जा = अस्थिसारः । मूर्धा =  
शिरः भृकुटिः, शिखरं, प्रधानः प्रत्यक्षभागः । अर्यमा<sup>२</sup> = आदित्यः, पितृप्रधानः,  
मदारक्षुपः । विश्वप्सा = अग्निः । परिज्वा = चन्द्रमाः । मातरिश्वा = वायुः,  
अन्तरिक्षम् । मघवा = सूर्यः, मेघः, इन्द्रः, उलूकः, व्यासनाम ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्वनादयस्त्रयोदश शब्दाः कनिनन्ता निपात्यन्ते ।  
श्वयति गच्छति वर्द्धतेऽसौ श्वा, कुक्कुरो वा; स्त्रियां डीष् 'शुनी' । उक्षति  
सिञ्चतीति उक्षा, बलीवर्दो वा । पूषति वर्धतेऽसौ पूषा, सूर्यो वायुर्वा । प्लिह्यते  
प्राप्यतेऽन्तरिति प्लीहा, कुक्षिव्याधिर्वा । धातोरुपधादीर्घत्वम् । क्लिद्यत्यार्दीभवतीति  
क्लेदा, चन्द्रमा वा । धातोरुणः । स्निह्यति प्रीतिं करोतीति स्नेहा, व्याधिर्वा ।

\*१ अहः = न + हा + कनिन् अत्र नञो नकार लोपे अ+ हा+ कन्  
आतो लोप इटिच इत्याकारलोपे कनः ककारस्य "लशक्वतद्धिते" इत्संज्ञायां  
लोपे चाहन् भूते प्रथमैकवचनेऽहर्जायते ॥

१ उक्षा = उक्ष् + कनिन्

उक्ष् + अन् = उक्षन् + सु = उक्षा सिद्धयति

२ अर्यमा = ऋ + मा + कनिन्

धातुर्गुणः ।। मूर्ध्वति बध्नाति स मूर्द्धा, शिरो वा । उकारस्य दीर्घो वकारस्य धकारश्च । मज्जति शुन्धतीति मज्जा, अस्थिसारो वा । अर्यं स्वामिनं मिमीते मन्यते जानातीति अर्यमा, आदित्यो वा । आकारलोपः । विश्वं प्साति भक्षयतीति विश्वप्सा, अग्निर्वा । परितो जवति वेगवान् भवतीति परिज्वा चन्द्रमाः । 'जु' इति सौत्रो धातुस्तस्य यणादेशः । मातरि अन्तरिक्षे श्वयति गच्छति वर्द्धते वा, अथवा मातरि श्वसिति जीवयति शेते वा स मातरिश्वा, वायुर्वा । मह्यते पूज्यतेऽसौ मघवा, सूर्यो वा । 'मह' धातोर्हकारस्य घत्वं वुगागमश्च । मघवदिति तकारान्तोऽप्ययं शब्दो दृश्यते । तव मघं धनमस्यास्तीति मघवान्, मघवन्तौ, मघवन्तः इति मतुबन्तः । कनिनन्तस्तु—मघवा मघवानौ, मघवानः; मघवन् मघवानम्, मघवानौ, मघोनः ।।

अस्मिन् सूत्र 'इति' शब्दः प्रकारार्थे । एवंविधा अन्येऽपि कनिनन्ता शब्दायथाप्रयोगं साध्याः । पादसमाप्त्यर्थो वेति शब्दः ।।

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे प्रथमः पादः ।।१।।

हिन्दीः— टुओशिवआदिधातुओं से श्वन् आदि शब्द कनिन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

इत्युत्तरप्रदेशान्तर्गत एटामण्डलान्तःपाति कासगञ्ज नगरा-

भिजनेनाषृचत्वारिंशदध्ययनतश्चित्रकूटकृताखण्ड-

निवासेन वैश्यवंशावतंसस्य श्रीमन्नन्मूलस्य पौत्रेण

श्रीयुतगोपीरामप्रसादगुप्तयोः पुत्रेण वैयाकरण-

शिरोमणीनां प्राप्तराजसम्मानधुरन्धराणां पण्डित-

प्रवरश्रीभीमसेनशिष्येण सत्यव्रतवेदवागीश-

वेदनैरुक्ताचार्यव्याकरणाचार्येण सम्प्रत्यार्ष-

गुरुकुल (एटा) आचार्यरूप पाठकेन विरचितो-

णादिकोषे प्रकाशिकानाम्नी संस्कृतटीकायां-

विमलाख्य हिन्दी वृत्त्यांच प्रथमः

पादः पूर्तिमगात् ।।

# अथोणादि कोष टीकायां

## द्वितीयः पादः प्रारभ्यते

### १- कृह्भ्यामेणुः ।

अर्थः— डुकृञ् करणे, हृञ् हरणे इत्येताभ्यां धातुभ्यामेणुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— करेणुः = हस्ती हस्तिनी वा । हरेणुः = गन्धद्रव्यं कलायो वा मटर इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—करोतीति करेणुः, हस्ती हस्तिनी वा । हरति स हरेणुः गन्धद्रव्यम्, कलायो वा 'मटर' इति प्रसिद्धः ॥

हिन्दी:— डुकृञ् और हृञ् धातुओं से एणु प्रत्यय होता है ।

### २- हनिकृषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन् ।

अर्थः— हन हिंसागत्योः, कृष निष्कर्षे, णीञ् प्रापणे, रमु क्रीडायाम् । काश् दीप्तौ इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्थन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— 'हथः = दुःखितः आयुधविशेषः । 'कुष्ठः = रोगविशेषः, कूटः (ओषधि विशेषः) । नीथः = नयनम् । रथः = यानं, शरीरं पादः, वेतसः, नायकः नरकुलम् अंगम् भागः । काष्ठम् = इन्धनं, स्थानं, कालमानम् काष्ठशकलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यो हन्यते येन वा स हथः, दुःखितः शस्त्राविशेषो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षतीति कुष्ठम्, व्याधिभेदः 'कूट' इत्याख्यौषधिर्वा । नीयते स नीथः, नयनं वा । शोभनो नीथोऽस्यास्तीति 'सुनीथः' धर्मशीलः । रमते यस्मिन् येन वा स रथः, यानं शरीरं पादो वेतसो वा । काशते दीप्यते तत् काष्ठम्, इन्धनं स्थानं कालमानं वा; 'काष्ठा' दिक् दारुहरिद्रा वा ॥

\* हथः = हन् + क्थन् अत्र "अनिदितां हल उपधाया किङ्कति इत्यनेन हन्तेर्नलोपः

कुष्ठः = कुष् + क्थन् अत्र ष्टुना ष्टुरित्यनेन ष्टुत्वम् ॥

काष्ठम् = काश् + क्थन् अत्र व्रश्च भ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः

" इत्यनेन षत्वे भूते ष्टुना ष्टुरित्यनेन ष्टुत्वं जातम् ।

हिन्दीः— हन आदि धातुओं से क्थन् प्रत्यय होता है ।

३— अवे भृजः । क्थन् प्रत्ययोऽयं वर्तते ।

अर्थः— अव उपपदे, डुभृज् धारणपोषणयोः इत्यस्माद्धातोः क्थन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— अवभृथः = पक्षि विशेषः, मार्जनजलम्, यज्ञान्तस्नानम् ।  
स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्थन् । अवबिभर्तीति अवभृथः, पक्षिभेदो यज्ञान्तस्नानं वा ।

हिन्दीः— अव उपपद होने पर डुभृज् धातु से क्थन् प्रत्यय होता है ।

४— उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन् ।

अर्थः— उष दाहे, कुष निष्कोषणे, गै शब्दे, ऋ गतौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो थन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—ओष्ठः मुखावयवः अधरम् । कोष्ठः = कुक्षिः, कुशूलं, अन्तर्गृहम् उदरम् । गाथा = वाग्विशेषः, श्लोकः, छन्दः एकाप्राकृतवाग् ।

अर्थः— वाच्यः, धनं, कारणं, वस्तु, प्रयोजनम्, निवृत्तिः, विषयः ।।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ओषति यो दहति येन वा स ओष्ठः, मुखावयवो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षति स कोष्ठः, कोष्ठं कुक्षिः कुशूलमन्तर्गृहं वा । गीयते या सा गाथा, वाग्भेदः श्लोको वा । अर्यते प्राप्यतेऽसौ अर्थः, शब्दानां वाच्यो धनं कारणं वस्तु प्रयोजनं निवृत्तिर्विषयो वा ।

बाहुलकात्—श्यति तनूकरोतीति शोथः, रोगविशेषो वा । 'शो तनूकरणे' इत्यस्यात्त्वनिषेधः ।

हिन्दीः— उष आदि धातुओं से थन् प्रत्यय होता है ।

५— सतेर्णित् । थन्प्रत्ययोऽनुवर्तते ।

अर्थः— सृ गतौ इत्यस्माद्धातोः थन् प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— सार्थः = समूहः, धनिकः, व्यापारिवृन्दम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरति गच्छति स सार्थः, समूहो वा । थन्प्रत्ययस्य णित्त्वाद् वृद्धिः ।।

हिन्दीः— सृ धातु से थन् प्रत्यय होता है ।

६— जृवृञ्भ्यामूथन् ।

अर्थः— जृ वयोहानौ, वृञ्वरणे, एताभ्यां धातुभ्यां ऊथन् प्रत्ययो भवति ।।

उदाहरणम्:— जरुथम् = मांसम् । वरुथः = लोहेन रथावरणं रथगुप्तिः, वर्म, कोकिलः कालः ॥

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जीर्यति वयोहीनो भवति स जरुथः, मांसं वा । वृणोति येन स्वीकरोति स वरुथः, लोहेन रथावरणं वा ॥

हिन्दी:— जू और वृञ् धातुओं से ऊथन् प्रत्यय होता है ॥

७— पातृतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक् ॥

अर्थः— थगधिकारस्तित्थ पृष्ठ गूथेति यावत् । पा पाने, तृ प्लवनसंतरणयोः, तुद व्यथने, वच परिभाषणे, रिचिर विरेचने, विच क्षरणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो थक् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— पीथः = सूर्यः घृतम् कालः अग्निः पेयः, जलम् पुण्यात्मा धर्मोपदेष्टा स्तोतः अग्निः विप्रः । तीर्थम् = गुरुः, यज्ञः पुरुषार्थः, मन्त्री जलाशयः । मार्गः, नदीतटं सोपानं पवित्रस्थानम् । तुत्थः = अग्निरञ्जनम्, प्रस्तरः । उक्थम् = सामवेदः, कथनम् । वाद्यम्, स्तोत्रम्, प्रशंसा । रिक्थम् = दायादधनम्, सुवर्णम् सम्पत्तिः । सिक्थम् = मधूच्छिष्टम्, मोम इति भाषायां मण्डं, माण्ड इति भाषायां नीलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः पिबति यं वा स पीथः, सूर्यो घृतं वा । तरन्ति येन यत्र वा तत् तीर्थम्, गुरुर्यज्ञः पुरुषार्थो मन्त्री जलाशयो वा । यो येन वा तुदति व्यथां प्राप्नोति स तुत्थः, अग्निः अञ्जनम् (वा) । तुत्था नीली ओषधिर्गोवडवा वा, सूक्ष्मैला वा 'छोटी इलायची' इति प्रसिद्धा । उच्यते परितो भाष्यते यत्तत् उक्थम्, सामवेदो वा; य उक्थमधीते वेत्ति वा स 'औक्थिकः' । रिणक्ति पृथक् करोतीति यत्तद् रिक्थम्, दायादधनं सुवर्णं वा । बाहुलकात्—'ऋच स्तुतौ' इत्यस्मादपि थक् । ऋचति यदर्थं स्तौतीति (तद्) ऋक्थम्, धनं वा । सिञ्चति प्रसादयति तत् सिक्थम् मधूच्छिष्टम्, 'मोम' इति प्रसिद्धम्, ओदनान्निः सूतं मण्डं वा ॥

१ पीथः = अत्र घुमास्थागापाजहातिसां हलि" इत्यनेन ईत्वम् ।

२ तीर्थम् = अत्र ऋत इद्धातोः" इत्यनेन इर् भूते तथा च हलि च इति दीर्घे सति रूप सिद्धिः ।

३ उक्थम् = अत्र वचिस्वपियजादीनां किति इत्यनेन सम्प्रसारणम् ।

४ रिक्थम् = अत्र चोः कु इत्यनेन कुत्वम् ।



हिन्दीः— पा आदि धातुओं से थक् प्रत्यय होता है ।

८— अर्त्तेर्निरि ।

गति

अर्थः— निर् पूर्वकं ऋ गतौ इत्यस्माद्धातोः थक् प्रत्ययान्ये, छिदिर उदाहरणम्— निऋथः = सामवेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—निरन्तरमृच्छन्ति गत्याम्, दम्भु दम्भने, वस निवासे, गत्याम्, शुभ दीप्तौ इत्येतेभ्यो ङ

हिन्दीः— निर् पूर्वकं ऋ धा

६— निशीथगोपीथावगथा

= सुवर्णादिमलम्, बुदबुदः । तक्रम् = विलोडितं

अर्थः— नि पूर्वकं शी, दुष्टः । शक्रः = इन्द्रः, समर्थः, कुटजः, तरुभेदः,

गतौ धातुभ्यो थक् प्रत्ययान्तुर्दशसंख्या । क्षिप्रम् = आशु । क्षुद्रः = अधमः, क्रूरः,

उदाहरणम्— शशांकः । तृप्रः = पुरोडाशः । दृप्रः = शक्तिशाली,

पशुजलाशयः । अवर्त्कर्ता, भक्तः, समृद्धिः । उन्द्रः = जलचरः, सागरः । शिवत्रम्

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— वृत्रः = मेघः, रिपुः, तामराम्, अचलः, चक्रम् । वीरः = योद्धा,

वा । गां वाणम्, चौराहा इतिभाषायाम्, अभिनेता, अग्निः, यज्ञानलः, पुत्रः, पतिः,

पिबन्त्युदकम्, विष्णुनाम । नीरम् = जलम्, रसः, आसवः । पद्मः = ग्रामः, संवेशः

प्रातः स्मृमद्रः = हर्षः = देशविशेषः । मुद्रा = रूप्यकम्, सिक्केति भाषायाम् ।

थक = रोगः, रंकः । छिद्रम् = विवरम्, त्रुटिः, क्षीणांशः । भिद्रम् = अशनिः ।

थक = गभीरनादः, मन्दध्वनिः, हस्तिविशेषः ढोलभेदः । चन्द्रः = सोमः, कर्पूरः,

चिकित्सकः, चौरः, गर्दभः, अश्विनी नक्षत्रम् । दभ्रः = उदधिः, पामर पुरुषः । उभ्रः =

= किरणः, अनड्वान्, देवः । वाश्रः = पुरीषम्, दिनम्, सदनम्, चतुष्पथम्,

गोमयम् । शीरः = महासर्पः । हस्रः = मन्दमतिः । सिध्रः = सत्पुरुषः, तरुविशेषः,

तरुः । शुभ्रम् = सुन्दरम्, शुक्लम्, पाण्डुरम्, चन्दनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः स्फायते वर्द्धतेऽसौ स्फारः, सुवर्णदेर्विकारो, बुदबुदो वा । वलि रेफे यलोपः । तनक्ति संकोचयतीति तक्रम्, मथितं दधि वा ।

\*१ स्फारम् = स्फाय् + रक् अत्र लोपो व्योर्वलि इत्यनेन यलोपः ।

\*२ तक्रम् = तञ्च् + रक् अत्र अनिदितां हल उपधाया किङ्ति इति अनुनासिकलोपः तथा च न्यङ्क्वादीनां चेत्यनेन कुत्वम् ।

\*३ वीरः = अज् + रक् अत्र अजेर्व्यघञपोः इत्यनेन अजः स्थाने वीभावः ।

## ११— समीणः ।

वर्म, का। अर्थः— सम् उपपदे इण् गतौ धातोः थक् प्रत्ययो भवति ।

स्वामिदयापुः— समिथः = वह्निः, संग्रामः ।

वृणोति येन स्वीकरोति तिः—समेति सम्यक् प्राप्नोति पदार्थानिति समिथः,

हिन्दीः— जृ और वृञ् धा०

## ७— पातृतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थ, थक् प्रत्यय होता है ।

अर्थः— थगधिकारस्तिथ पृष्ठ गूथेति यावत्

तुद व्यथने, वच परिभाषणे, रिचिर विरेचने, विच. गुड् अव्यक्ते शब्दे, यु थक् प्रत्ययो भवति । थपृष्ठगूथयूथप्रोथाः इत्येते

उदाहरणम्— पीथः = सूर्यः घृतम् कालः अग्निः

धर्मोपदेष्टा स्तोतः अग्निः विप्रः । तीर्थम् = गुरुः, यज्ञ शरदृतुः । पृष्ठम् = जलाशयः । मार्गः, नदीतटं सोपानं पवित्रस्थानम् । तुत्थः = । यूथः = समूहः । प्रस्तरः । उक्थम् = सामवेदः, कथनम् । वाद्यम्, स्तोत्रम्, प्रशन्नम् स्त्रीगर्भः । = दायादधनम्, सुवर्णम् सम्पत्तिः । सिक्थम् = मधूच्छिष्टम्, मोम इते सह्यतेऽसौ मण्डं, माण्ड इति भाषायां नीलम् । तेन वा तत्

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः पिबति यं वा स पीथः, सूर्यो घृतं वा । तरा करोति

यत्र वा तत् तीर्थम्, गुरुर्यज्ञः पुरुषार्थो मन्त्री जलाशयो वा । यो येन वा तुदति बुदायो प्राप्नोति स तुत्थः, अग्निः अञ्जनम् (वा) । तुत्था नीली ओषधिर्गोवडवा का सूक्ष्मैला वा 'छोटी इलायची' इति प्रसिद्धा । उच्यते परितो भाष्यते यत्तत् उक्थम् । सामवेदो वा; य उक्थमधीते वेत्ति वा स 'औक्थिकः' । रिणक्ति पृथक् करोतीति यत्तद् रिक्थम्, दायादधनं सुवर्णं वा । बाहुलकात्—'ऋच स्तुतौ' इत्यस्मादपि थक् । ऋचति यदर्थं स्तौतीति (तद्) ऋक्थम्, धनं वा । सिञ्चति प्रसादयति तत् सिक्थम् मधूच्छिष्टम्, 'मोम' इति प्रसिद्धम्, ओदनाग्निः सूतं मण्डं वा । ।

१ पीथः = अत्र घुमास्थागापाजहातिसां हलि" इत्यनेन ईत्वम् ।

२ तीर्थम् = अत्र ऋत इद्धातोः" इत्यनेन इर् भूते तथा च हलि च इति दीर्घे सति रूप सिद्धिः ।

३ उक्थम् = अत्र वचिस्वपियजादीनां किति इत्यनेन सम्प्रसारणम् ।

४ रिक्थम् = अत्र चोः कु इत्यनेन कृत्वम् ।

क्षिप प्रेरणे, क्षुदिर संपेषणे, सृष्टृ गतौ, तृपप्रीणने, दृप हर्ष मोहनयोः, वदि अभिवादन स्तुत्योः, उन्दी क्लेदने, शिवता वर्णे, वृतु वर्तने, अज गति क्षेपणयोः, णीञ् प्रापणे, पद गतौ, मदी हर्षे, मुद हर्षे, खिद दैन्ये, छिदिर द्वैघी करणे, भिदिर विदारणे, मदिस्तुतिभोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु चदि आह्लादने दीप्तौ च, दह भस्मीकरणे, दसु उपक्षये, दम्भु दम्भने, वस निवासे, वाशु शब्दे, शीङ् शयने हसे हसने, षिध गत्याम्, शुभ दीप्तौ इत्येतेभ्यो ङातुभ्यो रक् प्रत्ययो भवति ।।

उदाहरणम्:— स्फारम् = सुवर्णादिमलम्, बुदबुदः । तक्रम् = विलोडितं दधि । वक्रः = कुटिलः, क्रूरः, दुष्टः । शक्रः = इन्द्रः, समर्थः, कुटजः, तरुभेदः, घूकः, ज्येष्ठा नक्षत्रम्, चतुर्दशसंख्या । क्षिप्रम् = आशु । क्षुद्रः = अधमः, क्रूरः, कृपणः, निर्धनः । सृप्रः = शशांकः । तृप्रः = पुरोडाशः । दृप्रः = शक्तिशाली, गर्वीलः । वन्द्रः = सत्कर्ता, भक्तः, समृद्धिः । उन्द्रः = जलचरः, सागरः । शिवत्रम् = कुष्ठ विशेषः । वृत्रः = मेघः, रिपुः, तामराम्, अचलः, चक्रम् । वीरः = योद्धा, श्रेष्ठः, चतुष्पथम्, चौराहा इतिभाषायाम्, अभिनेता, अग्निः, यज्ञानलः, पुत्रः, पतिः, अर्जुनतरुः, विष्णुनाम । नीरम् = जलम्, रसः, आसवः । पद्रः = ग्रामः, संवेशः स्थलम् । मद्रः = हर्षः = देशविशेषः । मुद्रा = रूप्यकम्, सिक्केति भाषायाम् । खिद्रः = रोगः, रंकः । छिद्रम् = विवरम्, त्रुटिः, क्षीणांशः । भिद्रम् = अशनिः । मन्द्रः = गभीरनादः, मन्दध्वनिः, हस्तिविशेषः ढोलभेदः । चन्द्रः = सोमः, कर्पूरः, चन्द्रमासः, शुक्ल-पक्षः चन्द्रकान्तमणिः । दहः = दावाग्निः, अनलः । दस्रः = चिकित्सकः, चौरः, गर्दभः, अश्विनी नक्षत्रम् । दभ्रः = उदधिः, पामर पुरुषः । उस्रः = किरणः, अनड्वान्, देवः । वाश्रः = पुरीषम्, दिनम्, सदनम्, चतुष्पथम्, गोमयम् । शीरः = महासर्पः । हस्रः = मन्दमतिः । सिध्रः = सत्पुरुषः, तरुविशेषः, तरुः । शुभ्रम् = सुन्दरम्, शुक्लम्, पाण्डुरम्, चन्दनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः स्फायते वर्द्धतेऽसौ स्फारः, सुवर्णदेर्विकारो, बुदबुदो वा । वलि रेफे यलोपः । तनक्ति संकोचयतीति तक्रम्, मथितं दधि वा ।

\*१ स्फारम् = स्फाय् + रक् अत्र लोपो व्योर्वलि इत्यनेन यलोपः ।

\*२ तक्रम् = तञ्च् + रक् अत्र अनदितां हल उपधाया किञ्जति इति अनुनासिकलोपः तथा च न्यङ्क्वादीनां चेत्यनेन कुत्वम् ।

\* ३ वीरः = अज् + रक् अत्र अजेर्व्यघञपोः इत्यनेन अजः स्थाने वीभावः ।

वञ्चति प्रलम्बते स वक्रः । कुटिलः क्रूरो वा । शक्नोति यः स शक्रः, संमर्थः कुटजो वृक्षविशेषो वा । क्षिप्यते प्रेर्यते तत् क्षिप्रम्, शीघ्रं वा । क्षुनन्ति संपिन्ष्टि यः स क्षुद्रः, अधमः क्रूरः कृपणो वा । क्षुद्रा वेश्या कण्टकारिका (भटकटाई इति प्रसिद्धा) —तथा मधुमक्षिका च । अल्पे वाच्यलिंगः । सर्पति गच्छतीति सुप्रः, चन्द्रमा वा । यस्तृप्यति येन वा स तृप्रः, 'पुरोडाशो वा । दृप्यति हृष्यति मुह्यति वा स दृप्रः, बलवान् वा । वन्दतेऽभिवदति स्तौति वा स वन्द्रः, सत्कर्ता वा । उनन्ति क्लिद्यति स उद्रः, जलचरो वा । सम्यगुनन्तीति समुद्रः । अनदिताम० (६/४/२४) इति नलोपः श्वेतते वर्णविशिष्टो भवतीति शिवत्रम्, कुष्ठभेदो वा । वर्तते सदैवाऽसौ वृत्रः, मेघः शत्रुस्तमः पर्वतश्चक्रं वा । अजति गच्छति शत्रून् वा प्रक्षिपति स वीरः, सुभटः श्रेष्ठश्चतुष्पथं वा; वीरा क्षीरकाकोली, पतिपुत्रवती स्त्री मदिरा मधुपर्णिकौषधिर्वा । नयति शरीरमिति नीरम्, जलं वा । पद्यते गच्छन्त्यस्मिन् वा स पद्रः, ग्रामः संवेशः स्थानं वा । माद्यतीति मद्रः, हर्षो देशभेदो वा । मोदन्ते हृष्यन्ति यया सा मुद्रा, यन्त्रिता सुवर्णादिधातुमया वा । यः खिद्यते येन वा दीनो भवतीति स खिद्रः, रोगो दरिद्रो वा । छिद्यते यत्तत् छिद्रम्, विवरं वा । भिनन्ति येन तद् भिद्रम्, वज्रो वा । मन्दते स्तौतीति मन्द्रः, गम्भीरध्वनिर्वा । चन्दति हर्षयति दीपयति वा स चन्द्रः, कर्पूरश्चन्द्रमा वा । दहति भस्मीकरोतीति दहः, दावाग्निर्वा । दस्यति रोगानुपक्षयतीति दस्रः, वैद्यश्चौरो वा । यो दम्नोति दम्नं करोति स दम्रः, क्षुद्रो जनः समुद्रो वा । वसतीति उम्रः, रश्मिर्वा, उम्रा गौः । वाश्यते शब्दयतीति वाश्रम्, पुरीषं दिवसो मन्दिरं चतुष्पथं वा । शेतेऽसौ शीरः, महासर्पो वा । हसतीति हस्रः, मूर्खो वा । सेधति गच्छति सिध्यति वा स सिध्रः, साधुर्वृक्षजातिर्वा । कुत्सिताः सिध्ना वृक्षाः सिध्नकाः, तासां वनं 'सिध्नकावणम्, वनं पुरगामिश्रकासिध्नका० (८/४/४) इति सूत्रेण णत्वम् । शोभते दीप्यते तत् शुभ्रम्, रुचिरं शुक्लं पाण्डुरं वा ।

बाहुलकात्—मेशति शब्दयतीति मिश्रः, संयोगो वा । पुण्डति खण्डयतीति पुण्ड्रः, दुष्टो वा । सिनोति बध्नाति मांसरुधिरादिकमिति सिरा, नाडी वा । मुस्यति खण्डयतीति मुस्रम्, नेत्रोदकं वा । अस्यतीति अस्रम्, रुधिरं वा । अस्रं पिबतीति अस्रपो दंशः ॥

हिन्दी:— स्फायी आदि धातुओं से रक् प्रत्यय होता है ।

१४—चकिरम्योरुच्चोपधायाः ।

अर्थः— चक तृप्तौ प्रतिघाते च, रमु क्रीडायाम्, इत्येताभ्याम् धातुभ्यां रक् प्रत्ययो भवति, धात्वोरुपधयोः उदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— चुक्रम् = अम्लम्, अम्लवेतसम् । रुम्रः = अरुणः, चारुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चकते तृप्यति प्रतिहन्यते वा स चुक्रः, अम्लम् अम्लवेतसमित्यादि । रमन्तेऽस्मिन् स रुम्रः, अरुणः शोभनो वा ॥

हिन्दीः— चक तथा रमु धातुओं से रक् प्रत्यय होता है और इनकी उपधाओं को उदादेश हो जाता है ॥

१५— वौकसेः ।

अर्थः— वि उपपदे कस गतौ इत्येतस्माद्धातोः रक् प्रत्ययो भवति धातोश्च उपधायाः उदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— विकुम्रः = चन्द्रः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विकसति विशेषतया गच्छतीति विकुम्रः, चन्द्रमा वा । (उच्चोपधाया इत्यनुवर्तमाने) 'कस' धातोरुपधाया उत्त्वम् ।

हिन्दीः—वि पूर्वक कस धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातु की उपधा को उदादेश हो जाता है ॥

१६— अमितम्योर्दीर्घश्च ।

अर्थः— अम गत्यादिषु, तमु काङ्क्षायाम् एताभ्यां धातुभ्यां रक् प्रत्ययो भवति धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्:— आम्रम् = सहकारः । ताम्रम् = शुल्बम्, रक्तम्, धातुविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— अम्यते सम्भज्यते सेव्यते तत् आम्रम्, चूतो वा । ताम्यति काङ्क्षतीति ताम्रम्, धातुभेदो रक्तवर्णो वा ॥

हिन्दीः— अम् तथा तम् धातुओं से रक् प्रत्यय होता है और धातुओं को दीर्घादेश हो जाता है ।

१७— निन्देर्नलोपश्च ।

अर्थः— णिदि कुत्सायाम् धातोः रक् प्रत्ययो भवति धातोः नकारस्य च लोपो भवति ।

उदाहरणम्:— निद्रा<sup>१</sup> = स्वापः, शयनम् ।

\*१ निद्रा = निन्द् + रक् अत्र नकारलोपे सति अजाद्यतष्टाप् इति स्त्रीलिंगे टाबभूत् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—या निन्दति यया वा सा निद्रा, शयनं वा ।।

हिन्दीः— णिदि धातु से रक् प्रत्यय होता है और नकार का लोप हो जाता है ।

### १८— अर्ददीर्घश्च ।

अर्थः— अर्द गतौ याचने च धातोः रक् प्रत्ययो भवति, धातोश्च दीर्घत्वं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— आर्द्रम् = क्लिन्नम्, रसान्वितं, द्रव्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आर्दति गच्छति याचते वा तत् आर्द्रम्, सरसद्रव्यम्, आर्द्रा नक्षत्रं वा ।

हिन्दीः— अर्द धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातु को दीर्घ आदेश हो जाता है ।

### १९— शुचेर्दश्च ।

अर्थः— शुच शोके, इत्यस्माद्धातोः रक् प्रत्ययो भवति धातोर्दीर्घो जायते तथा चकारस्य च दकारः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— शूद्रः<sup>२</sup> = सेवकः, वर्ण विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीर्घश्चानुवर्तते । शोचतीति शूद्रः, सेवको वा; पुंयोगे शूद्रस्य स्त्री 'शूद्रा' तज्जातिर्वा ।।

हिन्दीः— शुच धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातु को दीर्घ होकर दकार आदेश हो जाता है ।

### २०— दुरीणो लोपश्च ।

अर्थः— दुरूपपदे इण गतौ धातोः रक् प्रत्ययो भवति, धातोश्च लोपो जायते ।

उदाहरणम्— दूरम्<sup>३</sup> — विप्रकृष्टम् ।

\* २ शूद्रः = शुच + रक्

\* ३ दूरम् = दुर् + इ + रक् + प्रकृतसूत्रेण धातोर्लोपः ।

दुर् + र अत्र "रोरि" इत्यनेन दुरो रेफस्यलोपः तथा च, द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इत्यनेन दु इत्येतस्य दीर्घसति दूरम् जायते ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दुरुपपदात् 'इण्' धातोरक् धातोश्च लोपः।  
दुःखेनेयते प्राप्यते तद् दूरम्, विप्रकृष्टं वा ॥

२१— कृतेश्छः ॥

अर्थः— कृती छेदने धातोः रक् प्रत्ययो भवति धातोः तकारस्य च "छः"  
इत्ययमादेशो भवति।

उदाहरणम्:— कृच्छ्रम् = कठिनम्, दुःखम् खलः क्रूरः ॥

क्रू च।

अर्थः— कृती छेदने धातोः रक् प्रत्ययो भवति धातोश्च क्रू इत्ययं सर्वा-  
देशो भवति।

उदाहरणम्:— क्रूरः<sup>१</sup> = खलः, भीषणः, नाशकारी, आमः, उष्णः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— 'कृत' धातोरन्त्यस्य छः, सर्वस्य च क्रू इत्येतावादेशौ  
रक् च। कृन्तति छिनत्तीति कृच्छ्रः, क्रूरः च, कठिनं दुःखं खलो वा ॥

१—हिन्दी:— कृती धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातु के तकार को  
छकारादेश हो जाता है।

२—हिन्दी:— कृती धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातुको क्रू आदेश  
हो जाता है।

२२—रोदेर्णिलुक् च।

अर्थः— रुदिर अश्रुविमोचने धातोः रक् प्रत्ययो भवति, णौ जाते सति  
लुग्जायते।

उदाहरणम्:— रुद्रः<sup>२</sup> = ईश्वरः, महादेवः, दशप्राणाः, आत्मा।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पापिनो रोदयतीति रुद्रः ईश्वरः। रुद्राः प्राणादयो  
दश जीवश्च।

हिन्दी:— रुदिर् धातु से रक् प्रत्यय होता है, णि होने पर उसका लुक्  
हो जाता है।

२३—बहुलमन्यत्रापि संज्ञा छन्दसोः।

अर्थः— संज्ञायां वेदविषये चान्येभ्योऽपि धातुभ्यो रक् प्रत्ययो भवति  
सामान्य प्रत्ययादौ च णेर्लुक् सम्पद्यते।

\*१ क्रूरः = कृत् + रक् अत्र क्रूरादेशोऽनेकालत्वात् कृत्धातोः स्थाने  
सर्वादेशः। अनेकाल्शिस्सर्वस्य इति प्रमाणभावात्

\*२ रुद्रः = रोदयतीति रुद्रः = रोदि + रक् अत्र णेर्लुकि जाते लूपसिद्धिः।

**उदाहरणम्:**— पाशधरः = व्याधः। उदकधरः = मेघः। शूलधरः = महादेवः। दण्डधरः = नृपः। चक्रधरः = विष्णुः। अत्र सर्वत्राचिप्रत्यये “धृ” धातोः परस्य गेर्लुग् जायते। वेदे खर्वाप “वर्धन्तु त्वा सुष्टतयो गिरो मे” वर्धयन्तु इति प्राप्ते गेर्लुग् भावात् शर्धन्तु इति।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**— बहुलम् अन्यत्रापि धात्वन्तरे संज्ञाछन्दसोः सामान्यप्रत्ययादौ च गेर्लुक्। पाशं बन्धनं धारयतीति पाशधरः, शूलधरः, चक्रधरः, वज्रधरः, शक्तिधरः वा कुमारः। उदकधरः मेघः, दण्डधरः राजा। अत्र सर्वत्राचि प्रत्यये ‘धृ’ धातोः परस्य गेर्लुक्। (छन्दसि—वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे (ऋ० ७/६६/७) ‘वर्धयन्तु इति प्राप्ते। ‘अग्ने शर्ध महते सौभगाय’ (ऋ० ५/२८/३) ‘शर्धय’ इति प्राप्ते। बहुलवचनादसंज्ञाछन्दसोरपि गेर्लुग् भवति।) पर्णानि शोषयति मोचयति रोहयति वा स पर्णशुट्, पर्गुमुक्, पर्णरट् इति प्यन्तात् ‘शुष’ धातोः क्विप् गेर्लुक्। (एवं मुचरुहधातुभ्यामपि) जश्त्वकुत्वादि कार्यम्।

‘वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे।

ततः पर्णरुहा वान्ति ततो देवः प्रवर्षति।।

**हिन्दी**— नाम वाच्य होने पर तथा वेद विषय में अन्य धातुओं से सामान्य तथा प्रत्यय के प्रारम्भ में णि का लुक् हो जाता है।

## २४— जोरी च।

**अर्थ:**— ‘जु’ इति सौत्रिको धातुः एतस्माद् रक् प्रत्ययो भवति तथा धातोः ईकारादेशो जायते।

**उदाहरणम्:**— जीरः = अणुः, खड्गः, वणिगद्रव्यम्, जीरा इति भाषायाम्।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**— ‘जु’ धातो रकि प्रत्यय ईकारादेशः (च)। जवति सूक्ष्मो भवतीति जीरः, अणुः खड्गो वणिगद्रव्यं वा। महाभाष्यकारसंमत्या ‘रकि ज्वः सम्प्रसारणम्’ (महाभाष्य १/१/४) इति ‘ज्या वयोहानौ’ इत्यस्य रकि प्रत्यये सम्प्रसारणम्। जिनात्यवस्थां जहातीति जीरः। तथा महाभाष्यकारसंमत्या ‘जीव’ धातोरदानुक्। जीवति प्राणान् धारयतीति जीरदानुः। वैदिकं रूपमेतत्। अत्र च ‘जीव’ धातोर्वलि तलोपः ऊट् निषेधश्च बाहुलकादेव, इत्यादि।।

**हिन्दी**— सूत्रपठित इस जु धातु से रक् प्रत्यय होता है और धातु को ईकारादेश हो जाता है।

## २५— सुसूधागृधिभ्यः क्रन्।

**अर्थ:**— पुञ् अभिषवे, पूङ् प्राणिप्रसवे, डुधाञ् धारणपोषणयोः गृधु



अभिकाङ्क्षायाम् इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्रन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— सुरः = विद्वान् देवः त्रयस्त्रिंशत् संख्या सूर्यः, ऋषिः। सूरः = सूर्यः, मदारक्षुपः, सोमः, बुधः, नायकः, नृपः।

१ धीरः = तज्ज्ञः, मेधावी, पराक्रमी, स्थिरः, धैर्यवान्, स्वस्थचित्तः शान्तः, साहसी।

गृध्रः = पक्षिभेदः, लोभी।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुनोति सवति उत्पादयत्यैश्वर्यवान् वा भवतीति सुरः, देवसंज्ञो विद्वान्; स्त्रियां सुरा मद्यं वा। सूयते वा सुवति प्राणिनः समर्थयतीति सूरः, सूर्यो वा। दधाति सर्वान् पोषयति वा स धीरः, पण्डितो वा। गृध्यत्यभि-काङ्क्षतीति गृध्रः, पक्षिविशेषो वा।।

हिन्दी:— घुञ् आदि धातुओं से क्रन् प्रत्यय होता है।

२६— शुसिचिमीनां दीर्घश्च।

अर्थः— शु गतौ षिञ् बन्धने, चिञ् चयने, डुमिञ् प्रक्षेपणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्रन् प्रत्ययो भवति धातूनां च दीर्घो जायते।

उदाहरणम्:— शूरः = विक्रमि पुरुषः, सिंहः, शूकरः, सूर्यः, शालवृक्षः, कृष्ण पितामहः। सीरः = हलम्, भानुः अर्कक्षुपः। चीरम् = वल्कलम्, जीर्णवस्त्रम्, रेखा, सीसकम्। मीरः = सागरः सीमा।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘शु’ इति सौत्रो धातुः। शवति गच्छतीति शूरः, विक्रमणशीलः पुरुषो वा। सिनोति बध्नातीति सीरः, हलं वा। चिनोतीति चीरम्, वल्कलं वां मिनोति प्रक्षिपतीति मीरः, समुद्रो वा।

हिन्दी:— शु आदि धातुओं से क्रन् प्रत्यय होकर धातुओं को दीर्घ हो जाता है।

२७— वा-विन्धेः।

अर्थः— वि उपपदे इन्धी दीप्तौ धातोः क्रन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— वीघ्नम् = स्वभाव शुद्धः, गगनम्, वायुः, अनलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विशेषेणन्धते प्रदीप्यते तद् वीघ्नम्, स्वभावशुद्धः।।

---

१—धीरः = धा + क्रन् अत्र घुमास्थागापा जहातिसां हलि अ० ६/४/६६ इति आत्वस्य ईत्वम्।

हिन्दीः— वि उपपद होने पर इन्धी धातु से क्रन् प्रत्यय होता है।

२८— वृधिवपिभ्यां रन्।

अर्थः— वृधु वृद्धौ डुवप् बीजसन्ताने छेदने च धातुभ्यां रन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्ः— वर्धम् = चर्म। चर्मपट्टिका सीसकम्। वप्रः = पिता, केदारः, प्राकारः, तटं, शिखरम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्द्धते तत् वर्धम्, चर्म वा। वपति बीजं छिनत्ति वा स वप्रः, पिता केदारः प्राकारो रोधो वा।।

हिन्दीः—वृधु और डुवप् धातुओं से रन् प्रत्यय होता है।

२९—ऋजेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्रक्षुरखुरभद्रोग्रभेरभेलशुक्रगौरवत्रेरामालाः।

अर्थः— रन्नित्यनुवर्तते। ऋज अर्जने इदि परमैश्वर्ये, अगि गतौ वज्र गतौ डुवप् बीजसन्ताने छेदने च कुबि आच्छादने चुबि वक्त्रसंयोगे क्षुर विलेखने खुर् छेदने भदि कल्याणे सुखे च उच समवाये जिभी भये शुच शोके गु अव्यक्ते शब्दे वन सम्भक्तौ इण् गतौ मा माने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः ऋजाद्येकोनविंशतिशब्दा निपात्यन्ते।

उदाहरणम्ः— १— ऋजः = नायकः। २— इन्द्रः = समर्थः अन्तरात्मा, सूर्यः, योगः, वृष्टिः, देवपतिः। ३— अग्रम् = प्रधानम्, उपरिभागः, लक्ष्यम्, आरम्भः। ४— वज्रः = अशनिः, हीरकम्, शस्त्रम्, कुशः। ५— विप्रः = मेधावीः, अश्वत्थः, मुनिः, ब्राह्मणः। ६— क्रुब्रम् = वनम्। ७— चुब्रम् = मुखम्। ८— क्षुरः = छेदन-द्रव्यं कोकिलाक्षं गोक्षुरः = लोमछेदकं बाणः नापितशस्त्रम्। ९— खुरः = शफम्, सुगन्धद्रव्यभेदः, खट्वापादः, क्षुरः। १०— भद्रम् = कल्याणम्, मुख्यम्, मंगलप्रदम्, दयालुः चारुशलाघ्यम्, प्रियतमम्, कमनीयम्, पाखण्डी। ११— उग्रः = महेश्वरः, उत्कटः, क्षत्रम्, क्रूरः, प्रबलः, तीक्ष्णः। १२— भेरः = दुन्दुभिः, धौंसा इति भाषायाम्। १३— भेलः = जलतरणद्रव्यं, वृद्धशरीरं, भीरुः, मन्दमतिः, चञ्चलः, लम्बमानः। १४— शुक्रम् = ब्रह्माग्निः, आषाढः, प्राणिबीजम्, नेत्ररोगः। १५— शुक्लः = श्वेतम्, रजतम्। १६— गौरः = श्वेतः, रक्तवर्णः महिषविशेषः, कान्तिमान्, श्वेतसर्षपः, शशी, मृगविशेषः। १७— वत्रः = विभजकः। १८— इरा

\*विप्रः = वप् + रक् अत्र धातोरकार स्थाने इकारो निपात्यते पुनश्च विप्रः सिद्ध्यति।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्षिपतीति कर्वरः, व्याघ्रो दुष्टो वा; 'कर्वरी' रात्रिव्याघ्री दुष्टा वा। गिरति निगरतीति गर्वरः, अहंकारः (वा)। अहंकारयोगाद् 'गर्वरो' नायकः। शृणाति हिनस्ति प्रकाशमिति शर्वरी, रात्रिर्वा। वृणातीति वर्वरः, प्राकृतजनो वा। चतते याचते स्वीक्रियते यत्तत् चत्वरम्, अंगन वा ॥

हिन्दीः— क्रादि धातुओं से ष्वरच् प्रत्यय होता है।

१२४—नौ षदेः।

अर्थः— न्युपपदे षद्लृ विशरण गत्यवसादनेषु

धातोः ष्वरच् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्— निषद्वरः = पंकी, किलन्नमृत्तिका।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—निषीदति यो यत्र वा स निषद्वरः, पंको; 'निषद्वरी' रात्रिर्वा ॥

हिन्दीः— नि उपपद रहते षद्लृ धातु से ष्वरच् प्रत्यय होता है।

इत्युत्तरप्रदेशान्तर्गत एटा मण्डलान्तः पाति कासगज्जनगरा—

भिजनेनाषृचत्वारिंशद ध्ययनतश्चित्रकूटकृताखण्ड—

निवासेन वैश्यवंशावतंसस्य श्रीमन्नमूलस्य—

पौत्रेण श्रीयुतगोपीरामप्रसादगुप्तयोः पुत्रेण—

वैयाकरणशिरोमणीनां प्राप्तराज्यसम्मान—

धुरन्धराणां पण्डितप्रवर श्रीभीमसेन—

शिष्येण सत्यव्रत व्याकरणाचार्येण—

निरुक्ताचार्येण वेदवागीशपदवीसम—

लंकृतेन वेदाचार्येण सम्प्रति—

आर्षं गुरुकुल. एटानगर

आचार्यरूपपाठकेनवि—

रचितोणदिकोषेप्रकाशिका—

नाम्नीसंस्कृतटीकायां

विमलाख्यहिन्दी वृत्तौ

च द्वितीयः पादः

पूर्तिमगात् ॥

ओ३म्

## अथ तृतीय पादः

१—छित्त्वरछत्त्वरधीवरपीवरमीवरचीवरतीवरनीवरगह्वरकट्त्वर-  
संयद्वराः ।

अर्थः—छिदिर् द्वैधीकरणे, छद आवरणे, डुधाञ् धारणपोषणयोः, पा पाने, मा माने, चिञ् चयने, तीर कर्म समाप्तौ, णीञ् प्रापणे, गाहू विलोडने कटे वर्षावरणयोः, संपूर्वकं दाण् दाने इत्येतेभ्यो धातुभ्यो यथासंख्यं छित्त्वरछत्त्वरधीवरपीवरमीवर चीवरतीवरनीवरगह्वरकट्त्वर-संयद्वराः शब्दाः ष्वरच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्—छित्त्वरः = धूर्तः, शत्रुछेदनवस्तु । छत्त्वरः = गृहम्, समाच्छादितं स्थानम्, पर्णशाला । धीवरः = नौवाहकः, मत्स्यहरः । पीवरः = स्थूलः, हृष्टपुष्टः । मीवरः = हिंसकः, सेनाध्यक्षः । चीवरम् = वस्त्रं, मुनिस्थानम्, भिक्षुकपरिधानम् । तीवरः = जातिविशेषः, समुद्रः, आखेटकः । नीवरः = परिव्राट्, व्यवसायः, व्यवसायिकः, पंकम् । गह्वरम् = गहनम्, लतामण्डपम्, निकुञ्जम् । कट्त्वरम् = भोज्यं, व्यञ्जनम् । संयद्वरः = नृपः, राजकुमारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—छित्त्वादेय एकादश शब्दाः ष्वरच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । छिनतीति छित्त्वरः, धूर्तः शत्रुछेदनद्रव्यं वा । छदतेऽपवारयतीति छत्त्वरः, गृहं लताच्छादितं स्थानं वा । अत्रोभयत्र धातुदकारस्य तकारः । 'डुधाञ् (धारणे)', 'पा पाने' 'मा माने' एषामीत्वमन्त्यस्य, (मिनोतेर्दीर्घत्वं च) । दधातीति धीवरः, नौवाहको वा । पिबति दुग्धादिकमिति पीवरः, स्थूलो वा । माति मीनाति हिनस्ति वा स मीवरः, हिंसको वा । चिनोति तृणादिना चीयते वा स चीवरः, चीवरं, वस्त्रं मुनिपरिधानं वा । धातोर्दीर्घादेशः । तीरयति कर्मसमाप्तिं करोतीति तीवरः, जातिविशेषो वा । रेफलोपो गुणाभावश्च । नयतीति नीवरः परिव्राट् वा । गुणनिषेधः । गाहते विलोडयतीति गह्वरम्, गहनं वा । ह्रस्वादेशः । कटति वर्षत्यावृणोति वा तत् कट्त्वरम्, भोज्यं व्यञ्जनं वा । संयच्छतीति संयद्वरः, नृपो वा । मकारस्य दकारः ।

बाहुलकात्— उपजुहोतीति उपह्वरः, रथो वा । (धातोरन्त्यलोपः ।)

ष्वरच्प्रत्ययस्य षित्वात् स्त्रियां 'छित्वरी' इत्यादि, सर्वत्र ङीष् ।।

हिन्दीः— छिदिरादि धातुओं से यथा संख्य करके छित्वरादि शब्द ष्वरच्प्रत्ययान्त निपातन किये जाते हैं ।

## २— इण्सिञ्जिदीङ्घ्यविभ्यो नक् ।

अर्थः— नगधिकारो बन्धेर्ब्रधिवुधी वेतियावत् । इण् गतौ, सिञ्बन्धने, जि जये, दीङ् क्षये, उष दाहे अव रक्षणाद्यर्थेषु इत्येतेभ्यो धातुभ्यो नक् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— इनः = ईश्वरो राजा प्रभुः सूर्यः । सिनः = ग्रासः काणः । जिनः = वर्षीयान्, जयशीलः, नास्तिक विशेषः । दीनः = निर्धनः दुःखी, उदासः, भीरुः, क्षुद्रः । उष्णः = कवोष्णम्, तापः, ग्रीष्मर्तुः । \*ऊनः = असम्पूर्णम्, अपर्याप्तम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एतीति इनः, ईश्वरो राजा प्रभुः सूर्यो वा । इनेन स्वामिना सह वर्तत इति 'सेना' । सिनोति बध्नातीति सिनः, काणो वा । जयतीति जिनः, अतिवृद्धो जयशीलो नास्तिक भेदो वा । दीयते क्षीणो भवतीति दीनः, दुःखी वा । ओषति दहतीति उष्णम्, ईषत्तं वा । वाच्यलिंगः । अवति रक्षादिकं करोतीति ऊनः, असंपूर्ण वा । (ज्वरत्वर० (अ० ६ । ४ । २०) इत्यादिना ऊट् ।।)

हिन्दीः—इणादि धातुओं से नक् प्रत्यय होता है ।

## ३— फेनमीनौ ।

अर्थः— स्फायी वृद्धौ, मीञ् हिंसायां धातुभ्यां फेनमीनौ यथासंख्यं नक् प्रत्ययान्तौ निपात्येते ।

उदाहरणम्ः— फेनः = हिण्डोरः, समुद्रफेन इति भाषायाम् निष्कृतः । जलविकारः । मीनः = राश्यन्तरो मत्स्यः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्फायते वर्द्धते स फेनः, हिण्डोरः 'समुद्रफेन' इति प्रसिद्धः, जलविकारो वा । फेनायते नदी । (स्फायतेर्धातोः 'फे' आदेशः ।) मीनाति हिनस्तीति मीनः, राश्यन्तरो मत्स्यो वा ।।

हिन्दीः—स्फायी वृद्धौ तथा मीञ् हिंसायाम् धातु से फेन तथा मीन शब्द

\*१ऊनः = अक् + नक् अत्र ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्चेत्यनेन ऊठादेशः ।

नक् प्रत्ययान्त निपातन किये जाते हैं ।

#### ४—कृषेर्वर्णे ।

अर्थः— कृष विलेखने धातोर्नक् प्रत्ययो भवति वर्णाभिधेये ।

उदाहरणम्ः—कृष्णः = नीलवर्णः । पिप्पली तु स्त्री वाच्ये । कृष्णमृगः, काकः, पिकः, चन्द्रमासः, कृष्णपक्षः, कलियुगः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृषतीति कृष्णः, नीलवर्णो वा; कृष्णा, पिप्पली वा । बाहुलकात्—जिघर्ति क्षरति चित्तं यया सा घृणा, दौर्मनस्यं वा ।।

हिन्दीः—कृष धातु से नक् प्रत्यय होता है वर्ण अभिधेय होने पर ।

#### ५—बन्धेर्ब्रधिवुधी च ।

अर्थः— बन्ध बन्धने धातोर्नक् प्रत्ययो भवति ब्रधिः बुधी क्रमशश्चादेशौ जायेते ।

उदाहरणम्ः— ब्रध्नः = महान्, सूर्यः, तरुमूलम्, अहः, अर्कक्षुपः, हंसः । बुध्नः = मेघः, मूलम्, अन्तरिक्षम्, पात्रतलम्, निम्नतमभागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ब्रध्नातीति ब्रध्नः । (बुध्नातीति) बुध्नः । ब्रध्नो, महान् सूर्यो वा । बुध्नो, मेघो मूलम् अन्तरिक्षं वा ।।

हिन्दीः—बन्ध धातु से नक् प्रत्यय होता है तथा धातु को क्रमशः ब्रधि, बुधी आदेश होते हैं ।

#### ६—धापृवस्यज्यतिभ्यो नः ।

अर्थः— वक्ष्यत्याचार्यो रास्नासास्नेतिसूत्रं तावन्नप्रत्ययाधिकारो वेदितव्यः ।। डुधाञ् धारणपोषणयोः, पू पालनपूरणयोः, वस निवासे, अज गतिक्षेपणयोः, अत सातत्यगमने इत्येतेभ्यो धातुभ्यो नः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— धानाः = अग्निपक्वा यवाः, पायंसम्, सक्तवः, अन्नम्, कलिकाः, अंकुराः, अग्निपक्वास्तण्डुलाः । पर्णम् = पत्रम्, ताम्बूलपत्रम् । वस्नः = अर्घः, वेतनम्, आवासस्थानम्, द्रव्यम्, वस्त्रम्, चर्म, मृत्युः । वेनः = कमनीयः, प्रजापतिः, ईश्वरः । अत्नः = सूर्यः, वायुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दधतीति धानाः, अग्निपक्वा यवा वा । नित्यं स्त्रीलिंगो बहुवचनान्तश्च । पिपतिं पालयति पूरयति वा तत् पर्णम्, पत्रं वा । वसति येन स वस्नः मूल्यं वेतनं वा । अजति गच्छति प्राप्नोति वा स वेनः,

कमनीयः प्रजापतिरीश्वरो वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति अत्नः, सूर्यो वा ।

बाहुलकात्—शृणोतीति श्रोणः, पंगुर्वा ॥

हिन्दीः—धादि धातुओं से नक् प्रत्यय होता है ।

### ७—लक्षरट्मुट् च ॥

(क) अर्थः—लक्षदर्शनांकयोः धातोर्नः प्रत्ययो भवति अडागमश्च जायते ।

उदाहरणम्ः—लक्षणम् = चिहम्, नाम, परिभाषा, पदम्, उद्देश्यम् रूपम्, कर्तव्यनिर्वाहः, कारणम्, शिरः, छद्मवेशः व्याजः

हिन्दीः—लक्ष धातु से न प्रत्यय होता है और अडागम होता है ।

(ख) मुट् च ।

अर्थः— लक्षदर्शनांकयोर्धातोर्नः प्रत्ययो भवति तस्य च मुडागमो जायते चकारादट् च ।

उदाहरणम्ः—<sup>१</sup>लक्ष्मणम् = रामभ्राता, चिहम्, अभिधानम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लक्षयतीति लक्षणः लक्ष्मणम्, चिहं नाम वा । रामभ्राता लक्ष्मणो वा लक्ष्मणा हंसस्त्री सारसी वा ॥

हिन्दीः—लक्ष धातु से न प्रत्यय होता है और उसको मुट् का आगम होता है चकार से अट् का भी आगम होता है ।

### ८—वनेरिच्चोपधायाः ।

अर्थः— वन सम्भक्तौ धातोर्नः प्रत्ययो भवति धातोश्चोपधाया इदादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— वेन्ना = नदी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वन्यते सम्भज्यते या सा वेन्ना, नदी वा ॥

हिन्दीः—वन धातु से न प्रत्यय होता है और धातु की उपधा के स्थान पर इकारादेश होता है ।

### ९—सिवेष्टेयू च ।

अर्थः— षिवु तन्तु सन्ताने धातोर्नः प्रत्ययो भवति टिभागस्य च यू इति आदेशो भवति ।

\*१ लक्ष्मणम् = लक्ष् + मुट् + अट् + न, अत्र मुडागमे सति पश्चात् अडागमो नप्रत्ययस्य जायते ।

उदाहरणम्— स्यूनः = सूर्यः, प्रकाशरश्मिः, वस्त्रवेष्टनम् (थैला) ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सीव्यति तन्तून् सन्तनोतीति स्यूनः, आदित्यो वा ।  
टिभागस्य 'यू' इत्यादेशः । (दीर्घादेशविधानसामर्थ्याद् गुणाभावः)

बाहुलकात्—केवलो ऽपि न प्रत्ययः, तेन ऊटादेशे कृते स्योनः सुखी;  
स्योनं सुखमित्यपि सिद्धं भवति ।।

हिन्दीः—षिवु धातु से न प्रत्यय होता है तथा टि भाग को यू आदेश होता है ।

### १०— कृवृजृसिद्रुपन्यनिस्वपिभ्यो नित् ।

अर्थः— कृ विक्रमे, वृ वरणे, जृ वयोहानौ, षिज् बन्धने, द्रु गतौ, पन व्यवहारे स्तुतौ च, अन प्राणने, जिष्वप् शये इत्येतेभ्यो धातुभ्यो नः प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते ।।

उदाहरणम्—कर्णः = श्रोत्रम्, क्षत्रियविशेषः, नौकारित्रम् । वर्णः = ब्राह्मणादिः, शुक्लादिः, स्तुतिः, यशोरूपम् । जर्णः = चन्द्रः, वृद्धः, अक्षरम्, अंगीकारः । सेना = बलम् । द्रोणः = कृष्णकाकः, द्रोणाचार्यः, मानविशेषः, मेघविशेषः, वृश्चिकः, तरुः । पन्नः = सर्पः, पतितः, मग्नः, व्यतीतः । अन्नम् = ओदनादिकम्, भोजनम् । स्वप्नः = निद्रा, शिथिलता, आलस्यम्, तन्द्रा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नो नित् । किरति विक्षिपतीति कर्णः, श्रोत्रं क्षत्रियविशेषो वा । वृणोति त्रियते वा स वर्णः, ब्राह्मणादिः शुक्लादिः स्तुतिर्यशो रूपम् अक्षरं स्वीकारश्च । जीर्यतीति जर्णः, चन्द्रमा वृद्धो वा । सिनोति बध्नाति शत्रूनि सेना । इनेन सह वर्तत इति (व्युत्पत्त्यन्तरं) पूर्वमुक्तम् । द्रवति गच्छतीति द्रोणः, कृष्णकाको मानविशेषोऽर्जुनगुरुर्वा ।। 'द्रोणी' जलसेचनी वा । पनायति स्तौतीति पन्नः, सर्पो वा । अनिति जीवयतीति अन्नम्, ओदनादिकं वा । यः स्वपिति यत् सुप्यते वा स स्वप्नः निद्रा वा ।।

हिन्दीः— क्रादिं धातुओं से न प्रत्यय होता है और वह नित् होता है ।

### ११—धेट् इच्च ।

अर्थः— धेट् पाने इत्यस्माद्धातोर्नः प्रत्ययो भवति धातोश्चेदादेशो जायते ।

उदाहरणम्— धेनः = समुद्रः, नदः, धेना = नदी ।



तृतीयः पादः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धयन्ति पिबन्ति यस्मात् स धेनः समुद्रः; धेना नदी वा। आत्त्वनिवृत्त्यर्थ इकारादेशः।।

हिन्दीः— धेट् धातु से न प्रत्यय होता है तथा धातु को इत्व होता है।

१२— तृषिशुषिरसिभ्यः कित्।

अर्थः—त्रितृष पिपासायाम्, शुष शोषणे, रस शब्दे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो नः प्रत्ययो भवति स च कित् सम्पद्यते।

उदाहरणम्ः—तृष्णा = इच्छा, पिपासा। शुष्णः = सूर्यः, अग्निः। रस्नम् = द्रव्यम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तृष्यति काङ्क्षति पिपासति वा यया सा तृष्णा, लिप्सा पिपासा वा। शुष्यति रसादिकमिति शुष्णः, सूर्योऽग्निर्वा। रसति शब्दयतीति रस्नम्, द्रव्यं वा।।

हिन्दीः—तृषादि धातुओं से न प्रत्यय होता है और वह कित्वत् होता है।

१३— सुञो दीर्घश्च।

अर्थः—षुञ् अभिषवे धातोर्नः प्रत्ययो भवति तस्य च धातोर्दीर्घो जायते।

उदाहरणम्ः— सूना = बधशाला, मांसविक्रयणम्, विध्वंसः, करधनी, गलग्रन्थिशोथः, प्रकाशरश्मिः, नदी, पुत्री।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः सुनोति यत्र वेति सूना, जन्तुबधस्थानं वा।।

हिन्दीः—षुञ् धातु से न प्रत्यय होता है तथा धातु को दीर्घ हो जाता है।

१४— रमेस्त च।

अर्थः— रमु क्रीडायाम् धातोर्नः प्रत्ययो भवति तस्य च धातोः तकारादेशो जायते।

उदाहरणम्ः— रत्नम् जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्धि रत्नं प्रचक्षते। यथा = अश्वरत्नम्, द्विपरत्नम्, मणिरत्नम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ण्यन्ताद् रमेर्नप्रत्ययो मस्य तश्चादेशः। रमयति हर्षयतीति रत्नम्। “जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्धि रत्नं प्रचक्षते।” अश्वरत्नम्, गज रत्नम्, मणिरत्नम्, स्त्रीरत्नम् इत्यादि।।

हिन्दीः—रमु धातु से न प्रत्यय होता है धातु के मकार को तकारादेश होता है।

\*१ रत्नम् = रम् + न = रत्न + सु = रत्नम्।

## १५— रास्नासास्नास्थूणावीणाः ।

अर्थः— रस शब्दे, षस स्वप्ने, ष्टा गतिनिवृत्तौ, वी गतिव्याप्ति प्रजनकान्त्यसनखादनेषु इत्येतेभ्यो धातुभ्यो रास्ना, सास्ना, स्थूणा, वीणा इत्येते शब्दा नः प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— रास्ना = गन्धद्रव्यम् । सास्ना = गलकम्बलः, स्थूणा = गृहस्तम्भः, स्तम्भः, लौहमूर्तिः, घनः, प्रतिमा । वीणा = वंशी, वाद्यविशेषः, सारंगी, विद्युत् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रसति शब्दयतीति रास्ना, गन्धद्रव्यं वा । सस्ति स्वपिति यया सा सास्ना, गवादीनां कण्ठाधोभागश्चर्म वा । (उभयत्र धातोरुप धाया दीर्घः ।) तिष्ठति छादनादिकमनया सा स्थूणा, गृहस्तम्भो वा । आकारस्य ऊ' आदेशः (णत्वं च प्रत्ययस्य) । वेति व्याप्नोति शब्दोऽस्यां सा वीणा, वाद्यविशेषो वा । निपातनाण्णत्वम् (गुणाभावश्च) ॥

हिन्दीः— रसादि धातुओं से रास्नादि शब्द न प्रत्ययान्त निपातित हैं।

## १६— गादाभ्यामिष्णुच् ।

अर्थः— गै शब्दे, डुदाञ् दाने, इत्येताभ्यां धातुभ्यां इष्णुच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—गेष्णुः = गाथकः । देष्णुः = दानशीलः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गायति शब्दं करोतीति गेष्णुः, गाथको वा । ददातीति देष्णुः, दानशीलो वा ॥

हिन्दीः—गै तथा डुदाञ् धातु से इष्णुच् प्रत्यय होता है ।

## १७— कृत्यशूभ्यां कसनः ।

अर्थः—कसन प्रत्ययाधिकारः श्लिषेरच्चोपधाया इतियावत् । कृती छेदने, अशूङ् व्याप्तौ धातुभ्यां कसनः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—कृत्स्नम् = सम्पूर्णम् । अक्षणम् = अखण्डम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृन्तति स्वल्पमिति कृत्स्नम्, संपूर्णं वा । अश्नुते व्याप्नोतीति अक्षणम्, अखण्डं वा ॥

हिन्दीः— कृती तथा अशूङ् धातु से 'कसन' प्रत्यय होता है ।

## १८— तिजेर्दीर्घश्च ।

अर्थः—तिज् निशाने धातोः कसनः प्रत्ययो भवति धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्:— तीक्ष्णम् = तीव्रम्, अयः, धर्मः, युद्धम्, विषम्, मृत्युः, शस्त्रम्, सामुद्रिकलवणम्, क्षिप्रता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तितिक्षते तत् तीक्ष्णम्, तीव्रम् वा (वा) । वाच्यलिङ्गोऽयं शब्दः । तीक्ष्णा बुद्धिः; तीक्ष्णः पुरुषः; तीक्ष्णं घृतम् ।।

हिन्दी:— तिज धातु से 'क्स्न' प्रत्यय होता है तथा धातु को दीर्घ होता है ।

### १६— शिलषेरच्चोपधायाः ।

अर्थः—शिलष आलिङ्गने धातोः क्स्नः प्रत्ययो भवति धातोरुपधाया अदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—\*श्लक्षणम् = सुकुमारम्, चिक्कणम्, कोमलम्, स्वल्पम्, सूक्ष्मम्, लावण्यमयम्, निश्छलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(चात्) क्स्नः । शिलष्यतीति श्लक्षणम्, सुकुमारं वा । त्रि लिङ्गेषु (वाच्यवत्) ।।

हिन्दी:— शिलष धातु से 'क्स्न' प्रत्यय होता है तथा धातु की उपधा को अकारादेश होता है ।

### २०— यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच् ।

अर्थः— यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु, मनु अवबोधने, शुन्ध शुद्धौ, दसु उपक्षये, जनी प्रादुर्भावे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो युच् प्रत्ययो भवति बाहुलकाच्चयुच स्थाने अनादेशो न जायते ।

उदाहरणम्:— यज्युः = अध्वर्युः । मन्युः = शोकः, कोपः, दयनीयस्थितिः, यज्ञः । शुन्ध्युः = अग्निः, अनिलः । दस्युः = तस्करः, राक्षससंघः, जातिबहिष्कृतः । आततायी । जन्युः = शरीरीः, जन्म, पशुः, अग्निः, सृष्टिकर्ता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यजतीति यज्युः, अध्वर्युर्वा । मन्यतेऽसौ मन्युः, शोकः क्रोधो वा । शुन्धतीति शुन्ध्युः, अग्निर्वा । दस्यति नाशयति परपदार्थानिति दस्युः, तस्करो वा । जायते प्रादुर्भवतीति जन्युः, शरीरी वा । बाहुलकादनादेशाभावः ।।

\*१ श्लक्षणम् = शिलष + क्स्न अत्र षढोः कः सि—इत्यनेन धातोः षकारस्य ककारादेशः तथा च आदेश प्रत्यययोः इति मूर्धन्यादेशः पुनश्च नकारस्य णकारः रषाभ्यां नोणः समानपदे इत्यनेन जातम् ।

हिन्दी:—यजादि धातुओं से युच् प्रत्यय होता है बहुल के कारण युच् के स्थान पर अनादेश नहीं होता।

### २१—भुजिमृड्भ्यां युक्त्युक्तौ।

अर्थ:— भुज पालनाभ्यवहारयोः, मृड् प्राणत्यागे इत्येताभ्यां धातुभ्यां युक्त्युक्तौ प्रत्ययौ यथासंख्यं भवतः।

उदाहरणम्:—भुज्युः = पात्रम्। मृत्युः = मरणम्।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—यो भुनक्ति यत्र वा स भुज्युः, पात्रं वा। प्रियत इति मृत्युः, शरीरवियोगो वा। स्त्रीलिंगः पुँल्लिंगश्च॥

हिन्दी:— भुज तथा मृड् धातु से युक् तथा त्युक् प्रत्यय यथासंख्य करके होते हैं।

### २२— सरतेरयुः।

अर्थ:— सृ गतौ धातोः अयुः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— सरयुः = नदी, वायुः।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:— यः सरति यत्र जलानि वा सरन्ति स सरयुः, नदी वा। 'अयुप्रत्यय इति पाठान्तरम् = सरयुः।

हिन्दी:— सृ धातु से अयु प्रत्यय होता है।

### २३— पानीविषिभ्यः पः।

अर्थ:— पठिष्यत्याचार्यो "खष्पशिल्पशष्पेति सूत्रं तावत्प प्रत्ययाधिकारो ज्ञेयः। पा रक्षणे, णीञ् प्रापणे, विष्लु व्याप्तौ धातुभ्यः पः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— पापम्<sup>१</sup> = अधर्मः, अन्यायः, अघः। नीपः = पुरोहितः, कदम्बतरुः, उपत्यका, अशोकपादपविशेषः, नृपैककुलम्। वेषः = पेयम्, उदकम्।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—पान्ति रक्षन्त्यात्मानमस्मादिति पापम्, अधर्मो वा; तद्योगात् पापः पुरुषः। नयतीति नेपः, पुरोहितो वा; (बाहुलकात् गुणाभावो नीपः वृक्षविशेषः)। वेवेष्टि व्याप्नोतीति वेषः, पेयमुदकं वा॥

हिन्दी:— पादि धातुओं से प प्रत्यय होता है।

\*१ पापम् = पा + प + सु = पापम्

२४—च्युवः किच्च ।

अर्थः— च्युङ् गतौ धातोः पः प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्—च्युपः = मुखम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—च्यवते प्राप्नोति वदति वा येन स च्युपः, मुखं वा ।।

हिन्दीः— च्युङ् धातु से प प्रत्यय होता है तथा कितवत् कार्य होता है ।

२५— स्तुवो दीर्घश्च ।

अर्थः— ष्टुञ् स्तुतौ धातोः पः प्रत्ययो भवति धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्— स्तूपः = भूमिसमुच्छ्रायः, यज्ञवेदिः, स्तम्भः, चिता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्तौतीति स्तूपः, भूमिसमुच्छ्रायो यज्ञवेदिर्वा ।।

हिन्दीः— ष्टुञ् धातु से प प्रत्यय होता है तथा धातु को दीर्घ होता है ।

२६— सुशृभ्यां निच्च ।

अर्थः—षुञ् अभिषवे, शृ हिंसायां इत्येताभ्यां धातुभ्यां पः प्रत्ययो भवति स च नित्सञ्जायते । तथा च धातो दीर्घत्वं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— सूपः = द्विदलान्नम्, व्यञ्जनम्, पाचकः, मरीचिका, कटाहः भाण्डम्, विशिखः । शूर्पम् = अन्नशोधकं पात्रम्, छाज इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(चात्) किद् दीर्घश्च । सुनोति सूयते पच्यते वा स सूपः, पक्वं द्विदलान्नं वा । शृणाति हिनस्तीति शूर्पम्, मानभेदोऽन्नशोधकं पात्रं वा ।

हिन्दीः— षुञ्, शृ धातुओं से प प्रत्यय होता है तथा वह नित् होता है ।

२७— कुयुभ्यां च ।

अर्थः— कु शब्दे, यु मिश्रणामिश्रणयोः इत्येताभ्यां धातुभ्यां पः प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते धातोश्च दीर्घत्वम् ।

उदाहरणम्— कूपः = कुआँ, छिद्रम्, अवटः, कुप्पी इति भाषायाम् । यूपः = यज्ञशालास्तम्भः, यज्ञस्थूण, विजयस्मारकः, विजयोपहारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कित् दीर्घश्च । कौति शब्दयतीति कूपः (उदपानं वा) । यौति मिश्रयतीति यूपः, यज्ञशालास्तम्भो वा (चान्ति) ।।

हिन्दीः— कु तथा यु धातु से प प्रत्यय होता है और वह कित् होता है तथा धातु के उकार को दीर्घ हो जाता है ।

## २८—खष्पशिल्पशष्पवाष्परूपपर्यतल्पाः ।

अर्थः— खनु अवदारणे, शील समाधौ, शष हिंसायाम्, बाधु विलोडने, रु शब्दे, पृ पूरणे, तल प्रतिष्ठायां धातुभ्यः खष्पशिल्पशष्पवाष्परूप पर्यतल्पशब्दाः यथासंख्यं प प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:—खष्पः<sup>१</sup> = कोपः, बलात्कारः, हिंसा, निष्ठुरता । शिल्पम् = कौशलम्, कला, विदग्धता, पटुता, कार्यम्, सुवा । शष्पम् = लघुतृणम्, कान्तिक्षयः, नवतृणम् । वाष्पम् = अश्रु, ऊष्मा, प्रवाष्पः, अंयः, भाप इति भाषायाम् । रूपम् = आकृतिः, स्वभावः, सौन्दर्यम्, रूपं सप्तविधं शुक्लकृष्ण पीत रक्तहरित कपिल चित्राख्यम् । पर्यम् = सदनम्, बालतृणम्, नूतनांकुरित घासः, पंगुशकटम् पंगुपीठम्, गृहम् । तल्पम् = शय्या, विष्टरम्, शकटोपवेशनस्थलम्, अट्टालिका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खष्पादयः पप्रत्ययान्ता निपाताः । खनतीति खष्पः, क्रोधो बलात्कारो वा । नकारस्य षत्वम् । यत् शीलति समादधाति तत् शिल्पम्, कौशलं वा । ह्रस्वादेशः । शस्यते हन्यते (यत्) तत् शष्पम्, बालतृणं कान्तिक्षयो वा । षत्वम् । बाधते दुःखयतीति वाष्पम्, नेत्रजलम् ऊष्मा वा । धकारस्य षत्वम् । रौति शब्दयतीति रूपम्, आकृतिः स्वभावः सौन्दर्यं वा । दीर्घादेशः । पिपर्तीति पर्यम्, गृहं बालतृणं वा । तलयति प्रतिष्ठां करोतीति तल्पम्, शय्या स्त्रियो वा । (णिलोप इडाभावश्च ॥)

बाहुलकात्—चमति भक्षयतीति चम्पा, नगरी वा । पाति रक्षतीति पम्पा, नदी वा । ह्रस्वत्वं मुडागमश्च ॥

हिन्दीः— खनादि धातुओं से खष्पादि शब्द यथासंख्य करके पप्रत्ययान्त निपातित हैं ।

## २९—स्तनिहृषिपुषिगदिमदिभ्योणेरित्नुच् ।

अर्थः— स्तन देवशब्दे, हृषु हर्षे, पुष पुष्टौ, गद व्यक्तायांवाचि, मदी हर्षे, इत्येतेभ्यो ण्यन्तेभ्यो धातुभ्य इत्नुच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—स्तनयित्नुः = वारिदः, विद्युत्, मेघगर्जना, रोगः, मृत्युः, घासविशेषः । हर्षयित्नुः = हर्षयिता, स्वर्णम् । पोषयित्नुः = पोषकः, कोकिलः । मदयित्नुः = मदिरा, कामदेवः, मादकः, मेघः मत्तः ।

\*१ खष्पः = खन् + प + सु खत् धातोर्नकारस्य षत्वं निपातनात् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्तनयति शब्दयतीति स्तनयित्नुः, मेघो विद्युद्वा ।  
हर्षयतीति हर्षयित्नुः, हर्षयिता सुवर्णं वा । पोषयतीति पोषयित्नुः, पोषयिता (वा) ।  
गदयतीति गदयित्नुः, वावदूको वा । मदयतीति मदयित्नुः, मदिरा वा । अत्र सर्वत्र  
अयामन्ताल्वाय्येत्यु० (अ० ६ । ४ । ५५) इति सूत्रेण णेरयादेशः ॥

हिन्दीः—स्तनादि ण्यन्तधातुओं से इत्नुच् प्रत्यय होता है ।

### ३०— कृहनिभ्यां क्तुः ।

अर्थः— डुकृञ् करणे, हन हिंसागत्योः धातुभ्यां क्तुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—कृत्नुः = शिल्पी, कलाकारः, चतुरः । हत्नुः = व्याधिः,  
आगमः, शस्त्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—करोतीति कृत्नुः, शिल्पी वा । यो हन्ति येन वा स  
हत्नुः, व्याधिः शस्त्रं वा । (अनुदात्तोपदेश० (अ० ६ । ४ । ३७) इत्यादिना  
नकारलोपः ॥)

हिन्दीः— कृ तथा हन् धातु से क्तु प्रत्यय होता है ।

### ३१— गमेः सन्वच्च । (क्तुरिति वर्त्तते)

अर्थः— गम्लृ गतौ धातोः क्तुः प्रत्ययो भवति स च सन्वत् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— जिगल्नुः = प्राणः, जीवनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गमयति शरीराणीति जिगल्नुः, प्राणो वा ।

हिन्दीः— गम्लृ धातु से क्तु प्रत्यय होता है तथा वह सन्वत् होता है ।

### ३२—दाभाभ्यां नुः ।

अर्थः— नु प्रत्ययाधिकारो “जहातेर्द्वेऽन्त्य लोपश्चेति सूत्रपर्यन्तम् ॥

डुदाञ् दाने, भा दीप्तौ धातुभ्यां नुः प्रत्यय भवति ।

उदाहरणम्—दानुः = दानशीलः, विचक्षणः । भानुः = सूर्यः, प्रकाशः, रश्मिः  
सौन्दर्यम्, राजा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ददातीति दानुः, दानशीलो बुद्ध्यादिविचक्षणो वा ।  
भाति दीप्यतेऽसौ भानुः, सूर्यः प्रकाशः किरणा वा । ‘स्वर्मानुः’ राहुः । ‘चित्रभानुः’  
सूर्योऽग्निर्वा । ‘बृहद्भानुः’ अग्निः ॥

हिन्दीः— दा तथा भा धातु से नु प्रत्यय होता है ।

### ३३— वचेर्गश्च ।

अर्थः— वच परिभाषणे धातोः नुः प्रत्ययो भवति वचेश्च गादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— वग्नु = वाचालः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वक्तीति वग्नुः, वाचालो वा ।।

हिन्दी:— वच् धातु से नु प्रत्यय होता है और धातु के चकार को गकार आदेश होता है ।

### ३४—धेट् इच्च ।

अर्थ:— धेट् पाने इत्येतस्माद्धातोः नुः प्रत्ययो भवति धातोश्च इदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— धेनुः = नवप्रसूता गौः, पृथ्वी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धयन्ति पिबन्ति यस्याः सा धेनुः, नवप्रसूता गौर्वा । ('संज्ञायाम् कन्' (अ० ५ । ३ । ८७) इति) कनि सति 'धेनुका' हस्तिनी वा ।।

हिन्दी:—धेट् पाने धातु से नु प्रत्यय होता है तथा धातु को इकारादेश होता है ।

### ३५—सुवः कित् ।

अर्थ:— सु प्रसवैश्वर्ययोः धातोः नुः प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्:— सूनुः = अनुजः, पुत्रः, सूर्यः, शिशुः, दौहित्रः, अर्कक्षुपः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सूयत उत्पद्यतेऽसौ सूनुः, अनुजः पुत्रः सूर्यो वा ।।

हिन्दी:— सु धातु से नु प्रत्यय होता है तथा कित्वत् कार्य होता है ।

### ३६—जहातेर्द्धेऽन्त्यलोपश्च ।

अर्थ:— ओहाक् त्यागे धातोः नुः प्रत्ययो भवति धातोश्च द्विर्भावोऽन्त्यलोपश्च जायते ।

उदाहरणम्:— जह्नु = दोषत्यागी, राजर्षिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जहाति दोषानिति जह्नुः, कश्चिद् राजर्षिर्वा ।।

हिन्दी:— ओहाक् धातु से नुप्रत्यय होता है धातु को द्वित्व और अन्त्य का लोप होता है ।

### ३७—स्थो णुः ।

अर्थ:— णुरिति विषेः किञ्चेति पर्यन्तं वर्तते । ष्टा गतिनिवृत्तौ धातोः णुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— स्थाणुः = शुष्कतरुः, निश्चलः, नागदन्तिका, धूमघटिकाशंकुः, बामी, औषधम्, ठूँठ इति भाषायाम् ।



स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तिष्ठतीति स्थाणुः, शुष्कवृक्षो निश्चलो वा ।।

हिन्दीः—स्था धातु से णु प्रत्यय होता है ।

### ३८— अजिवृरीभ्यो निच्च ।

अर्थः—अज गतिक्षेपणयोः वृड् सम्भक्तौ, री गतिरेषणयोः धातुभ्यो णुः प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— वेणुः = वंशः, राजविशेषः, नरकुलम्, वंशी । वर्णुः = गदः, देशविशेषः, सूर्यः । रेणुः = धूलिः, परागः, पुष्परजः, धूलिकणः, सिकता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अजति गच्छति प्रक्षिपति वा स वेणुः, वंशो राजविशेषो वा । त्रियते सम्भजतीति वर्णुः, गदो देशभेदो वा । रिणाति गच्छति हिनस्ति हन्यते वा स रेणुः, धूलिः (वा) । 'सुरेणुः' सुवर्णरजः, त्रसरेणुर्वा ।।

हिन्दीः—अजादि धातुओं से णु प्रत्यय होता है तथा वह नित् होता है ।

### ३९— विषेः किच्च ।

अर्थः— विष्णु व्याप्तौ धातोः णुः प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— विष्णुः = जगदीश्वरः, अग्निः, पुण्यात्मा, विष्णुस्मृतिरचयिता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(चान्निच्च ।) वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगदिति विष्णुः, जगदीश्वरः ।।

हिन्दीः— विष्णु धातु से णु प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

### ४०— कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः ।

अर्थः— डुकृञ् करणे, डुदाञ् दाने, डुधाञ् धारणपोषणयोः, रा दाने, अर्च पूजायाम्, कल शब्दसंख्यानयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— कर्कः = अग्निः, शुक्लाश्वः, दर्पणः, घटः कर्कराशिः, कर्कटः । दाकः = यजमानः । धाकः = आधारः, अनङ्वान्, आहारः, स्थूणा, स्तम्भः । राका = पूर्णिमा, नदीविशेषः, कन्याविशेषः, खुजली इति भाषायाम् । अर्कः = अर्कपर्णम्, स्फटिकम्, सूर्यः, विद्युत्कान्तिः, अग्निः, द्वादशसंख्या, रविवासरः, अर्कक्षुपः, इन्द्रः । कल्कः = दम्भः, पापम्, तैलमलम्, विष्टा, शुल्बम्, आहारः, अधमर्ण्यम्, पिष्टं, चूर्णम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बहुलवचनान्न ककारस्येत्सञ्ज्ञा । करोतीति कर्कः, अग्निः शुक्लाश्वो दर्पणो घटो वा । ददातीति दाकः, राका, पौर्णमासी नदीभेदो

वा । अर्चयतीति अर्कः, अर्कपर्णं स्फटिकं सूर्यो वा । कलते शब्दयतीति कल्कम्, दम्भः किल्विषं वा ।

बाहुलकात्—रमतेऽसौ रंकः, कृपणो मन्दो वा । कपिलकादित्वात् (द्र०—अ० ८ । २ । १८ वा०) लत्वे कृते लंका, दुष्टनगरी वृक्षशाखा पुंश्चली वा ॥

हिन्दीः— क्रादि धातुओं से क प्रत्यय होता है ।

#### ४१— सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक् ।

अर्थः— सृ गतौ, वृञ्वरणे, भू सत्तायाम्, शुष शोषणे, मुषस्तेये धातुभ्यः कक् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— सृकः = वाणी, अशनिः, पवनः, उत्पलम्, बाणः, कैरवम् । वृकः = वायसः, श्वापदः, उलूकः, लुण्ठकः, क्षत्रियः, जठराग्निः । भूकम् = छिद्रम्, कालः, गर्तः निर्झरः । शुष्कः = नीरसः, अग्निपक्वम्, कृत्रिमः, अनुपयोगी । मुष्कः = अण्डकोषः, समूहः, चौरः, हृष्टपुष्टपुरुषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— सरतीति सृकः, वाणो वज्रं वायुरुत्पलं वा । वृणोतीति वृकः, काकः श्वापदो वा । वृक एव 'वार्कण्यः । भवतीति भूकम्, छिद्रं कालो वा । शुष्यतीति शुष्कः, नीरसो वा । मुष्यत आग्रियत इति मुष्कः, अण्डकोषः सङ्घातो वा । मुष्कोऽस्यास्तीति मुष्करः ।

बाहुलकाद्— अवति रक्षणहेतुर्भवतीति ओकः, राशिः स्थानं वा । मूर्च्यते बध्यतेऽसौ मूकः, वचनवर्जितो वा । रेफवकारयोर्लोपः ॥

हिन्दीः— स्रादि धातुओं से कक् प्रत्यय होता है ।

#### ४२—शुकवल्कोल्काः । (कगिति वर्तते)

अर्थः— शुभ शोभने, वल संवरणे, उष दाहे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः शुकादयः शब्दाः कप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्ः— शुकः = कीरः, व्यासपुत्रः । वल्कलम् = त्वक्वस्त्रम् । उल्का = विद्युद्, अग्निज्वाला, दह्यमानकाष्ठम् । वियत्स्थितोष्णतत्त्वम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शुकादयः कप्रत्ययान्ता निपाताः । शोभतेऽसौ शुकः, पक्षिजातिर्व्यासपुत्रो वा । वलते संवृणोति येन तत् (वल्कम्) वल्कलं वा । ओषति दहतीति उल्का, विद्युद्गन्ज्वाला वा । षकारस्य लत्वम् ॥

हिन्दीः— शुभादि धातुओं से शुकादिशब्द कप्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

### ४३—इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन् ।

अर्थः— इण् गतौ, जिभी भये, कै शब्दे, पा पाने, शल गतौ, अत सातत्यगमने, मर्च इति सौत्रोधातुश्चेष्टायां इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— एकः = मुख्यः, अन्यः, केवलः, अद्वितीयः । भेकः = मण्डूकः, मेघः, कातरपुरुषः । काकः = वायसः, घृणितव्यक्तिः, खञ्जः पूरुषः, शिरः स्नायी । पाकः = शिशुः, जरठः, भोजनविशेषः, परिणामः, निष्पन्नता, अन्नम्, पंक्तिः, गार्हपत्याग्निः, घूकः । शल्कम् = बल्कलम्, भागः । अत्कः = पान्थः, गात्रावयवः । मर्कः = शरीरवायुः, प्राणः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एति प्राप्नोतीति एकः, मुख्योऽन्यः केवलो वा । यो बिभेति यस्माद्वा स भेकः, मण्डूको मेघो वा । कायति शब्दयतीति काकः, वायसो वा । पिबत्यसाविति पाकः, शिशुर्वृद्धो वा । शल्यति गच्छति शल्यते वा तत् शल्कम्, वल्कलं वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति अत्कः, पथिकः शरीरावयवो वा । 'मर्च' इति सौत्रो धातुः । मर्चति चेष्टतेऽसौ मर्कः, शरीरवायुर्वा ।

बाहुलकात्—श्यतीति शाकम्, स्यतीति साकं वा ।।

हिन्दीः— इणादि धातुओं से कन् प्रत्यय होता है ।

### ४४— नौ हः ।

अर्थः— नि उपपदे ओहाक् त्यागे धातोःकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— निहाका = गोधिका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नितरां जहाति त्यजतीति निहाका, गोधिका वा ।।

हिन्दीः—नि उपपद रहते ओहाक् धातु से कन् प्रत्यय होता है ।

### ४५— नौ सदेर्डिच्च ।

अर्थः— निपूर्वकं षदलृ विशरणगत्यवसादनेषु धातोः कन् प्रत्ययो भवति स च डित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— निष्कः = परिमाणविशेषः, चाण्डालः, स्वर्णमुद्रा, स्वर्णम् । कण्ठस्वर्णाभरणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—निषीदतीति निष्कः, परिमाणभेदो वा ।।

हिन्दीः— निपूर्वक षद्लृ धातु से कन् प्रत्यय होता है तथा डित्वत् कार्य होता है ।

### ४६— स्यमेरीट् च ।

अर्थः— स्यमु शब्दे धातोः कन् प्रत्ययो भवति तस्य ईडागमो जायते चकारादिट् च केषाञ्चिन्मते ।

उदाहरणम्ः— स्यमीकाः = बल्मीक, वृक्षविशेषः, मेघः, समयः । स्यमिकः = बल्मीकः, वृक्षविशेषः, मेघः, समयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्यमिति शब्दयतीति स्यमीकः वल्मीको वृक्षभेदो वा । 'चकारादिडागमे स्यमिकः ।।

हिन्दीः— स्यमु धातु से कन् प्रत्यय होता है तथा ईट् आगम होता है, चकार से इट् का भी ।

### ४७— अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च ।

अर्थः— अज गतिक्षेपणयोः, यु मिश्रणेऽमिश्रणे च, धूञ् कम्पने णीञ् प्रापणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कन् प्रत्ययो भवति । धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्ः— वीकः = वायुः, पक्षीः, मनः । यूका = लिखा, शिरः, केशजन्तुः । धूकः = वायुः । नीकः = वृक्षविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अजति गच्छतीति वीकः, वायुः पक्षी वा । यौतीति यूका, शिरःकेशजन्तुर्वा । धूनोति कम्पयतीति धूकः, वायुर्वा । नयतीति नीकः, वृक्षविशेषो वा ।।

हिन्दीः— अजादि धातुओं से कन् प्रत्यय होता है तथा धातु को दीर्घ होता है ।

### ४८—हियो रश्च लो वा ।

अर्थः— ही लज्जायाम्, धातोः कन् प्रत्ययो भवति रेफस्य च लत्वं वा जायते ।

उदाहरणम्ः— हीका = लज्जाशीलता, लज्जा, भीरुता, संकोचः । हलीका = लज्जाशीलता, लज्जा, भीरुता, संकोचः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जिहेति लज्जां करोतीति हीका; हलीका, लज्जा

वा ।।

हिन्दीः— ही धातु से कन् प्रत्यय होता है तथा रेफ के स्थान में विकल्प से लत्व भी होता है ।

### ४६—शकेरुनोन्तोन्त्युनयः ।

अर्थः— शक्लृ शक्तौ धातोः उन, उन्त, उन्ति, उनि इत्येते प्रत्यया भवन्ति ।

उदाहरणम्—शुकनः = पक्षिनाम, चिल्लः, गृध्रः । शकुन्तः = नीलकण्ठपक्षी, पक्षिनाम । शकुन्तिः = पक्षी । शकुनिः = गृध्रः, चिल्लः, कुक्कुटः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उन, उन्त, उन्ति, उनि इत्येते प्रत्यया भवन्ति । शक्नोतीति शकुनः; शकुन्तः; शकुन्तिः; पक्षिनामानि वा ।।

हिन्दीः— शक्लृ धातु से उनादि प्रत्यय होते हैं ।

### ५०— भुवो झिच् ।

अर्थः— भू सत्तायाम् धातोः झिच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— भवन्तिः = वर्तमानसमयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भवन्ति पदार्था यस्मिन् स भवन्तिः, वर्तमानकालो वा । कामयतेऽसौ कुन्तिः; स्त्रियां 'कुन्ती' । धातोः कुरादेशः प्रत्ययादिलोपश्च । अवतीति अवन्तिः, राजा वा । वदतीति वदन्तिः, कोलाहलो वा । 'किंवदन्ती' जनश्रुतिः । कुन्त्यादयो बाहुलकादेव भवन्ति ।।

हिन्दीः— भू धातु से झिच् प्रत्यय होता है ।

### ५१—कन्युच् क्षिपेश्च ।

अर्थः— क्षिप प्रेरणे धातोः कन्युच् प्रत्ययो भवति चकाराद् भुवश्च ।

उदाहरणम्—क्षिपण्युः = वसन्तऋतुः, शरीरम् । भुवन्युः = स्वामी, भानुः, अग्निः, शशी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चाद् भुवः । क्षिप्यति प्रेरयतीति क्षिपण्युः, वसन्तऋतुर्वा । भवतीति भुवन्युः, स्वामी सूर्यो वा ।।

हिन्दीः— क्षिप प्रेरणे धातु से कन्युच् प्रत्यय होता है चकार के ग्रहण सामर्थ्य से भू धातु से भी होता है ।

### ५२— अनुङ् नदेश्च ।

अर्थः— णद अव्यक्त शब्दे धातोः अनुङ् प्रत्ययो भवति चकारात् क्षिपेरपि ।

उदाहरणम्:— नदनुः = जलदः । क्षिपणुः = पवनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चात् क्षिपे; नदत्यव्यक्तं शब्दं करोतीति नदनुः, मेघो वा । क्षिप्यतीति क्षिपणुः वायुर्वा ॥

हिन्दी:— णद धातु से अनुङ् प्रत्यय होता है चकार से क्षिप धातु से भी होता है ।

### ५३—कृवृदारिभ्य उनन् ।

अर्थः— पठिष्यत्याचार्योऽजियमिशीङ् भ्यश्च सूत्रं तावन्नूनन्नधिकारो ज्ञेयः । कृ विक्रमे, वृञ् वरणे, वृ विदारणे इत्येतेभ्यो धातुभ्य उनन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— करुणा = दया । वरुणः = उत्तमं, जलम्, वृक्षविशेषः, आदित्यः, समुद्रः, वियत् । दारुणम् = भीषणम्, निर्दयता, उग्रता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्षिपति दुर्गुणमिति करुणः, वृक्षभेदो वा; करुणा, कृपा वा । करुणा शीलमस्येति कारुणिकः । वृणोति त्रियते वाऽसौ वरुणः, उत्तमं जलं वृक्षभेदो वा । दारयति यत् येन वा तत् दारुणं, भीषणं वा ।

हिन्दी:— क्रादि धातुओं से उनन् प्रत्यय होता है ।

### ५४—त्रो रश्च लो वा ।

अर्थः—तृ प्लवनसन्तरणयोः धातोः उनन् प्रत्ययो भवति रेफस्य च वा लत्वं जायते ।

उदाहरणम्:—तरुणः<sup>१</sup> = युवा, तरुभेदः, नूतनः । तलुनः = युवा, तरुभेदः, नूतनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उनन् । तरतीति तरुणः; तलुनः, युवा वृक्षभेदो वा । स्त्रियां गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) ङीष् । तरुणी; तलुनी वा युवतिः ॥

हिन्दी:— तृ धातु से उनन् प्रत्यय होता है तथा रेफ के स्थान में विकल्प से लकारादेश होता है ।

### ५५—क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित् ।

अर्थः—क्षुध् बुभुक्षायाम्, पिश अवयवे, मिथ् मेधाहिंसनयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्य उनन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

\*१ तरुणः = तृ + उनन् + सु.अत्र गुणे सति प्रत्यय नकारस्य णत्वम् ।

उदाहरणम्:— क्षुधुनः = म्लेच्छ जातिः । पिशुनः = खलः, सूचकः, भेदकः, द्रोही । मिथुनम् = युगलम्, राशिः, उपसर्ग युक्तधातुः, सहवासः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्षुध्यति भोक्तुमिच्छतीति क्षुधुनः, म्लेच्छजातिर्वा । पिशत्यवयवं करोतीति पिशुनः, खलः सूचको वा । मेथति जानाति ज्ञायते हिनस्ति वा तत् मिथुनम्, द्वयोः संयोगो राशिर्वा ।।

हिन्दीः—क्षुधादि धातुओं से उनन् प्रत्यय होता है तथा कित्वत् कार्य होता है ।

### ५६—फलेर्गुक् च ।

अर्थः—फल निष्पत्तौ धातोः उनन् प्रत्ययो भवति गुक् चागमो जायते ।

उदाहरणम्:—फल्गुनः = शुक्लः, फाल्गुनमासः, इन्द्रनामविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—फलति निष्पन्नो भवतीति फल्गुनः, शुक्लो वा ।।

हिन्दीः— फल धातु से उनन् प्रत्यय होता है तथा धातु को गुक् आगम होता है ।

### ५७— अशोर्लशश्च ।

अर्थः— अश भोजने धातोरुनन् प्रत्ययो भवति धातोश्च लशादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— लशुनम् = औषधरूपः कन्दविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उनन् । अश्यते भुज्यते यत्तत् लशुनम्, औषधरूपः कन्दो वा ।।

हिन्दीः— अश धातु से उनन् प्रत्यय होता है तथा धातु को लशादेश होता है ।

### ५८—अर्जेर्णिलुक् च ।

अर्थः— ऋजु अर्जने ण्यन्ताद्धातो. उनन् प्रत्ययो भवति णिलुक् च जायते ।

उदाहरणम्:— अर्जुनः = शुक्लः, मयूरः, तरुविशिष्टः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उनन् । अर्जयतीति अर्जुनः, शुक्लो मयूरो वृक्षभेदो वा; अर्जुनी सौरभेयी ।।

हिन्दी:—ऋजु (ण्यन्त) धातु से उनन् प्रत्यय होता है तथा णि का लुक् होता है ।

### ५६—तृणाख्यायां चित् ।

अर्थ:—ऋजु अर्जने धातोः उनन् प्रत्ययो भवति तृणाभिधेये स च चित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—अर्जुनम् = तृणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अर्जयति यत्तत् अर्जुनं तृणम् । चित्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

हिन्दी:— ऋजु धातु से उनन् प्रत्यय होता है तथा वह चित् होता है, तृणाभिधेय होने पर ।

### ६०—अर्त्तेश्च ।

अर्थ:—ऋ गतौ धातोः उनन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— अरुणः = भानुः, कुष्ठम्, लोहितम्, विस्मितः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोतीति अरुणः, सूर्यः कुष्ठं रक्तं वा ॥

हिन्दी:— ऋ धातु से उनन् प्रत्यय होता है ।

### ६१—अजियमिशीङ्भ्यश्च ।

अर्थ:— अज गतिकेपणयोः, यम उपरमे, शीङ् शयने इत्येतेभ्यो धातुभ्य उनन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— वयुनम् = मन्दिरम्, ज्ञानम्, बुद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञानशक्तिः । यमुना = नदीविशेषः । शयुनः = अजगरः, महासर्पः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वीयते गम्यतेऽत्रेति वयुनम्, मन्दिरं वा । यच्छतीति यमुना, नदीभेदो वा । शोतेऽसौ शयुनः, अजगरो वा ॥

हिन्दी:—अजादि धातुओं से उनन् प्रत्यय होता है ।

### ६२—वृत्वदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः ।

अर्थ:—एष स प्रत्ययाधिकारो गृधि-पण्योर्दकौचेति पर्यन्तं यास्यति ॥ वृञ् वरणे, तृ प्लवनसन्तरणयोः, वद व्यक्तायां वाचि, वच परिभाषणे, वस निवासे, हन हिंसागत्योः, कमु कान्तौ, कष हिंसायां धातुभ्यः सः प्रत्ययो भवति ।



उदाहरणम्:— वर्षम् = संवत्सरः, वृष्टिः, आर्यावर्तः, जलदः, उत्सरणम्, वीर्यपातः, महाद्वीपः । तर्षः = समुद्रः, तृषाकुलः, कामना, तरिः, सूर्यः । वत्सः = बालः, पुत्रः, अर्भकः । वक्षः = वक्षःस्थलम् । वत्सम् = निवासस्थानम्, वक्षः । हंसः = निर्लोभः, सूर्यः पक्षिविशेषः, श्वभेदः, कामदेवः संन्यासिविशेषः शरीरस्थो वायुः पर्वतः, ब्रह्म, आत्मा शिवः विष्णुः । कंसः = तैजसपदार्थः, पात्रम्, तस्करः, नृपविशेषः श्वेतताम्रम् । कक्षम् = बाहुमूलम्, तृणम्, लतावनसमीपम् तारा, पापम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृणोति स्वीकरोतीति वर्षम्, संवत्सरो वृष्टिरार्यावर्तो मेघो वा; स्त्रियां बहुवचनान्तो 'वर्षाः' प्रावृषि ऋतौ । तरति येन यत्र वा स तर्षः, (प्लवः) समुद्रो वा । वदतीति वत्सः, बालो (वा । वक्त्यस्मिन्निति वक्षः,) वक्षः स्थलं वा । (वसत्यस्मिन्निति वत्सम्, निवासस्थानं वा ।) हन्तीति हंसः, निर्लोभः सूर्यः पक्षिभेदोऽश्वभेदः शरीरस्थो वायुर्वा । कामयते परपदार्थानिति कंसः, तैजसद्रव्यं पात्रं तस्करो वा । कषति हिनस्तीति कक्षः, तृणं लता वनसमीपं बाहुमूलं वा ।।

बाहुलकात्— राजते दीप्यते सा राक्षा; लाक्षा (रज्जनद्रव्यम् वा) । कपिलकादित्वात् (अ० ट् । २ । १८ वा०) लत्वम् । यौतीति योषा, स्त्री वा ।।

हिन्दीः— ब्रादि धातुओं से स प्रत्यय होता है ।

### ६३—प्लुषेरच्चोपधायाः ।

अर्थः— प्लुष दाहे धातोः सः प्रत्ययो भवति, उपधायाश्च अदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— प्लक्षः = पर्कटी, द्वीपभेदः, गृहस्यद्वारपार्श्वम्, न्यग्रोधतरुः । पिप्पलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्लोषति दहतीति प्लक्षः, पिप्पलं 'पाकरि' इति प्रसिद्धा, द्वीपभेदो गृहस्य द्वारपार्श्वं वा ।।

हिन्दीः— प्लुष दाहे धातु से स प्रत्यय होता है तथा उपधा को अदादेश होता है ।

### ६४—मनेर्दीर्घश्च ।

\*१ वत्सम् = वस् + स अत्र धातोः सकारस्य तकारः सः स्यार्धधातुके सूत्रेण सम्पद्यते ।

अर्थः—मन ज्ञाने धातोः सः प्रत्ययो भवति धातोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्— मांसम् = शरीरोपचयः, पललम्, फलगूदा इतिहिन्दी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मन्यते ज्ञायतेऽनेन तत् मांसम्, शरीरोपचयो वा ।।

हिन्दीः— मन धातु से स प्रत्यय होता है तथा धातु को दीर्घ होता है ।

### ६५— अशूर्देवने ।

अर्थः— अशूङ् व्याप्तौ धातोः सः प्रत्ययो भवति देवनेऽर्थे । देवनं नाम च द्यूतम् । स प्रत्यये सति तु द्यूतमेवार्थः, अचि कृतेऽन्येऽर्थाः बोध्याः ।

उदाहरणम्— अक्षः = इन्द्रियम्, तुषम्, चक्रम्, शकटम्, व्यवहारः, नियमकार्यविधिः, विभीतकक्षुपः, सर्पः, पाशः, गरुडः, आत्मा, ज्ञानम्, अभियोगः, जन्मान्धः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नुते व्याप्नोतीति अक्षः; अक्षाणि, इन्द्रियाणि तुषं चक्रं शकटं व्यवहारो वा ।।

हिन्दीः— अशूङ् धातु से स प्रत्यय होता है देवन अर्थ के प्रतीत होने पर ।

### ६६— स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः कित् ।

अर्थः—ष्णु प्रस्रवणे, ओव्रश्चू छेदने, ऋष गतौ इत्येतेभ्यो धातुभ्यः सः प्रत्ययो भवति, स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— स्नुषा = यवीयसो भ्रातुर्भार्या, नवोढा । वृक्षः = कार्यं जगत्, तरुः । कृत्सम् = जलम्, समूहः । ऋक्षम् = नक्षत्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्नौति प्रस्रवतीति स्नुषा, यवीयसो भ्रातुर्भार्या वा । वृश्च्यते छिद्यतेऽसौ वृक्षः । 'वृक्ष वरणे' इत्यस्मादपि अचि प्रत्यये 'वृक्षः' इति सिध्यति । अर्थभेदायात्र वृश्चिग्रहणम्, तेन छेद्यत्वात् कार्यं जगदपि 'वृक्षः' उच्यते । कृन्तति छिनत्तीति कृत्सम्, उदकम् (वा) । ऋषति गच्छतीति ऋक्षम्, नक्षत्रसामान्यं वा ।

बाहुलकात्—(आ) समन्तान्मेषति हिनस्तीति आमिक्षा, क्षीरविकारो वा । लिश्यतेऽल्या भवतीति लिक्षा, शिरः केशजन्तुर्वा । रोहति बीजाज्जायतेऽसौ रुक्षः, वृक्षजातिः प्रीतिहीनो वा ।।

हिन्दीः— ष्णु आदि धातुओं से स प्रत्यय होता है तथा कित्वत् कार्य होता है ।

६७—ऋषेर्जातौ ।

अर्थः—ऋष गतौ धातोः सः प्रत्ययो भवति जात्यभिधेये स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—ऋक्षः = भल्लूकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(कित् ।) ऋषति गच्छतीति ऋक्षः, मृगजातिभेदो भल्लूकः (वा) । पूर्व (३। ६६) सूत्रेण सिद्धे जातिनियमाद् यौगिके 'ऋष' धातोः स प्रत्ययो वा ।।

हिन्दीः—ऋष गतौ धातु से स प्रत्यय होता है जाति के अभिधेय होने पर और प्रत्यय कित्वत् होता है ।

६८—उन्दिगुधिकुषिभ्यश्च ।

अर्थः—उन्दी क्लेदने, गुध रोषे, कुष निष्कर्षे धातुभ्यः सः प्रत्ययो भवति स च किज्जायते ।

उदाहरणम्ः— उत्सः = जलप्रस्रवणस्थानम्, नलिका, ऋषिः, स्रोतः । गुत्सः = हारविशेषः, पुष्पगुम्फः, गुच्छः । कुक्षः = जठरस्थलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(कित् ।) उनत्ति क्लिद्यतीति उत्सः, जलस्रवण-स्थानमृषिर्वा । गुध्नाति रोषं करोतीति गुत्सः, हारभेदः पुष्पगुम्फो वा । कुष्णाति निष्कर्षतीति कुक्षः, जठरस्थानं वा ।

हिन्दीः—उन्दादि धातुओं से स प्रत्यय होता है और वह कित्वत् होता है ।

६६—गृधिपण्योर्दकौ च ।

अर्थः—गृधु अभिकाङ्क्षायाम्, पण व्यवहारे स्तुतौ च धातुभ्यां सः प्रत्ययो भवति यथासंख्यं च धात्वोः दकौ आदेशौ जायेते ।

उदाहरणम्ः—गृत्सः = कामः । पक्षः = मासार्द्धः, पक्षी, अवस्था, शरीरम्, सैन्यम्, भित्तिः, विरोधः, उत्तरम्, समुच्चयः, भुजा, कुक्षिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कित् । गृध्यति अभिकाङ्क्षतीति गृत्सः, कामो वा । गकारस्य भष्भावनिवृत्त्यर्थो दकारादेशः । पणायति स्तौति व्यवहरति वा येन यत्र वा स पक्षः, मासार्द्धः पार्श्वभागः साध्यविरोधः समूहो बलं मित्रसन्वायो वा ।।

हिन्दीः—गृधु तथा पण धातु से सप्रत्यय होता है तथा यथासंख्य करके

क्रमशः द और क आदेश धातु को होते हैं ।

### ७०—अशः सरन् ।

अर्थः—निगदिष्यति मुनिवरोऽग्रे सूत्रं 'पतेरश्चलः' तावत्सरन् प्रत्ययाधिकारो वेदितव्यः । अशूङ् व्याप्तौ धातोः सरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— 'अक्षरम् = ब्रह्म, वर्णः, मोक्षः, जलम्, अन्तरिक्षम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नुते व्याप्नोतीति अक्षरम्, ब्रह्म वर्णो मोक्ष उदकं वा ।।

हिन्दीः— अशूङ् धातु से सरन् प्रत्यय होता है ।

### ७१— वसेश्च ।

अर्थः— वस निवासे धातोः सरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— वत्सरः = वर्षः, विष्णुनाम ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वसन्त्यस्मिन्निति वत्सरः, वर्षो वा ।।

हिन्दीः—वस धातु से सरन् प्रत्यय होता है ।

### ७२— संपूर्वाच्चित् ।

अर्थः— संपूर्वात् वस निवासे धातोः सरन् प्रत्ययो भवति स च चित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— संवत्सरः = संवत् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चित्वादन्तोदात्तस्वरः । सम्यग्वसन्त्यत्र स संवत्सरः ।।

हिन्दीः— संपूर्वक वस धातु से सरन् प्रत्यय होता है, तथा वह चित्त्वत् होता है ।

### ७३— कृधूमदिभ्यः कित् ।

अर्थः—डुकृञ् करणे, धूञ् कम्पने, मदी हर्षे धातुभ्यः सरन् प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्— कृसरः = तिलोदनं, मिश्रम् । धूसरः = ईषत्पाण्डुरः, गर्दभः, उष्ट्रः, कपोतः, तैलकारः ।

\*१ अक्षरम् = अश् + सरन् अत्र व्रश्चभ्रस्जसृज० इत्यनेन षत्वं षढोः कः सि इति कुत्वं, सरन् सकारस्य आदेश प्रत्यययोः इत्यनेन मूर्धन्यषकारे अक्षरम् प्रतिपद्यते ।

मत्सरः = असह्यपरसम्पत्तिजनः, कृपणः, क्रुद्धः, दरिद्रः, दुष्टः, मशकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यः करोति क्रियते वा स कृसरः, तिलौदनं मिश्रं वा । धूनोतीति धूसरः, ईषत्पाण्डुरो वा । माद्यतीति मत्सरः, असह्यपरसंपत्तिर्जनः कृपणः क्रुद्धो वा; 'मत्सरा' मक्षिका वा ॥

हिन्दीः— क्रादि धातुओं से सरन् प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

### ७४— पतेरश्च लः ।

अर्थः— पत्लु गतौ धातोः सरन् प्रत्ययो भवति प्रत्ययस्य च रेफस्य लत्वं जायते ।

उदाहरणम्— पत्सलः = मार्गः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पत्सलः, पन्था वा ॥

हिन्दीः— पत्लु धातु से सरन् प्रत्यय होता है, तथा रेफ को लत्व होता है ।

### ७५— तन्यृषिभ्यां कसरन् ।

अर्थः— तनु विस्तारे, ऋष गतौ, धातुभ्यां कसरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— तसरः = सूत्रवेष्टनः । ऋक्षरः = ऋत्विक्, कण्टकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तनोतीति तसरः, सूत्रवेष्टनो वा । ऋषति प्राप्नोति वा स ऋक्षरः, ऋत्विग्वा ॥

हिन्दीः—तनु तथा ऋष धातु से कसरन् प्रत्यय होता है ।

### ७६— पीयुक्वणिभ्यां कालन् ह्रस्वं सम्प्रसारणञ्च ।

अर्थः— पीयुस्तर्पणार्थं सौत्रो धातुर्वर्तते, क्वण शब्दे इत्येताभ्यां धातुभ्यां कालन् प्रत्ययो भवति पीयो ह्रस्वादेशः, क्वणेः सम्प्रसारणञ्च सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— पियालः = वृक्षविशेषः, चिरोंजी इति भाषायाम् । कुणालः = देशविशेषः ।

\*१ऋक्षरः = ऋष + कसरन् + सु = अत्र कसरन् ककारस्य इत्संज्ञा लोपश्च । षढोः कः सि इत्यनेन ऋष धातोः षकारस्य ककारादेशः, ऋक् + सर + सु इण्कोरित्यधिकारे आदेश प्रत्यययोः इत्यनेन सस्य षत्वे रुत्वविसर्गे ऋक्षरः सिद्धयति ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘पीयुः’ सौत्रो धातुः। पीयति तर्पयतीति पियालः, वृक्षभेदो वा, ‘चिरोंजी’ इति प्रसिद्धा। क्वणति शब्दं करोतीति कुणालः, देशभेदो वा।

बाहुलकात्— भजतीति भगालम्, नरमस्तकं वा। कुत्वं च॥

हिन्दीः— तर्पणार्थं में वर्तमान पीयु सौत्र धातु तथा क्वण् धातु से कालन् प्रत्यय होता है, पीयु धातु को ह्रस्वादेश होता है तथा क्वण् को सम्प्रसारण होता है।

### ७७—कठिकुषिभ्यां काकुः।

अर्थः—काकुरिति प्रत्ययाधिकारः पदेर्नित्संप्रसारणमलोपश्चेति यावत्। कठ कृच्छ्रजीवने, कुष निष्कर्षे धातुभ्यां काकुः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्—कठाकुः = पक्षी। कषाकुः = अग्निः, सूर्यः, कपिः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कठतीति कठाकुः, पक्षी वा। कषति हिनस्तीति कक्षाकुः अग्निः सूर्यो वा॥

हिन्दीः— कठ तथा कुष धातु से काकु प्रत्यय होता है।

### ७८—सर्त्तुंक् च।

अर्थः— सृ गतौ धातोः काकुः प्रत्ययो भवति दुगागमश्च जायते।

उदाहरणम्— सृदाकुः = वायुः, नदी, अग्निः, मृगः, इन्द्राशनिः, सूर्यमण्डलम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरतीति सृदाकुः, वायुर्वा; सरन्त्यापोऽस्यामिति सृदाकुः, नदी (वा)॥

हिन्दीः— सृ धातु से काकु प्रत्यय होता है तथा धातु को दुक् आगम होता है।

### ७९— वृतेवृद्धिश्च।

अर्थः— वृतु वर्तने धातोः, काकुः प्रत्ययो भवति धातोश्च वृद्धिर्जायते।

उदाहरणम्—वार्त्ताकुः = हिंगुली, वृन्ताक इति विख्यातम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्ततेऽसौ वार्त्ताकुः, ‘वृन्ताक’ इति प्रसिद्धम्। बाहुलकादुकारस्य अ, ई भवतः। वार्त्ताकम्; वार्त्ताकी, हिङ्गुली वा॥

हिन्दीः—वृतु धातु से काकु प्रत्यय होता है तथा धातु को वृद्धि होती है।

८०—पर्देर्नित्सम्प्रसारणमलोपश्च ।

अर्थः— पर्द कुत्सिते शब्दे धातोः काकुः प्रत्ययो भवति रेफस्य च सम्प्रसारणमकारस्य च लोपः तथा च प्रत्ययो नित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— पृदाकुः = व्याघ्रः, सर्प, वृश्चिकः, तरुः, करी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पर्दते कुत्सितं शब्दं करोतीति पृदाकुः, व्याघ्रः सर्पो वा ।।

हिन्दीः— पर्द धातु से काकु प्रत्यय होता है रेफ को संप्रसारण होता है, अकार का लोप होता है तथा प्रत्यय नित् होता है ।

८१—सृयुवधिभ्योऽन्युजागूजक्नुचः ।

अर्थः— सृ गतौ, यु मिश्रणेऽमिश्रणे च, वच परिभाषणे धातुभ्यः क्रमशः, अन्युच् आगूच्, अक्नुच्, प्रत्यया भवन्ति ।

उदाहरणम्— सरण्युः = मेघः, अनिलः, जलम्, अग्निः, वसन्तर्तुः यामः ।  
यवागूः = क्षीरेपक्वयवचूर्णम्, माण्डम् । वचक्नुः = वाचालः, बुद्धिमान् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरतीति सरण्युः, मेघो वायुर्वा । यीति मिश्रयतीति यवागूः, दुग्धे पक्वयवचूर्णं वा । वक्तीति वचक्नुः, वाचालः प्राज्ञो वा ।।

हिन्दीः— स्रादि धातुओं से क्रमशः अन्युच्, आगूच्, तथा अक्नुच् प्रत्यय होते हैं ।

८२— आनकः शीङ्भियः ।

अर्थः— शीङ् शयने, जिभी भये धातुभ्यां आनक् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— शयानकः = अजगरः, गिरगिट इति भाषायाम् । भयानकः = भयप्रदः, व्याघ्रः, राहुनामान्तरम् बीभत्सरसः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शेतेऽसौ शयानकः, अजगरो वा । बिभेत्यस्मादिति भयानकः, भयप्रदः (वा) ।।

हिन्दीः— शीङ् तथा जिभी धातु से आनक् प्रत्यय होता है ।

८३—आणको लूधूशिङ्घिधाज्भ्यः ।

अर्थः— लूञ् छेदने, धूञ् कम्पने, शिघि आघ्राणे, डुधाञ् धारणपोषणयोः धातुभ्यः आणकः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—लवाणकः = दात्रम् । धवाणकः = वायुः । शिङ्घाणकः =

श्लेष्मा, नासिकामलम् । धाणकः = व्यावहारिक पदार्थ भागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लुनाति येन तत् लवाणकम्, दात्रं वा । धूनोतीति धवाणकः, वायुर्वा । शिङ्घति समन्ताज्जिघ्रतीति शिङ्घाणकः श्लेष्मा वा ।

बाहुलकात्—ककारलोपे शिङ्घाणम्, काचपात्रं लोहनासिकयोर्मलं वा । दधाति धीयते वा स धाणकः, व्यवहारयोग्यद्रव्यभागो वा ।।

हिन्दीः— ल्वादि धातुओं से आणक् प्रत्यय होता है ।

८४— उल्मुक्दर्विहोमिनः ।

अर्थः— उष दाहे, दृ विदारणे, हु दानादानयोः धातुभ्यो मुक्, विन्, मिन्-इत्येते प्रत्ययान्ताः यथासंख्यं उल्मुक्दर्विहोमिनः शब्दा निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्—उल्मुकम् = जाज्वल्यमानांगारः, ज्वलद्दारु । दर्विः = परिवेषणपात्रम्, सर्पफणा । होमी = यजमानः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ओषति दहतीति उल्मुकम्, ज्वलद्गारोवा । मुकप्रत्ययो धातोः षकारस्य लत्वम् । दृणाति विदारयति येन स दर्विः, परिवेषणपात्रं वा । विन् प्रत्ययः । जुहोतीति होमी, यजमानो वा । अत्र मिन्प्रत्ययः ।।

हिन्दीः— उषादि धातुओं से मुकादि प्रत्ययान्त उल्मुक्, दर्वि, होमी शब्द यथासंख्य निपातित किये जाते हैं ।

८५— हियः कुक् रश्च लो वा ।

अर्थः— ही लज्जायां धातोः कुक् प्रत्ययो भवति रेफस्य लकारो वा जायते ।

उदाहरणम्— हीकुः = लज्जावान्, लाक्षा, त्रपु । हलीकुः = जतु, त्रपु, लाक्षा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जिहेति लज्जां करोतीति हीकुः लज्जावान् । हलीकुः, जतुत्रपुणी लाक्षादिर्वा ।।

हिन्दीः— ही लज्जायां धातु से कुक् प्रत्यय होता है तथा रेफ को लत्व भी विकल्प से होता है ।

८६— हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन् ।

अर्थः— तन्प्रत्ययाधिकार स्तनिमृङ्भ्यां किञ्चेति पर्यन्तम् । हस हसने, मृङ् प्राणत्यागे, गृ निगरणे, इण् गतौ, वा गति- गन्धनयोः, अम गतौ,



दमु उपशमे, लूञ् छेदने, पूञ् पवने, धुर्वी हिंसायां इत्येतेभ्यो धातुभ्यः तन्प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— हस्तः = नक्षत्रम्, करः, शुण्डम्, सहायता। मर्तः = मनुष्यः, भूलोकः। गर्तः<sup>१</sup> = अवटः, पतनस्थलम्, कोटरः, छिद्रम्, रोगभेदः, देशविशेषः। एतः = विचित्रवर्णः, हरिणः। वातः = पवनः, रोगः। अन्तः = नाशः, समीपम्, तत्त्वस्वरूपम्, मनोहरम्। दन्तः<sup>२</sup> = दशनः, वागग्रम्, पर्वतशिखरम्, पर्णशाला। लोतः = अश्रुः, लक्ष्म। पोतः = बालः, वहित्रः, दशवर्षीयकरी, वस्त्रम्, अंकुरः, गृहस्थलम्। धूर्तः = शठः, लवणम्, धत्तूरम्, वञ्चकः, कितवः, प्रेमी।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हसतीति हस्तः, नक्षत्रं करो वा। हस्तोऽस्यास्तीति 'हस्ती'। म्रियतेऽसौ मर्तः, मनुष्यो वा। मर्त एव 'मर्त्यः' स्वार्थं यत्। गिरति निगलति स गर्तः, अवटः पतनस्थानं वा। एति प्राप्नोति यं स एतः, विचित्रवर्णो वा, स्त्रियां—'एनी, एता। वातीति वातः, वायुर्व्याधिर्वा। अमति गच्छतीति अन्तः, नाशः समीपं तत्त्वस्वरूपं मनोहरं वा। दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स दन्तः, दशनो वा। शोभना दन्ता यस्याः सा 'सुदती' युवतिः। 'दन्तावली' हस्ती। 'दन्तुरः' (उन्नतदन्तः)। लुनातीति लोतः, अश्रुचिह्नं वा। पुनातीति पोतः, बालो वहित्रो वा। धूर्वतीति धूर्तः शठो लवणं धत्तूरं वा।।

बाहुलकात्— तोसति शब्दयतीति तूस्तम्, पापं जटा वा। तूस्तं करोति तूस्तयति। छ्यति छिनत्तीति छातः, दुर्बलो वा। अभितो म्लायतीति अभिम्लातः, हर्षक्षीणो वा।।

हिन्दीः— हसादि धातुओं से तन् प्रत्यय होता है।

८७—नञ्याप इट् च।

अर्थः— नञ्पूर्वकं आप्लृ व्याप्तौ धातोस्तन् प्रत्ययो भवति, इडागमश्च।

उदाहरणम्:— नापितः = केशच्छेदकः, नाई इति भाषायाम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नाप्नोति सत्कर्माणीति नापितः, केशच्छेदको वा।।

हिन्दीः— नञ्पूर्वक आप्लृ धातु से स्तन् प्रत्यय होता है तथा इट् का आगम होता है।

\*१ गर्तः = गृ + तन् + सु अत्र गुणे कृतेऽचोरहाभ्यां द्वे इति द्वित्व विकल्पे रुत्वे विसर्गे रूप सिद्धिः।

\*२ दन्तः = दम् + तन् + सु = दम् + त + सु = दन्तः।

## ८८—तनिमृड्भ्यां किच्च ।

अर्थः— तनु विस्तारे, मृड् प्राणत्यागे इत्येताभ्यां धातुभ्यां तन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— ततम् = विस्तृतम् । व्याप्तम्, वीणादिकं वाद्यम् । मृतम् = मरणम्, याचितम्, भैक्ष्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तनोतीति ततम्, वीणादिकं वाद्यं वा । म्रियते येन तन् मृतम्, याचितं भैक्ष्यं वा ॥

हिन्दी:—तनु तथा मृड् धातु से तन् प्रत्यय होता है, तथा वह कित् होता है ।

## ८९—अञ्जिघृसिभ्यः क्तः ।

अर्थः—क्तोऽनुवृत्तिर्जेमृट्चोदात्तः पर्यन्तम् । अञ्जू व्यक्तिप्रक्षणकान्तिगतिषु, घृ क्षरणदीप्त्योः षिञ् बन्धने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्तः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— अक्तम् = व्याघ्रः, परिमितम्, अभिषिक्तम् । घृतम् = सर्पिः, उदकम्, नवनीतम् । पितम् = शुक्लम्, रजतम्, चन्दनम्, मूलकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यदनक्ति प्रकटीकरोति तत् अक्तम्, व्याघ्रः परिमितं वा । जिघर्ति संचलति दीप्यते वा तत् घृतम्, उदकं सर्पिः प्रदीप्तं वा । सिनोति बध्नातीति सितम् शुक्लं वा ॥

बहुलवचनात्— हूर्च्छति कुटिलं भवतीति मुहूर्त्तम्, घटिकाद्वयकालो वा । धातोर्मुडागमः, रात्लोपः (अ० ६। ४। २१) इति छलोपः । ऋच्छत्यात्मानं प्राप्नोतीति ऋतम्, यथार्थं वा । वसति यत्रेति वस्तम्, स्थानं वा ॥

हिन्दी:— अञ्जू—आदि धातुओं से क्त प्रत्यय होता है ।

## ९०—दुतनिभ्यां दीर्घश्च ।

अर्थः— दु गतौ, दुदु उपतापे वा, तनु विस्तारे धातुभ्यां क्तः प्रत्ययो भवति धात्वोश्च दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्:— दूतः = बहुकार्यसाधकराजपुरुषः । तातः = पिता, पूज्यः, लघुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दवति गच्छति दुनोत्युपतपति वा स दूतः, बहुकार्यसाधको राजभृत्यो वा; स्त्रियां 'दूती' । तनोति कार्याणीति तातः, पिता वा ।

बाहुलकात्—स्यति कर्मसमाप्तिं करोतीति सीता, क्षेत्रे हलेन कृता रेखा, स्त्रीविशेषो वा ॥

हिन्दीः—दु या टुदु धातु से तथा तनु धातु से क्त प्रत्यय होता है और धातु को दीर्घ होता है।

### ६१—जेर्मूट् चोदात्तः ।

अर्थः— जि जये धातोः, क्तः प्रत्ययो भवति प्रत्ययस्य च मूडागमः तथा स प्रत्यय उदात्तो जायते।

उदाहरणम्— जीमूतः = मेघः, भूमूत् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धातोर्दीर्घः प्रत्ययस्य मूडुदात्तत्वं च । यो जयति येन वा स जीमूतः, मेघः पर्वतो वा ॥

हिन्दीः— जि धातु से क्त प्रत्यय होता है तथा उस प्रत्यय को मूट् आगम होता है और वह प्रत्यय उदात्त स्वर वाला होता है।

### ६२— लोष्टपलितौ ।

अर्थः— लोष्ट, पलित इत्येतौ शब्दौ क्त प्रत्ययान्तौ निपात्येते ।

उदाहरणम्— लोष्टम् = मृत्पिण्डम् । पलितम् = परिपक्व केशशुक्लत्वम् अधिककेशाः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लोष्टते सङ्घातो भवतीति लोष्टम्, मृत्पिण्डो वा । पल्यते प्राप्यते तत् पलितम्, वृद्धावस्थया केशादीनां शुक्लत्वं वा ॥

हिन्दीः— लोष्टम्, तथा पलितम् शब्द क्तप्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं।

### ६३—ह्रश्याभ्यामितन् ।

अर्थः— इतन्निति याति “पिशेः किच्चेतियावत् । ह्र हरणे, श्यैङ् गतौ, धातुभ्यां इतन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्— हरितः = वर्णविशेषः । श्येतः = श्यामवर्णः, श्वेतवर्णः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हरतीति हरितः, वर्णभेदो वा । श्यायति गच्छतीति श्येतः, श्यामवर्णो वा । स्त्रियां —‘हरिणी; हरिता । श्येनी; श्येता ॥

हिन्दीः— ह्र तथा श्यैङ् धातु से इतन् प्रत्यय होता है।

### ६४—रुहेरश्च लो वा ।

अर्थः—रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च धातोः इतन् प्रत्ययो भवति। रेफस्य

च लत्वं वा सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— रोहितः = रक्तम्, मृगविशेषः, मत्स्यविशेषः, फेरुः । लोहितम् = अंगारकः, रुधिरम्, रक्तवर्णः, ताम्रम्, युद्धम्, रक्तचन्दनम्, अपूर्णेन्द्रधनूरूपम्, केसरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोहति प्रादुर्भवतीति रोहितः, मृगमत्स्ययोर्भेदः (वा); रोहितं, रुधिरं वा । लोहितः, अङ्गारको रुधिरं रक्तवर्णो वा । (स्त्रियाम्—रोहिणी, रोहिता । लोहिनी, लोहिता ॥)

हिन्दी:— रुह धातु से इतन् प्रत्यय होता है तथा रेफ को लत्व विकल्प से होता है ।

६५—पिशेः किच्च ।

अर्थः— पिश अवयवे धातोः इतन्प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्:— पिशितम् = मांसम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पिशयतेऽवयवरूपं क्रियते तत् पिशितम्, मांसं वा ॥

हिन्दी:— पिश धातु से इतन्प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

६६—श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः ।

अर्थः—श्रु श्रवणे, दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च, स्पृह ईप्सायाम्, गृह ग्रहणे इत्येतेभ्यो धातुभ्य आय्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— श्रवाय्यः = दानपशुः । दक्षाय्यः = गृध्रः, गरुडविशेषणम् । स्पृहयाय्यः = अभीप्सुः, नक्षत्रम् । गृहयाय्यः = गृहपतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्रावयतीति श्रवाय्यः, दानपशुर्वा । दक्षयति वर्द्धतेऽसौ दक्षाय्यः, गृध्रो वा । स्पृहयतीति स्पृहयाय्यः, अभीप्सुर्नक्षत्रं वा । गृहयति पदार्थान् गृह्णातीति गृहयाय्यः, गृहस्वामी वा । आय्यप्रत्यये णेरयादेशः ॥

हिन्दी:— श्रु—आदि धातुओं से आय्य प्रत्यय होता है ।

६७—दधातेर्द्वित्वमित्वं षुक् च । (आय्योऽनुवर्तते ।)

अर्थः— डुधात् धारणपोषणयोः धातोः आय्यः प्रत्ययो भवति धातोश्च द्वित्वमित्वं च जायते षुगागमश्च ।

उदाहरणम्:—<sup>१</sup>दधिषाय्यः = घृतम् ।

\* १ दधिषाय्यः = अत्र अभ्यासे चर्च इत्यनेन दकारः सम्पद्यते ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दधि स्यति समापयतीति दधिषाय्यः, घृतम् ।  
निपातनात् षत्वम् ।

हिन्दीः—डुधाञ् धातु से आय्य प्रत्यय होता है, धातु को द्वित्व, इत्व तथा पुक् आगम होता है ।

६८— वृञ् एण्यः ।

अर्थः— वृञ् वरणे धातोः एण्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— वरेण्यः = श्रेष्ठः, अभिलषणीयः, पूज्यतमः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—त्रियते स्वीक्रियतेऽसौ वरेण्यः, श्रेष्ठो वा ।।

हिन्दीः— वृञ् धातु से एण्य प्रत्यय होता है ।

६९— स्तुवः केय्यश्छन्दसि ।

अर्थः— ष्टुञ् स्तुतौ धातोः छन्दसि विषये केय्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— स्तुवेय्यः = पुरन्दरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्तूयतेऽसौ स्तुवेय्यः, पुरन्दरो वा । कसेय्यः इति पाठान्तरं, सदा स्तुषेय्यः ।।

हिन्दीः— ष्टुञ् धातु से छन्दविषय में केय्य प्रत्यय होता है ।

१००— राजेरन्यः ।

अर्थः— अन्य प्रत्ययोऽयं “पर्जन्य” इति यावत्प्रसर्पति । राजृ दीप्तौ धातोः अन्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— राजन्यः = अग्निः, क्षत्रियः, श्रेष्ठव्यक्तिः, सज्जनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—राजते दीप्यतेऽसौ राजन्यः, अग्निर्वा, क्षत्रियजातौ तु राज्ञोऽपत्यं राजन्यः । तत्रान्त्यस्वरितः ।

हिन्दीः— राजृ धातु से अन्य प्रत्यय होता है ।

१०१— शृ रम्याोश्च ।

अर्थः— शृ हिंसायां, रमु क्रीडायाम् धातुभ्यां अन्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— शरण्यम् = अज्ञानम्, आश्रयस्थलम्, प्ररक्षकः, प्ररक्षा, प्रतिरक्षा, क्षतिः । रमण्यम् = गृहम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शृणाति हिनस्तीति शरण्यम्, अज्ञानं वा । रमतेऽस्मिस्तत् रमण्यम्, गृहं वा ।।

हिन्दी:- शृ तथा रमु धातुओं से अन्य प्रत्यय होता है।

### १०२- अर्तेर्निच्च ।

अर्थ:- ऋ गतौ धातोः अन्यः प्रत्ययो भवति स च नित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्:- अरण्यम् = वनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:- ऋच्छन्ति गृहाद् गच्छन्ति यत्र तत् अरण्यम्, वनं वा; महदरण्यम् अरण्यानी ।

हिन्दी:- ऋ धातु से अन्य प्रत्यय होता है तथा वह नित् होता है ।

### १०३- पर्जन्यः ।

अर्थ:- पृषु सेचने धातोः अन्यः प्रत्ययो निपात्यते तथा च षकारस्य जकारः ।

उदाहरणम्:- पर्जन्यः = मेघः, समर्थः, वर्षाः, इन्द्रः ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:- पर्षति सिञ्चतीति पर्जन्यः, मेघः समर्थो वा । निपातनात् षकारस्य जकारः ॥

हिन्दी:- पृषु धातु से अन्य प्रत्यय निपातित किया जाता है ।

### १०४- वदेरान्यः ।

अर्थ:- वद व्यक्तायां वाचि धातोः आन्यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:- वदान्यः = मान्यः, वाग्मी, त्यागी, दाता ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:- उद्यते वदतीति वा स वदान्यः, वाग्मी त्यागी वा ॥

हिन्दी:- वद धातु से आन्य प्रत्यय होता है ।

### १०५- अमिनक्षि यजिवधि पतिभ्योऽत्रन् ।

अर्थ:- अत्रन्प्रत्ययानुवृत्तिरग्निमद्वयोः सूत्रयोः । अम गतौ, नक्ष गतौ, यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु, हन- हिंसागत्योः, पत्लु गतौ इत्येतेभ्यो ऽत्तुभ्योऽत्रन् प्रत्ययो भवति । अत्र वधेति हन् स्थाने निपात्यते ।

उदाहरणम्:- अमत्रम् = पात्रम्, सामर्थ्यम् । नक्षत्रम्<sup>१</sup> = तारा, तारक-पुञ्जम् । यजत्रम् = अग्निहोत्रम्, होता, अभिमन्त्रिताग्नि स्थापनम् । वधत्रम् = आयुधम् । पतत्रम् = यानम्, रोमाणि, पक्षः, भुजा ।

\*१ नक्षत्रम् = नक्ष + अत्र + सु = नक्षत्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अमति प्राप्नोति यत्रतत् अमत्रम्, पात्रं वा । नक्षति गच्छतीति नक्षत्रम्, तारका वा । इज्यते यजति वा तद् यजत्रम्, अग्निहोत्रं होता वा । वधीति हनः स्थाने वधादेशो निपात्यते । हन्ति येन तद् वधत्रम् आयुधं वा । पतति गच्छति येन तत् पतत्रम्, वाहनं लोमानि वा ॥

हिन्दीः— अमादि धातुओं से अत्रन् प्रत्यय होता है ।

१०६— गडरादेश्च कः ।

अर्थः— गडसेचने धातोः अत्रन् प्रत्ययो भवति बाहुलकाद् धातोः डकारस्य लकारत्वं जायते तथा च गकारस्य ककारादेशः ।

उदाहरणम्ः—कडत्रम् = कटिभागः, भार्या । कलत्रम् = राजकीय दुर्गः भार्या ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(धातोरादेः कादेशः ।) गडति सिञ्चतीति कडत्रम् । बाहुलकात् डस्य लः । कलत्रम् कटिभागो भार्या वा ॥

हिन्दीः— गड धातु से अत्रन् प्रत्यय होता है । बहुलवचन से धातु के डकार को लत्व तथा गकार को ककारादेश होता है ।

१०७— 'वृञ्श्चित्' ।

अर्थः— वृञ् वरणे धातोः अत्रन् प्रत्ययो भवति सच चित् सञ्जायते ।

उदाहरणम्ः—वरत्रा = चर्मरज्जुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृणोत्युदकादिकं यया या वा सा वरत्रा, चर्मरज्जुर्वा ॥

हिन्दीः— वृञ् धातु से अत्रन् प्रत्यय होता है । तथा वह चित् होता है ।

१०८— सुविदेः कत्रन् ।

अर्थः— सु पूर्वकं विद् सत्तायाम् धातोः कत्रन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— 'सुविदत्रम्' = 'कुटुम्बम्' ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुष्ठु विद्यते तत् सुविदत्रम् कुटुम्बं वा ॥

हिन्दीः—सु पूर्वक विद् धातु से कत्रन् प्रत्यय होता है ।

१०९— कृतेर्नुम् च । (कत्रन्निति वर्त्तते ।)

अर्थः— कृती छेदने धातोः कत्रन् प्रत्ययो भवति धातोश्च नुमागमो जायते ।

उदाहरणम्ः— कृन्तत्रम् = लांगलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृन्तति छिनत्ति तत् कृन्तत्रम् लांगलं वा ।।

हिन्दीः— कृती धातु से कत्रन् प्रत्यय होता है तथा धातु को नुमागम होता है ।

### ११०—भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिनमिहर्षिभ्योऽतच् ।

अर्थः—भृञ् भरणे, मृङ् प्राणत्यागे, दृशिर् प्रेक्षणे, यज देवपूजासंगति करणदानेषु, पर्व पूरणे, डुपचष् पाके, अम गतौ, तमु काङ्क्षायाम्, णम प्रह्वत्वे शब्दे च, हर्ष्य गति कान्त्योः इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽतच् प्रत्ययो भवति । एषोऽतच्छ्रयोः सूत्रयोरनुवर्तते ।

उदाहरणम्— भरतः = राजविशेषः, नटः, रामानुजः, नाट्यकला प्रवर्तक मुनिनाम अभिनयकर्ता, भृत्यः, वनवासी, पार्वतीयः । मरतः = मृत्युः । दर्शतः = चन्द्रमाः, भानुः । यजतः = ऋत्विग् । पर्वतः = अचलः, शिला, वृक्षः, सप्तसंख्या । पचतः = अनलः, भानुः, इन्द्रः । अमतः = रेणुः, अज्ञातः, समयः, रुग्णता, रोगः, मृत्युः । तमतः = तृष्णा परः । नमतः = विनीतः, अभिनेता, धूम्रम्, स्वामी, जलदः । हर्षतः = अश्वः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भरति पुष्पातीति भरतः, राजभेदो नटो रामानुजो वा । म्रियते येन (स) मरतः, मृत्युर्वा । पश्यति येन स दर्शतः, चन्द्रः सूर्यो वा । यजतीति यजतः, ऋत्विग्वा । पर्वति पूर्णो भवतीति पर्वतः, गिरिर्वा । पर्व विद्यतेऽस्मिन्निति मत्वर्थीयस्तकारप्रत्ययो वा । पचति येन स पचतः, अग्निर्वा । अमति गच्छतीति अमतः, रेणुर्वा । ताम्यति काङ्क्षतीति तमतः, तृष्णापरो वा । नमतीति नमतः नम्रो वा । हर्षति गच्छतीति हर्षतः, अश्वो वा ।।

बाहुलकात्— मलते स्वरूपं धरतीति मालती, (पुष्पलता वा) । उपधादीर्घो, गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) डीष् ।।

हिन्दीः— भृ आदि धातुओं से अतच् प्रत्यय होता है ।

### १११—पृषिरञ्जिभ्यां कित् ।

अर्थः— पृषु सेचने, रञ्ज रागे, धातुभ्यां अतच् प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्— पृषतः = बिन्दुः, हरिणः, चिहम् । रजतम् = रूप्यम्, शुक्लम्, स्वर्णम्, मौक्तिकमाला, रुधिरम्, गजदन्तः, नक्षत्रपुञ्जम् ।



स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पर्वति सिञ्चतीति पृषतः, विन्दुर्मृगो वा । रजति प्रियं भवतीति रजनम्, रूप्यं शुक्लं वा ॥

हिन्दीः— पृषु तथा रञ्ज धातु से अतच् प्रत्यय होता है तथा वह कित् होता है ।

### ११२—खलतिः ।

अर्थः— स्वल संचलने धातोरतच् प्रत्ययो भवति तस्य च धातोः सलोपः प्रत्ययान्तस्येत्वं निपात्यते ।

उदाहरणम्— खलतिः = खल्वाटः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्खलति सञ्चलतीति खलतिः, निष्केशशिराः पुरुषो वा । धातोः सलोपः प्रत्ययान्तस्येत्वं निपातः ॥

हिन्दीः— स्वल धातु से अतच् प्रत्यय होता है, तथा धातु के स का लोप तथा प्रत्यय के अन्त में इकारादेश निपातन है ।

### ११३— शीङ्शपिरुगमिवञ्चिजीविप्राणिभ्योऽथः ।

अर्थः— शीङ् शयने, शप आक्रोशे, रु शब्दे, गम्लृ गतौ, वञ्चु प्रलम्बने, जीव प्राणधारणे, प्र पूर्वकं अण प्राणने, धातुभ्योऽथः प्रत्ययो भवति । अथप्रत्ययोऽयं सूत्रत्रयेष्वनुवर्ततेऽग्रिमेषु ।

उदाहरणम्— शयथः = अजगरः, मृत्युः, मत्स्यः । शपथः = सौगन्धः, निश्चयकरणम्, आक्रोशः । रवथः = पिकः । गमथः = पान्थः । वञ्चथः = धूर्तः, कोकिलः, वञ्चनम् । जीवथः = आयुष्मान्, कच्छपः, मयूरः, मेघः, जीवनम् । प्राणथः = बलवान्, वायुः, तीर्थस्थलम्, प्राणिनां प्रभुः । दरथः = दिक्षु प्रसरणं, गर्तः । शमथः = शान्तिः, स्थिरता, परामर्शदाता, मन्त्री । दमथः = दमः, दण्डः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शेतेऽसौ शयथः, अजगरो वा । शप्यत आक्रुश्यत इति शपथः, निश्चयकरणं वा । रौतीति रवथः, कोकिलो वा । गच्छतीति गमथः, पथिको वा । वञ्चति प्रलम्भयतीति वञ्चथः, धूर्तः । अस्य स्थाने 'वन्दि' इति पाठान्तरे वन्दथः, स्तोता स्तुत्यो वा । जीवतीति जीवथः, आयुष्मान् (वा) । प्राणितीति प्राणथः, बलवान् वा ॥

बाहुलकात्—दृणातीति दरथः, दिक्षु प्रसरणं गर्तो वा । शाम्यतीति शमथः, शान्तिः (वा) । दाम्यतीति दमथः, दान्तिः दमो वा ॥

हिन्दी:— शीजादि धातुओं से अथ प्रत्यय होता है।

### ११४—भृजश्चित्।

अर्थ:— डुभृज् धारणपोषणयोः धातोरथः प्रत्ययो भवति स च चित्सञ्जायते।

उदाहरणम्:—भरथः = प्रभुसत्ताप्राप्तभूपः, अग्निः, लोकपालः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विभर्तीति भरथः, लोकपालो राजा वा ॥

हिन्दी:—डुभृज् धातु से अथ प्रत्यय होता है तथा वह चित् संज्ञक होता है।

### ११५—रुविदिभ्यां डित्।

अर्थ:— रु शब्दे, विद ज्ञाने धातुभ्यां अथः प्रत्ययो भवति स च डित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्:— रुवथः = श्वा। विदथः = ज्ञानवान्, प्राज्ञः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रौतीति रुवथः, श्वा वा। वेत्तीति विदथः, योगी वा ॥

हिन्दी:— रु तथा विद धातु से अथ प्रत्यय होना है तथा वह डित् होता है।

### ११६—उपसर्ग वसेः।

अर्थ:— उपसर्गपूर्वकं वस निवासे धातोः अथः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— आवसथः = गृहम्, विश्रामस्थलम्, छात्रावासः, संन्यासाश्रमः। संवसथः = ग्रामः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—(आ) समन्ताद्वसति यत्र स आवसथः, गृहं वा। सम्यग्वसन्ति यत्र स संवसथः, ग्रामो वा ॥

हिन्दी:— उपसर्ग पूर्वक वस धातु से अथ प्रत्यय होता है।

### ११७—अत्यविचमि-तमि-नमिरभिलभिनभितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसच् ॥

अर्थ:—उपदेक्ष्यति सूत्रकारो “दिवः कित्” इत्येतावत्प्रवर्ततेऽसच् प्रत्ययोऽनुकृत्यनुरोधात्। अत सातत्यगमने, अव रक्षणाद्यर्थेषु, चमु अदने, तमु अभिकाङ्क्षायाम्, णम प्रहृत्वे शब्दे च, रभ राभस्ये, डुलभष् प्राप्तौ, णभ हिंसायां, तप सन्तापे, पत्लु गतौ, पन व्यवहारे स्तुतौ च, मह पूजायां धातुभ्योऽसच् प्रत्ययो भवति।

\*१ रुवथः = अत्र अचिश्नुधातु० इत्यनेन उवडादेशः सम्पद्यते।

उदाहरणम्:—अतसः = वायुः । अवसः = भूपः । चमसः = चमसी चम्मच इति भाषायाम् । तमसः = अन्धकारः । नभसः = अनुकूलः । रभसः = गतिः सुखम् । लभसः = अश्वबन्धनम् । नभसः = अन्तरिक्षम् । तपसः = चन्द्रः । पतसः = शकुनिः निशानाथः, टिड्डा । पनसः = कण्टकिफलम्, कटहल इति भाषायाम् । पणसः = कण्टकिफलम् कटहल इति भाषायाम् । महसम् = विद्या ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अतति निरन्तरं गच्छतीति अतसः, वायुर्वा; स्त्रियाम् 'अतसी' । अवति रक्षादिकं करोतीति अवसः, राजा वा चमति भक्षयति येन स चमसः; गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) 'चमसी' । ताम्यति काङ्क्षतीति तमसः, ध्वान्तं वा । नमतीति नमसः, अनुकूलं वा । रभतेऽसौ रभसः, वेगो हर्षो वा । लभतेऽसौ लभसः, अश्वबन्धनं वा । नभते हिनस्तीति नभसः, आकाशं वा । तपति तापहेतुर्भवतीति तपसः, चन्द्रमा वा । पततीति पतसः, पक्षी वा । पनायति स्तौतीति पनसः, कण्टकफिलं वा । पणायति व्यवहरतीति पणसः, पण्यद्रव्यं वा । महतीति महसम्, ज्ञानं वा ॥

बाहुलकात्—अम्यते प्राप्यते तत् तामसम्, कमलं वा । प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धिर्धातोश्च तुट् । स्यति कर्म समापयतीति साध्वसम्, प्रातिभं ज्ञानं वा । धातो—र्धुक् । कंकते चञ्चलं भवतीति कीकसम् अस्थि वा । धातोः कीकादेशः । तरतीतितरसम्, मांसं वा ॥

हिन्दीः— अतादि धातुओं से असच् प्रत्यय होता है ।

११८— वेजस्तुट् च ।

अर्थः— वेज् तन्तुसंताने धातोः असच् प्रत्ययो भवति प्रत्ययस्य च तुडागमः संजायते ।

उदाहरणम्:— वेतसः = नरकुलम्, जम्बीरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वयति तन्तून् संतनोतीति वेतसः, वृक्षभेदो वा ॥

हिन्दीः—वेज् धातु से असच् प्रत्यय होता है तथा प्रत्यय को तुडागम होता है ।

११९— वाहियुभ्यां णित् ।

अर्थः— वह प्रापणे, यु मिश्रणेऽमिश्रणे च धातुभ्यां असच् प्रत्ययो भवति

स च णित्सञ्जायते।

उदाहरणम्:—वाहसः = जलमार्गः, अजगरः। यावसः = घाससमूहः, खाद्यसामग्री, तृणानि।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वहतीति वाहसः, अजगरो वा। यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स यावसः, तृणसन्ततिर्वा।।

हिन्दी:— वह एवं यु धातु से असच् प्रत्यय होता है और वह णित् होता है।

१२०— वयश्च।

अर्थ:— वय गतौ धातोः असच् प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्:— वायसः = काकः, अगुरुकाष्ठम्, तारपीनम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वयते गच्छतीति वायसः, काको वा।।

हिन्दी:— वय धातु से असच् प्रत्यय होता है और वह णित्वात् कार्य करता है।

१२१—दिवः कित्।

अर्थ:— दिवु क्रीडादिषु धातोरसच् प्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्:— दिवसम् = दिनम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीव्यति प्रकाशते सूर्यो यत्र तद् दिवसम्; दिवसः वा।। अर्धर्चादिपाठाद् (अ० २। ४। ३१) द्विलिङ्गः।।

हिन्दी:— दिवु धातु से असच् प्रत्यय होता है तथा वह कित्संज्ञक होता है।

१२२—कृशृशालिकलिगर्दिभ्योऽभच्।

अर्थ:—कृ विक्रमे, शृ हिंसायां, शल गतौ, कल संख्याने, गर्द अव्यक्ते शब्दे, इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽभच् प्रत्ययो भवति। निर्दिष्टमग्रे-आचार्येण सूत्रं "रासिबल्लिंभ्यां च" तावत्पर्यन्तमभच् प्रत्ययानुवृत्तिः।

उदाहरणम्:— करभः = बालः, हस्तबहिर्भागः, करिशुण्डम्, करिशावकः, शरभः = आरण्यक हिंसक पशुविशेषः, उष्ट्रार्भकः, उष्ट्रः, सुगन्धद्रव्यम्, गजार्भकः, क्रमेलकः। शलभः = पतंगः, टिड्डा, टिड्डी। कलभः = हस्तिशावकः, जन्तुशावकः। गर्दभः = गन्धम्, खरः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्षिपतीति करभः, हस्तस्य बहिर्भागः (उष्ट्र) बालो वा । शृणाति हिनस्तीति शरभः, आरण्यानां मध्ये हिंसकविशेषपशुकलभः, करिशावको वा । गर्दयति शब्दं करोतीति गर्दभः, खरो वा ॥

हिन्दीः— क्रादि धातुओं से अभच् प्रत्यय होता है ।

### १२३—ऋषिवृषिभ्यां कित् ।

अर्थः— ऋष गतौ, वृषु सेचने धातुभ्यां अभच् प्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— ऋषभः = सत्तमः, अनड्वान् स्वरविशेषः, शूकरपुच्छम् । वृषभः = बलीवर्दः, श्रेष्ठः, जन्तुर्नरः, वृषराशिः, औषधविशेषः, करिकर्णः, कर्णविवरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋषति गच्छतीति ऋषभः, वर्षतीति वृषभः, श्रेष्ठपर्यायो बलीवर्दो वा ॥

हिन्दीः— ऋष तथा वृषु धातु से अभच् प्रत्यय होता है तथा वह कित् होता है ।

### १२४— रुषेर्निल्लुष् च ।

अर्थः— रुष हिंसायां धातोः अभच् प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययो नित्सञ्जायते रुषस्थाने च लुषादेशः ।

उदाहरणम्— लुषभः = मत्तहस्ती ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोषति हिनस्तीति लुषभः, मत्तहस्ती वा । (किदनुवर्तनाद् गुणाभावः ।)

हिन्दीः— रुष धातु से अभच् प्रत्यय होता है, प्रत्यय नित् संज्ञक होता है तथा रुष के स्थान पर लुष आदेश होता है ।

### १२५— रासिवल्लिभ्यां च ।

अर्थः— रासृ शब्दे, वल्ल संवरणे धातुभ्यां अभच् प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— रासभः = गर्दभः । वल्लभः = प्रियः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रासति शब्दयतीति रासभः, खरो वा । वल्लते संवृणोतीति वल्लभः, प्रियो वा ॥

हिन्दी:— रासृ एवं वल्ल धातुओं से अभच् प्रत्यय होता है तथा वह नित् होता है।

१२६— जृविशिभ्यां झच् । “भन्देर्नलोपश्चेति यावज्झच् प्रवृत्तिः ।

अर्थ:— जृ वयोहानौ, विश प्रवेशने धातुभ्यां झच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— जरन्तः = महिषः, वृद्धपुरुषः । वेशन्तः = लघुसरः, अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रत्ययादिझकारस्य झोऽन्तः । (अ० ७। १। ३)

इत्यन्तादेशः । जीर्यति स जरन्तः, महिषो वा । विशति प्रवेशं करोतीति वेशन्तः, अल्पजलाशयो वा ॥

बाहुलकात्— अर्हति पूज्यो भवतीति अर्हन्तः (पूज्यः) ॥

हिन्दी:— जृ एवं विश् धातुओं से झच् प्रत्यय होता है ।

१२७— रुहिनन्दिजीविप्राणिभ्यः षिदाशिषि ।

अर्थ:— रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च, दुनदि समृद्धौ, जीव प्राणधारणे प्रपूर्वकं अण प्राणने इत्येतेभ्यो धातुभ्यो झच् प्रत्ययो भवति स च षित्सम्पद्यते आशिषि विषये ।

उदाहरणम्:— रोहन्तः = वृक्षविशेषः । नन्दन्तः = पुत्रः । जीवन्तः = औषधम्, जीवनम्, अस्तित्वम् । प्राणन्तः = जीवनम्, वायुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोहतीति रोहन्तः, वृक्षभेदो वा । नन्दति समृद्धियुक्तो भवतीति नन्दन्तः, पुत्रो वा । यो जीवति (येन वा) स जीवन्तः, औषधं वा । प्राणिति श्वासप्रश्वासान् प्रवर्तयति स प्राणन्तः, वायुर्वा । षित्त्वात् स्त्रियां ङीष् ‘प्राणन्ती, रोहन्ती, नन्दन्ती, जीवन्ती’ ॥

हिन्दी:— रुहादि धातुओं से झच् प्रत्यय होता है और वह षित् होता है आशीर्वाद विषय में ।

१२८— तृभूवहिवसिभासिसधिगडिमण्डजिनन्दिभ्यश्च ।

अर्थ:— तृ प्लवन सन्तरणयोः, भू सत्तायाम्, वह प्रापणे, वस निवासे भास दीप्तौ, साध संसिद्धौ, गडिसेचने, मडि भूषायाम्, जि जये, दुनदि समृद्धौ धातुभ्यो झच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— तरन्तः = समुद्रः, प्रचण्डवृष्टिः, भेकः, पिशाचः । भवन्तः = कालः वर्तमानसमयः । वहन्तः = वायुः शिशुः । वसन्तः = ऋतु विशेषः, पेचिसम,

शीलता । भासन्तः = भानुः, चन्द्रमाः, नक्षत्रम् । साधन्तः = भिक्षुकः । गण्डयन्तः = मेघः । मण्डयन्तः = आभूषणम्, अभिनेता, आहारः, स्त्रीसभा । जयन्तः = जयशीलः, शिवः, चन्द्रः । नन्दयन्तः = आनन्दकरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—झच् । यस्तरति येन यत्र वा स तरन्तः समुद्रः तरन्ती नौका वा । यो भवतीति यत्र वा स भवन्तः, कालो वा । वहति कार्याणि प्रापयतीति वहन्तः, वायुर्वा । यो वसति यत्र वा स वसन्तः, ऋतुभेदो वा । भासयते दीप्यतेऽसौ भासन्तः, सूर्यो वा । साध्नोति कार्याणीति साधन्तः भिक्षुको वा । गण्डयति सेचयतीति गण्डयन्तः, भूषणं वा । जयतीति जयन्तः, जयशीलः (वा) । स्त्रियां 'जयन्ती' पुष्पभेदो वा । 'विजयन्तः' कश्चिद्राजविशेषस्तस्य प्रासादो 'वैजयन्तः', वैजयन्ती पताका । नन्दन्ति येन स नन्दयन्तः, आनन्दकरो वा । यतः पूर्वसूत्रेऽपि नन्दिः पठितः, ततोऽत्र पुनर्ग्रहणमनाशिष्यपि यथा स्यात् ।।

हिन्दीः— त्रादि धातुओं से झच् प्रत्यय होता है ।

### १२६—हन्तेर्मुट् हिच ।

अर्थः—हन् हिंसागत्योः धातोः झच् प्रत्ययो भवति तस्य च मुडागमो धातोश्च हि इत्ययं आदेशः सञ्जायते ।

उदाहरणम्— हेमन्तः<sup>१</sup> = ऋतुविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यो हन्ति शीतेन स हेमन्तः, ऋतुभेदो वा ।।

हिन्दीः— हन् धातु से झच् प्रत्यय होता है तथा उसको मुट् आगम होता है धातु को "हि" आदेश होता है ।

### १३०— भन्देर्नलोपश्च ।

अर्थः—भदि कल्याणे सुखे च धातोः झच् प्रत्ययो भवति भन्देश्च नलोपो जायते ।

उदाहरणम्—भदन्तः = प्रव्रजितः, बौद्ध भिक्षुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भन्दते कल्याणं करोतीति भदन्तः, प्रव्रजितो वा ।।

हिन्दीः— भदि धातु से झच् प्रत्यय होता है भन्द के न का लोप होता है ।

\* हेमन्तः = हन् मुट् + झच् अत्र झोन्तः इति झकारस्य अन्तादेशः हि + म् + अन्त + सु हन्ते हिरादेशे गुणेसति रुत्वविसर्गे हेमन्तः सिद्धयति ।

## १३१—ऋच्छेरः—

अर्थः— ऋच्छ गतौ धातोः “अर” प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्:—ऋच्छरः= ऋच्छरा वेश्या ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति गच्छति स ऋच्छरः; ऋच्छरा वेश्या वा ।।

बाहुलकात्—वदतीति वदरम्, वदर्याः फलं वा । कन्दति वैकल्यं करोतीति कदरः, श्वेतखदिरो वा । (धातोर्नलोपः) कपिलकादित्वात् (अ० ८ । २ । १८ वा०) लत्वे (कदलः), गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) डीष् ‘कदली, कदरी, वदरी’ । मन्दरःकन्दर—शीकर—कीटर—शकर—समर—बर्बर—बर्कर—कर्पर—पिञ्जर—अम्बर—आडम्बर—जर्जर—कर्कर—नखर—तोमर प्रभृतयोऽपि अरप्रत्ययान्ता बहुलवचनादेव साधनीयाः ।

हिन्दीः— ऋच्छ धातु से अर प्रत्यय होता है ।

## १३२—अर्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित् । अर इत्यनुवर्तते ।

अर्थः— ऋ गतौ, कमु कान्तौ, भ्रमु अनवस्थाने, चमु अदने, दिवु क्रीडाद्यर्थेषु, वस निवासे धातुभ्योऽरः प्रत्ययो भवति स चचित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—अररः = कपाटः, पिधानम्, कोशी, आरी । \*कमरः = कामुकः, इच्छुकः । भ्रमरः<sup>३</sup> = अलिः, मधुभक्षिका, प्रेमी, कुलालचक्रम् । चमरः = सुरागौ, मृगविशेषः । देवरः = पत्युरनुजः विधवाया द्वितीयः पतिः । वासरः = सोमादिवारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति गच्छति यतः स अररः, कपाटो वा । कामयतेऽसौ कमरः, कामुको वा । भ्राम्यतीति भ्रमरः, षट्पदः कामुको वा । चमति भक्षयतीति चमरः, मृगमेदो वा । गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) स्त्रियां डीष् ‘चमरी’ सुरा गौः । चमर्या अयं ‘चामरः’ बालसमूहः । दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति देवरः, विधवाया द्वितीयः पतिः, पत्युः कनिष्ठभ्राता (वा) । वासयतीति वासरः, मंगलादिवारो वा ।।

हिन्दीः— रादि धातुओं से अर प्रत्यय होता है! तथा वह चित् संज्ञक होता है ।

\*१कमरः = कम् + अर + सु = कमरः

२ भ्रमरः = भ्रम् + अरः = भ्रमरः



१३३— कुवः क्ररन् ।

अर्थः— कु शब्दे धातोः क्ररन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— कुररः = पक्षिविशेषः, क्रौंच पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कौति शब्दयतीति कुररः, पक्षिभेदो वा ।।

हिन्दीः— कु धातु से क्ररन् प्रत्यय होता है ।

१३४—अङ्गिमदिमन्दिभ्य आरन् ।

अर्थः— अग्रे "दीडोनुट् चेति सूत्रपर्यन्तमा -रन्ननुवर्तनं ननु । अगिगतौ, मद स्तुतौ, मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु धातुभ्यः आरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— अंगारः = निर्धूमाग्निः, भूमिविकारः, मंगलग्रहः । मदारः = वराहः, समदगजः, प्रेमी, सुगन्धद्रव्यविशेषः वञ्चकः । मन्दारः = निम्बवृक्षः, अर्कपादपः, स्वर्गः, करी धत्तूरक्षुपः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अंगति गच्छति स अंगारः, निर्धूमोऽग्निर्भूमिविकारो वा । माद्यति मतो भवतीति मदारः, वराहो वा । मन्दते स्तौतीति मन्दारः, निम्बतरुरर्कवृक्षो वा । बाहुलकात् 'मन्द' धातोर् 'आरु' प्रत्ययोऽपि भवति । मन्दतेऽसौ मन्दारुः, निम्बार्को वा ।।

हिन्दीः— अंगादि धातुओं से आरन् प्रत्यय होता है ।

१३५— गडः कड च ।

अर्थः— गडसेचन धातोः आरन् प्रत्ययो भवति तस्य च कडादेशो जायते ।

उदाहरणम्— कडारः = पीतवर्णः, सेवकः, अभिमानी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गडति सिञ्चतीति कडारः, पीतवर्णो वा ।।

हिन्दीः— गड धातु से आरन् प्रत्यय होता है तथा धातु को कडादेश होता है ।

१३६—शृंगारभृङ्गारौ ।

अर्थः—शृ हिंसायां, डुभृञ् धारणपोषणयोः इत्येतौ धातू आरन् प्रत्ययान्तौ निपात्येते तत्र च धात्वोर्ह्रस्वादेशो नुमागमश्च ।

उदाहरणम्:— शृंगारः = हस्तिशोभा, नाट्यरसः, दम्पत्योरन्योऽन्यं सम्भोग स्पृहा । भृंगारः= स्वर्णपात्रविशेषः, कीटविशेषः, झींगुर इति विख्यातः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शृणाति हिनस्तीति शृंगारः, हस्तिशोभा नाट्यरसो दम्पत्योरन्योऽन्यं सम्भोगस्पृहा वा । अत्र धातोर्नुम् ह्रस्वादेशश्च । बिभर्ति पुष्यतीति भृंगारः सुवर्णपात्रविशेषो वा; स्त्रियां 'भृंगारी', कीटजातिभेदो वा, 'झींगुर' इति प्रसिद्धः ॥

हिन्दी:—शृ तथा डुभृज धातु से आरन् प्रत्ययान्त शृंगार और भृंगार शब्द निपातित किये जाते हैं । दोनों धातुओं से आरन् प्रत्यय होता है तथा धातुओं को ह्रस्वादेश और नुमागम निपातित हैं ।

### १३७—कञ्जिमृजिभ्यां चित् ।

अर्थः— कञ्जि इति सौत्रो धातुः शब्दे ज्ञायते मृजूष् शुद्धौ धातुभ्यां आरन् प्रत्ययो भवति स च चिज्जायते ।

उदाहरणम्:— कञ्जारः = मयूरः, व्यञ्जनम् सूर्यः, करी, उदरम्, ब्रह्मपदवी । मार्जारः = विडालः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कञ्जति रौतीति कञ्जारः, मयूरो व्यञ्जनं वा । मार्ष्टि शुन्धतीति मार्जारः, विडालो वा; स्त्रियां 'मार्जारी' ॥

हिन्दी:— कञ्जि सौत्र धातु से तथा मृजूष् धातु से आरन् प्रत्यय होता तथा वह चित् होता है ।

### १३८— कमेः किदुच्चोपधायाः ।

अर्थः— कमु कान्तौ धातोः आरन् प्रत्ययो भवति स च कित् सञ्जायते तथा च धातोरुपधाया उदादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— कुमारः = किशोरः, युवराजः, शिशुः, पुत्रः, कार्तिकेयः, अग्निः, किंशुकः, सिन्धुनदी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चिदनुवर्तते । कामयते भोगानिति कुमारः, शिशुर्युवराजो वा । 'कुमार क्रीडायाम्' इत्यस्मादपि पचाद्यचि कृते कुमारशब्दो व्युत्पद्यते । तदुपायान्तरमर्थभेदश्च ॥

हिन्दी:— कमु धातु से आरन् प्रत्यय होता है तथा वह कित् होता है और धातु की उपधा को उकारादेश होता है ।

१३६—तुषारादयश्च ।

अर्थः— आदि शब्दः प्रकारवचनः । तुष प्रीतौ इत्यादि प्रकारकेभ्यो धातुभ्य आरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— तुषारः = हिमम्, कुहरः, क्षीणवर्षा, कर्पूरभेदः । कासारः = तडागः । सहारः = आम्रविशेषः, प्रलयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यस्तुष्यति येन वा तत् तुषारम्, हिमं वा । कासते शब्दयति निन्दति वा स कासारः, सरो वा । सहतीति संहारः, आम्रभेदो वा । तर्कयति भाषतेऽसौ तर्कारः, स्त्रियां गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१ 'तर्कारी', जयन्ती विशेषलता वा ।।

हिन्दीः— तुष इस प्रकार वाली धातुओं से आरन् प्रत्यय होता है ।

१४०—दीङो नुट् च ।

अर्थः— दीङ् उपक्षये धातोः आरन् प्रत्ययो भवति नुडागमश्च ।

उदाहरणम्— दीनारः = सुवर्णाभरणम्, स्वर्ण सिक्का ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीयते क्षयति येन वा स दीनारः, सुवर्णाभरणं वा ।।

हिन्दीः— दीङ् धातु से आरन् प्रत्यय होता है तथा प्रत्यय को नुट् आगम होता है ।

१४१—सर्त्तरपःषुक् च ।

अर्थः— सृ गतौ धातोः अपः प्रत्ययो भवति षुगागमश्च ।

उदाहरणम्— सर्षपः = कटुस्नेहवान्, विषभेदः, लघुतोलमानम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरति गच्छति स सर्षपः, कटुस्नेहवान् वा ।।

हिन्दीः— सृ धातु से अप प्रत्यय तथा षुक् आगम होता है ।

१४२—उषिकुटिदलिकचिखजिभ्यः कपन् ।

अर्थः—उषदाहे, कुट कौटिल्ये, दल विदारणे, कुच बन्धने, खजमन्थे धातुभ्यः कपन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— उषपः = अनलः, भानुः । कुटपः = मानपात्रम्, आरामः, ऋषिः, संन्यासी । दलपः = प्रहारः, शस्त्रम्, शास्त्रम्, सुवर्णम् । कचपम् = शाकपात्रम् । खजपम् = आज्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ओषति दहति स उषपः, अग्निः सूर्यो वा । कुटतीति

कुटपः, मानभाण्डं वा । दालयति विदारयतीति दलपः, प्रहारो वा । कचते बध्नातीति कचपम्, शाकपात्रं वा । खजति मथ्नाति मथ्यत इति खजपम्, घृतं वा ॥

हिन्दीः— उषादि धातुओं से कपन् प्रत्यय होता है ।

### १४३— क्वणेः सम्प्रसारणञ्च ।

अर्थः— कपन्नुवर्तते । क्वण शब्दे धातोः कपन् प्रत्ययो भवति धातोश्च सम्प्रसारणं जायते ।

उदाहरणम्— कुणपम् = शवः, मृद्विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्वणति शब्दं करोतीति कुणपः, शवो मृद्भेदो वा ॥

हिन्दीः— क्वण् धातु से कपन् प्रत्यय होता है तथा धातु को सम्प्रसारण होता है।

### १४४—कपश्चाक्रवर्मणस्य ।

अर्थः— आचार्य चाक्रवर्मणस्य मतेन क्वण् धातोः कपः प्रत्ययो भवति तथा सति प्रत्ययस्यादिरुदात्तो जायते ।

उदाहरणम्— कुणपः = शवः, दुर्गन्धम्, वर्छी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चाक्रवर्मणस्य मते कपे सति प्रत्ययस्यादिरुदात्तः । अन्यमते सङ्घातस्याद्युदात्तत्वम् ॥

हिन्दीः— आचार्य चाक्रवर्मण के मत में क्वण धातु से कप प्रत्यय होता है ।

### १४५— विटपविष्टपविशिपोलपाः ।

अर्थः— विट शब्दे, विश प्रवेशने, वल संवरणे, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो विटप-विष्टप-विशिप-उलपशब्दाः कप् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— विटपः<sup>१</sup> = वृक्षः, शाखा, विस्तारः, नवांकुरम्, किसलयम् । गुल्मम्, अण्डकोषः, पटलम् । विष्टपम् = भुवनम् । विशिपम् = मन्दिरम्, सदनम् । उलपम् = कोमलतृणम्, लता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कपप्रत्ययान्ता निपाताः । वेटति शब्दयति वायुनेति

१ विटपः = विट् + कप + सु = विटपः ।

विटपः, शाखाविस्तारो वा । विशन्ति यत्रेति विष्टपम्, भुवनं वा । (प्रत्ययस्य तुडागमः ।) त्रिविष्टपः, सुखविशेषभोगो वा । धातोर्वकारस्य पत्वं प्रत्ययस्य तुट् च त्रिपिष्टपम्, इति वा । विशन्ति यत्रेति विशिपम्, मन्दिरं वा । प्रत्ययादेरित्वम् । वलते संवृणोतीति उलपम्, कोमलतृणं वा । धात्वादेः सम्प्रसारणम् ॥

हिन्दीः— विटादि धातुओं से विटपादि शब्द कप् प्रत्ययान्त निपातित हैं ।

### १४६— वृतेस्तिकन् ।

अर्थः— वृतु वर्तने धातोः तिकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— वर्तिका = पक्षि विशेषः, कूर्चिका, दीपकगुणः, वर्णः, लावः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्ततेऽसौ वर्तिका, पक्षिभेदो वा । यस्तु 'वृतु' धातोर्षुल् प्रत्यये 'वर्तका' शब्दस्तत्र वार्तिकेनेत्वनिषेधाद् 'वर्तका' इत्येव । तत्रोणादीनामव्युत्पन्नत्वाद् (वर्तिका) वर्तका व्युत्पन्न इति भेदः ॥

हिन्दीः— वृतु धातु से तिकन् प्रत्यय होता है।

### १४७— कृति भिदिलतिभ्यः कित् ।

अर्थः— तिकन्प्रत्ययोऽत्र विज्ञेयः । कृतीछेदने, भिदिर् विदारणे, लत इति सौत्रो धातुः इत्येतेभ्यो धातुभ्यः तिकन् प्रत्ययो भवति किच्च जायते ।

उदाहरणम्ः— कृत्तिका = नक्षत्रम् । भित्तिका = भित्तिः गृहगोधिका । लत्तिका = गोधा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृन्ततीति कृत्तिका, नक्षत्रं वा । भिनतीति भित्तिका, भित्तिर्वा । लततीति लत्तिका, गोधा वा ॥

हिन्दीः— कृतादि धातुओं से तिकन् प्रत्यय होता है और चित् होता है ।

### १४८— इष्यशिभ्यां तकन् ।

अर्थः— इषु इच्छायाम्, अशूङ् व्याप्तौ इत्येताभ्यां धातुभ्यां तकन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—इष्टका = वैदिककर्मविशेषः । अष्टका = वैदिककर्म-विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इष्यतेऽसौ इष्टका (मृद्विकारविशेषः) । अश्नुते सा अष्टका, वैदिककर्मविशेषो वा ॥

बाहुलकात्— मस्यति परिणमतीति मस्तकम्, शिरो वा । दधातीति धातकम् । स्त्रियां 'धातकी; पुष्पभेदः ।

हिन्दी:— इषु तथा अशूङ् धातु से तकन् प्रत्यय होता है।

### १४६— इणस्तशन्तशसुनौ।

अर्थ:— इणगतौ धातोः तशन्-तशसुन् इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः।

उदाहरणम्:—एतशः = अश्वः, ब्राह्मणः। एतशाः = अश्वः, ब्राह्मणः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एति प्राप्नोतीति एतशः, (एतशौ)। एतशाः, एतशसौ, अश्वो ब्राह्मणो वा। एकोऽदन्तोऽपरः सान्तः।।

हिन्दी:— इण धातु से तशन् तथा तशसुन् प्रत्यय होता है।

### १५०—विपतिभ्यां तनन्।

अर्थ:— वीगतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु, पत्लृगतौ धातुभ्यां तनन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— वेतनम्<sup>१</sup> = भृतिः, आजीविका। पत्तनम् = नगरम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वेति प्राप्नोति खादति वा तद् वेतनम्, भृतिर्वा। वेतनेन जीवति 'वैतनिकः कर्मकरः। पतति गच्छतीति पत्तनम्, नगरं वा।।

हिन्दी:— वी तथा पत्लृ धातु से तनन् प्रत्यय होता है।

### १५१— दृदलिभ्यां भः।

अर्थ:—दृविदारणे, दलविशरणगत्यवसादनेषु धातुभ्यां भः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— दर्भः = कुशः। दल्भः = ऋषिः, वर्तुलम्, छलम्, प्रापम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दृणाति विदारयतीति दर्भः, कुशो वा। दलते विशीर्णो भवतीति दल्भः, ऋषिश्चक्रं वा।।

हिन्दी:— दृ तथा दल धातु से भ प्रत्यय होता है।

### १५२—अर्तिगृभ्यां भन्।

अर्थ:—ऋगतौ गृ शब्दे धातुभ्यां भन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:—अर्भः = शावकः। गर्भः = उदरम्, उरस्थः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इयर्ति गच्छतीति अर्भः, शिशुर्वा। अल्पोऽर्भोऽर्भकः।

१वेतनम् = वी + तनन्

वेतन + सु

वेतनम्।

तृतीयः पादः

( १६३ )

गिरिति गृणात्युपदिशतीति गर्भः, जठरं तत्रस्थो वा । 'गर्भादप्राणिनि' इति तारकादित्वाद् (अ० ५। २। ३६) इतच् । गर्भिताः शालयः । प्राणिनि तु— 'गर्भिणी' ॥

हिन्दीः— ऋ तथा गृ धातु से भन् प्रत्यय होता है ।

१५३—इणः कित् ।

अर्थः— भन्वर्त्ततेऽत्र । इण्गतौ धातोः भन् प्रत्ययो भवति स च कित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्— इभः = करी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एतीति इभः, हस्ती वा ।

हिन्दीः— इण धातु से भन् प्रत्यय होता है तथा वह कित् होता है ।

१५४— असिसञ्जिभ्यां विथन् ।

अर्थः—असु क्षेपणे, षञ्ज संगे धातुभ्यां विथन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— अस्थि = कीकसम्, गात्रान्तभागः । सविथ = ऊरुदेशः, अस्थि शकटं काष्ठम् (लट्ठ) ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अस्यति प्रक्षिपति येन तत् अस्थि, कीकसं शरीरान्तरवयवो वा । सजतीति सविथ, ऊरुदेशो वा ।

हिन्दीः— असु तथा षञ्ज धातुओं से विथन् प्रत्यय होता है ।

१५५— प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्विसः ।

अर्थः— प्लुषदाहे, कुष निष्कर्षे, शुष शोषणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्विसः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— प्लुक्षिः = अग्निः । कुक्षिः = उदरम्, गर्भाशयः, गर्तः, कन्दरा, कोशी । शुक्षिः = वायुः, प्रकाशः, अग्निः, कान्तिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्लोषति दहतीति प्लुक्षिः, अग्निर्वा । कुष्णाति निष्कृषतीति कुक्षिः, जठरं गर्भाशयो वा । शोषयतीति शुक्षिः, वायुर्वा । अत्रान्तर्गतो णिच्, तस्य च पर्णशुङ्वत् (द्र०— २। २३, पृष्ठ ५४, ५५) णिलुक् ॥

हिन्दीः— प्लुषादि धातुओं से क्विस प्रत्यय होता है ।

१५६—अशोर्नित् (क्विसरनुवर्त्तते) ।

अर्थः—अशूङ् व्याप्तौ धातोः क्विसः प्रत्यग्रो भवति स च नित्संजायते ।

उदाहरणम्— अक्षिः = नेत्रम्, द्विसंख्या ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नुते व्याप्नोति विषयान् येन तत् अक्षि, नेत्रं वा ।।

हिन्दीः—अशूङ् धातु से किस प्रत्यय होता है और वह नित् होता है ।

१५७— इषेः क्सुः ।

अर्थः— इषुगतौ धातोः क्सुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— इक्षुः = मधुतृणम्, इक्षुरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इष्यते स इक्षुः, मधु तृणं वा ।।

हिन्दीः— इषु धातु से क्सु प्रत्यय होता है ।

१५८—अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः ।

अर्थः— ईरिति पादान्त प्रवर्त्तनम् । अव रक्षणाद्यर्थेषु, तृ प्लवन सन्तरणयोः, स्तृञ आच्छादने, तत्रि कुटुम्बधारणे धातुभ्य ईः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—अवीः = रजस्वला स्त्री । तरीः = नौः, वस्त्रादिकरक्षकं भाण्डम् । स्तरीः = धूमः, वास्यम्, वत्सा, गोवशा । तन्त्रीः = वीणा, रज्जुः, धनुर्ज्या, स्नायुः, पुच्छम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अवतीति अवीः, रजस्वला स्त्री वा । तरति यया सा तरीः, नौका वस्त्रादिरक्षकं भाण्डं वा । स्तृणोत्याच्छादयतीति स्तरीः, धूमो वा । तन्त्रयति कुटुम्बं धरतीति तन्त्रीः, वीणा वा । णिलोपः ।।

हिन्दीः— अवादि धातुओं से ई प्रत्यय होता है ।

१५९—यापोः किद् द्वे च ।

अर्थः— या प्रापणे, पा पाने, पा रक्षणे, वा धातुभ्यां ईः प्रत्ययो भवति । स च किज्जायते धातोश्च द्विर्भावः ।

उदाहरणम्— ययोः = अश्वः । पपीः = सूर्यः, चन्द्रमाः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—याति प्रापयति स ययीः, अश्वो वा । पिबति पाति रक्षतीति वा स पपीः, सूर्यश्चन्द्रो वा ।।

हिन्दीः— या और पा धातुओं से ई प्रत्यय होता है । तथा वह कित् होता है, और धातु को द्वित्व होता है ।



१६०—लक्षेर्मुट् च ।

अर्थः— लक्षदर्शनांकनयोः धातोः ईः प्रत्ययो भवति तस्य च मुडागमो जायते ।

उदाहरणम्:—लक्ष्मीः = विभूतिः, सौभाग्यम्, सफलता, सौन्दर्यम्, अनुग्रहः, मौक्तिकम्, हरिद्रा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लक्षयति पश्यत्यंकयति वा सा लक्ष्मीः, विभूतिर्वा । लक्ष्मीरस्यातीति 'लक्ष्मणः' । 'लक्ष्म्या अच्च' इति पामादिपाठात् (अ० ५ । २ । १००) मत्वर्थीयो नः ॥

हिन्दीः— लक्ष धातु से ई प्रत्यय होता है तथा प्रत्यय को मुट् आगम होता है ।

इति तृतीयः पादः समाप्तः ।

इत्युत्तर-प्रदेशान्तर्गत एटा मण्डलान्तःपाति कासगञ्जनगराभिजनेनाष्ट-

चत्वारिंशदध्ययनतश्चित्रकूटकृताखण्डनिवासेनवैश्यवंशावतंसस्य

श्रीमन्नन्मूलस्यपौत्रेणश्रीयुतगोपीरामप्रसादगुप्तयोःपुत्रेण

वैयाकरणशिरोमणीनां प्राप्तराज्यसम्मानधुरन्धराणां पण्डितप्रवर

श्रीभीमसेनशिष्येण सत्यव्रतव्याकरणनिरुक्तवेदाचार्येणवेद

वागीशपदवीसमलङ्कृतेन सम्प्रत्यार्षगुरुकुल एटानगर

आचार्यरूपपाठकेनविरचितोणादिकोषेप्रकाशिकानाम्नी

संस्कृत टीकायां विमलाख्यहिन्दीवृत्तौ च तृतीयः

पादः पूर्तिमगात् ॥

# अथोणादि कोष टीकायां

चतुर्थः पादः प्रारभ्यते

## १. वातप्रमीः ।।

अर्थः—वातशब्दोपपदेप्रपूर्वाद् डुमिञ् प्रक्षेपणेधातोः ईः प्रत्ययो निपात्यते ।

उदाहरणम्— वातप्रमीः = अतिशीघ्रगामी, मृगविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वात इव प्रमिणोति प्रक्षिपतीति वातप्रमीः, अतिशीघ्रगामी हरिणविशेषो वा । पुँल्लिङ्ग एवायं शब्दः । वातप्रमीन् मृगान् । डौ तु—वातप्रमी, अमि—वातप्रमीम् ।

बाहुलकात्—उश्यते काम्यतेऽसौ उशी, वाञ्छा (वा) । तत्कुशला नरा अस्मिन् सन्तीति 'उशीनरो' देशः । अत्र बहुलवचनादेव सम्प्रसारणम् ।।

हिन्दीः— वातशब्द के उपपद होने पर प्रपूर्वक डुमिञ् धातु से ई प्रत्यय होता है ।

## २. ऋतन्यज्जिवन्यज्ज्यर्पिमद्यत्यांगिकुयुकृशिभ्यःकल्चिच्यतु

जलिजिष्णुजिष्ठजिसन्स्यनिथिन्नुल्यसासानुकः ।।

अर्थः—ऋगतौ, तनुविस्तारे, अञ्जू व्यक्तिप्रक्षेपणकान्तिगतिषु, वन सम्भवतौ, अञ्जू ऋ गतौ ण्यन्तात्, मदीहर्षे, अतसातत्यगमने, अगिगत्यर्थे, कु शब्दे, युमिश्रणामिश्रणयोः, कृश तनूकरणे इत्येतेभ्योद्वादश धातुभ्यो यथासंख्यं कल्चि- यतुच्-अलिच्- इष्णुच्-इष्ठच्-इसन्-स्यन्-इथिन्-उलि-अस-आस-आनुकः द्वादशप्रत्ययाभवन्ति ।।

उदाहरणम्—ऋ + कल्चि = रत्तिः = बद्धमुष्टिहस्तः । तनु + यतुच् = तन्यतुः = वायुः, रात्रिः । अञ्जू + अलिच् = अञ्जलिः = संयुतौ करौ । वन् + इष्णुच् = वनिष्णुः = अपानवायुः । अञ्जू + इष्ठच् = अञ्जिष्ठः १ = भानुः । अर्पि + इसन् = अर्पिसः = हृदस्याग्रमांसम् । मदी + स्यन् = मत्स्यः ४ = मीनः । अत + इथिन् अतिथि ३ = अभ्यागतः, सज्जनः । अगि + उलि = अङ्गुलिः २

२ अङ्गुलिः = अगि + उलि

४ मत्स्यः = मदी + स्यन्, मत् + स्य

१ अञ्जिष्ठः = अञ्जू + इष्ठच्

३ अतिथिः = अत + इथिन्

= करशाखा । कु + अस = कवसः = कण्टक जातिः । यु + आस = यवासः  
= वृक्षविशेषः । कृश + आनुक् = कृशानुः = अग्निः ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—एभ्यो द्वादश धातुभ्यः कल्निजादयो द्वादश प्रत्यया यथासंख्यं भवन्ति । ऋच्छति गच्छतीति रत्निः, बद्धमुष्टिहस्ता वा । (बद्धमुष्टिः) प्रसृत— (कनिष्ठ) इङ्गुलिररत्निः । तनु—यतुच्—तनोति विस्तृणोतीति तन्यतुः, वायू रात्रिर्वा । अञ्जू—अलिच्—अनक्ति व्यक्तं करोतीति अञ्जलिः, संयुतौ करौ वा । वनु—इष्णुच्—वनोति याचतेऽसौ वनिष्णुः, अपानवायुर्वा । अञ्जू—इष्टच्—प्रकटयति पदार्थानिति अञ्जिष्ठः सूर्यो वा । अर्पि—इसन्—अर्पयतीति अर्पिसः, (हृदयस्य) अग्रमांसं वा । (मदि—स्यन्—) माद्यति हृष्यतीति मत्स्यः, मीनो वा । अत—इथिन्—अतति निरन्तरं गच्छति भ्रमतीति अतिथिः, अकस्मादागतः, सज्जनो वा । न विद्यते नियता तिथिरस्येति व्युत्पत्त्यन्तरम् । स्त्रियां कृदिकारादक्तिनः (अ० ४ । १ । ४५ गणसूत्रम्) इति ङीष् 'अतिथी' स्त्री । अगि—उलि अंगति चेष्टेऽनेन सः अङ्गुलिः, करशाखा वा । कु—अस कौति वा कवत इति कवसः, कण्टकजातिर्वा । 'अच' इति पाठान्तरम् । तदा कवत इति कर्वचम् (वर्म उरस्त्राणं वा) । (यु—आस—) यौति मिश्रयतीति यवासः, कण्टकवृक्षभेदो वा । (कृश—आनुक्—) कृशति तनूकरोतीति कृशानुः, अग्निर्वा ॥

**हिन्दीः**—ऋ से कल्निच्, तनु से यतुच् अञ्जु से अलिच्, वन से इष्णुच्, अञ्जू से इष्टच्, अर्पि से इसन्, मदी से स्यन्, अत से इथिन्, अगि से उलि, कु से अस, यु से आस, कृश से आनुक् प्रत्यय होते हैं ।

### ३. श्रः करन् ॥

**अर्थः**— करन्प्रत्ययाधिकारोग्रेसूत्रद्वयोः । शृ हिंसायां धातोः करन् प्रत्ययो भवति ।

**उदाहरणम्**—शर्करा = खण्डविकारः, मृदविकारः ।

**स्वामिदयानन्दवृत्तिः**—शृणातीति शर्करा, खण्डविकारो मृदविकारो वा ॥

**हिन्दीः**—शृ धातु से करन् प्रत्यय होता है ।

### ४. पुषः कित् ॥

**अर्थः**—पुष पुष्टौ धातोः करन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

**उदाहरणम्**—पुष्करम् = नभः, जलम्, कमलम्, वायुः, पञ्जरम्,

मादकता, नृत्यकला, एकता सरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पुष्पातीति पुष्करम्, अन्तरिक्षं कमलमुदकं वा ॥

हिन्दीः— पुष धातुसे करन् प्रत्यय होता है, और वह कित् हो जाता है ।

#### ५. कलँश्च ।

अर्थः—अनेनैव पुषधातोः कलन् प्रत्ययोऽपि भवति ।

उदाहरणम्ः— पुष्कलम् = पूर्णम्, पर्याप्तम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘पुष’ धातोः कलनपि । पुष्यतीति पुष्कलम्, पूर्ण

वा ॥

हिन्दीः— इसी पुष से कलन् प्रत्यय भी होता है ।

#### ६. गमेरिनिः ॥

अर्थः— उपदिष्टमग्रे “पतः स्थ च” इति सूत्र तावदिनिप्रत्ययानुवृत्तिर्विज्ञेया ।  
गन्तृगतौ धातोरिनिप्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— गमी = पथिकः । भविष्यतिगम्यादयः इतिकालनिर्धारणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गमिष्यतीति गमी, पथिको वा । भविष्यति गम्यादयः

(३। ३। ३) इति कालनियमः ।

हिन्दीः— गमधातु से इनि प्रत्यय होता है ।

#### ७. आङ्गित् ॥

अर्थः—आङ्पूर्वकं गम् धातोः इनि प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— आगामी— आगन्ता, भावी, आसन्नः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—णित्त्वाद् वृद्धिः । आगमिष्यतीति आगामी

(भविष्यत्कालः) ।

हिन्दीः—आङ्पूर्वकं गमधातु से इनिप्रत्यय होता है और वह प्रत्ययणित् हो जाता है ।

#### ८. भुवश्च ॥

अर्थः— भूसत्तायाम् धातोश्च इनिः प्रत्ययो भवति सचणित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— भावी = भविष्यति ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इनिः णित् । भविष्यतीति भावी (भविष्यत्कालः) ।

हिन्दी:— भू धातु से इनि प्रत्यय होकर णित् हो जाता है।

६. प्रे स्थः ।

अर्थ:— प्र पूर्वक ष्टा गतिनिवृत्तौधातोः इनिप्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—१प्रस्थायी = गन्तुमनाः, प्रगायी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इनिः णित् । णित्त्वाद्युक् । प्रस्थातुमिच्छतीति प्रस्थायी गन्तुमनाः ।

हिन्दी:—प्र पूर्वक स्था धातु से इनि प्रत्यय होकर णित् हो जाता है ।

१०. परमेकित् ।।

अर्थ:— परमउपपदे स्था धातोइनि प्रत्ययो भवतिसच कित् सम्पद्यते, अत्रसप्तम्या विभक्तेरलुक् संजायते षत्वं च ।

उदाहरणम्: परमेष्ठी = ईश्वरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—परमे उत्तमे व्यवहारे तिष्ठतीति परमेष्ठी, सर्वेषां पितामह ईश्वरो वा । सप्तम्या अलुक् षत्वं च ।

हिन्दी:—परम उपपद होने पर स्था धातु से इनिप्रत्यय होता है और वह कित् समझा जाता है ।

११. मन्थः ।।

अर्थ:— मन्थविलोडनेधातोः इनिः प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— मन्थाः = मन्थनदण्डः, वज्रः, अनिलः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इनिः कित्, कित्त्वान्नलोपः । मन्थयति विलोडयतीति मन्थाः, मन्थानौ, मन्थानः, दध्यादिमन्थनदण्डो बज्री वायुर्वा । मथिन् शब्दस्य सर्वनामस्थान आत्त्वम् (थोन्थ आदेशश्च (अ० ७ । १ । ८६)) ।।

हिन्दी:—मन्थधातु से इनि प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

१२. पतस्थ च ।

अर्थ:— पल्लु गतौ धातोः इनिः प्रत्ययो भवति तथा च पतः थ आदेशो भवति ।

\* प्रस्थायी = प्र + स्था + इन् अत्र आतो युक् चिष्कृतोः इत्यनेन युगागमो जायते प्रस्थायी ।

उदाहरणम्:—पन्थाः = मार्गः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पन्थाः, पन्थानौ मार्गः ।  
पूर्ववदात्वम् । 'पथे गतौ' इत्यस्माद्धातोः पचाद्यचि कृते पथः, पथौ, पथाः  
इत्यदन्तोऽपि दृश्यते ॥

हिन्दी:— पत्लु धातु से इनि प्रत्यय होता है और पत को थ आदेश होता है ।

### १३. खजेराकः ॥

अर्थः— खजमन्थे धातोः आकः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— खजाकः = पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खजति मथ्नातीति खजाकः पक्षिः; खजाका,  
दर्विर्वा ।

बहुलवचनात्—मन्द्यन्ते स्तूयन्ते तानि मन्दाकानि, स्रोतांसि वा । तान्यस्याः  
सन्तीति 'मन्दाकिनी' नदीभेदः ॥

हिन्दी:— खजधातु से आक प्रत्यय होता है ।

### १४. बलाकादयश्च ॥

बलाकादयश्च शब्दा आक प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते यथाहि- वल् संवरणे  
मनज्ञाने, पूज् पवने, शलगतौ, पटगतौ, पत्लृगतौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्यो  
बलाका-मनाका, पवाका, शलाका, पटाकः पताकाः शब्दा आक  
प्रत्ययान्ताःसिद्धयन्ति ।

उदाहरणम्:— बलाका = वकपंक्तिः । मनाका = हस्तिनी । पवाका =  
पवित्रकारिणी, झञ्झावातः । शलाका = अञ्जन, यष्टिकाः, सीक इति हिन्दी,  
वाणः, अंकुरः वर्ण कूचिका । पटाकः = पक्षी । पताका = ध्वजा, ध्वजदण्डम्,  
लक्षणम्, सौभाग्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बलते संवृणोत्यसौ बलाका, वकपङ्क्तिः कामिनी  
(वा); बलाको, वकपक्षी वा । मन्यते जानाति सा मनाका, हस्तिनी वा । पुनातीति  
पवाका, (वात्या वा) ॥

हिन्दी:—बलाकादि शब्द आक प्रत्ययान्त निपातित हैं ।

१५— शलिपटिपतिभ्यो नित् ।

अर्थः— शल गतौ, पट गतौ, पत्तु गतौ, इत्येतेभ्यो धातुभ्य आकः प्रत्ययो भवति स च नित् सञ्जायते ।

उदाहरणम्ः— शलाका = अञ्जनयष्टिका । पटाकः = पक्षी । पताका = ध्वजा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यां शलन्ति गच्छन्तीति शलाका अञ्चनयष्टिका वा । पटति गच्छतीति पटाकः, पक्षी वा । पत्यते ज्ञायतेऽसौ पताका, ध्वजा वा ।।

हिन्दीः— शल आदि धातुओं आकप्रत्यय होता है और वह नित् हो जाता है ।

१६. पिनाकादयश्च ।।

अर्थः—पिनाकादयोऽपिशब्दा आकप्रत्ययान्तानिपात्यन्ते ।

उदाहरणम्ः—पिनाकः = त्रिशूलम्, धातुः शिवधनुः यष्टिः, रजोवर्षणम् । तडाकः = प्रकाशः । भदाकः = स्वस्ति, सम्पन्नता, सौभाग्यम् । श्यामाकः = ब्रीहिविशेषः, समाइतिहिन्दी । नभाक्तम् = मेघावृतमन्तरिक्षम् अन्धकारः राहुविशेषः । पिण्याकः = तिलकल्कः । वार्त्ताकः = वनभण्टा इति प्रसिद्धिः । गुवाकः = पूगीफलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पाति रक्षतीति पिनाकः, त्रिशूलं धनुर्वा । ताडयत्याहन्तीति तडाका, प्रभा वा ।

बहुलवचनात्—आगप्रत्यये सति तडागः इत्यपि सिद्धं भवति । भन्दतेऽसौ भदाकः कल्याणम् । धातोर्नलोपः । श्यायते प्राप्नोतीति श्यामाकः, ब्रीहिभेदो वा, 'समा' इति प्रसिद्धः । मुगागमो निपातनम् । न भाति प्रकाशत इति नभाकम्, मेघयुतमाकाशं वा । यं पिनष्टि सम्यक् चूर्णयति स पिण्याकः, तिलकल्को वा । धातोः षकारस्य णत्वं युगागमश्च । वर्त्तते येन स वार्त्ताकः; वार्त्ताकी वा, 'वनभण्टा' इति प्रसिद्धा । धातोर्वृद्धिः । गुवति पुरीषमुत्सृजतीति गुवाकः, पूगीफलं वा । कुटादित्वाद् गुणाभावः ।।

हिन्दीः— पिनाक आदि शब्द आक प्रत्ययान्त निपातित किए जाते हैं ।

१७. कषिदूषिभ्यामीकन् ।।

अर्थः— कषहिंसायां, दुषवैकृत्ये, धातुभ्यां ईकन् प्रत्ययो भवति । एष

ईकन्प्रत्ययो "ऽलीकादयश्च" सूत्र पर्यन्तमनुवर्तते ।

उदाहरणम्:— कषीका = पक्षिजातिः । दूषीका = नयनमलम्, लेखनी, शालिभेदः, चित्रकारकूर्चिका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कषति हिनस्तीति कषीका, पक्षिजातिर्वा । दूषयतीति दूषीका, नेत्रमलं वा ॥

हिन्दी:— कष व दुष धातुओं से ईकन् प्रत्यय होता है ।

१८. अनिहृषिभ्यांकिच्च ॥

अर्थ:— अन प्राणने, हृषतुष्टौ इत्येताभ्यां धातुभ्यां ईकन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— अनीकम् = विरुद्धं, सैन्यम्, सेना, पंक्तिः संग्रामः हृषीकम् = ज्ञानेन्द्रियम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अनिति जीवयतीति अनीकम्, विरुद्धं सैन्यं वा । हृष्यति तुष्टौ भवतीति येन तत् हृषीकम्, ज्ञानेन्द्रियं वा ॥

हिन्दी:— अन व हृष धातुओं से ईकन प्रत्यय होता है और वह कित्त हो जाता है ।

१९. कङ्कणः कङ्कणश्च ॥

अर्थ:—कण शब्दे धातोर्यङ्लुगन्तादीकन् प्रत्ययो भवति तस्य च कंकणादेशो जायते ।

उदाहरणम्:— कंकणीका = घण्टिका, घुँघरुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— यङ्लुगन्तात् 'कण' धातोरिकन् कंकणादेशश्च । पुनः पुनः कणति शब्दयतीति कंकणीका, वाद्यसाधनविशेषो वा, 'घरियार' इति प्रसिद्धः । किंकणीका क्षुद्रघण्टिका । बहुलवचनात् (धातोरकारस्येत्त्वे) सिद्धम् ॥

हिन्दी:— यङ्लुगन्तकणधातु से ईकन् प्रत्यय होता है और धातु को कंकणादेश हो जाता है ।

२०. शृपृवृजां द्वे रुक् चाभ्यासस्य ॥

अर्थ:— शृ हिंसायां, पृ पालनपूरणयोः, वृज्वरणे इत्येतेभ्यो धातुभ्य ईकन् प्रत्ययो भवति धातोश्च द्वित्वं तथा चाभ्यासस्य रुगागमो जायते ।

उदाहरणम्:—शर्शरीकः = हिंसकः, क्रूरः, उपद्रवी, दुर्जनः । पर्परीकः =



सूर्यः, अग्निः, जलाशयः। वर्वरीकः = कुटिलकेशः, तुलसी विशेषः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शृणाति हिनस्तीति शर्शरीकः, हिंसकः (वा)। पिपतिं पालयतीति पर्परीकः, सूर्यो वा। वृणोति स्वीकरोतीति वर्वरीकः, कुटिलकेशो जनो वा।।

हिन्दीः— शृ आदि धातुओं से ईकन् प्रत्यय होता है। धातु को द्वित्वे तथा अभ्यास को रुक् आगम हो जाता है।

## २१. फर्फरीकादयश्च।।

अर्थः—फर्फरीकइत्येवं प्रकारकाः शब्दा निपात्यन्ते। यथा स्फुर स्फुरणे, दृ विदारणे, झर्झपरिभाषणहिंसातर्जनेषु, चरगतिभक्षणयोः मृड्प्राणत्यागे डुकृञ् करणे, पुण कर्मणि शुभे, तिम आर्द्रीभावेइत्येतेभ्यो धातुभ्यः फर्फरीक-दर्दरीक-झर्झरीक-चञ्चरीक मर्मरीक, कर्करीक-पुण्डरीक शब्दा ईकन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते।

उदाहरणम्ः—फर्फरीकम् = पत्रादि युक्तशाखा ग्रन्थि मृदुता। दर्दरीकम् = वादित्रम्। तित्तिडीकः तरु विशेषः। चञ्चरीकः =द्विरेफः। मर्मरीकः = नीचजनः। कर्करीकम् = शरीरम्। पुण्डरीकः = श्वेताम्भोजम् सितपत्रम्, भेषजम्, व्याघ्रः, अनलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्फुरति चेतनं भवतीति फर्फरीकम्, पत्रादिसहितः शाखा ग्रन्थिर्वा। ईकन् प्रत्यये धातोः फर्फरादेशः। दृणातीति दर्दरीकम्, वादित्रं वा। करोति कार्याणि येन तत् कर्करीकम्, शरीरं वा; कर्करीका गलन्तिका, 'कलशी' इति प्रसिद्धा। अत्रोभयत्र धातोर्द्वित्वमभ्यासस्य रुक् च। तिम्यत्यार्द्रीकरोतीति तित्तिडीकः, वृक्षजातिर्वा। मकारस्य डकारोऽभ्यासस्य नुट् च। चरति गच्छति भक्षयति वा स चञ्चरीकः, भ्रमरो वा। अभ्यासस्य नुम्। म्रियतेऽसौ मर्मरीकः, हीनजनो वा। पुणति शुभकर्माचरतीति पुण्डरीकम्, श्वेताम्भोजं सितपत्रं भेषजं व्याघ्रोऽग्निर्वा।।

हिन्दीः— फर्फरीक आदि शब्द निपातित किये जाते हैं।

## २२. ईषेः किद्धस्वश्च।।

अर्थः— ईषगतौ धातोरीकन्प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते धातोश्च ह्रस्वत्वम्।

उदाहरणम्: इषीका = मुञ्जादिशलाका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कित्त्वाद् गुणाभावः । ईषते गच्छतीति इषीका, मुञ्जादि शलाका वा ॥

हिन्दीः— ईष धातु से ईकन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है तथा धातु को ह्रस्व हो जाता है ।

### २३. ऋजेश्च ॥

अर्थः— ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषुधातोरीकन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—ऋजीकः = उपहतः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कित् । अर्जति गच्छतीति ऋजीकः, उपहतो वा । कित्त्वाद् गुणनिषेधः ॥

हिन्दीः— ऋज्धातु से ईकन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### २४. सर्तेर्नुम् च ॥

अर्थः— सृगतौ धातोः ईकन्प्रत्ययो भवति नुमागमश्च जायते ।

उदाहरणम्:—सृणीका = लाला 'थूक इति भाषायाम्' ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरति प्राप्नोतीति सृणीका, लाला वा ष्ठीवनभेदः 'लार' इति प्रसिद्धम् ॥

हिन्दीः— सृ धातु से ईकन् प्रत्यय होता है । और नुमागम होता है ।

### २५. मृडः कीकच्कंकणौ ॥

अर्थः— मृडसुखनेधातोः कीकच्कंकणौ प्रत्ययौ भवतः ।

उदाहरणम्:— मृडीकः = सुखदाता । मृडङ्कणः = बालः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मृडति सुखयतीति मृडीकः सुखदाता । मृडङ्कणः, बालो वा ॥

बहुलवचनात्— कायति शब्दयतीति कंकणः, करभूषणं वा ॥

\*चञ्चरीकः = चर् + चर् + ईकन् अत्र यड्लुगन्ताज् चर् धातो ईकन्प्रत्ययोऽभ्यासस्य नुमागम इति चञ्चरीकः सिद्धयति ।

हिन्दीः—मृड धातु से कीकच् और कंकण प्रत्यय होता है ।

## २६. अलीकादयश्च ।।

अर्थः— कीकन्प्रत्ययान्ता अमी निम्नोद्धृतशब्दा निपात्यन्ते । अलभूषण-पर्याप्तिवारणेषु विपूर्वाद् अस्मादेव अलः तथा च वल संवरणे धातोः ईकन्प्रत्ययोविधीयते ।

उदाहरणम्ः—अलीकम् = असत्यम् । व्यलीकम् = कटु, दुःखम् । वलीकम् = सदनाच्छादनवस्तुजातम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कीकन्प्रत्ययान्ता अमी निपात्यन्ते । अलति वारयतीति अलीकम्, मिथ्या वा । विपूर्वाद् व्यलीकम्, अप्रियं खेदो वा । वलते संवृणोत्यनेन तत् वलीकम्, गृहच्छादनसामग्री वा ।

अन्येऽपि— वलते संवृतो भवतीति वल्मीकम्, छिद्रमृषिभेदो वा । तस्यापत्यं 'वाल्मीकिः' । मुडागमः । वहतीति वाहीकः, गौरश्वो वा । धातो—वृद्धिः । सुष्ठु प्रैतीति सुप्रतीकः अग्निर्वा धातोस्तुट् च ।।

हिन्दीः— अलीक आदि शब्द कीकन् प्रत्यान्त निपातित किये जाते हैं ।

## २७. कृतृभ्यामीषन् ।।

अर्थः— कृविक्षेपे, तृ प्लवनसन्तरणयोर्धातुभ्यामीषन्प्रत्ययो भवति । ईषन्नधिकारो "अम्बरीषइति यावत् ।

उदाहरणम्ः— करीषः = शुष्कगोमयम् । तरीषः = नौका ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कीर्यते विक्षिप्यते स करीषः, शुष्कगोमयं वा । तरति येन स तरीषः, नौका वा ।।

हिन्दीः—कृ व तृ धातुओं से ईषन् प्रत्यय होता है ।

## २८. शृपृभ्यां किच्च ।

अर्थः—शृ हिंसायां, पृपालनपूरणयोर्धातुभ्यामीषन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— शिरीषः = तरुविशेषः । पुरीषम् = शकृत्, मलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शृणाति हिनस्तीति शिरीषः, वृक्षभेदो वा । पिपति तत् पुरीषम् शकृद्वा ।।

हिन्दीः—शृ व पृ से ईषन् प्रत्यय होकर कित् हो जाता है ।

## २६. अर्जेऋज च ॥

अर्थः— ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषुधातोरीषन् प्रत्ययो भवति तस्य च ऋज् आदेशो जायते ।

उदाहरणम्:— ऋजीषम् = तवा, कटाहः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— अर्जति सञ्चितो भवति (रसो) यस्मात्तत् ऋजीषम्, पिष्टपचनं, वा 'तवा' इति प्रसिद्धम् ।

हिन्दीः— ऋजधातु से ईषन् प्रत्यय होकर ऋज आदेश हो जाता है ।

## ३०. अम्बरीषः ॥

अर्थः— अवि शब्दे धातोरीषन् प्रत्ययो निपात्यते तथा च प्रत्ययस्यरुडागमोऽपि ।

उदाहरणम्:— अम्बरीषः<sup>१</sup> = आकाशः, स्वेदनी, भाङ्गइति, भाषायाम्, कटाहः, खेदः, संग्रामः, लघुपशु वत्सः, सूर्यः, विष्णुः, शिवः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— अम्बते शब्दयतीति अम्बरीषः, आकाशः स्वेदनी वा, 'भाङ्ग' इति प्रसिद्धम् ॥

हिन्दीः— अम्बरीष शब्द निपातन किया जाता है ।

## ३१. कृशृपृकटिपटिशौटिभ्य ईरन् ॥

अर्थः— कृ विक्रमे, शृ हिंसायां, पृ पालन पूरणयोः कटे वर्षावरणयोः पट गतौ शौटृ गर्वेइत्येतेभ्यो धातुभ्य ईरन् प्रत्ययो भवति । अयमीरन्प्रत्ययो "गभीर गम्भीरौ" सूत्रपरिमितम् ।

उदाहरणम्:— करीरः = तरुविशेषः, वंशांकुरः । शरीरम् = गात्रम् । परीरम् = फलम्, फलविशेषः । कटीरः = कुटी, जघनम् । पटीरः = कन्दुकः, कामः, चन्दनविटपः । शौटीरः = त्यागी, वीरः, अहंकारी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— किरतीति करीरः, वृक्षभेदो वंशाङ्कुरो वा । शीर्यते हिंस्यत इति शरीरम्, प्राणिकायो वा । पूर्यतेऽनेनेति परीरम्, फलं वा । कट्यत आत्रियतेऽसौ कटीरः, कुटी जघनदेशो वा । पटति गच्छतीति पटीरः, कन्दुकः

१ अम्बरीषः = अबि + ईषन्

अम्ब + रुट् + ईषन् अत्र प्रत्ययस्य रुडागमो निपात्यते । शिरीषोऽथाम्बरीषश्च भ्राष्ट्रे राजान्तरे मतः ।

कामश्चन्दनवृक्षो वा । शौटति गर्व करोतीति शौटीरः, त्यागी वीरो वा ।  
ब्राह्मणादित्वात् (अ० ५।१।१२३) घञ् —शौटीर्यम् वैराग्यम् ।

बहुलवचनात्—हिण्डत इतस्ततो गच्छतीति हिण्डीरः, समुद्रफेनो दाडिमो  
वा । किर्मीर—तुणीर—जम्बीर—कुम्भीर—कुटीरादयोऽपीरन्प्रत्ययान्ता बहुलकादेव  
बोद्धव्याः ॥

हिन्दीः— कृआदि धातुओं से ईरन् प्रत्यय होता है ।

### ३२. वशः किच्च ॥

अर्थः— वशकान्तौ धातोरीरन् प्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— उशीरम् = वीरणमूलम्, खस्—खस् इतिभाषायां ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उश्यते काम्यते तद् उशीरम्, वीरणमूलं वा,  
'खसखस; इति प्रसिद्धम् ॥

हिन्दीः— वश धातु से ईरन् प्रत्यय होकर कित् होता है ।

### ३३. कशोर्मुट्च ।

अर्थः— कशगतिशासनयोर्धातोरीरन्प्रत्ययो भवति तस्य च मुडागमो  
जायते ।

उदाहरणम्ः— कश्मीरः = देशविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ईरनित्येव । कष्टे गच्छति शास्ति वाऽसौ कश्मीरः,  
देशभेदो वा ॥

हिन्दीः— कश धातु से ईरन् प्रत्यय होकर उसे मुडागम होता है ।

### ३४. कृञ उच्च ।

अर्थः— डुकृञ् करणे धातोरीरन् प्रत्ययो भवति धातोश्चोदादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— कुरीरम् = मैथुनम्, पटविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्रियते तत् कुरीरम्, मैथुनं वा; कपिलकादित्वात्  
(अ० ८।२।१८ वा०) लत्वे कुलीरः, जलजन्तुभेदो वा ॥

\*१ शरीरम् = शृ + ईरन्

शर् + ईर + सु

शरीरम् ।

हिन्दी:— डुकृञ् धातु से ईरन् प्रत्यय होता है और धातु को उदादेश हो जाता है।

### ३५. घसेः किच्च ।

अर्थ:—घस्लृ अदने धातोरीरन् प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— १क्षीरम् = दुग्धं, पयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—अद्यते भक्ष्यते यत्तत् क्षीरं, दुग्धं वा ।।

हिन्दी:— घस धातु से ईरन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### ३६. गभीरगंभीरौ ।।

अर्थ:— गम्लृगतौ धातोरीरन् प्रत्यययान्तौ गभीरगम्भीर शब्दौ निपात्येते गमेर्मकारस्य भकारादेश एकस्मिन् पक्षे तथा च द्वितीयपक्षेप्रत्ययस्य नुमागमः ।

उदाहरणम्:—गभीरः२ = शान्तः, महाशयः । गम्भीरो ऽ पि ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—'गम' धातोर्मकारस्य भकारः, एकस्मिन् पक्षेनुमागमश्च । गम्यते प्राप्यते ज्ञायते वा स गभीरः; (गम्भीरः), शान्तो महाशयो वा । विशेष्यलिङ्गावेतौ शब्दौ ।।

हिन्दी:— गभीर व गम्भीर शब्द निपातित किये जाते हैं ।

### ३७. विषाविहा ।

अर्थ:— विषाविहा च शब्दौ अव्ययभावेन निपात्येते । विपूर्वकं षोऽन्तकर्मणि ।

उदाहरणम्:— विषा१ = प्रज्ञा विहा = सौख्यसंसारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—विशेषेण स्यति कर्मान्तं करोतीति विषा, बुद्धिर्वा । विशेषेण जहाति त्यजति दुःखमिति विहा, सुखलोको वा । स्वभावादनयोरव्ययत्वम् ।।

हिन्दी:— विषा और विहाशब्द अव्ययभाव से निपातित हैं ।

### ३८. पच एलिमच् ।।

अर्थ:— डुपचष् पाके धातोरेलिमच् प्रत्ययोभवति ।

\*१ क्षीरम् = घस् + ईरन् अत्र गमहनजनखनघसां लोपः किडत्यनडि इत्यनेन धातोः उपधालोपः खरि चेत्यनेन कत्वे पुनश्च शासिवसिघसीनां चेत्यनेन मूर्धन्यादेशे रूपसिद्धिः ।

\*२ गभीरः = गम् + ईरन् = गम् + ईर + सु = गभीरः ।

\*३ विषा = वि + ष + आ ।

उदाहरणम्:—पचेलिमः= अग्निः, भानुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पचति पदार्थानिति पचेलिमः, अग्निः सूर्यो वा ।  
यस्तु 'पच' धातोः सामान्यवार्तिकेन कृत्यार्थं केलिमञ् विधीयते, स भावे कर्मणि  
कर्म कर्त्तरि वेति भेदः ॥

हिन्दीः— डुपचष् धातु से एलिमच् प्रत्यय होता है ।

### ३६. शीङोधुकल्क्वलञ्चालनः ॥

अर्थः—शीङ् शयने धातोर्धुक-लक्-वलञ्चालन् प्रत्यया भवन्ति ।  
बाहुलकादत्र प्रत्ययवकारस्य पकारादेशोऽपि सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— शीधु = मदिरा । शीलम् = प्रकृतिः । शैवलः = जलनी-  
लीनामलताविशेषः । शेवालम् = जलनीलीनामलता सेवारइतिभाषायां । शेपालः  
= जलनीलीनामलताविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शेते येन तत् शीधु, मद्यं वा । शीलं स्वभावः ।  
शैवलम् । शेवालम्; बाहुलकात् प्रत्ययवकारस्य पकारः शेपालम्, जलनील्या  
नामान्येतानि, उदके लतारूपमुत्पन्नं 'सेवार' इति प्रसिद्धम् ॥

हिन्दीः— शीङ् धातु से धुक-लक्-वलञ्चालन् प्रत्यय होते हैं । बहुल  
करके प्रत्यय वकार को पकार हो जाता है ।

### ४०— मृकणिभ्यामूककणौ ।

अर्थः— मृड् प्राणत्यागे, कण शब्दे धातुभ्यांऊक् ऊकण्प्रत्ययौ भवतः ।

उदाहरणम्:— मरुकः = हरिणः मयूरः । काणूकः = वायसः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—म्रियते असौ मरुकः, मृगो वा । कणति शब्दयतीति  
काणूकः काको वा ॥

हिन्दीः— मृ- कण धातुओं से ऊक् ऊकण् प्रत्यय होते हैं ।

### ४१. वलेरूकः ॥

अर्थः— वलसंवरणे धातोः ऊकः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— वलूकः = पक्षिविशेषः, पंकजमूलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वलते संवृणोतीति वलूकः पक्षी कमलमूलं वा ॥

हिन्दीः—वलधातु से ऊक प्रत्यय होता है ।

## ४२. उलूकादयश्च ।।

अर्थः— वलसम्बरणे, वच परिभाषणे, भल्लपरिभाषणहिंसादानेषु, शमु उपशमे इत्येतेभ्य उलूकः वावदूकः भल्लूकः, शम्बूकः, इत्येते शब्दा ऊक प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्— उलूकः = घूकः । वावदूकः = वक्ता, जलशुक्तिः । भल्लूकः = ऋक्षः । शम्बूकः = शंखः, करिशुण्डाग्रम्, पुरुषविशेषः द्यौंघाइति जन्तुविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऊकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । वलतेऽसौ उलूकः, पक्षीभेदो वा । धातोः सम्प्रसारणम् । भृशं वक्तीति वावदूकः वक्ता । यद्जलुगन्तादूकः । (शमयतीति शम्बूकः) जलशुक्तिर्वा । धातोर्वुक् । बाहुलकादुकप्रत्यये शम्बुकः इत्यपि सिद्धम् । भल्लते परितो भाषतेऽसौ भल्लूकः, ऋक्षो वा । बाहुलकाद् ह्रस्वे भल्लुकः इत्यपि । तथा भलतेऽसौ भालूकः स एव । महतीति मधूकः, वृक्षभेदो वा । तथा एलूक-जम्बूक-बन्धूक-वास्तूकादयोऽप्यत्रैव द्रष्टव्याः ।।

हिन्दीः—उलूक आदि शब्द निपातित हैं ।

## ४३. शलिमण्डिभ्यामूकण् ।।

अर्थः— शलगतौ, मडिभूषायां धातुभ्यामूकण् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— शालूकम् = मूलवस्तु कन्द इति भाषायाम् । मण्डूकः = भेकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शल्यते प्राप्यते यत्तत् शालूकम्, मूलद्रव्यं वा । मण्डति शोभतेऽसौ मण्डूकः, भेको जलजन्तुर्वा ।।

हिन्दीः— शलतथा मडि धातुओं से ऊकण् प्रत्यय होता है ।

## ४४. नियो मिः ।

अर्थः— मिप्रत्ययानुवृत्तिः “दल्मिः सूत्रमितम् । णीञ् प्रापणेधातोर्मिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—नेमिः = चक्रभागः, परिधितटम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नयतीति नेमिः, चक्रावयवो वा ।

१ शम्बूकः = शम् बुक् + ऊक अत्र शमेर्बुक चेति गणसूत्रेण बुगागमो जायते ।



बाहुलकात्— याति कार्याणि प्रापयतीति यामिः; आदेर्जत्वं जामिः स्वसा कुलस्त्री वा ॥

हिन्दीः— णीञ्धातु से मिप्रत्यय होता है ।

#### ४५. अर्तेरुच्च ।

अर्थः— ऋगतौ धातोर्मि प्रत्ययो भवति धातोश्चोदादेशो भवति ।

उदाहरणम्— ऊर्मिः = तरंगः धारा, प्रवाहः प्रकाशः गतिः, रेखा कष्टम्, पंक्तिः, चिन्ता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति गच्छतीति ऊर्मिः, जलतरंगो वा ॥

हिन्दीः— ऋ धातु से मि प्रत्यय होकर धातु को उदादेश हो जाता है ।

#### ४६. भुवः कित् ॥

अर्थः— भू सत्तायां धातोर्मिप्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— भूमिः=उत्पत्तिस्थलम्, पृथ्वी, मृत्तिका प्रदेशः, जिह्वा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भवन्ति पदार्था अस्यामिति भूमिः, उत्पत्तिस्थानम् (वा) । अल्पा भूमिः 'भूमिका' । कृदिकारादक्तिनः (अ० ४।१।४५ गणसूत्र) इति ङीष् 'भूमी' ॥

हिन्दीः— भू धातु से मि प्रत्यय होकर वह कित् हो जाता है ।

#### ४७. अश्नोतेरशच ॥

अर्थः— अशूङ् व्याप्तौ धातोर्मिः प्रत्ययो भवति धातोश्च रश आदेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— रश्मिः = किरणः, रज्जुः प्रग्रहः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नुते व्याप्नोतीति रश्मिः, किरणो रज्जुर्वा ॥

हिन्दीः— अशूङ् धातु से मि प्रत्यय होता है और धातु को रश आदेश हो जाता है ।

#### ४८. दल्मिः ॥

अर्थः— दलविशरणे धातोर्मिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— दल्मिः = रश्मिः उत्तमायुधम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दलति येन विदृणातीति दल्मिः, सूर्यकिरण उत्तमायुधं वा ॥

हिन्दी:— दलधातु से मि प्रत्यय होता है।

### ४६. वीज्याज्वरिभ्यो निः ॥

अर्थ:—निप्रत्ययप्रवृत्तिः “घृणिपृश्नि पाष्णिचूर्णि भूर्णय इति यावत् । अजगति क्षेपणयोः, ज्यावयोहानौ, ज्वररोगेइत्येतेभ्यो धातुभ्यो निः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— वेणिः=केशविन्यासः । ज्यानिः = हानिः, वार्द्धक्यम्, नदी, त्यजनम् । जूर्णिः = स्त्रीरोगः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वीयते क्षिप्यते स वेणिः, केशविन्यासो वा । निपातनाण्णत्वम् । जिनाति वयोहीनो भवतीति ज्यानिः, क्षतिर्वा । ज्वरति रोगी भवतीति जूर्णिः, स्त्रीरोगो वा ॥

बाहुलकात्— क्षौति शब्दयतीति क्षोणिः, (स्त्रियां) डीष् 'क्षोणी', भूमिर्वा । क्रीणातीति क्रेणिः, क्रेणी ॥

हिन्दी:— अज आदि धातुओं से नि प्रत्यय होता है ।

### ५०. सृवृषिभ्यां कित् ।

अर्थ:— सृगतौ, वृष सेचने धातुभ्यां निः प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— सृणिः = अंकुशम् । वृष्णिः = क्षत्रियः, वैश्यः, मेघः, मेषः, कृष्णनाम, इन्द्रः, अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सरति गच्छतीति सृणिः, अङ्कुशं वा । वर्षतीति वृष्णिः, क्षत्रियो वैश्यो वा ॥

हिन्दी:— सृ तथा वृष धातुओं से नि प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### ५१. अंगेर्नलोपश्च ॥

अर्थ:— अगि गतौ धातोर्निः प्रत्ययो भवतिधातोर्नकारस्य च लोपः ।

उदाहरणम्:— अग्निः = अनलः, नेता पित्तम्, स्वर्णम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अंगति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स अग्निः, वहिः प्रसिद्धो वा ॥

हिन्दी:— अगि धातु से नि प्रत्यय होता है और धातु के नकार का लोप होता है ।

## ५२. वहिश्रिश्रुयुद्गलाहात्वरिभ्योनित् ।।

अर्थ:—वह प्रापणे, श्रिञ् सेवायाम्, श्रुश्रवणे, युमिश्रणेऽमिश्रणे च, दुगतौ, ग्लै हर्षक्षये, ओहाक् त्यागे, जित्त्वा सम्भ्रमे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो निः प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—वहिनः = अग्निः, आमाशयरसः, बुभुक्षा, यानम् । श्रेणिः = पंक्तिः, व्यापारिसंघः, रेखा, दलम्, निगमः । श्रोणिः = कटिभागः, नितम्बः, सरणिः । योनिः = कारणम्, उपस्थेन्द्रियम्, उद्गमः । द्रोणिः = सेचनी देशविशेषः । ग्लानिः = दुर्बलता, रोगः, दौर्मनस्यम् अवसादः, हासः । हानिः = क्षतिः, अपचयः परिहाणिः न्यूनता, अवहेलना । तूर्मिः = मानसम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वहतीति वहिः, अग्निर्वा । श्रयति सेवतेऽसौ श्रेणिः, पङ्क्तिर्वा; निपूर्वात् निश्रेणी, अधिरोहिणी वा । श्रुणोतीति श्रोणिः, कटिप्रदेशो वा । यौति संयोजयति पृथक् करोति वा स योनिः, कारणम् उपस्थेन्द्रियं वा । द्रवन्ति गच्छन्ति यत्र स द्रोणिः, सेचनी देशविशेषो वा । ग्लायति यस्मिन् स ग्लानिः, परिहाणिः, कृत्यचः (अ० ट १४ १२८) इति णत्वम् । त्वरति सम्यग्भ्रमतीति तूर्णिः, मनो वा ।।

बहुलवचनात्— शेतेऽसौ शिनिः, क्षत्रियो वा । धातोर्ह्रस्वत्वं च । म्लायतीति म्लानिः, आनन्दक्षयो वा ।।

हिन्दी:— द्यु आदि धातुओं से नि प्रत्यय होता है और वह नित् हो जाता है ।

## ५३. घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः ।।

अर्थ:—घृक्षरणदीप्त्योः, स्पृशसंस्पर्शो, पृषसेचने, चर गतिभक्षणयोः डुभृञ् धारणपोषणयोरित्येतेभ्यो धातुभ्यो निप्रत्ययान्ता घृणिपृश्निपार्ष्णि चूर्णि भूर्णिशब्दा निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:—घृणिः = रश्मिः, निदाघः, सूर्यः, ऊर्मिः । पृश्निः = लघुकायः, सुकुमारः, अनेकविधः । पार्ष्णिः = पादतलम्, व्यभिचारिणी पश्चादवर्तिभागः । चूर्णिः = विवरणम्, पिष्टचूर्णम्, शतकपर्दिक समूहः । भूर्णिः = भूमिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जिघर्ति क्षरति दीप्यते वा स घृणिः, किरणो वा । स्पृशति संयुक्तो भवतीति पृश्निः, अल्पशरीरो वा । धातोः सलोपः । पर्षति सिञ्चतीति पाष्णिः, पादतलं वा । धातोर्वृद्धिः । चरति गच्छति भक्षयति चूर्णयति प्रेरयतीति वा चूर्णिः, विवरणं वा । (चरतेरूपधाया ऊत्त्वम) बिभर्ति धरति सर्वमिति भूर्णिः, पृथिवी वा । (धातोरुत्त्वम् ।।)

बाहुलकात्—धुरति शब्दयतीति घूर्णिः ।

हिन्दीः— घृणिआदिशब्द निपातनकिए जाते हैं ।

### ५४. वृद्ध्याविन् ।।

अर्थः— वृञ् वरणे, दृ विदारणे धातुभ्यां विन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— वर्विः = खादकः । दर्विः = दर्वीकर्छलीतिभाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृणोतीति वर्विः, भक्षको वा । दृणाति यया सा दर्विः, सूपचालनपात्रं वा; डीष्—'दर्वी' ।।

हिन्दीः— वृञ् तथा दृधातुओं से विन् प्रत्यय होता है ।

### ५५. जृशृस्तृजागृभ्यः क्विन् ।। क्विन्प्रवृत्तिरग्रेसूत्रद्वयोः ।।

अर्थः— जृवयोहानौ, शृहिंसायाम्, स्तृञ् आच्छादने, जागृ निद्राक्षये इत्येतेभ्योधातुभ्यः क्विन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—जीर्विः = पशुः । शीर्विः = हिंसकः । स्तीर्विः = अध्वर्युः । जागृविः = नरपतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जीर्यतीति जीर्विः, पशुर्वा । शृणातीति शीर्विः (हिंस्रो वा) स्तृणोत्याच्छादयतीति स्तीर्विः, अध्वर्युर्वा । जागृतीति जागृविः, नृपतिर्वा ।।

हिन्दीः— जृ आदि धातुओं से क्विन् प्रत्यय होता है ।

### ५६. दिवो द्वेदीर्घश्चाभ्यासस्य ।।

अर्थः—दिवुक्कीडाविजिगीषा व्यवहार द्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु धातोः क्विन् प्रत्ययो भवति धातोर्द्वित्वं चाभ्यासस्य दीर्घो जायते ।

उदाहरणम्ः—दीदिविः = अन्नम्, सौरव्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीव्यतीति दीदिविः, सुखमन्नं वा । क्विन्प्रत्ययस्य बाहुलकादेवेत्सञ्ज्ञालोपौ न भवतः ।

हिन्दीः— दिवु धातु से क्विन् प्रत्यय होता है और धातु को द्वित्व एवं

अभ्यास को दीर्घ होता है ।

५७. कृविघृष्विच्छविस्यविकिकीदिवि ।।

अर्थः— डुकृञ् करणे, घृषु संघर्षे, श्योतनूकरणे ष्टा गतिनिवृत्तौ किकीशब्दोपपदेदिवुक्तीडाद्यर्थेषु इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कृविः घृष्विः, छविः स्थविकिकीदिविः शब्दाः क्विन् प्रत्ययान्तानिपात्यन्ते । तथा च किकीदिविशब्दस्य बहुलवचनात्पञ्च भेदाः प्रजायन्ते ।

उदाहरणम्— कृविः = तन्तुवायः । घृष्विः = वराहः । छविः = कान्तिः । स्थविः = तन्तुवायः । किकिदीविः = चाषः, नीलकण्ठपक्षिविशेषः । किकीदीविः = चाषः, नीलकण्ठपक्षिविशेषः । किकिदिविः = चाषः, नीलकण्ठपक्षिविशेषः । किकिदीवः = चाषः, नीलकण्ठपक्षिविशेषः । किकिदिवः = चाषः, नीलकण्ठपक्षिविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—करोति येन स कृविः, तन्तुवायद्रव्यं वा । घर्षति सिञ्चतीति घृष्विः, वराहो वा । छयति सूक्ष्मं करोतीति छविः, दीप्तिर्वा । धातोर्ह्रस्वत्वं च । तिष्ठतीति स्थविः, तन्तुवायो वा । अत्रापि ह्रस्वः । किकिना शब्देन ददातीति किकीदिविः, चाषो वा नीलकण्ठ इति प्रसिद्धः । (उपपदस्य द्वितीयेकारस्य दीर्घत्वम् ।) किकीदिविः, किकिदिविः, किकिद्वीविः, किकिदिवः, कीकीदीविः इति पञ्चभेदा बहुलवचनादेव मन्तव्याः ।।

हिन्दीः = कृविआदि शब्द निपातन किये जाते हैं ।

५८. पातेर्डतिः ।।

अर्थः—पारक्षणे धातोर्डतिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—पतिः = स्वामी, धवः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पाति रक्षतीति पतिः, स्वामी वा ।।

हिन्दीः—पा धातु से डति प्रत्यय होता है ।

५९. शकेर्ऋतिन् ।

अर्थः— शक्लृ शक्तौ धातोर्ऋतिन् प्रत्ययो भवति बहुलकाद् यजतेरपि ।

उदाहरणम्— शकृत् = मलम्, विष्ठा, गोमयम् । यकृत = कालविभागः,

“जिगर” इतिभाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शक्नोतीति शकृत्, (पुरीषं वा)

बाहुलकात्— यजतीति यकृत्, कालखण्डं वा । धातोर्जकारस्य ककारः ॥

हिन्दीः—शकृ धातु से ऋतिन् प्रत्यय बहुल करके होता है ।

### ६०.—अमेरतिः ॥

अर्थः— अत्यनुवृत्तिः “रमेर्निन्” पर्यन्तम् । अमगतौ धातोः अतिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—अमतिः = समयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अमति गच्छतीति अमतिः, कालो वा ॥

बाहुलकात्— व्रतमाचरतीति व्रततिः विस्तरः, व्रतती, लता वा । मालयति गन्धं धारयतीति मालतिः; मालती सुमना वा, ‘चमेली’ इति प्रसिद्धा । स्थापयति धर्ममिति स्थपतिः, वाग्मी यज्ञकर्ता वा । ण्यन्तस्य ‘स्था’ धातोः पुकि सति ह्रस्वत्वम् ॥

हिन्दीः— अमधातु से अति प्रत्यय होता है ।

### ६१. वहिवस्यर्तिभ्यश्चित् ॥

अर्थः— वह प्रापणे, वस निवासे, ऋगतौ, धातुभ्योऽतिः प्रत्ययो भवति । स च किञ्जायते ।

उदाहरणम्—वहतिः = वायुः । वसतिः = गृहम्, रात्रिः । अरतिः = कोपः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वहति प्रापयति पदार्थान् प्राप्नोति वेति वहतिः, पवनो वा । वसन्ति यत्रेति वसतिः; वसतो वा, गृहं रात्रिर्वा । ऋच्छति गच्छतीति अरतिः, क्रोधो वा ॥

बाहुलकात्— अलति भूषयति समर्थो वा भवति स अलतिः, गीतमात्रिका वा ॥

हिन्दीः— वह तथा ऋ धातु से अति प्रत्यय होता है और वह चित् हो जाता है ।

### ६२. अञ्चेः को वा ॥

अर्थः— अञ्चु गतिपूजनयोः धातोः अतिः प्रत्ययो भवति तस्य च कादेशो विभाषा जायते ।

उदाहरणम्—अंकतिः = पवनः । अञ्चतिः = पवनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अञ्चति गच्छति पूजयति वा स अंकतिः; अञ्चतिः, वायुर्वा ॥

हिन्दीः— अञ्चु धातु से अति प्रत्यय होता है और धातु को कादेश विकल्प से हो जाता है।

### ६३. हन्तेरंह च।

अर्थः—हनर्हिसागत्योः धातोः अति प्रत्ययो भवति तस्य च अंह इत्ययमादेशो जायते।

उदाहरणम्ः— अंहतिः = दानम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अतिः। हन्त्यनेति अंहतिः, दानं वा।।

हिन्दीः— हन धातु से अति प्रत्यय होता है और धातु को अंह आदेश हो जाता है।

### ६४. रमेर्नित् ॥

अर्थः—रमु क्रीडायां धातोः अति प्रत्ययो भवति स च नित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्ः— रमतिः१ = कामः, कालः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रमन्तेऽस्मिन् स रमतिः, कालः कामो वा।।

हिन्दीः— रमुधातु से अति प्रत्यय होता है और वह नित् हो जाता है।

### ६५. सूडः क्रिः ॥

अर्थः— षूड् प्राणिगर्भविमोचने धातोः क्रिः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्ः— सूरिः = विद्वान्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सूते प्राणिनः प्रसवति समर्थयतीति सूरिः, पण्डितो वा; स्त्रियां 'सूरी' ॥

हिन्दीः— षूड् धातु से क्रि प्रत्यय होता है।

### ६६. अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन् ॥

अर्थः—अदभक्षणे, शदलृशातने, भूसत्तायां, शुभदीप्तौ इत्येतेभ्योधातुभ्यः क्रिन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्ः— अद्रिः = जलदः, अचलः, तरुः, भानुः। शद्रिः = शर्करा। भूरिः = बहुकनकम्। शुभ्रिः = चतुर्वेदविज्ञः, विधाता।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—योऽति अदन्ति यत्रेति वा स अद्रिः, पर्वतो मेघो वृक्षः सूर्यो वा। शीयते शातयतीति शद्रिः, शर्करा वा। भवतीति भूरिः, बहुसुवर्णं वा; भूरि प्रयोजनमस्य स 'भौरिकः, कनकाध्यक्षो वा। शोभतेऽसौ शुभ्रिः, चतुर्वेदविद् ब्रह्मा वा।।

हिन्दी:— अदआदि धातुओं से क्रिन् प्रत्यय होता है

### ६७. वङ्प्रयादयश्च ।।

अर्थ:—वकिगत्यर्थः, वप बीजसन्तानेच्छेदने च, अहिभाषार्थ, तदि सौत्रो धातुः वैचित्येदृश्यते, त्रिभीभये इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्रिन् प्रत्ययान्ताबङ्क्रिः, वप्रिः, अंहिः, तन्द्रिः, भेरिः शब्दा निपात्यन्ते ।।

उदाहरणम्:— वङ्क्रि वाद्यविशेषः । वप्रिः = क्षेत्रम् । अंहिः = पादः । तन्द्रिः = मोहः । भेरिः = भेरी नगाड़ा इतिभाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वंकतेऽसौ वङ्क्रिः, वाद्यभेदो गृहदारु वा । वपन्ति यस्मिन् स वप्रिः क्षेत्रं वा । सम्प्रसारणाभावो बाहुलकात् । अंहयति भाषतेऽसौ अंहिः, पादो वा । 'तन्द्रि' सौत्रो धातुः । तन्द्रति क्लिश्नातीति तन्द्रिः, मोहो वा । स्त्रियां 'तन्त्री' । बिभेति येन स भेरिः, वाद्यविशेषो वा; (स्त्रियाम्) 'भेरी' वा ।।

हिन्दी:— वङ्क्रि आदि शब्द निपातन किये जाते हैं ।

### ६८. राशदिभ्यां त्रिप् ।।

अर्थ:— रादानेशदलुशातनेधातुभ्यां त्रिप्प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— रात्रिः १ = रजनी । शत्रिः = करी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—राति सुख ददातीति रात्रिः, (ःरात्रि) प्रसिद्धा वा । शीयते छिनत्तीति शत्रिः, हस्ती वा ।।

हिन्दी:— रा तथा शदल् धातुओं से त्रिप् प्रत्यय होता है ।

### ६९. अदेस्त्रिनिश्च ।।

अर्थ:— अदभक्षणेधातोस्त्रिनिः प्रत्ययो भवति चकारात् त्रिप् च ।

उदाहरणम्:— अत्री = पापम् । अत्रिः = मुनिविशेषे ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चात् त्रिप् । अत्ति भक्षयतीति अत्री, अत्रिणौ, पापं वा । अत्रिः मुनिभेदो वा । तस्यापत्यम् 'आत्रेयः' ।।

हिन्दी:—अद धातु से त्रिनि प्रत्यय होता है और त्रिप् भी ।

### ७०. पतेरत्रिन् ।।

अर्थ:— पल्लुगतौ धातौः अत्रिन् प्रत्ययो भवति !



उदाहरणम्:— पतत्रि = पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पततीति पतत्रिः, पक्षी वा; (पतत्री,) पतत्रयः ।  
पक्षवाचकात् पतत्रशब्दान्मत्वर्थ इनि; पतत्री, पतत्रिणौ ।।

हिन्दी:— पत्लू धातु से अत्रिन् प्रत्यय होता है ।

### ७१. मृकणिभ्यामीचिः ।।

अर्थः— ईचिप्रत्ययो "वेजो डिच्चेति" यावत् । मृड प्राण त्यागे कणशब्दे  
धातुभ्यां ईचिप्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— मरीचिः = प्रकाशः, महर्षिः । कणीचिः = पत्रादियुताशाखा  
ध्वनिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रियतेऽसौ मरीचिः, दीप्तिर्महर्षिर्वा । कणति शब्दयतीति  
कणीचिः, पत्रादियुक्ता शाखा शब्दो वा ।।

हिन्दी:— मृड् व कण धातुओं से ईचि प्रत्यय होता है ।

### ७२. श्वयतेशिचत् ।।

अर्थः— दुओशिव गतौ धातोः ईचिः प्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— श्वयीचिः = रोगः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्वयति गच्छति वर्धते वा स श्वयीचिः, व्याधिर्वा ।।

हिन्दी— दुओशिव धातु से ईचि प्रत्यय होता है ।

### ७३. वेजो डिच्च ।।

अर्थः— वेज् तन्तु सन्ताने धातोः ईचिः प्रत्ययो भवति स च डिच्  
सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— वीचिः = ऊर्मिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वयति तन्तून् सन्तनोतीति वीचिः, तरंगो वा ।  
डित्वाङ्लिलोपः ।।

हिन्दी:— वेज् धातु से ईचि प्रत्यय होता है और वह डिच् हो जाता है ।

### ७४. ऋहनिभ्यामूषन् ।।

अर्थः— ऋगतौ हन् हिंसागत्योः धातुभ्यामूषन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— अरुषः = सूर्यः । हनूषः = दस्युः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति गच्छतीति अरुषः, सूर्यो वा । हन्तीति हनूषः, दस्युः (वा) ॥

हिन्दीः— ऋ व हन् धातुओं से ऊषन् प्रत्यय होता है ।

### ७५. पुरः कुषन् ॥

अर्थः— पुर अग्रगमने धातोः कुषन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— पुरुषः = मनुजः । पूरुषः१ = मनुजः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पुरत्यग्रं गच्छतीति पुरुषः पुमान् । अन्येषामपि दृश्यते (६।३।१३६) इति दीर्घं पूरुषः वा ॥

हिन्दीः— पुर धातु से कुषन् प्रत्यय होता है ।

### ७६. पृनहिकलिभ्य उषच् ॥

अर्थः— पृ पालन पूरणयोः, णह बन्धने, कलशब्दसंख्यानयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्य उषच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— परुषः = निष्ठुरम् वचः । नहुषः = राजर्षिः, नागविशेषः । कलुषम् = कित्विषम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पिपर्तीति परुषम्, निष्ठुरं वचो वा । नह्यति बध्नातीति नहुषः राजर्षिः सर्पविशेषो वा । कलते शब्दयतीति कलुषम्, पापम् (वा) ।

हिन्दीः— पृ आदि धातुओं से उषच् प्रत्यय होता है ।

### ७७. पीयेरुषन् ॥ ऊषन्नधिकारो "गण्डेश्च" पर्यन्तम् ।

अर्थः— पीडपाने धातोः ऊषन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— पीयूषम् = नव्यं जलम्, अमृतम् क्षीरविशेषं । पेयूषः = नव्यं जलम्, अमृतम् क्षीरविशेषं ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पीयति२ पीयते वा तत् पीयूषम्; पेयूषम्, नूतनं, पयोऽमृतं वा । सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरं पेयूषमुच्यते । बाहुलकात् पक्षे गुणः ॥

बहुलवचनात्— अंकयते लक्षयतीति अङ्कूषः, नकूलो वा ॥

१. पूरुष इत्यत्रान्येषामपिदृश्यते—इतिदीर्घ पक्षे ।

२. पीय सौत्रो धातु रिति कौमुदीकारः ।

हिन्दीः— पुर धातु से कुषन् प्रत्यय होता है।

७८. मस्ज्जेर्नुमच ।

अर्थः— मस्ज्जशुद्धौ धातोरुषन् प्रत्ययो भवति धातोश्च नुमागमो भवति।

उदाहरणम्ः—मञ्जूषा = पेटिका, काष्ठयुतं वस्तु।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धातोर्नुम् । स चाचोऽन्त्यात्परः । जश्त्वश्चुत्वे, (झरो झरि सवर्णे (अ० ८ ।४ ।६४) इत्येकस्य जकारस्य लोपः ।) मज्जति शुद्धो भवतीति मञ्जूषा, काष्ठमयं द्रव्यं वा ॥

हिन्दीः—मस्ज्जधातु से ऊषन् प्रत्यय होता है और धातु को नुमागम हो जाता है।

७९. गण्डेश्च ।

अर्थः— गडिवदनैकदेशे धातोः ऊषन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्ः— गण्डूषः = जलादिना भरितं मुखम् कुल्ला इति भाषायाम् ।

गण्डूषा = जलादिनां भरितं मुखम् कुल्ला इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गण्डति वदनावयवं दिशतीति गण्डूषः जलादिना पूर्णं मुखम्, 'कुल्ला' इति प्रसिद्धम् ॥

हिन्दीः— गडि धातु से ऊषन् प्रत्यय होता है।

८०—अर्त्तरुः

अर्थः— ऋगतौ धातोः अरुः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्ः— अरुः१ = आयुधम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोति येन तद् अरुः, आयुधं वा ॥

हिन्दीः—ऋ धातु से अरु प्रत्यय होता है।

८१. कुटः किच्च ॥ अरुप्रत्ययोऽनुवर्त्तते ।

अर्थः— कुट कौटिल्ये धातोः अरुः प्रत्ययो भवति स च किज्जायते।

उदाहरणम्ः— कुटरुः वस्त्रगृहम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुटतीति कुटरुः, वस्त्रगृहं वा (तम्बू इति प्रसिद्धम्) ॥

\*१ अरुः = ऋ ! अर् + अरुः । अरुः । " अरुः शत्रुरित्युभौ इति लक्ष्मीकोशः" ।

हिन्दी:— कुट धातु से अरु प्रत्यय होकर कित् हो जाता है।

### ८२. शकादिभ्योऽटन् ।।

अर्थ:—शकलु शक्तौ इत्येवमादिभ्यो धातुभ्योऽटन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— शकटः = यानम्, ऋषिः। कंकटः = कवचः। देवटः = शिल्पी। करटः = वायसः।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:— शक्नोतीति शकटः; शकटं, यानविशेषः, ऋषिर्वा। यस्यापत्यं 'शाकटायनः।' वृणोतीति वरटः कीटभेदः; वरटा, हंसयोषिद्धा। कंकते गच्छतीति कंकटः, कवचो वा। सरति प्रसरतीति सरटः, कृकलासो वा, 'गिरगिट' इति प्रसिद्धः। देवते व्यवहरतीति देवटः, शिल्पी वा। कम्पते येन स कपटः, माया वा। धातोर्मलोपः। 'कर्क-मर्क-क (र्प-प)र्पाः' सौत्रा धातवः। कर्कतीति कर्कटः, जलजन्तुभेदो वा। मर्कतीति मर्कटः, वानरो वा; स्त्रियां गौरादित्वात् (अ० ४।१।४९) डीष् 'मर्कटी'। कर्पतीति कर्पटः, छिन्नं पुराणं वस्त्रं वा। पर्पति गच्छतीति पर्पटः, ऊषरभूमिर्वा। कखति हसतीति कक्खटम्, कठिनं वा। कुमागमः। चपति सान्त्वयति येन स चपेटः; चर्पटो वा, प्रसृताङ्गुलिर्हस्तो वा। एकत्र प्रत्ययादेरेत्वम्, अपरत्र रमागमश्च। मयते प्राप्नोति यं स मयटः, प्रासादो वा। किरति विक्षिपतीति करटः, काको वा। एवमन्येऽपि शब्दा अटन्प्रत्ययान्ता यथाप्रयोगं साध्याः।।

हिन्दी:— शकलु आदिधातुओं से अटन् प्रत्यय होता है।

### ८३. कृकदिकडिकटिभ्योऽम्बच् ।

अर्थ:— डुकृञ् करणे, कदवैकल्ये, कडमदे, कटवर्षावरणयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्योऽम्बच् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— करम्बम् = व्यामिश्रम्। कदम्बः वृक्षविशेषः। कडम्बः अग्रभागः। कटम्बः = वादिनम्।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:— करोतीति करम्बम्, व्यामिश्रम् (वा)। कदतीति कदम्बः, वृक्षभेदो वा। कडत्यावृणोतीति कडम्बः अग्रभागो वा। कटतीति कटम्बः, वादित्रं वा।।

### ८४. कदेर्णित् पक्षिणि ।।

अर्थ:— कदवैकल्येधातोः पक्षिवाच्येऽर्थेऽम्बच् प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्—कादम्बः = वकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कदति विकलो भवतीति कादम्बः, पक्षिभेदो वा, 'वकः' इति प्रसिद्धः । (पक्षिणोऽन्यत्र कदम्बः, वृक्षभेदः ॥)

हिन्दीः— कदधातु से पक्षी नाम वाच्य होने पर अम्बच् प्रत्यय होता है । और वह णित् हो जाता है ।

### ८५. कलिकर्घोरमः ॥

अर्थः—कलसंख्याने, कर्दकुत्सितेशब्दे इत्येताभ्यां धातुभ्यां अमः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— कलमः = शालिविशेषः । कर्दमः = पंकम्, पापम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कलते सङ्ख्यातीति कलमः, शालिभेदो वा । कर्दति कुत्सितं शब्दयतीति कर्दमः, पापं (पंको) वा ॥

हिन्दीः— कल व कर्द धातुओं से अम प्रत्यय होता है ।

### ८६. कुणिपुल्योः किन्दच् ॥

अर्थः— कुणशब्दोपकरणयोः, पुलमहत्वे इत्येताभ्यां धातुभ्यां किन्दच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— कुणिन्दः = ध्वनिः । पुलिन्दः = शबरः, चाण्डालविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुण्यते शब्दतेऽसौ कुणिन्दः, शब्दो वा । पोलति महान् भवतीति पुलिन्दः, शबरश्चाण्डालभेदो वा ॥

बाहुलकात्—अलति भूषयतीति अलिन्दः, गृहैकदेशो वा । प्रज्ञादित्वाद् (अ० ५।४।३८) अणि 'आलिन्दः' इत्यपि सिद्धम् ॥

हिन्दीः— कुण व पुलधातुओं से किन्दच् प्रत्यय होता है ।

### ८७. कुपेर्वा वश्च ॥

अर्थः— किन्दच् इति वर्तते । कुप क्रोधे इत्येतस्माद्धातोः किन्दच् प्रत्ययो भवति धातोश्च विभाषा वकारः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्—कुविन्दः = तन्तुवायः । कुपिन्दः = तन्तुवायः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुप्यति क्रुद्धो भवति स कुविन्दः, कुपिन्दः, तन्तुवायो वा ॥

हिन्दीः— कुप धातु से किन्दच् प्रत्यय होता है और धातु को विकल्प

से वकारादेश हो जाता है।

### ८८. नौषञ्जेर्घथिन् ॥

अर्थ:— निउपपदे षस्जगतौधातोः घथिन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:— निषंगथिः = आलिंगकः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नितरां सजति संगं करोतीति निषंगथिः, आलिंगको वा। घित्त्वात् (अ० ७। ३। ५२) कुत्वम् ॥

हिन्दी:—नि उपपद षस्जगतौ धातु से घथिन् प्रत्यय होता है।

### ८९. उद्यर्त्तेश्चित् ॥ घथिन्ननुवर्त्तते।

अर्थ:—उत्पूर्वकं ऋगतौधातोः घथिन् प्रत्ययो भवति स च चिज्जायते।

उदाहरणम्:— उदरथिः = सागरः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उदृच्छन्त्यूर्ध्वं गच्छन्त्यापोऽस्मिन् स उदरथिः, समुद्रो वा ॥

हिन्दी:— उत्पूर्वक् ऋ धातु से घथिन् प्रत्यय होता है, और वह चित् हो जाता है।

### ९०—सर्त्तर्णिच्च।

अर्थ:— अत्रापि घथिन्नप्रवृत्तिः। सृगतौ धातोः घथिन् प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ॥

उदाहरणम्:— सारथिः = यन्ता।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सारयति नियमेन चालयतीति सारथिः, नियन्ता वा। अत्र अन्तर्णीतण्यर्थः, णित्त्वाद् वृद्धिः ॥

हिन्दी:— सृधातु से घथिन् प्रत्यय होकर णित् हो जाता है।

### ९१. खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ।

अर्थ:— खर्जादिभ्यः पिञ्जादिभ्यश्चधातुभ्यः यथासंख्यं ऊर, ऊलच् प्रत्ययौ भवतः। खर्जादयः खर्जपूजने, क्लृपूसामर्थ्ये, धुञ् कम्पने, वल्लसंवरणे संञ्चरणे च, शल चलनसंवरणयोः, मल्लधारणे, कसगतिशासनयोः खर्जइत्यादिभ्यः ऊर प्रत्ययो भवति। पिञ्जादयः = पिजिवर्णे, कचिदीप्ति-बन्धनयोः, लगी गतौ, तमुकांक्षायां, शृ हिंसायां, दुउपतापे, कुस संश्लेषणे, इत्येतेभ्यः ऊलच् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:—खर्जूरः१ = वृक्षविशेषः, रूप्यम्। कर्पूरः = सुगन्धि द्रव्यम्।

\*१ खर्जूरः = खर्जू + ऊरः।

धुस्तूरः = कनकाह्वयः धतूराइति भाषायाम् । वल्लूरम् = शुष्कमांसम् । शालूरः = भेकः, मल्लूरः, कस्तूरः कस्तूरी सुगन्धिविशेषः । पिञ्जूलम् = कुशवर्तिः, कञ्चूलः = स्त्रीगात्राभरणम् । लाङ्गूलम् = पुच्छम् । ताम्बूलम् = पान इति प्रसिद्धम् । शार्दूलः = व्याघ्रः । दुकूलम् = स्त्रियः अधोवस्त्रम् । कुसूलः = धान्य पात्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खर्जादिभ्य ऊरः— खर्जति मार्जयतीति खर्जूरः, वृक्षभेदो रजतं वा; स्त्रियां गौरादित्वात् (अ० ४ । १ । ४१) डीष् 'खर्जूरी' । कल्पते समर्थो भवतीति कर्पूरः, सुगन्धिद्रव्यं वा । बाहुलकादत्र लत्वाभावः । धुनोति कम्पयतीति धुस्तूरः, कनकाह्वयः (वा), 'धतूरा' इति प्रसिद्धः । (धातोः स्तुगागमः) वल्लते संवृणोतीति वल्लूरम्, शुष्कमांसं वा । शालयति गमयतीति शालूरः, मण्डूको वा । मल्लते धरतीति मल्लूरः । कस्ते गच्छति प्राप्नोति शास्ति वा स कस्तूरः; स्त्रियां 'कस्तूरी' प्रसिद्धा, सुगन्धिभेदः ।

पिञ्जादिभ्य ऊलः—पिङ्क्ते वर्णयतीति पिञ्जूलम्, कुशवर्तिर्वा । कञ्चते दीप्यतेऽसौ कञ्चूलः, स्त्रीगात्राभरणं वा । लंगति यत्तत् गच्छतीति लाङ्गूलम्, पुच्छं वा । धातोर्वृद्धिः । ताम्यति काङ्क्षति यत्तत् ताम्बूलम्, 'पान' इति प्रसिद्धम् । धातोर्बुक् दीर्घत्वं च । शृणाति हिनस्तीति शार्दूलः व्याघ्रो वा । धातोर्दुक् वृद्धिश्च । दुनोत्युपतापयतीति दुकूलम्, स्त्रिया उत्तरीयं वस्त्रम् । धातोः कुक् । कुस्यति शिलष्यतीति कुसूलः, धान्यपात्रं वा ॥

हिन्दीः— खर्जादितथा पिञ्जादिधातुओं से क्रमशः ऊर् और ऊलच् प्रत्यय होते हैं ।

## ६२. कुवश्चट् दीर्घश्च ॥

अर्थः—चट् प्रवृत्तिरग्रे सूत्रद्वयोः । कुशब्दे धातोः चट् प्रत्ययो भवतितस्य च दीर्घत्वं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— कूचः = चित्र लेखनी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— कौति शब्दयतीति कूचः, स्तनं हस्ती वा; स्त्रियां 'कूची' चित्रलेखनी ।

हिन्दीः— कुधातुसेचट् प्रत्यय होता है और दीर्घ हो जाता है ।

## ६३. समीणः ॥

अर्थः— सम्पूर्वकात् इण् गतौ धातोश्चट् प्रत्ययो भवति तस्य च धातो-

दीर्घादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— समीचः = समुद्रः । समीची = मृगी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सम्यगेति गच्छतीति समीचः समुद्रो वा; समीची हरिणी ॥

हिन्दी:— सम् पूर्वक इण् धातु से चट् प्रत्यय होता है । और धातु को दीर्घ आदेश हो जाता है ।

६४. सिवेष्ठेरुच ॥

अर्थः— षिवुतन्तुसन्तानेधातोः चट् प्रत्ययो भवति तस्य च धातोः टेः इवभागस्य ऊ आदेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:— सूचः = कुशांकुरः । सूची = सुई इति प्रसिद्धा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इवभागस्य टेरु आदेशः । सीव्यति येन स सूचः, दर्भाडकुरो वा; (स्त्रियाम्) सूची इति प्रसिद्धा (एव) ।

हिन्दी:— षिवु धातु से चट् प्रत्यय होता है और धातु के टि रूप इव भाग को ऊ आदेश हो जाता है ।

६५. शमेर्बन् ॥

अर्थः— शमुउपशमेधातोः बन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— शम्बः = मुसलस्य लोह मुखम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शाम्यतीति शम्बः, मुसलस्य लोहमुखं वा, 'शामी' इति प्रसिद्धा ।

हिन्दी:— शमुधातु से वन् प्रत्यय होता है ।

६६. उल्वादयश्च ॥

अर्थः— उच समवाये एवं प्रकारकेभ्योधातुभ्यः उल्ब इत्यादयः शब्दा बन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:— उल्बम् = गर्भः । शुल्बम् = ताम्रम् । निम्बः = वृक्षविशेषः । बिम्बम् = मण्डलम्, ओषधिभेदः । जम्बः = पंकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बन्प्रत्ययान्ता निपाताः । उच्यति समवैतीति उल्बः, गर्भो वा । चकारस्य लत्वं गुणाभावश्च । शोचतीति शुल्बम्, ताम्रं वा । पूर्ववत् सर्वम् । नयति प्रापयति शुभगुणानिति निम्बः, वृक्षभेदो वा । वीयते काम्यते तत्



चतुर्थः पादः

( १६७ )

बिम्बम्, मण्डलमोषधिविशेषो वा । अत्रोभयत्र 'नी वी' धातोर्नुमागमो ह्रस्वत्वं (वीयतेर्बलत्वं) च । स्त्रियां गौरादित्वाद् (अ० ४ । १ । ४१) बिम्बी । बिम्बफलमिवोष्ठी यस्याः सा 'बिम्बोष्ठी' कन्या । दधाति धान्यहेतुर्भवतीति धन्वम्, धनुर्वा; तद्योगाद् 'धन्वी' जनः । जमति भक्षयतीति जम्बः, पंको वा ॥

हिन्दीः— उल्बादिशब्दबन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

६७. स्थः स्तोऽम्बजवकौ ॥

अर्थः— ष्टागतिनिवृत्तौधातोः अम्बज् अवक् प्रत्ययौ भवतः धातोश्च स्तः आदेशो जायते ।

उदाहरणम्ः— स्तम्बः = व्रीह्यादिगुच्छः । स्तवकः = पुष्पगुच्छः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अम्बच् अवक् इत्येतौ प्रत्ययौ । तिष्ठतीति स्तम्बः, शाखाशून्यो व्रीह्यादेर्गुच्छो वा । स्तवकः, पुष्पगुच्छो वा ॥

हिन्दीः— ष्टाधातु से अम्बज् अवक् प्रत्यय होते हैं । और धातु को स्त आदेश हो जाता है ।

६८. शाशपिभ्यां ददनौ ॥

अर्थः— शोतनूकरणे शपआक्रोशेधातुभ्यांददन्प्रत्ययौ क्रमशो भवतः ।

उदाहरणम्ः— शादः = लघुतृणम् । शब्दः१ = नादः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्यति सूक्ष्मं करोतीति शादः, कर्दमो बालतृणं वा । शप्यत आहूयतेऽनेन स शब्दो नादः । पस्य बः ॥

हिन्दीः— शो तथा शप धातुओं से द दन् प्रत्यय यथाक्रम से होते हैं ।

६९. अब्दादयश्च ॥

अर्थः— इमेऽब्दादयः शब्दा ददन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्ः— अब्दः = संवत्सरः, अवसरः, जलदः । कुन्दः = कुसुमजातिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ददन्प्रत्ययान्ता निपाताः । अवति रक्षणादिकं करोतीति अब्दः संवत्सरोऽवसरो मेघो वा । कौति शब्दयतीति कुन्दः, पुष्पजातिर्वा ।

धातोर्नुम् । वृणोतीति वृंदम्, समूहो वा । नुम् गुणाभावश्च । कनति दीप्यतेऽसौ कन्दः, सस्यमूलं सूकरो वा । तुदति व्यथतीति तुन्दः, स्थूलमुदरं वा; 'तुन्दी' स्थूलोदरी । धातोर्नुम् ॥

हिन्दी:— अब्दादिशब्द ददन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ॥

### १००. वलिमलितनिभ्यः कयन् ॥

अर्थ:— वल संवरणे, मलधारणे, तनुविस्तारे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कयन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— वलयम् = करभूषणम् । मलयः = पर्वतः । तनयः = पुत्रः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वलते संवृणोतीति वलयम्, करभूषणं वा । मलते धरतीति मलयः, पर्वतो वा । तनोति सुखमिति तनयः, पुत्रो वा ॥

बाहुलकात्— आमयति पीडयतीति आमयः, रोगो वा ॥

हिन्दी:— वलआदि धातुओं से कयन् प्रत्यय होता है ।

### १०१. वृहोः षुग्दुकौ च ॥ कयन्ननुवर्त्तते ।

अर्थ:—वृञ् वरणे ह् हरणे धातुभ्यां कयन् प्रत्ययो भवति धात्वोश्च क्रमशः षुक्दुक् आगमौ जायते ।

उदाहरणम्:—वृषयः = आश्रयः । हृदयम् = मानसम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृणोतीति वृषयः, आश्रयो वा । षुक् । हरति विषयानिति हृदयम्, मनो वा । दुक् ।

हिन्दी:—वृञ् तथा ह् धातुओं से कयन् प्रत्यय होता है और धातुओं को क्रमशः षुक् व दुक् आगम होता है ।

### १०२. मीपीभ्यांरुः ॥

अर्थ:— डुमिञ् प्रक्षेपणे, पीङ् पाने धातुभ्यां रुः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— मेरुः = अचलः । पेरुः = सूर्यः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मिनोति प्रक्षिपतीति मेरुः, सुमेरुः पर्वतो वा । पीयते पिबतीति वा पेरुः, आदित्यो वा ॥

बाहुलकात्— पिबतीति पारुः, स एव ॥

\*१ शब्दाः = शप् + दन्

शब्दः अत्र धातोः पस्य बादेशो जायते ।

हिन्दीः—डुमिञ् तथा पीङ् धातुओं से रु प्रत्यय होता है।

१०३. जत्वादयश्च ॥

अर्थः—रुरिति विद्यते। जत्वादयश्च शब्दारुप्रत्ययान्तानिपात्यन्ते।

उदाहरणम्— जत्रुः = स्कन्धसन्धिः। अश्रु = नयननीरम्। शिग्रुः = शोभाञ्जनस्तरुः, शाकम्, पुरुषविशेषः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायते तत् जत्रु, स्कन्धसन्धिर्वा। नस्य तः। जत्रुणी, जत्रूणि। शोतेऽसौ शिग्रुः, शोभाञ्जनस्तरुः 'सहिंजना' इति प्रसिद्धः, शाकं वा, मनुष्यविशेषो वा। तत्र शिग्रोरपत्यं 'शैग्रवः'। विशेषेण तनोतीति वितद्रुः, नदी वा। नकारस्य दः। कबतेऽसौ कद्रुः, वर्णभेदो वा। वस्य दः। अस्यति प्रक्षिपति जलमिति अश्रुः। बहुलवचनात् शकारभेदे अश्रुः, नेत्रजलं वा ॥

हिन्दीः— जत्वादिशब्द रु प्रत्ययान्तनिपातित किये जाते हैं।

१०४. रुशतिभ्यां क्रुन् ॥

अर्थः—रु शब्दे शद्लृ शातने धातुभ्यांक्रुन् प्रत्ययोभवति

उदाहरणम्—रुरुः = मृगविशेषः। शत्रुः = अरिः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रौति शब्दं करोतीति रुरुः, मृगभेदो वा। शीयते शातयतीति शत्रुः। प्रज्ञादित्वाद् (अ० ५।४।३८) अण्। 'शात्रवः' वैरी ॥

हिन्दी— रु शब्दे शद्लृधातुओं से क्रुन् प्रत्यय होता है।

१०५. जनिदा-च्यु-सृ-वृ-मदि-षमिन्नमिभृञ्भ्य इत्वन्त्वन्त्लण्क्विन् शक्-स्यदडटअटचः।

अर्थः—जनी प्रादुर्भावे, डुदाञ्दाने, च्युङ्गतौ, सृगतौ वृञ् वरणे, मदीहर्षे षम् णम् प्रह्नीभावे इत्येतेभ्यो धातुभ्य यथासंख्यं इत्वन्-त्वन्-त्लण-क्विन् शक्-स्यन-द-डट-अटचः इत्येतेऽष्टौ प्रत्ययाभवन्ति।

उदाहरणम्— जनित्वः = मातापितरौ। दात्वः = यज्ञक्रिया। च्यौत्वः = शक्तिः। सृणिः = चन्द्रमाः, अंकुशः। वृशः = औषधम्। मत्स्यः = मीनः। षण्डः = नपुंसकम्। नटः = वंशावरोही। भरटः = कुलालः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायते जनयति वा स जनित्वः, मातापितरौ वा। यो ददाति यत्र वा स दात्वः, यज्ञकर्म वा। च्यवते गच्छतीति च्यौत्वम्, बलं वा।

\*१ हृदयम् = हृ + कयन् अत्र किडति चेति गुणनिषेधः।

सरतीति सृणिः, चन्द्रोऽङ्कुशो वा । वृणोतीति वृशः, ओषधिर्वा । माघतीति मत्स्यः, मीनो वा; स्त्रियां 'मत्सी, मत्स्या' । समतीति षण्डः, अकृतदारो वा । (बाहुलकात् सकारादेशो (अ० ६।१।६२) न । नमतीति नटः, वंशावरोहीति प्रसिद्धः । डित्वाटिलोपः । बिभर्तीति भरटः, कुलालो वा ॥

हिन्दीः— जनी आदि धातुओं से क्रमशः इत्वन् आदि प्रत्यय होते हैं ।

### १०६. अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥

अर्थः—अन्येभ्योऽपिधातुभ्यःइत्वनादयःप्रत्ययाभवन्ति ।

उदाहरणम्— पेट्वम् = पा पाने धातोः इत्वन्, अमृतम् । कच्छः = कच बन्धने शक् शाकमूलम् । सरटः = सृ गतौअटच् वायुः । ध्यात्वम् = ध्यै चिन्तायां त्वन् चिन्ता । हौत्नः = हुदानादनयोऽनण् यजमानः । लूनिः = लूञ् छेदने किनन् ब्रीहिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इत्वनादय इति शेषः । पीयते तत् पेट्वम्, अमृतं वा । कच्यते बध्यतेऽसौ कच्छः, शाकमूलं वा । सरतीति सरटः, वायुर्वा । ध्यायते तद् ध्यात्वम्, चिन्ता वा । जुहोतीति हौत्नः, यजमानो वा । लूयतेऽसौ लूनिः, ब्रीहिर्वा, इत्यादि ॥

हिन्दीः— अन्य धातुओं से भी इत्वनादि प्रत्यय होते हैं ।

### १०७. कुसेरुम्भोमेदेताः ॥

अर्थः— कुससंश्लेषणे इत्यस्माद्धातोः अच् प्रत्ययो भवति उम्भ उम ईत इत इत्येते क्रमशः आगमाश्च जायन्ते ।

उदाहरणम्— कुसुम्भम् = महारजनम् । कुसुमम् = पुष्पम् । कुसीदम् = व्याज इति प्रसिद्धम् । कुसितः = देशः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुस्यति श्लिष्यतीति कुसुम्भम्, महारजनं वा । कुसुमम्, पुष्पं वा । कुसीदम्, वृद्धिजीविका वा । कुसितः, देशो वा ॥

हिन्दीः— कुस धातु से अच् प्रत्यय होता है तथा उम्भ उम ईत इत ये क्रमशः आगम हो जाते हैं ।

### १०८. सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलांकुशचषालेत्वलपल्वल

धिष्ण्यशत्याः ॥

अर्थः—सानसि-वर्णसि-पर्णसितण्डुलांकुश-चषालइत्वलषत्वम्-धिष्ण्य-शत्या इत्येते शब्दा असि, उलच्, उशच्, आलच्, वलच् ण्य प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

चतुर्थः पादः

षण् सम्भक्तौ, वृञ् वरणे, पूपालनपूरणयोः, तडताडने, अंक लक्षणे, चष भक्षणे, इल स्वप्ने, पल गतौ, धिष प्रागल्भ्ये, शलगतौ धातुभिः क्रमशः सम्प्रयोगेण ।

उदाहरणम्—सानसिः = सुवर्णम् । वर्णसिः = नीरम् । पर्णसिः = जलसदनम् । तण्डुलः = तुषहीनोब्रीहिः । अंकुशः = शस्त्रविशेषः । चषालः = यूपकंकणम् । इल्वलः = तारकभेदः । पल्वलम् = लघुसरः । धिष्ण्यः = स्थानम्, भल्लुकः, अनलः, भवनम् । शल्यम् = शस्त्रविशेषः, विशिखाग्रभागः ॥

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सनोति ददाति सन्यते वा स सानसिः, हिरण्यं वा । असि प्रत्यय उपधावृद्धिश्च । वृणोतीति वर्णसिः, जलं वा । धातोर्नुक् । पिपर्तीति पर्णसिः, जलगृहं वा । पूर्ववत्सर्वम् । तण्डति ताडयति ताड्यते वा स तण्डुलः, तुषक्षरहितो ब्रीहिर्वा । उलच् । अंकते लक्षयति येन स अङ्कुशः, शस्त्रभेदो वा । उशच् । चषति भक्षयतीति चषालः, यूपकंकणं वा । (आलच्) । इलति स्वपितीति इल्वलः, नक्षत्रविशेषो वा । पलति गच्छतीति पल्वलम्, अल्पसरो वा । अत्रोभयत्र वलच्, (पूर्वत्र) गुणाभावश्च । धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति धिष्ण्यः, स्थानमृक्षोऽग्निरालयो वा । ऋकारस्येकारो वा ण्यप्रत्ययश्च । शलति गच्छतीति शल्यम्, शस्त्रविशेषो बाणाग्रभागो वा । (यत्) ।

हिन्दीः—सानसिः आदि शब्द अस्मि आदि प्रत्ययान्त निपातित हैं ।

१०६. मुशक्यविभ्यः क्लः ॥

अर्थः—मूङ् बन्धने, शक्लु शक्तौ, अबि शब्दे इत्येतेभ्यो धातुभ्यः क्लः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—मूलम् = कारणम्, तरुलता । शक्लः = प्रियम्बदः । अम्बलः = शब्दकरः, रसविशेषः । अम्लः = रसभेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भवते बध्नातीति मूलम्, ('मूली') इति प्रसिद्धम् । शक्नोतीति शक्लः प्रियंवदो वा । अम्बते शब्दं करोतीति अम्बलः ।

बाहुलकात्—अमति गच्छतीति अम्लः, रसविशेषो वा ।

हिन्दीः—मूङ् आदि धातुओं से क्ल प्रत्यय होता है ।

११०. माछाशसिभ्यो यः ॥

अर्थः—मा माने, शो तनूकरणे, शस हिंसायां इत्येतेभ्यो धातुभ्यो यः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— माया = छलं, मिथ्याजालः। छाया = प्रकाशावरणम्, उत्कोचकः। शस्यम् = प्रतिबिम्बी क्षेत्रपक्वमलं, गुणः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मात्यन्तर्भवतीति माया, छलं मिथ्याजालो वा। छद्यति प्रकाशमिति छाया, प्रकाशावरणमुत्कोचकप्रतिबिम्बो वा। शस्यते यत्तत् शस्यम्, क्षेत्रपक्वमन्नं गुणो वा।।

बाहुलकात्— अनिति जीवयतीति अन्यः, इतरो वा।।

हिन्दीः— माआदि धातुओं से य प्रत्यय होता है।

### १११. सुनोतेश्च।।

अर्थः— यः प्रवर्तते। षुञ्अभिषवे धातोः यः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्—सव्यम् = वामावयवः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुनोत्यभिषवतीति सव्यम्, वामभागो वा।।

हिन्दीः— षुञ् धातु से य प्रत्यय होता है।

### ११२. जनेर्यक्।

अर्थः— जनीप्रादुर्भवे धातोः यक् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्— जन्यम् = समरः, निर्वादः। जाया = पत्नी।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—या जायते यस्यां वा सा जाया, पत्नी। ये विभाषा (६।४।४३) इति व्यवस्थितविभाषया पत्न्यां जाया, नित्यमात्वम्, अन्यत्र—जन्यम्, निर्वादो युद्धं वा।।

हिन्दीः— जनीधातु से यक् प्रत्यय होता है।

### ११३. अध्न्यादयश्च।।

अर्थः—यगनुवर्तते। अमी शब्दा यगन्ता निपात्यन्ते।

उदाहरणम्— अध्न्यः१ = प्रजापालकः, गौः। कन्या२ = कुमारी। बन्ध्या = अप्रसूता। सन्ध्या३ = सायंकालः, प्रतिज्ञा। अहल्या४ = रात्रिः। ऋष्यः = मृगविशेषः। कश्यपः५ = मद्यम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यगन्ता निपाताः। यो न हन्यते न हन्तीति वा स अध्न्यः, प्रजापालको वा, अध्न्या गौर्वा। धातोरुपधालोपो, हस्य घत्वं च। सन्दधाति यस्यां वेलायां सा सन्ध्या, सायंकालः प्रतिज्ञा वा। आतो लोपः। सम्यग् ध्यायन्ति परं ब्रह्म यस्यां स सन्ध्या, इति तु स्त्रियां क्तिन् (अ० ३।३।६४)

इत्यधिकारे आतश्चोपसर्गे (३।३।१०६) इत्यङ् । कन्यते दीप्यते काम्यते गच्छति वा सा कन्या, कुमारी वा । बध्यतेऽसौ बन्ध्या, अप्रसूता वा ।।

बाहुलकात्—कौति शब्दयतीति कुड्यम्, भित्तिर्वा । धातोर्ङुक् । मन्यते येन तत् मध्यम्, द्वयोरन्तरालं वा । नस्य धः । उह्यते यत्तद् वह्यम्, मनुष्य (वाहन) विशेषे वा । अहति व्याप्नोतीति अहल्या, रात्रिर्वा । अहर्लीयतेऽस्योमिति व्युत्पत्यन्तरम् । पूर्वत्र धातोरलुगागमः । ऋषति गच्छतीति ऋष्यः, मृगभेदो वा । कष्टे गच्छति शास्ति वा स कश्यः, मद्यं वा । इत्यादि ।।

हिन्दीः— अघ्न्याआदि शब्द यक् प्रत्ययान्तनिपातित किये जाते हैं ।

### ११४. स्नामदिपद्यतिपृशकिभ्योवनिप् ।।

अर्थः—ष्णाशौचे, मदीहर्षे, पद गतौ, ऋगतौ, पृपालनपूरणयोः, शक्लु शक्तौ धातुभ्यः वनिप् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः— स्नावा = रसिकः, आनन्दी । मद्वा = स्वस्तिदः, ईश्वरः । पद्वा = मार्गः । अर्वा = अश्वः, वचनीयः । पर्व = ग्रन्थि । शक्वा = करः । शक्वरी = नदी, छन्दसोभेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्नाति शुच्यतीति स्नावा, रसिको वा । स्नावानौ, स्नावानः । माद्यतीति मद्वा, कल्याणदातेश्वरो वा । पद्यन्ते यत्र स पद्वा, पन्था वा । ऋच्छतीति अर्वा, अश्वो निन्द्यो वा । पिपतीति पर्व, ग्रन्थिर्वा । शक्नोतीति शक्वा, हस्ती वा । स्त्रियां डीब्रेफौ—शक्वरी, नदी छन्दोभेदो वा ।।

हिन्दीः— ष्णाआदिधातुओंसेवनिप् प्रत्यय होता है ।

### ११५. शीङ्क्रुशिरुहिजिक्षिसृधृभ्यःक्वनिप् ।

अर्थः—शीङ्शये, क्रुश आहाने रोदने च रुह बीज जन्मनि प्रादुर्भावे च,

\*१—अघ्न्यः = हन् + यक् अत्र धातो रूपधालोपो हकारस्य च घकारादेशो निपातनात् ।

२— कन्या = कम् + यक् अत्र मस्य नत्वम् ।

३— सन्ध्या = सम् + धा + यक् अत्र आतो लोपः ।

४— अहल्या = अह् + अलुक् + यक् अत्र धातोरलुगागमो निपातनात् ।

अह् + अल् + य ।

५—कश्यः = कश् + यक् = कश्यः ।

जिजये, शिक्षये, निवास गत्योः वा, सृ गतौ, धृ धारणे, धातुभ्यः क्वनिप् प्रत्ययो भवति। अग्रे क्वनिबनुवृत्तिः सूत्रत्रयेषु।

उदाहरणम्:—शीवा = अजगरः। क्रुश्वा = शृगालः। रुह्वा = तरुः। जित्वा = जेता। क्षित्वा = वायुः। सृत्वा = ब्रह्मा, कुलालः, प्रजापतिः, नृपः। धृत्वा = व्यापकः, सर्वेश्वरः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शेतेऽसौ शीवा, अजगरो वा। क्रोशतीति क्रुश्वा, शृगालो वा। रोहति बीजादुत्पद्यत इति रुह्वा, वृक्षो वा। जयतीति जित्वा, जयशीलः। क्षयति नाशयति क्षियति निवसति गच्छति वा स क्षित्वा, वायुर्वा। सरतीति सृत्वा, प्रजापतिर्वा। धारयतीति धृत्वा, व्यापको जगदीश्वरो वा। स्त्रियां—जित्वरी इत्यादि बोध्यम्।।

हिन्दी:— शीङ् आदि धातुओं से क्वनिप् प्रत्यय होता है।

११६. ध्याप्योः सम्प्रसारणं च।।

अर्थ:—ध्यैचिन्तायां, ओप्यायी वृद्धौ धातुभ्यां क्वनिप् प्रत्ययो भवति सम्प्रसारणं च जायते।

उदाहरणम्:— धीवा = कर्मकारः। पीवा = स्थूलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ध्यायतीति धीवा, कर्मकरो वा। स्त्रियां — धीवरी, मुत्स्याधानं पात्रम्। प्यायते वर्द्धतेऽसौ पीवा, स्थूलो वा। पीवरी तरुणी।

हिन्दी:— ध्यै व ओप्यायी धातुओं से क्वनिप् प्रत्यय होता है और सम्प्रसारण हो जाता है।

११७. अदेर्ध च।।

अर्थ:— अद भक्षणे धातोः क्वनिप् प्रत्ययो भवति धचादेशो जायते।

उदाहरणम्:—अध्वा = पन्थाः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अत्ति भक्षयतीति अध्वा, मार्गो वा।।

हिन्दी:— अद धातु से क्वनिप् प्रत्यय होकर धातु को धादेश हो जाता है।

११८. प्र ईरशदोस्तुट् च।।

अर्थ:—प्र पूर्वकं ईर गतौ, शदल् शातने धातुभ्यां क्वनिप् प्रत्ययो भवति तुडागमश्च जायते।



उदाहरणम्:— प्रेत्वा = समुद्रः । प्रशत्वा = सागरः । प्रेत्वरी = नदी । प्रशत्त्वरी = नदी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रेतेऽसौ प्रेत्वा, सागरो वा । (स्त्रियाम्—) प्रेत्वरी । प्रशीयतेऽसौ प्रशत्वा, समुद्रो वा । (स्त्रियाम्—) प्रशत्त्वरी, नदी ।

हिन्दीः— प्रपूर्वक ईर् व शद्लृ धातुओं से क्वनिप् प्रत्यय होकर तुडागम हो जाता है ।

११६. सर्वधातुभ्यः इन् ।।

अर्थः— वक्ष्यति “वर्णे बलिश्चाहिरण्यये” तावदिन्प्रवृत्तिः । समस्त-धातुभ्य इन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—पचिः = अनलः । तुण्डिः = महाराजः । वलिः = महाराजः । = वटिः = विभाजकः । मणिः = मूल्यवान् पाषाणः । वल्डिः = क्षत्रिया, जनपदः । यजिः = संगन्ता होता । मण्डिः = मुखावयवः । घ्राडिः = कुसुमवृन्दम् । काशिः = देशविशेषः । वाशि = दारुभेदिनी । घटिः = घटिका । घटी = घटिका । यतिः १ = संन्यासी । केलिः = क्रीडा । मसिः = मसी । कोटिः = संख्यावरणम्, अग्रावयवः । जटिः = जटाधारी । कटिः = शरीरमध्यम् । हलिः = कृषकः, कृषिसाधनम्, हेलिः = प्रहेलिः । पणिः = वणिजां वीथी । कलिः = कलहः, विग्रहः । नन्दिः = वृद्धिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पचति येन स पचिः, अग्निर्वा । तुण्डति छिनत्तीति तुण्डिः । वलते संवृणोतीति वलिः, महाराजो वा । वाटयति ग्रथ्नाति स वटिः, विभाजको वा । मणति शब्दयतीति मणिः, बहुमूल्यः पाषाणो वा । प्रशंशितो मणिर्मणिकः, तदेव ‘माणिक्यम्’ । वल्हते प्रधानो भवतीति वल्डिः, वल्हिका नाम क्षत्रिया जनपदो वा । यजतीति यजिः, संगन्ता होता वा । गण्डति स गण्डिः, वदनैकदेशो वा । ताडयतीति तडिः, पीडकः । घ्राडते विशेषेण हिनस्तीति घ्राडिः, पुष्पचयो वा । काश्यते दीप्यतेऽसौ काशिः, देशभेदो वा । तद्देशान्तर्गतत्वाद् वाराणसी नगरी काशिः, काशी । तस्य देशस्य राजा ‘काश्य’ । वाश्यते शब्दयतीति वाशिः, काष्ठभेदिनी वा । घटतेऽसौ घटिः, घटी । यततेऽसौ यतिः, नियमधारी संन्यासी वा । केलति चलती यस्यां सा केलिः, क्रीडावा । मस्यति परिणमते स मसिः मसी, पात्राञ्जनं वा । कुटतीति कोटिः, सङ्ख्यावरणमग्रभागो

वा । बाहुलकाद् गुणः । जटति सङ्घातं करोतीति जटिः, जटाधारी वा । कटतीति कटिः, कटी, शरीरमध्यं वा । हलति येन विलिखतीति हलिः, कृषीवलः कृषिसाधनं वा । हेलति विरुद्धं बहु भाषत इति हेलिः, प्रहेलिः, यः पणायति व्यवहरति स पणिः, (वणिग्वा ।) विपणिः, वाणिजां वीथी वा । कलन्ते स्पर्द्धमाना भाषन्ते यत्र स कलिः, कलहो विग्रहो वा । नन्दति यत्रेति नन्दिः, वृद्धिर्वा । इत्यादीन्यनेकान्युदाहरणानि सन्ति ।।

हिन्दीः—सब धातुओं से इन् प्रत्यय होता है ।

### १२०. ह्रपिषिरुहिवृतिविदिछिदिकीर्तिभ्यश्च ।।

अर्थः— ह्रहरणे, पिष पेषणे, रुहबीजजन्मनिप्रादुर्भावे च, वृतुवर्तने, विदसत्तायाम्, छिदिर् द्वैधी करणे, कृत संशब्दने इत्येतेभ्यो धातुभ्यः इन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— हरिः = सर्पः, भेकः, घोटकः, सिंहः, भानुः । पेषिः = वज्रः । रोहिः = व्रतः । वर्तिः = वर्तिका । वेदिः = यज्ञभूमिः । छेदिः = वर्धकिः छेत्ता । कीर्तिः = पुण्यम्, यशः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हरतीति हरिः, सर्पो मण्डूकोऽश्वः सिंहः सूर्यो वा । इगुपधात् कित् (उ० ४ । १२१) इति वक्ष्यते तद्बाधनार्थं पिष्यादीनां ग्रहणम् । तत्र हि कित्त्वाद् गुणनिषेधः प्राप्तः, स न स्यात् । पिनष्टि येन स पेषिः, वज्रो वा । रोहतीति रोहिः व्रतो वा । वर्तते सा वर्तिः, दीपोपकरणं वा । विद्यते या सा वेदिः, यज्ञभूमिर्वा । छिनतीति छेदिः, वर्धकिश्छेत्ता वा । कीर्त्यते संशब्द्यते सा कीर्तिः, पुण्यं यशो वा ।।

हिन्दीः— ह्र आदि धातुओं से इन् प्रत्यय होता है ।

### १२१. इगुपधात् कित् ।।

अर्थः— इगुपधाद् धातोः इन् प्रत्ययो भवति सच कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— कृषिः = खेतीति समाख्याता । ऋषिः = मन्त्रार्थद्रष्टा । रुचिः = दीप्तिः, इच्छा । शुचिः = शुद्धिः । लिपिः = लेखः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृष्यते विलिख्यते या सा कृषिः, 'खेती' इति प्रसिद्धा । ऋषति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स ऋषिः, मन्त्रार्थद्रष्टा वा ।

\* १ यतिः = यत् + इन् = यतिः ।

रुच्यते सा रुचिः, दीप्तिर्वा । शुच्यतीति शुचिः, शुद्धिर्वा । लिम्पतीति लिपिः, लेखो वा । बाहुलकात् बत्वे लिभिः, इत्यपि लिप्यर्थ एव । लिबिं करोतीति लिबकिरः । तूलते निष्कर्षतीति तूलिः, तूली; कूर्चिका, दध्यादिना सह पक्वः क्षीरविकारो वा ।

हिन्दीः— इगुपध धातुओं से इन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### १२२. भ्रमेः सम्प्रसारणञ्च ।।

अर्थः— भ्रमुचलनेधातोरिन् प्रत्ययो भवति स च कित्तसम्पद्यते धातोश्च सम्प्रसारणं जायते ।

उदाहरणम्— भृमिः = वयुः । भ्रमिः = वायुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भ्राम्यतीति भृमिः, वायुर्वा । बाहुलकात् भ्रमिः, इत्यपि सिद्धम् ।

हिन्दीः—भ्रमु धातु से इन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है तथा धातु को सम्प्रसारण होता है ।

### १२३. क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च ।।

अर्थः— क्रमु पादविक्षेपे, तमुकांक्षायां, शतिस्तम्भौ सौत्रौ धातु एभ्यो धातुभ्यः इन् प्रत्ययो भवति । एतेषामकारस्येदादेशो जायते ।

उदाहरणम्— क्रिमिः१ । तिमिः = मीनविशेषः । शितिः = कृष्णः, शुक्लः । स्तिभिः = सागरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्राम्यति पादान् विक्षिपतीति क्रिमिः, क्षुद्रजन्तुर्वा । सम्प्रसारणानुवृत्तेः कृमिः, इत्यपि । ताम्यत्याकाङ्क्षतीति तिमिः, मत्स्यभेदो वा । शितिस्तम्भौ सौत्रौ धातु । (शेतति वर्णयुक्तो भवतीति) शितिः, कृष्णः शुक्लो वा । स्तम्भनातीति स्तिभिः, समुद्रो वा ।।

हिन्दीः— क्रमुआदिधातुओं से इन् प्रत्यय होता है और धातुओं के अकार को इकारादेश हो जाता है ।

### १२४. मनेरुच्च ।।

अर्थः— मनज्ञाने धातोः इन् प्रत्ययो भवति । तस्यच उदादेशः सम्पद्यते ।

क्रिमिः = क्रम् + इन् अत्र धातो इदादेशे क्रिमिः ।

उदाहरणम्:—मुनिः = ज्ञानी, मननशीलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किदित्येव। मन्यते जानातीति मुनिः, मननशीलः।  
मुनिरियं ब्राह्मणी। बह्नादित्वात् मुनी। मुनेर्भावः कर्म वा 'मौनम्'।।

हिन्दी:— मनधातु से इन् होकर धातु के अ को उदादेश हो जाता है।

### १२५. वर्णेर्बलिश्चाहिरण्ये।।

अर्थ:— वर्णिः सौत्रधातुः। एतस्माद्इनिप्रत्ययो भवति वर्णेश्च वलिरादेशो जायते।

उदाहरणम्:— वलिः = राजकरः, स्वागतसामग्री, शरीरावयवः, हिरण्यवाच्येतु  
—वर्णिः = सुवर्णम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्णिः सौत्रो धातुः। वर्णयति स बलिः, राजकरः  
सत्कारसामग्री शरीरांगं वा। हिरण्ये तु वर्णिः, सुवर्णम्।।

हिन्दी:— वर्णि सौत्रिक धातु से इनि प्रत्यय होता है और वर्णि को बल  
आदेश हो जाता है।

### १२६. वसिवपियजिराजिब्रजिसदिहनिवाशिवादिवारिभ्य इच्।।

अर्थ:—वसनिवासे, वपबीज जन्मनि, यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु,  
राजूदीप्तौ, ब्रजगतौ, षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु, हन् हिंसागत्योः वाशृ  
शब्दे, वद व्यक्तायां वाचि, वार निवारणं इत्येतेभ्यो धातुभ्यः इज् प्रत्ययो  
भवति। निर्देक्ष्यत्यग्रे "कृञः उदीचां कारुषु"। तावदिच्चत्ययोऽनुवर्तते।

उदाहरणम्:— वासिः = छेदनवस्तु। वापि = वापी, जलाशयविशेषः।  
याजि = यष्टा। राजिः = राजी पंक्तिः। ब्राजिः = वायु समूहः। सादिः = सारथिः।  
निघातिः = लौहघाताधारा। वाशिः = अनलः। वादिः = प्राज्ञः। वारिः =  
गजबन्धनी, श्रङ्खला जलार्थे तुनपुंसकवारियथा।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वस्त आच्छादयति वसति वा स वासिः, छेदनवस्तु  
वा। वपन्ति यत्रेति वापिः, वापी, जलाशयभेदो वा। यजतीति याजिः, यष्टा वा।  
राजते दीप्यतेऽसौ राजिः, राजी, पङ्क्तिर्वा। राजीव पदम्। ब्रजतीति ब्राजिः,  
वायुसमूहो वा। सीदतीति सादिः, सारथिर्वा। हन्ति यया सा घातिः। 'निघातिः'  
लोहघाताऽधारा। वाश्यते शब्दयतीति वाशिः, अग्निर्वा। वादयति व्यक्तमुच्चारयति  
स वादिः, विद्वान् वा। वारयति निवारयतीति वारिः, गजबन्धनी शृङ्खला वा। जले

नपुंसकम्—वारि ।

बाहुलकात्— हरतीति हारिः, पथिकसंसृतिर्वा । 'संप्रहारिः' योद्धा । खटति काङ्क्षतीति खाटिः, शुष्कव्रणस्थानं वा ॥

हिन्दीः— वस आदि धातुओं से इच् प्रत्यय होता है ।

१२७. नहोभश्च ॥

अर्थः— णहबन्धनेधातोः इच् प्रत्ययो भवति धातोश्च भादेशो जायते ।

उदाहरणम्— नाभिः१ = केन्द्रम्, क्षत्रियः, प्राण्यंगम्, नाभी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नह्यति दुष्टं नाडीर्वा बध्नातीति नाभिः, क्षत्रियः प्राण्यंगं वा । नाभी—डीष् ॥

हिन्दीः— णह धातु से इच् प्रत्यय होता है और धातु को भादेश हो जाता है ।

१२८. कृषेवृद्धिश्छन्दसि ॥

अर्थः— कृषविलेखने धातोः इच् प्रत्ययो भवति वेद विषये वृद्धिश्च सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— कार्षिः = पालकः भाषायां तु कृषिरेव

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कर्षत्याकर्षतीति कार्षिः, अग्निर्वा । लोके तु—'कृषिः' ॥

हिन्दीः— वेद में कृष धातु से इच् प्रत्यय होता है और धातु को वृद्धि हो जाती है ।

१२९. श्रः शकुनौ ।

अर्थः— शृ हिंसायां धातोः पक्षिवाच्ये इच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्— शारिः = वाचाला मैना इति भाषायाम् । शारिका =

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शृणाति हिनस्तीति शारिः, पक्षी । स्त्री—शारिका ।

शुकशारिकम् इति पक्ष एकवद्भावः । (परिणामेन) शारीन् हन्तीति शारिका, वा ।

शकुनेरन्यत्र शरि, हिंस्रः । कपिलकादित्वाद् (द्र० — अ० ८।२।१८ वा०)

लत्वम्—शलिः, आपिशलिर्मुनिविशेषः, तस्यापत्यमापि शलिः । बाह्यदित्वाद्

(द्र०—अ० ४।१।६६) इज् ।

हिन्दीः— पक्षिवाच्य होने पर श्रुधातुसे इच् प्रत्यय होता है ।

\*१ नाभिः = नह + इच् अत उपाधाय इति वृद्धि र्हस्य च भत्वम् ॥

## १३०. कृञ् उदीचां कारुषु ।।

अर्थः— डृकृञ् करणेधातोरुदीचामाचार्याणां मतेन इञ् प्रत्ययो भवति शिल्पिन्यभिधेये ।

उदाहरणम्:— कारिः = शिल्पी, कर्ता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—करोतीति कारिः, शिल्पी । शिल्पिनोऽन्यत्र—करिः, (हस्ती) ।।

हिन्दी:— डुकृञ् धातु से इञ् प्रत्यय होता है, उदीच्य आचार्यों के मत में यदि शिल्पिवाच्य होतो ।

## १३१. जनिघसिभ्यामिण् ।।

अर्थः— इणिति वर्तते "अङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्चेति यावत् ।। जनीप्रादुर्भावे, घसअदनेधातुभ्यामिण् प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्:— जनिः = जन्म । घासिः = वहिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायतेऽसौ जनिः, जननं वा । (जनिवध्योश्च (अ० ७ ।३ ।३५) इति वृद्धयभावः ।) घसति भक्षयतीति घासिः, अग्निर्वा । प्रत्ययान्तरकरणं स्वरार्थम् ।।

बाहुलकात्— शल्यते प्राप्यतेऽसौ शालिः, व्रीहयो वा । पलति गच्छतीति पालिः, खड्गादेरग्रभागो वा ।।

हिन्दी:— जनि तथा घस धातुओं से इण् प्रत्यय होता है ।

## १३२. अज्यतिभ्यां च ।।

अर्थः— अजगतिक्षेपणयोः, अतसातत्यगमनेधातुभ्यामिण् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:— आजिः = समरः । आतिः = तित्तिरिविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अजन्ति क्षिपन्ति शस्त्रादिकं यत्र स आजिः, संग्रामो वा ।। अतति निरन्तरं गच्छतीति आतिः, तित्तिरिभेदो वा । शोभना आती 'स्वाती' नक्षत्रम् ।।

हिन्दी:— अज तथा अत धातुओं से इण् प्रत्यय होता है ।

## १३३. पादे च ।।

अर्थः— अज अत इत्येताभ्यां धातुभ्यामिण् प्रत्ययो भवति पादशब्दोपपदे सति ।

उदाहरणम्— पदाजिः = पदगः । पदातिः = पदगः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— पद्भ्यामजत्यतति वा स पदाजिः, पदातिः पदगः ।  
पादस्य पदाज्यातिज० (६।३।५१) इति सूत्रेण पदादेशः ।

हिन्दीः— पादपूर्वक अज तथा अत धातुओं से इण् प्रत्यय होता है ।

### १३४. अशिपणाय्योरुडायलुकौच ।।

अर्थः— अशूङ् व्याप्तौ, पण व्यवहारे स्तुतौच धातुभ्यां इण् प्रत्ययो यथासंख्यमशूङ्धातोरुडागमो जायते पणाययतेश्चायलुक् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्— राशिः = समूहः । पाणिः = करः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— अशेरुट्, पणायतेरायलुक्, अश्नुते व्याप्नोतीति राशिः, समूहो वा । पणायति व्यवहरति येन स पाणिः, हस्तो वा ।।

हिन्दीः— अशूङ् व पणसे इण् प्रत्यय होता है तथा क्रमशः अशूङ् कोरुडागम और पणायति के आयका लुक् हो जाता है ।

### १३५. वातेर्डिच्च ।।

अर्थः— वा गतिगन्धनयोः धातोरिण् प्रत्ययो भवति स च डिज्जायते ।

उदाहरणम्— विः = पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— वाति वायुवद् गच्छतीति विः, पक्षी वा ।  
डित्त्वादाकारलोपः । अटन्ति वायोऽस्यामिति अटविः, नगरी । पदस्य विः (पदविः ।  
स्त्रियां—) पदवी ।।

हिन्दीः— वा धातु से इण् प्रत्यय होता है और वह डित् हो जाता है ।

### १३६. प्रे हरतेः कूपे ।।

अर्थः— प्र पूर्वक ह् हरणे धातोः कूपेऽभिधेये इण् प्रत्ययो भवति स च डिज्जायते ।

उदाहरणम्— प्रहिः = कूपः, कूपादन्यत्रतु प्रहरिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः— इण् — डित् । प्रहरन्ति जलमस्मात् स प्रहिः कूपो वा । कूपादन्यत्र—प्रहरिः ।।

हिन्दीः— कूपवाच्य अर्थ में प्र पूर्वक ह् धातु से इण् होता है और वह डित् हो जाता है ।

१३७— नौ व्यो यलोपः पूर्वस्य च दीर्घः ॥

अर्थः— नि उपपदेव्यञ् संवरणे धातोरिण् प्रत्ययोभवति नेदीर्घो यलोपश्च जायते ।

उदाहरणम्:— नीविः = ग्रन्थिः, नीवी मूलधनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पूर्वस्योपसर्गस्य दीर्घः । निवीयते संत्रियते सा नीविः, नीवी, मूलधनं दुकूलबन्धनं वा ॥

हिन्दीः— निपूर्वक व्येञ् धातु से इण् प्रत्यय होता है । नि को दीर्घ और य का लोप हो जाता है ।

१३८— समाने ख्यः स चोदात्तः ॥

अर्थः— समान शब्दोपपदे ख्याप्रकथने धातोरिण्प्रत्ययो भवति स च इण् डित् सम्पद्यते, लोपश्च समानस्य च उदात्तः सभावः ।

उदाहरणम्:—सखा =<sup>१</sup> सुहृत्, सहायः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—समानं ख्यातीति सखा, मित्रं सहायो वा । सखायौ, सखायः ॥

हिन्दीः—समानपूर्वक ख्या धातु से इण् प्रत्यय होता है । और वह इण् डित् होता है तथा य का लोप व समान को स उदात्त हो जाता है ।

१३९—आडि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च ॥

अर्थः— आङ्पूर्वकं श्रिञ् सेवायां, हनहिंसागत्योः धातुभ्यामिण् प्रत्ययो भवति स च डित् सम्पद्यते आडो ह्रस्वादेशश्च ।

उदाहरणम्:— अश्रिः = कोणः । अहिः = सर्पः, मेघः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आश्रयति तत्रेति अश्रिः, कोणो वा । आहन्तीति अहिः, मेघः सर्पो वा । अत्राङुपसर्गस्यैव ह्रस्वत्वम् (डिदनुवर्तनाडिटलोपः, 'स चोदात्तः' इत्यनुवर्तनाद् ह्रस्वीभूतस्याङ उदात्तत्वम् च ॥

हिन्दीः—आङ्पूर्वक श्रिञ् व हन् से इण् प्रत्यय होता है । और वह डित् हो जाता है तथा आङ् को ह्रस्वादेश हो जाता है ।

\* १ सखा = समान + ख्या + इण् अत्र समान शब्दस्य सभावः इणो डिद् भावेन ख्या धातोऽपिलोपे सति सखि + सु सखा ।



१४०— अच इः ।।

अर्थः— वक्ष्यति कुण्ठिकम्योर्नलोपश्चेतिसूत्रं तावद् इप्रत्ययाधिकारः ।।  
अजन्ताद् धातोरिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—रविः = सूर्यः । कविः = विद्वान्, क्रान्तदर्शी । पविः = वज्रम्,  
हीरकम् । अरिः = शत्रुः । अलिः = भ्रमरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अजन्ताद्धातोरिः प्रत्ययः । लुनाति छिनतीति लविः,  
छेदको लोहो वा । पुनातीति पविः, वज्रं हीरकं वा । तरति येन स तरिः,  
वस्त्रादिस्थापनभाण्डं (नौका) वा; स्त्रियां तरी । रौतीति रविः, सूर्यो वा । कौति  
शब्दयत्युपदिशति स कविः, मेधावी विद्वान् क्रान्तदर्शनो वा; स्त्रियां कवी ।  
ऋच्छति प्राप्नोति परपदार्थानिति अरिः, शत्रुर्वा । कपिलकादित्वात् (द्र०—अ०  
८/२/१८ वा०) लत्वे अलिः, भ्रमरो वा । नखेनातिक्रामतीति नखयति, तस्मात्  
नखिः । सूचयतीति सूचिः, (स्त्रियां सूची) इत्यादि ।।

हिन्दीः—अजन्त धातुओं से इ प्रत्यय होता है ।

१४१— खनिकष्यज्यसिवसिवनिसनिध्वनिग्रन्थिचरिभ्यश्च ।

अर्थः—खनु अवदारणे, कषहिंसायां, अञ्जू व्यक्तिप्रक्षणकान्तिगतिषु,  
असुक्षेपणे, वस आच्छादने, वन सम्भक्तौ, षण्णुदाने, ध्वनशब्दे, ग्रन्थसन्दर्भे,  
चरगतिभक्षणयोः इत्येतेभ्यो धातुभ्य इः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—खनिः = धनस्थानम् खानिः, खानइतिभाषायाम् । कषिः =  
पीडकः । अंजिः = प्रेषयिता, प्रेषकः । असिः = कृपाणः । वसिः = पटः । वनिः  
= अग्निः । सनिः = अध्येषणम् । ध्वनिः = शब्दः । ग्रन्थिः = पर्व चरिः = पशुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खनति येन खन्यते यत्रेति वा स खनिः, (कुददालो)  
धनस्थानं वा । बाहुलकाद्दीर्घत्वे खानिः इत्यपि । कषति हिनस्तीति दषिः,  
हिंसको वा । अनक्ति व्यनक्ति कार्यमिति अञ्जिः प्रेषणकर्ता । (स्त्रियाम्)  
डीष्—‘अञ्जी’ मंगलार्थः । अस्यति क्षिपत्यनेनेति असिः, खड्गो वा । वस्त  
आच्छादयत्यनेनेति वसिः, वस्त्रं वा । वनति संभजतीति वनिः, अग्निर्वा ।  
धान्यवनिः धान्यराशिः । वन्यते याच्यत इति वनिः, तं वनिं याचनमिच्छतीति  
वनीयति, तदन्ताण्ण्वुल् वनीयकः प्रार्थकः । सनोति ददातीति सनिः, अध्येषणं  
वा । ध्वन्यत उच्चार्यते स ध्वनिः, शब्दो वा । यं ग्रन्थाति समुदेति स ग्रन्थिः पर्व ।

चरतीति चरिः, पशुर्वा ।।

हिन्दीः—खनु आदि धातुओं से इ प्रत्यय होता है ।

### १४२— वृतेश्छन्दसि ।।

अर्थः— वृतु वर्तने धातोश्छन्दसिविषये इः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—वर्तिः = वर्तिका, योगक्रिया, साधनद्रव्यं, सरणिः, दीप-  
बत्तीतिभाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्तते तत्र येन वा स वर्तिः, योगक्रिया साधनद्रव्यं  
मार्गो वा ।।

हिन्दीः—वृतु धातु से वेदविषयमें इ प्रत्यय होता है ।

### १४३— भुजः किच्च ।

अर्थः— भुजपालनाभ्यवहारयोः, धातोः इः प्रत्ययो भवति स च  
कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः— भुजिः = पावकः (राजा, पिता, परमेश्वरः)

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भुनक्ति पालयति भक्षयति वा स भुजिः, अग्निर्वा ।।

हिन्दीः—भुजधातु से इ प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

### १४४— कृगृशृपृकुटिभिदिछिदिभ्यश्च ।

अर्थः— कृ विक्रमे, गृनिगरणे, शृ हिंसायां, पृ पालनपूरणयोः, कुटि  
कौटिल्ये, भिदिर विदारणे, छिदिर द्वैधीकरणे धातुभ्य इः प्रत्ययो भवति स  
च किज्जायते ।।

उदाहरणम्ः—किरिः = वराहः । गिरिः = गोत्रम्, नेत्ररोगः, जलदः, अचलः ।  
शिरिः = मारकः । पुरिः = नगरं नदी । कुटिः = कुटी, पर्णशाला, शाला । भिदिः  
= वज्रम् । छिदिः = परशुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किदिति वर्तते । किरतीति किरिः, वराहो वा ।  
गिरति गृणाति वा स गिरिः, गोत्रम् अक्षिरोगः पर्वतो मेघो वा । शृणातीति शिरिः  
हन्ता । पिपर्तीति पुरिः, नगरं नदी वा । कुटतीति कुटिः, कुटी, शाला वा । भिनन्ति  
येन स भिदिः, वज्रं वा । छिनन्त्यनेन स छिदिः, परशुर्वा ।

बहुलवचनात्—तरति प्लवतेऽसौ तित्तिरिः, पक्षिभेदो वा । 'तृ' धातोरिः  
प्रत्ययः, स च कित्, सन्वत्कार्यमभ्यासस्य तुगागमश्च ।।

हिन्दीः—कृ आदि धातुओं से इ प्रत्यय होकर कित् हो जाता है।

१४५— कुण्ठिकम्प्योर्नलोपश्च ।।

अर्थः— कुठि प्रतिघाते कम्प चलने धातुभ्यामिः प्रत्ययो भवति नकारस्य च लोपो जायते ।।

उदाहरणम्ः—कुठिः = तरुः, पर्वतः । कपिः = मर्कटः, वर्णविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुण्ठति गतिं प्रतिहन्तीति कुठिः, पर्वतो वृक्षो वा । कम्पतेऽसौ कपिः, वानरो वर्णभेदो वा । कपिवर्णमस्यास्तीति 'कपिशः' कपिलवर्णः । लोमादिपाठाद् (द्र०—अ० ५/२/१००) अत्र मत्वर्थीयः शप्रत्ययः ।।

हिन्दीः—कुठि तथा कम्प धातुओं से इ प्रत्यय होता है और नकार का लोप हो जाता है।

१४६— सर्व धातुभ्यो मनिन् ।

अर्थः—निर्दिष्टमग्र "आशिशकिभ्यां" इति तावन्मनिन् प्रवर्त्तते । समस्त धातुभ्यो मनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—कर्म = क्रिया । चर्म = त्वक् । भस्म = भसितम् । जन्म = जननम् । शर्म = सुखम्, सदनम् । हेम = स्वर्णम् । श्लेष्मा = कफः । तर्म = यूपाग्रम् । स्थाम = बलम् । दाम = स्रक्, माला । छद्म<sup>१</sup> = ब्याजः, कपटम्, माया । सुत्रामा = सुरक्षकः । ऊष्मा = ग्रीष्मर्तुः, वाष्पः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्रियते तत् कर्म, क्रिया वा । अर्द्धर्चादित्वाद् (द्र०—अ० २/४/३१) उभयलिङ्ग कर्मशब्दः—कर्माणं कुरुते शुभम् । चरति गच्छति येन तत् चर्म प्रसिद्धम् । भसितं दीपितमिति यत्तद् भस्म । जायते यत्र तत् जन्म उत्पत्तिः । शृणातीति शर्म, सुखं गृहं वा । हिनोति वर्धते येन तत् हेम, सुवर्णं वा । श्लिष्यतीति श्लेष्मा, कफोद्भावो वा । श्लेष्माऽस्यास्तीति पामादित्वाद् (द्र०—अ० ५/२/१००) मत्वर्थे नः प्रत्ययः 'श्लेष्मणः' । सिध्मादित्वात् (द्र०—अ० ५/२/६७) लः 'श्लेष्मलः' । तरतीति तर्म, यूपाग्रं वा, तर्मणी तर्माणि । तिष्ठति येन तत् स्थाम, बलं वा, स्थामनी । ददातीति दाम, स्रग्वा । छादयतीति छद्म, माया वा । इस्मन्० (अ० ६/४/६७) इति ह्रस्वत्वम् । सुष्ठु त्रायत इति सुत्रामा । ओषति दहतीति उष्म, अन्येषामपि० (अ० ६/३/१३६) इति दीर्घे ऊष्मा,

\* १ छद्म छद् + मनिन् = छद्म ।

ग्रीष्मर्तुर्वाष्पो वा ।।

हिन्दी:—सब धातुओं से मनिन् प्रत्यय होता है ।

१४७— बृहेर्नोऽच्च ।।

अर्थ:— बृहि वृद्धौ धातोः मनिन् प्रत्ययो भवति नस्य च अत्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—ब्रह्म = ईश्वरः, वेदः, तत्त्वं, तपः, अन्नम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—बृंहति वर्धते तद् ब्रह्म, ईश्वरो वेदस्तत्त्वं तपो वा ।

हिन्दी:—बृहि धातु से मनिन् प्रत्यय होता है और न को अत् हो जाता है ।

१४८— अशिशकिभ्यां छन्दसि ।।

अर्थ:— अशूङ् व्याप्तौ, शक्लु शक्तौ धातुभ्यां वेदविषये मनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—अश्मा = पाषाणः, मेघः । शक्मा = भानुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नात्यश्नुते व्याप्नोति वा स अश्मा, मेघः पाषाणो वा । भाषायामपि दृश्यते—अश्मानं दृषदं मन्ये । शक्नोतीति शक्मा, सूर्यो वा ।।

हिन्दी:—अशूङ् व शक्लु धातुओं से वेद विषय में मनिन् होता है ।

१४९— हृभृधृसृस्तृश्रृभ्य इमनिच् ।।

अर्थ:—हृञ् हरणे, भृञ् भरणे, धृञ् धारणे, सृ गतौ, स्तृञ् आच्छादने शृ हिंसायाम् इत्येतेभ्यो धातुभ्यः इमनिच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—हरिमा = समयः । भरिमा = वंशः । धरिमा = रूपम् । सरिमा = पवनः । स्तरिमा = तल्पम् । शरिमा = प्रसवः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—छन्दसीति वर्तते । हरति स हरिमा, कालो वा । भर्तुं योग्यो भरिमा, कुटुम्बं वा । ध्रियत इति धरिमा, रूपं वा । सरतीति सरिमा, वायुर्वा, स्तीर्यत आच्छाद्यत इति स्तरिमा, तल्पं वा । शृणातीति शरिमा, प्रसवो वा ।।

हिन्दी:—हृ आदि धातुओं से इमनिच् प्रत्यय होता है ।।

१५०—जनिमृङ्भ्यामिमनिन् ।।

अर्थ:—इमनिन् सूत्रद्वयोरग्रे प्रवर्तते । जनी प्रादुर्भावे, मृङ्प्राणत्यागे धातुभ्यां इमनिन् प्रत्ययो भवति वेदविषये ।

उदाहरणम्:—जनिमा = जनुः । मरिमा = मृत्युः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—छन्दसीत्यनुवर्तते । जायत इति जनिमा, जन्म ।  
प्रियत इति मरिमा मृत्युः ॥

हिन्दीः—जनी तथा मृङ् धातुओं से इमनिन् प्रत्यय होता है वेद विषय  
में ।

१५१— वेजः सर्वत्र ॥

अर्थः— वेज् तन्तुसन्ताने धातो वेदे लोके च इमनिन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—वेमा = तन्तुवायदण्डः पटनिर्मितिसाधनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वयति वस्त्राणि येन स वेमा, तन्तुवायदण्डः  
वस्त्रनिर्माणसामग्री वा । सर्वत्र वचनाच्छन्दसीति निवृत्तम् ॥

हिन्दीः—वेद व लोक में वेज् धातु से इमनिन् प्रत्यय होता है ।

१५२— नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन् ॥

अर्थः—म्नाऽभ्यासे, षिञ् बन्धने, व्येज् संवरणे, रुशब्दे, लूज् छेदने, पा  
पाने, ध्यै चिन्तायां धातुभ्यो यथासंख्यं नामन्, सीमन्, व्योमन्-रोमन् ध्यामन्  
इत्येते शब्दा मनिन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्ः—नाम = संज्ञा । सीमा = अवधिः । व्योम = नभः । रोम =  
शरीरकेशः । लोम = शरीर केशः । पाप्मा = पापम् । ध्याम = परिमाणम्, वर्चः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सप्तामी मनिनन्ता निपात्यन्ते । म्नायतेऽभ्यस्यते  
येन तत् नाम संज्ञा । (निपातनाद् धातोर् 'ना' आदेशः, मकारलोपो वा ।) स्वार्थे  
वार्तिकेन धेयट्, नामैव 'नामधेयम्' । सिनोति बध्नातीति सीमा, अवधिर्वा ।  
(धातोर्दीर्घत्वम् ॥) व्ययति संवृणोतीति व्योम, अन्तरिक्षं वा । (धातोरेकारस्योत्त्वम्)  
रौति शब्दयतीति रोम । लूयते छिद्यते तत् लोम, गात्रकेशा वा । पिबतीति पाप्मा,  
किल्बिषं वा । धातोः पुक् । ध्यायते स ध्यामा, परिमाणं तेजो वा ॥

बाहुलकात्—यक्षयति पूजयतीति यक्ष्मा, राजरोगो वा । सुवति प्रेरयतीति  
सोमा, चन्द्रो वा । हूयतेऽसौ होमा, आहुतिर्वा । दध्नाति यद्यत्र वेति धाम, स्थानं  
तेजो वा ॥

हिन्दीः—नामन् आदि शब्द मनिन् प्रत्ययान्त निपातित किये जाते हैं ।

१५३— मिथुने मनिः ।

अर्थः— यत्रोपसर्गो धातुवाच्येन सह सम्बद्धः तन्मिथुनं नाम । तस्मिन्

सति म्ना, सिञ्ज्, व्येज्, रु, लूज्, पा ध्ये इत्येतेभ्यो धातुभ्यो मनिः प्रत्ययो भवति-  
स्वर भेदार्थोऽयं नियमः ।

उदाहरणम्:—सुशर्मा = राजविशेषः । सुधर्मा = श्रेष्ठधर्मशाली ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यत्रोपसर्गो धातुक्रियया सम्बद्धस्तन् मिथुनम्,  
तस्मिन्, सत्युक्तेभ्यो वक्ष्यमाणेभ्यश्च धातुभ्यो मनिः प्रत्ययः स्यात्, नः तु मनिन् ।  
स्वरभेदार्थो नियमः । सुष्ठु शृणातीति सुशर्मा, राजविशेषो वा । सुधरतीति  
सुधर्मा इत्यादि ॥

हिन्दी:—उपसर्गपूर्वक म्ना आदि धातुओं से मनि प्रत्यय होता है ।

१५४— सातिभ्यां मनिन्मनिणौ ।

अर्थः— षो अन्तकर्मणि, अतसातत्यगमने धातुभ्यां यथासंख्यं मनिन्  
मनिण् प्रत्ययौ भवतः ।

उदाहरणम्:—साम = सामवेद विशेषः । आत्मा<sup>१</sup> = जीवः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्यति कर्माणि समापयतीति साम, वेदभेदो वा ।  
अतति निरन्तरं कर्मफलानि प्राप्नोति वा स आत्मा । आत्मने हितम्  
'आत्मनीनम्' ॥

हिन्दी:—षो तथा अत् धातुओं से क्रमशः मनिन् मनिण प्रत्यय होते हैं ।

१५५— हनिमशिभ्यां सिकन् ।

अर्थः— हन हिंसागत्योःमश शब्दे रोषकृते च धातुभ्यां सिकन् प्रत्ययो  
भवति ।

उदाहरणम्:—हंसिका = वरटा । मक्षिका = मक्खीति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हन्तीति हंसिका, हंसस्त्री वा । मशति शब्दयति रोषं  
करोति वा सा मक्षिका, प्रसिद्धा जातिर्वा ॥

हिन्दी:— हन् व मश् धातुओं से सिकन् प्रत्यय होता है ।

१५६—कोररन् ।

अर्थः—कु शब्दे धातोः अरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—कवरः = पाठकः ।

\*१ आत्मा = अत् + मनिण्

आत्मन् अत्र णित्वाद् वृद्धिः ।

चतुर्थः पादः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कौत्युपदिशतीति कवरः, पाठको वा । केशविन्यासः 'कबरी' । अन्यत्र 'कबरा' कन्या पाठिकेत्यर्थः ॥

हिन्दीः—कुधातु से अरन् प्रत्यय होता है ।

१५७— गिर उडच् ॥

अर्थः—गृ निगरणे धातोः उडच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—गरुडः = पक्षिविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गिरति निगलतीति गरुडः, पक्षिभेदो वा ॥

हिन्दीः—गृ धातु से उडच् प्रत्यय होता है ।

१५८— इन्देः कमिन्नलोपश्च ।

अर्थः— इदि परमैश्वर्ये धातोः क्मिन् प्रत्ययो भवति धातोर्नकारस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्—इदम् प्रत्यक्षविषयबोधकः, सर्वनामसंज्ञकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—इन्दति परमैश्वर्यहेतुर्भवतीति इदम्, प्रत्यक्षविषयबोधकः सर्वनामसंज्ञको वा ॥

१५९— कायतेर्डिमिः ॥

अर्थः— कै शब्दे धातोः डिमिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—किम् = प्रश्नवाच्यर्थः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कायति शब्दयतीति किम्, प्रश्नाद्यर्थे वा ॥

हिन्दीः—कै धातु से डिमि प्रत्यय होता है ।

१६०— सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन् ।

अर्थः— सिविमुच्योष्टे रुचेति ष्ट्रन् वर्तते । सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—वस्त्रम् = पटः, वस आच्छादने । अस्त्रम् = शस्त्रविशेषः, असु क्षेपणे । छत्रम् = छाता इति भाषायाम्, छद आवरणे ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वस्त आच्छाद्यत इति वस्त्रम् । अस्यति क्षिपतीति अस्त्रम् । छादयति धर्मादिकमपवारयतीति छत्रम् इति प्रसिद्धम् । इस्मन्त्रन्० (अ० ६/४/६७) इति सूत्रेण ह्रस्वादेशः । पतति यो गच्छति येन वा तत् पत्रम्, वाहनं वा । राजतेऽसौ राष्ट्रः, राज्यं देशो वा जातिविशेषो वा ।

अन्येऽपि—गच्छत्यनया सा गन्त्री, महच्छकटं वा । पिबत्यनेन तत् पात्रम् ।

पाति रक्षतीति पात्रः, सज्जनो वा । (पात्री ब्राह्मणी) । दशति यया सा दंष्ट्रा, दन्तो वा इत्यादि ॥

हिन्दी:—समस्त धातुओं से ष्टन् प्रत्यय होता है ।

### १६१— भ्रस्जिगमिनमिहनिविश्यशांवृद्धिश्च ॥

अर्थ:—भ्रस्ज पाके, गम्लु गतौ, णम प्रहवत्वे शब्दे च, हन हिंसागत्योः विश प्रवेशने, अशूङ् व्याप्तौ इत्येतेभ्यो धातुभ्यः ष्टन् प्रत्ययो भवति धातोर्वृद्धिश्चजायते ।

उदाहरणम्:—भ्राष्ट्रः = अम्बरीषः, गान्त्रम् = शकटम् । नान्त्रम् = स्त्रोत्रं । हान्त्रम् = मृत्युः । वैष्ट्रम् = लोकः । <sup>१</sup>आष्ट्रम् = आकाशः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भृज्जति यत्रेति भ्राष्ट्रः, अम्बरीषो वा । गच्छति येन तत् गान्त्रम्, शकटं वा । नमति येन तत् नान्त्रम्, स्त्रोत्रं वा । हन्यते तत् हान्त्रम्, मरणं वा । विशन्ति यत्रेति वैष्ट्रम्, लोको वा । अश्नुते व्याप्नोतीति आष्ट्रम्, आकाशो वा । (तितुत्रतथ० अ० ७/२/६ इतीग्निषेधः ॥)

हिन्दी:—भ्रस्ज आदि धातुओं से ष्टन् प्रत्यय होता है और धातुओं को वृद्धि हो जाती है ।

### १६२— दिवेद्युच्च ॥

अर्थ:—दिवु क्रीडाद्यर्थे धातोः ष्टन् प्रत्ययो भवति दिवेः = द्युद् आदेशो वृद्धिश्च सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—द्यौत्रम् = अन्तरिक्षम्, प्रकाशः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वृद्धिरित्यनुवर्तते । दीव्यति द्योतते प्रकाशते तद् द्यौत्रम्, (ज्योतिर्वा) ॥

हिन्दी:—दिवु धातु से ष्टन् प्रत्यय होता है और दिवि को द्युद् आदेश व वृद्धि हो जाती है ।

### १६३— उषिरवनिभ्यांकित् ।

अर्थ:—उषदाहे, खनुअवदारणे धातुभ्यांष्टन् प्रत्ययो भवति स च किज्जायते ।

\*१ आष्ट्रम् = अश् + ष्टन् अत्रास्मादेव सूत्राद् धातोर्वृद्धिस्तथा "ष्टुनाष्टुः" इत्यनेन शस्य मूर्धन्यादेशे रूपसिद्धिः ॥



उदाहरणम्:—उष्ट्रः<sup>१</sup> = क्रमेलकः, महिषः, ककूदनदनडान। खात्रम् = गर्तम्, खनित्रम्, सरः, सूत्रम्, वनम् विस्मयोत्पादकमयम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ओषति दहतीति उष्ट्रः, पशुजातिभेदो वा। खन्यते तत् खात्रम्, खनित्रं जलाधारविशेषो वा। जनसनखनां० (अ० ६/४/४२) इत्यात्वम्।

हिन्दी:—उष तथा खनु धातुओं से ष्ट्रन् प्रत्यय होता है और कित् होता है।

### १६४—सिविमुच्योष्टेरु च।

अर्थः— षिवु तन्तु संताने, मुचिकल्कने धातुभ्यां ष्ट्रन् प्रत्ययो भवति धातोष्टेश्च ऊ आदेशो जायते।

उदाहरणम्:—सूत्रम् = तन्तुः, शास्त्रैकदेशः, यज्ञोपवीतम्, पुत्तलिकासूत्रम्, संक्षिप्तविधिः, सूत्रग्रन्थः। मूत्रम् = प्रस्रावः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सीव्यति येन यदर्थं बध्नाति वा तत् सूत्रम्, तन्तुः शास्त्रैकदेशो वा। मुच्यते यत्तत् मूत्रम्, प्रस्रावो वा।।

हिन्दी:—षिवु तथा मुचि धातुओं से ष्ट्रन् प्रत्यय होता है और धातु के टि भाग को ऊ आदेश होता है।

### १६५—अमिचिमिशसिभ्यः कत्रः।

अर्थः— अम गतौ, चित्रं चयने, डुमिञ् प्रक्षेपणे शसुहिंसायां इत्येतेभ्यः धातुभ्यः कत्रः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:—अन्त्रम् = उदरनाडी। चित्रम् = आलेखः, कान्ताभूषणम्, विशिष्टछविः, आश्चर्यम् साम्प्रदायिकतिलकम्, गगनम्, कलंकम्। श्वेतकुष्ठम्। मित्रम् = वयस्यः, मित्रराष्ट्रम्, पार्श्ववर्तीभूपः। शस्त्रम् = आयुधम्, उपकरणम्, अयः, स्तोत्रम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अमति जानाति प्राप्नोति येन तत् अन्त्रम्, उदरनाडी वा। चीयते तत् चित्रम् (आलेख्यं वा); चित्रा नक्षत्रं वा; चैत्रो मासः। मिनोति मान्यं करोतीति मित्रम्, सुहृद्वा। नित्यन्तपुंसकम्— अयं मित्रम्। इयम्

१ उष्ट्रः = उष + ष्ट्रन् अत्र ष्ट्रन् प्रत्ययषस्य "षः प्रत्ययस्य" इति इत्संज्ञा तथा "तस्य लोपः" इति लोपः।

मित्रम् । क्वचित् पुंल्लिंगो वा— 'शं नो मित्रः इत्यादिषु । शोभनानि मित्राप्यस्याः सन्तीति 'सुमित्रा', तस्या अपत्यं 'सौमित्रिः' । बाह्यादित्वाद् (द्र०—अ० ४/१/६६) इञ् । शसति हिनस्ति येन तत् शस्त्रम्, आयुधं वा ॥

हिन्दीः—अम आदि धातुओं से क्त्र प्रत्यय होता है ।

### १६६— पुवो हस्वश्च ।

अर्थः— क्त्र प्रत्ययोऽनुवर्तते । पूञ् पवने धातोः क्त्रः प्रत्ययो भवति धातोश्च हस्वादेशो जायते ।

उदाहरणम्—पुत्रः = आत्मजः, प्रियवत्सः, शिशुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पुनाति पवित्रं करोतीति पुत्रः, आत्मजो वा ॥

हिन्दीः—पूञ् धातु से क्त्र प्रत्यय होता है और धातु को हस्वादेश होता है ।

### १६७—स्त्यायतेर्द्वाट् ।

अर्थः—स्त्यैशब्दसंघाते धातोर्द्वाट् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—स्त्री<sup>१</sup> = महिला, भार्या, नारी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्त्यायति शब्दयति गुणान् गृह्णाति वा सा स्त्री, प्रसिद्धा भार्या वा ॥

हिन्दीः—स्त्यै धातु से ङट् प्रत्यय होता है ।

### १६८— गुध्वीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यः स्त्रः ।

अर्थः—गु शब्दे, ध्व धारणे, वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु डुपचष् पाके, वच परिभाषणे, यम उपरमे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु क्षद् सौत्रो धातुः (रक्षणेऽवलोक्यते) इत्येतेभ्यः स्त्रः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—गोत्रम् = नाम, वंशः, गोत्रा तु पृथिवी । धर्त्रम् = सदनम्, यज्ञः, संदगुणः, परोपकारिता, आश्रयः । वेत्रम् = लता भेदः, यष्टिका । पक्त्रम् = गार्हपत्यम् । वक्त्रम् = आस्यम्, मुखमण्डलम्, चञ्चुः, प्रोथः, आरम्भः, बाणफलकम्, छन्दोविशेषः । यन्त्रम् = कलाविशेषः । सत्रम् = यज्ञः, यज्ञपात्रम्, आहुतिः, उपहारः, काञ्चनम्, आश्रमः, उदारता, वदान्यता, सदगुणः, गृहम्, आवरणम्, धनसम्पत्तिः, वनम्, सरः, सामर्थ्यम्, प्रभुता । क्षत्रम् = क्षत्रियवर्णविशेषः ।

१ स्त्री स्त्यै + ङट् अत्र चुटू इति ङस्येत्संज्ञा लोपश्च पुनः डित्वाट् टेलोपः स्त् + रट् टिड्ढां इत्यनेन डीपि स्त्रीशब्दः सिद्धः ॥

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गवते शब्दत् इति गोत्रम्, नाम वंशो वा; गोत्रा पृथिवी । धरतीति धर्त्रम्, गृहं वा । वेति गच्छतीति वेत्रम्, लताविशेषो वा । पचाति येन यत्र वा तत् पक्त्रम्, गार्हपत्यं वा । वक्ति येन तद् वक्त्रम्, मुखं वा । यच्छति उपरमति येन तद् यन्त्रम्, कलाविशेषो वा । सीदन्ति यत्रेति सत्रम्, यज्ञो वा; सतः सत्पुरुषान् त्रायते तत् सत्रम् इति व्युत्पत्त्यन्तरम् । 'क्षद' सौत्रो धातुः, क्षदति रक्षतीति क्षत्रम्, वर्णभेदो वा; क्षतात्त्रायत इत्यपि ।।

हिन्दीः—गु आदि धातुओं से स्त्र प्रत्यय होता है ।

### १६६— हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन् ।

अर्थः— त्रन् सूत्रद्वयेऽनुवर्ततेऽग्रे । हुदानादानयोः, या प्रापणे, मा माने, श्रु श्रवणे, भस भर्त्सनदीप्त्योः इत्येतेभ्यो धातुभ्यस्त्रन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—होत्रम् = होमः, होमसामग्री, आहुतिः । यात्रा = गमनम्, पर्व, तीर्थाटनम् । मात्रा = मानम्, भूषणम्, नियमः, क्षणम्, कणः, अणुः, अंशः । श्रोत्रम् = कर्णः । भस्त्रा = अग्निज्वलनी ।।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हूयत इति होत्रम् होमः । यातीति यात्रा, गमनं वा । मातीति मात्रा, मानं भूषणं वा । श्रूयतेऽनेन तत् श्रोत्रम्, करणं वा । बभस्ति दीप्यते यया सा भस्त्रा, अग्निज्वलनी वा ।।

हिन्दीः—हु आदि धातुओं से त्रन् प्रत्यय होता है ।

### १७०—गमेरा च ।

अर्थः— गम्लृगतौ धातोस्त्रन् प्रत्ययो भवति धातोश्चाकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—गात्रम् = शरीरम्, अवयवः, गजाग्रपादोपरिभागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गच्छति चेष्टतेऽनेनेति गात्रम्, अवयवः शरीरं वा ।

हिन्दीः—गम्लृ धातु से त्रन् प्रत्यय होता है और धातु को "आ" आदेश हो जाता है ।

### १७१—दादिभ्यश्छन्दसि ।

अर्थः—डुदाञ् दाने इत्यादिभ्यो धातुभ्यो वेदविषये त्रन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—दात्रम् = लवित्रम्, धान्यादिछेदनसाधनम् । पात्रम् = योग्यः, भाजनम्, जलाशयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दाति लुनाति तत् दात्रम् धान्यादिछेदनसाधनं वा ।

पिबत्यनेनेति पात्रम्, योग्यो भाजनं वा । पूर्वत्रापि 'पात्रम्' इति साधितम्, तत्र प्रत्ययस्य षित्वात् पात्री ब्राह्मणीत्यपि साधितम् । क्षयति नश्यति निवासहेतुर्मवतीति क्षेत्रम्, केदारः कलत्रं वा । एवमन्येऽपि शब्दा द्रष्टव्याः ॥

हिन्दीः—डुदाञ् आदि धातुओं से वेद विषय में त्रन् प्रत्यय होता है ।

### १७२—भूवादिगृभ्यो णित्रन् ।

अर्थः—भू सत्तायां, वद व्यक्तायां वाचि ण्यन्ताद्, गुनिगरणे धातुभ्यो णित्रन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—भावित्रम् = त्रिभुवनम्, लोकत्रयम् । वादित्रम् = तूर्यादिवाद्यम्, संगीतकम् । गारित्रम् = ओदनः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भवतीति भावित्रम्, लोकत्रयी वा । वाद्यते तद् वादित्रम्, तूर्यादिर्वा । गीर्यते भक्ष्यते तद् गारित्रम्, ओदनो वा ॥

हिन्दीः—भू एवं वदण्यन्त धातुओं से तथा गृधातुः से णित्रन् प्रत्यय होता है ।

### १७३—चरेवृत्ते । णित्रन् वर्तते ।

अर्थः—चरगतिभक्षणयोः धातोर्णित्रन् प्रत्ययो भवति वृत्तेऽभिधेये वृत्तिं नाम वर्तनं व्यवहारः ।

उदाहरणम्ः—चारित्रम् = वृत्तान्तम्, समाचारः, व्यवहारः, ख्यातिः, विशिष्टाचारः, सदाचरणम्, स्वभावः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चरतीति चारित्रम्, वृत्तान्तं समाचारो वा । इत्र प्रत्यये 'चरित्रम्' सुशीलम् ॥

हिन्दीः—चर धातु से वृत्त अर्थ में णित्रन् प्रत्यय होता है ।

### १७४—अशिन्नादिभ्य इत्रोत्रौ ।

अर्थः—अशूङ् व्याप्तौ इत्यादिभ्यो धातुभ्यइत्रः प्रत्ययः (त्रैङ्एवमादिभ्यस्) त्रादिभ्यश्च उत्रः, प्रत्ययौ भवतः ।

उदाहरणम्ः—अशित्रम् = चरुः । वहित्रम् = यानम्, वाहनम् । कटित्रम् = वर्मविशेषः । धरित्री = भूमिः । वरुणत्रम् = प्रावरणम् । त्रोत्रम् = प्रहारः । लोत्रम् = चोरचिहम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्यादिभ्य इत्रः—अशनुते व्याप्नोतीति अशित्रम्,

चरुर्वा । कटतीति कटित्रम्, कवचभेदो वा । वहति येन तद् वहित्रम्, वाहनं वा । बध्नातीति बधित्रम्, कामो वा । धरतीति धरित्री, पृथिवी वा । त्रादिभ्य उत्रः— त्रायते येन तत् त्रोत्रम्, प्रहारो वा । लुनाति छिनत्ति येन तत् लोत्रम्, चोरचिन्हं वा । वृणोतीति वरुत्रम्, प्रावरणं वा ॥

हिन्दीः—अशूङ् धातु से इत्र प्रत्यय होता है और त्रादि से उत्र प्रत्यय होता है

### १७५—अमेर्द्विषतिचित् ।

अर्थः—इत्रप्रत्यय प्रवर्तते । अम गतौ धातोः शत्रावभिधेये इत्रः प्रत्ययो भवति स च चित् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—अमित्रः = रिपुः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—शत्रौ वाच्येऽमेरित्रः (चित्) । अमति गच्छतीति अमित्रः शत्रुः ॥

हिन्दीः—अम् धातु से इत्र प्रत्यय होता है और वह चित् हो जाता है

### १७६—आः समिण्णिकषिभ्याम् ।

अर्थः—सम् पूर्वक इण् गतौ नि पूर्वकं च कषर्हिसायां धातुभ्यां आः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—समया = निकटम्, मध्ये, सत्यम्, ऋत्वनुकूलम् । निकषा = निकटम्, रावणजननी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—समेतीति समया । निकषति हिनस्तीति निकषा, समीप वाचकौ वा । स्वरादिपाठाद् (द्र०—अ० १/१/३६) अनयोरव्ययत्वम् ।

बाहुलकाद्—दीव्यतीति दिवा, दिनं वा । (धातोर्गुणाभावः) दुष्यतीति दोषा, रात्रिर्वा । अनयोरपि तत्रैव पाठादव्ययत्वम् । स्वदते स्वादु क्रियते या सा स्वधा, न्यायेनैश्वर्यक्रिया तृप्तिर्वा । धातोर्दस्य धः ॥

हिन्दीः—सम् पूर्वक इण् धातु से और नि पूर्वक कष धातु से आ प्रत्यय होता है ।

### १७७—चितेः कणः कश्च ।

अर्थः—चिती संज्ञाने धातोः कणः प्रत्ययो भवति धातोश्च क आदेशो जायते ।

उदाहरणम्:— चिक्कणम् = स्निग्धम्, मसृणम्, पूगीफलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चेतति जानाति येन तत् चिक्कणम्, स्निग्धं वा ।

(बाहुलकात् ककारस्थेत्संज्ञा न भवति ।।)

हिन्दी:—चिती धातु से कण प्रत्यय होता है और धातु को क आदेश हो जाता है ।

१७८—सूचैः स्मन् ।

अर्थ:—सूच पैशुन्ये धातोः स्मन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—सूक्ष्मम्<sup>१</sup> = अत्यल्पम्, सर्वव्यापकम्, प्रावीण्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सूचयति पैशुन्यं करोतीति सूक्ष्मम्, अत्यल्पं वा ।।

हिन्दी:—सूच धातु से स्मन् प्रत्यय होता है ।

१७९— पातेडुमसुन् ।

अर्थ:—पा रक्षणे धातोडुमसुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—पुमान् = पुरुषः, आत्मा, सेवकः, मनुष्यजातिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पाति रक्षतीति पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः ।

असुडादिकार्यम्; शोभनः पुमान् यस्याः सा 'सुपुंसी' । डुमसुन् उगितत्वान् डीप् ।।

हिन्दी:—पा धातु से डुमसुन् प्रत्यय होता है ।

१८०— रुचिभुजिभ्यां किष्यन् ।

अर्थ:—रुच दीप्तौ, भुज पालनाभ्यवहारयोः धातुभ्यां किष्यन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—रुचिष्यम् = अभीष्टम्, प्रियम् । भुजिष्यः = किंकरः, सेवकः, वयस्यः, रोगः, कराभूषणम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोचते तत् रुचिष्यम्, इष्टं वा । भुनक्तीति भुजिष्यः, दासो वा ।।

हिन्दी:—रुच तथा भुज धातुओं से किष्यन् प्रत्यय होता है ।

१८१—वसेस्तिः ।

अर्थ:— प्रवक्ष्यत्यग्रे "दृणातेईस्वःइति" तावत् तिः प्रवर्त्तते । वस

\*१ सूक्ष्मम् = सूच + स्मन् अत्र कुत्वं मूर्द्धा भावश्च ।

आच्छादने धातोस्तिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—वस्तिः = कोणी, नाभेर्निम्नावयवः, आवासः, उदरम्, मूत्राशयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वस्त आच्छादयति सा वस्तिः, वसनस्य दशाः कोणी नाभेरधोभागो वा ।।

बाहुलकात्—शास्ति शिक्षत इति शास्तिः, राजदण्डो वा । यजतीति यष्टिः, यष्टी वा, काष्ठदण्डो वा । अस्यते क्षिप्यते या सा अस्तिः । अगं वृक्षमस्यत्युत्पाटयति स अगस्तिः, मुनिर्वा; तस्यापत्यम् 'आगस्त्यः' । शकन्ध्वादित्वाद् (अ० ६/१/६१ वा०) अत्र पररूपम् । पुलं महत्वमसते गच्छति प्राप्नोतीति पुलस्तिः, ऋषिर्वा; तस्यापत्यं 'पौलस्त्यः' । गभमन्धकारमस्यतीति गभस्तिः, किरणो वा । दूयते परितापयतीति दूतिः, दूती वा, इतस्ततः समाचारज्ञापिका स्त्री वा ।।

हिन्दी:—वस धातु से ति प्रत्यय होता है ।

१८२— सावसेः ।

अर्थः— सु पूर्वकं अस भुवि धातोःतिः प्रत्ययो भवति । स्वरादिपाठादव्ययत्वम् ।

उदाहरणम्:—स्वस्ति<sup>१</sup> = कल्याणम्, भद्रम् जयजयकारः, आशीर्वादः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुष्ठु अस्ति वर्तत इति स्वस्ति, कल्याणं वा । बहुलवचनाद् भूमावनिषेधः, स्वरादित्वाद् (द्र०—अ० १/१/३६) अव्ययत्वं च ।।

हिन्दी:—सु पूर्वक अस धातु से ति प्रत्यय होता है ।

१८३—वौतसे ।

अर्थः—वि-उपपदे तसु उपक्षये धातोस्तिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—वितस्तिः = द्वादशशांगुलं परिमाणम्, बालिशतइति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विशेषेण तस्यत्युपक्षिपति वा सा वितस्तिः, द्वादशाङ्गुलं परिमाणं वा ।।

हिन्दी:—वि पूर्वक तसु धातु से ति प्रत्यय होता है ।

१८४—पदिप्रथिभ्यां नित् ।

अर्थः—पद गतौ, प्रथ विस्तारे धातुभ्यां तिः प्रत्ययो भवति स च

१ स्वस्ति = सु + अस् + तिः अत्र ऽस्धातो र्यणि च जाते स्वस्ति सिद्धयति ।

नित्सञ्जायते ।

उदाहरणम्:—पतिः = पदातिः, पुरुषः । प्रथितिः = प्रसिद्धिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पद्यते गच्छत्यसौ पतिः, पदातिः पुरुषो वा । प्रथ्यते या सा प्रथितिः, प्रख्यातिर्वा । तितुत्र० (अ० ७/२/६) इति सूत्रेऽग्रहादीनामिति वार्तिकेनेट् ॥

हिन्दी:—पद तथा प्रथ धातुओं से ति प्रत्यय होता है वह नित् हो जाता है ।

१८५—दृणातेर्ह्रस्वः ।

अर्थः—दृविदारणे धातोः तिः प्रत्ययो भवति धातोश्च ह्रस्वो जायते ।

उदाहरणम्:—दृतिः = चर्ममयंपात्रम्, मुशक इति भाषायां, मीनः, त्वक्, चर्म ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दीर्यतेऽसौ दृतिः, चर्ममयं पात्रं वा ॥

हिन्दी:—दृ धातु से ति प्रत्यय होता है और धातु को ह्रस्व आदेश हो जाता है ।

१८६—कृतृकृपिभ्यः कीटन् ।

अर्थः—कृविक्षेपे, तृ प्लवनसन्तरणयोः, कृपू सामर्थ्ये इत्येतेभ्यो धातुभ्यः कीटन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—किरीटम् = मुकुटम्, ताजइति भाषायाम्, व्यापारी, चूड़न, शिरोवेष्टनम् । तिरीटम् = शिरोवेष्टनम्, लोध्रः, पगड़ी इति भाषायां । कृपीटम् = कुक्षिः, जलम्, वनदारु, इन्धनम्, उदरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—किरति विक्षिपतीति किरीटम्, मुकुटं शिरोवेष्टनं वा । तरतीति तिरीटम्, शिरोवेष्टनं लोध्रो वा । कल्पतेऽसौ कृपीटम्, कुक्षिरुदकं वा । बाहुलकादत्र लत्वाभावः ॥

हिन्दी:—कृ आदि धातुओं से कीटन् प्रत्यय होता है ।

१८७—रुचिवचिकुचिकुटिभ्यः कितच् ।

अर्थः—रुच दीप्तौ, वच परिभाषणे कुच् शब्दे तारे, कुट कौटिल्ये धातुभ्यः कितच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—रुचितम् = मिष्टम् । उचितम् = यथायथम्, योग्यम्, वक्तुं



समीचीनम् । कुचितम् = परिमितम् । कुटितम् = कुटिलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रोचते तत् रुचिरम्, मिष्टं वा । वक्तुं योग्यं उचितम्, योग्यं वा । कोचति शब्दतारं करोतीति कुचितम् परिमितं वा । कुटतीति कुटितम्, कुटिलं वा ॥

हिन्दीः—रुच आदि धातुओं से कितच् प्रत्यय होता है ।

### १८८—कुटिकुषिभ्यां कमलन् ।

अर्थः—कुट कौटिल्ये, कुषनिष्कर्षे धातुभ्यां कमलन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—कुड्मलम् = मुकुलम्, कलिका । कुष्मलम् = पत्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुटतीति कुड्मलम् मुकुलम् = 'फूलती हुई कली' इति प्रसिद्धम् । कुष्णाति निष्कर्षतीति कुष्मलम्, पर्णं वा ॥

हिन्दीः—कुट और कुष धातुओं से कमलन् प्रत्यय होता है ।

### १८९—कुषेर्लश्च । कमलन्ननुवर्तते ।

अर्थः—कुषधातोः कमलन् प्रत्ययो भवति धातोश्च लत्वं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—कुल्मलम् = पापम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कुष्णातीति कुल्मलम्, पापं वा ॥

हिन्दीः—कुष धातु से कमलन् प्रत्यय होता है और धातु को लत्व हो जाता है ।

### १९०—सर्वधातुभ्योऽसुन् ।

अर्थः—उषः किञ्चेति यावद् असुन्निधिकारः । समस्त धातुभ्योऽसुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—चेतः = मनः, ज्ञानम्, तर्कनाशक्तिः, आत्मा । सरः = जलाशयः, जलम् । सदः = सभा, आसनम्, आवासः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वर्चते दीप्यतेऽसौ वर्चः, तेजः पुरीषं वा । रक्षतीति रक्षः, पालको दुष्टो वा । प्रज्ञादित्वाद् (द्र०—अ० ५/४/३८) अणि स एव 'रक्षसः' । रुणद्धि येन स रोधः, तटो वा । चेतति जानाति येन तत् चेतः, चित्तं वा । सरन्ति गच्छन्त्यापो यत्र तत् सरः तडागो वा; स्त्रीत्वविवक्षायां गौरादित्वात् (द्र०—अ० ४/१/४१) 'सरसी' महासरो वा; 'सरस्वान्' समुद्रः; सरो विज्ञानमुदकं वा विद्यतेऽस्यां सा 'सरस्वती', वाक् नदी वा । रोदतीति रोदः; गौरादित्वाद् 'रोदसी', द्यावापृथिव्यौ वा । वेति गच्छतीति वयः, कालकृताऽवस्था वा । अथवा

वेति खादतीति वयः; वय एव 'वायसः' काकः । प्रज्ञादित्वाद् (द्र०-अ० ५/४/३८) अण् । सीदन्त्यत्रेति सदः, सभा वा । एति प्राप्नोति अयः, लोहं वा; अयः कामयतेऽसावयस्कान्तश्चुम्बकमणिः अनिति जीवति येनेति, अनः ओदनं पक्वान्नं वा; अनो महत्सम्पद्यते यत्र तद् 'महानसम्' पाकस्थानम् । समासान्तष्टच् । ताम्यति काङ्क्षति येन तत् तमः, गुणः क्लेशो रात्रिरन्धकारो वा । तमशब्दोऽचप्रत्ययान्तोऽदन्तोऽपि दृश्यते । महति पूजयति पूज्यो भवति वेति महः, महद् वा, महसी, महांसि । अचप्रत्ययेऽकारान्तोऽपि । सहते यत्रेति सहः बलं मार्गशीर्षो वा; सहसा बलेन सह प्रवर्तते स 'साहसिकः' दस्युर्दुष्टकर्मा वा; सहो बलं विद्यते यत्रेति 'सहस्यः' पौषो मासः । तपति दुःखी भवति तप्यते समर्थो वा भवति येन तत् तपः, धर्मसेवनं माघमासो वा । तपः धर्मसेवनं यत्रेति 'तपस्यः' फाल्गुनो मासः । ग्रीष्मेऽकारान्तस्तपशब्दः । मिमीते येन स माः, मासो वा इत्यादि ।

हिन्दीः—सम्पूर्ण धातुओं से असुन् प्रत्यय होता है ।

### १६१—रपेरत एच्च ।

अर्थः—रप व्यक्तायां वाचि धातोरसुन् प्रत्ययो भवति ।

धातोः अकारस्य च एत सम्पद्यते ।।

उदारहणम्ः—रेपः = अवद्यम्, निंद्यम्, वचः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रप्यत उच्यत इति रेपः, अवद्यं वचो वा ।

बहुलवचनादन्यत्रापि—पीयते तत् पयः, उदकं दुग्धं वा । धातोरीत्वम्, पुनर्गुणे सत्ययादेशः; पयोऽस्या अस्तीति 'पयस्विनी' गौः; 'पयस्वी' तडागः, विनिः ।

हिन्दीः—रप् धातु से असुन् प्रत्यय होता है और धातु के अकार को एत हो जाता है ।

### १६२—अशोर्देवने युट् च

अर्थः—अश धातोर्देवने क्रीडाद्यर्थेऽसुन् प्रत्ययो भवति धातोश्च युडागमो जायते ।

उदाहरणम्ः—यशः = कीर्तिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्यते दीव्यते क्रीडादि क्रियते येन तत् यशः, कीर्तिर्वा ।

हिन्दीः—अश धातु से असुन् प्रत्यय होता है और धातु को युडागम हो जाता है ।

१६३—उब्जेर्बलेबलोपश्च ।

अर्थः—उब्ज आर्जवे धातोर्बलेऽर्थेऽसुन् प्रत्ययो भवति धातोर्बकारस्य च लोपः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—ओजः = पराक्रमः, जननात्मकशक्तिः, जलम्, धातु-कान्तिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उब्जति कोमलो भवतीति ओजः, पराक्रमो वा; ओजसा वर्तते इति 'औजसिकः,' ठक् ॥

हिन्दीः—उब्ज धातु से बलार्थ में असुन् प्रत्यय होता है । तथा धातु के बकार का लोप हो जाता है ।

१६४—श्वेः संप्रसारणं च ।

अर्थः—टुओशिवगतिवृद्धयोः धातोरसनु प्रत्ययो भवति धातोश्च संप्रसारणं सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—शवः = मृतकदेहः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्वयति गच्छतीति शवः, मृतकशरीरं वा ॥

बाहुलकात्—वहति यत् इति ऊधः, गवादेर्दुग्धस्थानं वा । धातोः सम्प्रसारणे कृते दीर्घत्वं धकारश्चान्तादेशः; घट इवोधो यस्याः सा 'घटोष्नी; कुण्डोष्नी', गौर्महिषी वा ॥

हिन्दीः—टुओशिव धातु से असुन् प्रत्यय होता है और धातु को संप्रसारण हो जाता है ।

१६५—श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च ।

अर्थः—श्रिञ् सेवायां धातोः स्वाङ्गेऽभिधेये असुन् प्रत्ययो भवति तस्यशिर आदेशः सम्पद्यते स च कित् सञ्जायते ।

उदाहरणम्ः—शिरः = मस्तकम्, शृङ्गम्, मुख्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्रीयत आश्रीयते तत् शिरः, मस्तकम् (वा), शिरसी, शिरांसि ॥

हिन्दीः—श्रिञ् धातु से अपने अवयव अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और

उस धातु को शिर आदेश होकर कित् हो जाता है ।

### १६६—अर्त्तेरुच्च ।

अर्थः—ऋ गतौ धातोः असुन् प्रत्ययो भवति धातोश्च उदादेशो भवति ।

उदाहरणम्ः—उरः = वक्षःस्थलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्वांग इत्यनुवर्तते । ऋच्छति प्राप्नोति येन तत् उरः, हृदयस्थानं वा । पिच्छादित्वाद् (द्र०—अ० ५/२/१००) इलच् । बहूरोऽस्यास्तीति 'उरसिलः' ॥

हिन्दीः—ऋ धातु से असुन् प्रत्यय होता है और धातु को उदादेश हो जाता है ।

### १६७—व्याधौ शुट् च ।

अर्थः—ऋ गतौ धातोः असुन् प्रत्ययो भवति व्याधौ रोगे वाच्येसति प्रत्ययस्य च शुडागमो भवति ।

उदाहरणम्ः—अर्शः = गुदरोगः, ववासीर इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति प्राप्नोति दुखं येन तत् अर्शः, गुदरोगो वा । अर्शोऽस्यास्तीति 'अर्शसः' पुमान् । अर्शआदिभ्योऽच् (अ० ५/२/१२७) इत्यच् ।

हिन्दीः—ऋ धातु से असुन् प्रत्यय होता है रोग वाच्य होने पर तथा प्रत्यय को शुडागम हो जाता है ।

### १६८—उदके नुट् च ।

अर्थः—ऋ धातोरुदके गम्यमानेऽसुन् प्रत्ययो भवति तस्य च प्रत्ययस्य नुडागमः सम्जायते ।

उदाहरणम्ः—अर्णः = जलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अर्तरित्येव । ऋच्छति गच्छतीति अर्णः । जलम् । अर्णोऽस्मिन्नस्तीति 'अर्णव' समुद्रः पुमान् । अर्शआदिभ्योऽच् (अ० ५/२/१२७)

हिन्दीः—ऋ धातु से जल अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय को नुडागम हो जाता है ।

### १६९—इण आगसि ।

अर्थः—इण गतौ धातोरगसि = पापेऽभिधेये असुन् प्रत्ययो भवति तस्य च प्रत्ययस्य नुडागमः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—एनः<sup>१</sup> = पापम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ईयते प्राप्यते दुःखमनेन तद् एनः, पापं वा ॥

हिन्दी:—इण् धातु से पाप अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और उस प्रत्यय को नुडागम हो जाता है ।

### २००—रिचेर्धने घिच्च ।

अर्थः—रिचिर विरेचने धातोरसुन् प्रत्ययो भवति स च घित् सम्पद्यते तथा च तस्य नुडागमः ।

उदाहरणम्:—रेक्णः = धनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—रिणक्ति व्ययं करोति यत् तत् रेक्णः, सुवर्णं वा । घित्त्वात् कुत्वम् ॥

हिन्दी:—रिचिर धातु से असुन् प्रत्यय होता है तथा वह घित् होकर उसे नुडागम हो जाता है ।

### २०१—चायतेरत्रे हस्वश्च ।

अर्थः—चायृपूजानिषामनयोर्धातोरसुन्प्रत्ययो भवति तस्य च प्रत्ययस्य नुडागमो धातोश्च यलोपो ह्रस्वादेशश्चान्नाभिधाने जायते ।

उदाहरणम्:—चनः = भक्तम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चाय्यते पूज्यतेऽनेन तत् चनः, भक्तम् (वा) । प्रत्ययस्य नुडागमे सति यलोपो ह्रस्वश्च ॥

हिन्दी:—चायृ धातु से असुन् प्रत्यय होता है उस प्रत्यय को नुडागम होकर धातु का यलोप हो जाता है अत्रार्थ में ।

### २०२—वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वांगयोः पुट् च ।

अर्थः—वृङ् सम्भक्तौ, शीङ् शयने धातुभ्यां रूपस्वांगयोः = आकृतिनिजावयवयोर्वाच्येऽसुन् प्रत्ययो भवति पुडागमश्च प्रत्ययस्य जायते ।

उदाहरणम्:—वर्पः = रूपम् । शेषः = उपस्थेन्द्रियम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—त्रियते स्वीक्रियते तत् वर्पः, रूपम् (वा) । शेते येन तत् शेषः, लिंगन्द्रियं वा । अकारान्तोऽपि मेढ्रवाची 'शेष' शब्दो दृश्यते । शुनः

\*१ एनः = इण् + नुट् + असुन्

इ + न् + अस् धातोर्गुणेरूपसिद्धिः

इव शोपोऽस्य स 'शुनःशोपः' मुनिः। षष्ठ्या अलुक्।

बाहुलकात्—वर्णव्यत्यये वर्फः; शोफः इत्यपि सिद्धम्॥

हिन्दीः—वृङ् तथा शीङ् धातुओं से आकृति और अपने अवयव अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है तथा प्रत्यय को पुडागम हो जाता है।

### २०३—सुरीभ्यां तुट् च।

अर्थः—सु गतौ रीङ् श्रवणे धातुभ्यामसुन् प्रत्ययो भवति तुडागमश्च सम्पद्यते प्रत्ययस्य।

उदाहरणम्ः—स्रोतः<sup>१</sup> = निर्झरः, स्वतः उदकच्यवनम्, नदी, धारा ऊर्मिः, जलम्, करिशुण्डम्, शरीस्यपोषणनलिका।

रेतः<sup>२</sup> = वीर्यम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्रवति चलतीति स्रोतः, स्वतो जलक्षणं वा। रीयते स्रवतीति रेतः, वीर्यं वा॥

हिन्दीः—सु तथा रीङ् धातुओं से असुन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय को तुडागम हो जाता है।

### २०४—पातेर्बलेजुट् च।

अर्थः—पा रक्षणे धातोः बले शक्तौ वाच्येऽसुन्प्रत्ययो भवति तस्य च प्रत्ययस्य जुडागमो जायते।

उदाहरणम्ः—पाजः = बलम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पाति रक्षतीति पाजः, बलं वा॥

हिन्दीः—पा धातु से शक्ति अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और उस प्रत्यय को जुडागम हो जाता है।

### २०५—उदके थुट् च।

अर्थः—पा धातोः उदके जलार्थेऽसुन् प्रत्ययो भवति थुडागमश्च प्रत्ययस्य जायते।

उदाहरणम्ः—पाथः = जलम्।

\* १ स्रोतः सु + तुट् + असुन्

सु + त् + अस् = स्रोतस् अत्र गुणेजाते सिद्धिः

\* २ रेतः = री + त् + अस् = अत्र सार्वधातुकार्द्ध धातुकयोः गुणः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पातेरेव । पातीति पाथः जलम् ॥

हिन्दीः—पा धातु से जल अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय को थुडागम हो जाता है ।

२०६—अन्ने च ।

अर्थः—पा धातोरन्नेऽर्थेऽसुन्प्रत्ययो भवति थुडागमश्च ।

उदाहरणम्—पाथः = भक्तम्, = ओदनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—थुट् । पाति रक्षतीति पाथः भक्तम् ॥

हिन्दीः—पा धातु से अन्न अर्थ में असुन् प्रत्यय होता है और थुडागम हो जाता है ।

२०७—अदेर्नुम्धौ च ।

अर्थः—अद भक्षणे धातोरसुन् प्रत्ययो भवति धातोर्नुमागमो जायते धादेशश्च ।

उदाहरणम्—अन्धः = अन्नम्, ओदनम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—‘अन्ने’ इत्यनुवर्तते । अद्यते भक्ष्यते तद् अन्धः, अन्नमोदनो वा ॥

हिन्दीः—अद् धातु से असुन् प्रत्यय होता है तथा धातु को नुमागम व धादेश हो जाता है ।

२०८—स्कन्देश्चस्वांगे ।

अर्थः—स्कन्दिर गतिशोषणयोर्धातोः स्वांगाभिधेयेऽसुन् प्रत्ययो भवति धादेशश्च ।

उदाहरणम्—स्कन्धः (स्कन्धम्) = बाहुमूलम्, पादपावयवः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्कन्दते गच्छति चेष्टते शुष्यति वा येन तत् स्कन्धः, बाहुमूलं वृक्षावयवो वा । अकारान्तोऽप्ययम् ॥

हिन्दीः—स्कन्दिर धातु से स्वांगवाची होने पर असुन् प्रत्यय होता है । और धादेश हो जाता है ।

२०९—आपः कर्मख्यायां ह्रस्वो नुट च वा ।

अर्थः—आप्तृ व्याप्तौ धातौः कर्माभिधेयेऽसुन् प्रत्ययो भवति च धातोश्च विभाषाह्रस्वः सम्पद्यते नुडागमोऽपि वा ।

उदाहरणम्:—अप्नः = (अपनस्) अपत्यम्, सुकर्म । अपः = (अपस्) अपत्यम्, सुकर्म । आपः = (आपस्) जलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आप्यते सुखं येन तत् अप्नः ; अपः, अपत्यं सुकर्म वा । ह्रस्वस्यापि विकल्पे— 'आपः' इत्यपि भवति । 'आपोभिर्मारजनं कृत्वा इत्यादिसत्प्रयोगदर्शनात् ।।

हिन्दी:—आप्लु धातु से कर्म अभिधेय होने पर असुन् प्रत्यय होता है और विकल्प से धातु को ह्रस्व होकर जुडागम भी विकल्प से हो जाता है ।

### २१०—रूपे जुट् च ।

अर्थः—आप्लु धातोरसुन्प्रत्ययो भवति रूपेऽर्थे ह्रस्वादेशो जुडागमश्च ।

उदाहरणम्:—अब्जः = रूपम्, पंकजम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आप इत्येव । आप्यते यत् तद् अब्जः रूपम्; अद्भ्यो जात इति निर्वचने अब्जः कमलं वा ।।

हिन्दी:—आप्लु धातु से असुन् प्रत्यय रूप अर्थ में होता है तथा ह्रस्वादेश व जुडागम हो जाता है ।

### २११—उदके नुम्भौ च ।

अर्थः—आप्नोतेरसुन् प्रत्यय उदकवाच्ये नुमागमो भादेशश्च भवति ।

उदाहरणम्:—अम्भः = जलम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—आप इत्येव । आप्यते तत् अम्भः उदकम् । अम्भसा वर्तते इति 'आम्भसिकः; मत्स्यः ।।

हिन्दी:—आप्लु धातु से असुन् प्रत्यय जलार्थ में होकर नुमागम व भादेश हो जाता है ।

### २१२—नहेर्दिवि भश्च ।

अर्थः—णह बन्धने धातोर्दिवि चाभिधेयेऽसुन् प्रत्ययो भवति भादेशश्च ।

उदाहरणम्:—नभः = जलद् धूलिसमन्विताकाशः, श्रावणमासः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नह्यति धर्मं बध्नातीति नभः, मेघधूल्यादियुक्त आकाशः श्रावणमासो वा; नभोऽस्मिन् शुद्धमस्तीति 'नभस्यः' भाद्रो मासः ।।

हिन्दी:—णह धातु से द्युलोकार्थ में असुन् प्रत्यय होता है और भादेश हो जाता है ।



२१३— इण आगोऽपराधे च ।

अर्थः—इण गतौ धातोरसुन् प्रत्ययो भवति इणस्थाने आगादेशो जायतेऽपराधे चाभिधेये ।

उदाहरणम्—आगः = (आगस्) अपराधः, दण्डः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ईयते प्राप्यते ज्ञायते वा तत् आगः, अपराधौ दण्डो वा ॥

हिन्दीः—इण् धातु से असुन् होता है अपराध अर्थ में तथा इण् के स्थान में आग् आदेश हो जाता है ।

२१४— अमेर्हुक् च ।

अर्थः— अमगतौ धातोरसुन् प्रत्ययो भवति हुगागमश्च धातोर्जायते

उदाहरणम्—अंहः = (अंहस्) पापम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अमन्ति प्राप्नुवन्ति दुःखं येन तत् अंहः, पापं वा ॥

हिन्दीः—अम धातु से असुन् प्रत्यय होकर हुक् का आगम हो जाता है ।

२१५— रमेश्च ।

अर्थः— रमु क्रीडायां धातोरसुन् प्रत्ययो भवति हुगागमश्च ।

उदाहरणम्—रंहः = (रंहस्) वेगः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चात् हुक् । रमते येन तत् रंहः, वेगो वा ।

हिन्दीः—रमु धातु से असुन् प्रत्यय होता है और हुगागम हो जाता है ।

२१६— देशेह च ।

अर्थः—रमेर्धातोरसुन्प्रत्ययो भवति मकारस्य च हादेशः सम्पद्यते देशेऽर्थे ।

उदाहरणम्—रहः = एकान्तः विश्वासस्थानम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चाद् रमेरसुन् (हकारश्चान्तादेशः) । रमन्तेऽस्मिन्निति रहः, एकान्तो विश्वासदेशो वा; रह एकान्ते भवं 'रहस्यम्' वेदान्तं वा । देशादन्यत्र 'रहः' अव्ययं शब्दान्तरं वास्ति । रहो मैथुनसमयस्तत्र भवं 'रहस्यम्' मैथुनम् । दिगादित्वाद् (द्र०—अ० ४/३/५४) यत् ॥

हिन्दीः—रमु धातु से असुन् प्रत्यय होकर मकार को हादेश हो जाता है देश अर्थ में ।

## २१७—अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुश्च ।

अर्थः—अञ्चु गतौ, अञ्जु व्यक्ति प्ररक्षणकान्तिगतिषु, युजिर् योगे, भृजी भर्जने धातुभ्योऽसुन्प्रत्ययो भवति कवर्गादेशश्च ।

उदाहरणम्—अंकः = चिन्हम्, संख्या । अंगः<sup>१</sup> = पक्षी । योगः = मेलनम्, समाधिः, कालः । भर्गः = तेजः, प्रजापतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अञ्चति गच्छति येन तत् अंकः, सङ्ख्याद्योतकं चिन्हं वा । अनक्ति व्यक्तीकरोतीति अंगः, पक्षी वा । अवयवे 'अंग' शब्दोऽदन्तः । युज्यते स योगः, समाधिः कालो वा । भर्जति पक्वं भवतीति भर्गः, प्रजापतिः तेजो वा ॥

बाहुलकात्—उच्यते यत्र तत् ओकः, स्थानं वा । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् ॥

हिन्दीः—अञ्चु आदि धातुओं से असुन् प्रत्यय होता है और कवर्गादेश हो जाता है ।

## २१८—भूरञ्जिभ्यां कित् ।

अर्थः—भू सत्तायां, रञ्जरागे धातुभ्यां असुन् प्रत्ययः भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्—भुवः = (भुवस) अन्तरिक्षम् । रजः = (रजस) भुवनम्, पान्सुः नारी पुष्पम्, गुणः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—भवन्ति यस्मिन्निति भुवः, अन्तरिक्षं वा । रजति तत् रजः, लोकः सूक्ष्मधूलिः स्त्रीपुष्पं गुणो वा । अकारान्तश्च ('रज' शब्दः) ।

हिन्दीः—भू और रञ्ज धातुओं से असुन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

## २१९—वसेर्णित् ।

अर्थः—वस आच्छादने धातोरसुन् प्रत्ययो भवति स च णित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्—वासः<sup>१</sup> = (वासस) वस्त्रम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वस्त आच्छादयति शरीरादिकमनेन तत् वासः,

\* १ अंगः अञ्जु + असुन् अत्र धातोर्जस्य गकारो जकारस्य च डकारे जाते अङ्गः प्रसिद्धयति ।

वस्त्रं वा । असुनो णिद्वद्भावाद् वृद्धिः ।।

हिन्दीः—वस धातु से असुन् प्रत्यय होता है और णित् हो जाता है ।

### २२०—चन्देरादेश्च छः ।

अर्थः—चदि आह्लादने दीप्तौ च धातोरसुन् प्रत्ययो भवति धातोरादेश्च छादेशो जायते ।

उदाहरणम्ः—छन्दः<sup>२</sup> = (छन्दस्) गायत्र्यादि, छलम्, अभिप्रायः, वशः, इच्छा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चन्दति हृष्यति येन दीप्यते वा तत् छन्दः, गायत्र्यादि कपटमिच्छाऽभिप्रायो वशो वा । 'छन्दानुवृत्तिः' इत्यादिप्रयोग-दर्शनादकारान्तोऽप्ययं शब्द इति मन्तव्यम् ।।

हिन्दीः—चदि धातु से असुन् प्रत्यय होता है तथा धातु को छादेश हो जाता है ।

### २२१—पचिवचिभ्यां सुट् च ।

अर्थः—डुपचष पाके, वच परिभाषणे धातुभ्यामसुन्प्रत्ययो भवति सुडागमश्च ।

उदाहरणम्ः—पक्षः = (पक्षस्) = पूर्वोत्तर पक्षौ । वक्षः ( वक्षस्) = उरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पचतीति पक्षः, पूर्वोत्तरपक्षौ वा । वक्ति येन तद् वक्षः, हृदयं वा ।।

हिन्दीः—पच् तथा वच् धातुओं से असुन् प्रत्यय होता है तथा सुडागम हो जाता है ।

### २२२—वहिहाधाञ्भ्यश्छन्दसि ।

अर्थः—वह प्रापणे, ओहाकत्यागे, डुधाञ् धारणे इत्येतेभ्यो धातुभ्यो छन्दोविषयेऽसुन्प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—वक्षाः = अनड्वान् । हासाः = चन्द्रः । धासाः = अचलः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुट् । वहति भारमिति वक्षाः, अनड्वान् वा । हीयते हीनो भवतीति हासाः, चन्द्रमा वा । दधातीति धासाः, पर्वतो वा ।।

\* १ वासः = वस् + असुन् अत्र प्रत्ययस्य णिद्भावाद् वृद्धिः सम्पद्यते ।

\* २ छन्दः चन्द + असुन् चकारस्य छकारे गते रूपसिद्धिः ।

हिन्दी:—वह आदि धातुओं से छन्दस् विषय में असुन् प्रत्यय होता है।

### २२३—इणश्चासिः ।

अर्थ:—इण् गतौ धातोः आसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—अयाः = अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—एति प्राप्नोतीति अयाः, अग्निर्वा । स्वरादित्वात् (द्र०—अ० १/१/३६) अव्ययम् । अत एव दीर्घादिरासिः प्रत्ययः ॥

हिन्दी:—इष धातु से आसि प्रत्यय होता है ।

### २२४—मिथुनेऽसिः ।

अर्थ:—उपसर्गो यत्र धातुना संयुक्तभावस्तन्मिथुनमुच्यते एतादृशसंयुक्त-धातुभ्योऽसिरेव प्रत्ययो भवति । सूत्रमिदं स्वर भिन्नार्थम् ॥

उदाहरणम्:—सुपयाः = सुजलम् । सुतपाः = सुद्वन्द्वम् । सुपेशाः = सुरुपम् । न्योजाः = सुवर्चाः । सुजवाः = सुवेगः । सुस्रोताः = सुनिर्झरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यत्रोपसर्गो धातुक्रियया संयुक्तस्तन्मिथुनम् । तत्र सति येभ्यो धातुभ्योऽसुन् विधीयते तेभ्यः सर्वेभ्योऽसिरेव स्यात् । (पूर्ववच्च सर्वमिति वचनात् प्रकृतिप्रत्यययोग आगमादेशाश्च पूर्ववदेव द्रष्टव्याः ।) स्वरभेदार्थं सूत्रमिदम् । सुपयाः, सुतपाः, सुयशाः, न्योजाः, सुजवाः, सुस्रोताः इत्याद्रयो द्रष्टव्याः ॥

हिन्दी:—उपसर्ग युक्त धातुओं से असि प्रत्यय ही होता है ।

### २२५—नञिहनएहच ।

अर्थ:—नञ्युपपदे, हन हिंसागत्योः धातोरसि प्रत्ययो भवति एह चादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—अनेहाः = कालः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—न हन्यते विच्छिन्नो न भवतीति अनेहाः, कालो वा; अनेहसौ, अनेहसः ॥

हिन्दी:—नञ् पूर्वक हन् धातु से असि प्रत्यय होता है और एह आदेश हो जाता है ।

### २२६—विधाजो वेध च ।

अर्थ:—विपूर्वकं, दुधाञ् धारण पोषणयोर्धातोरसिः प्रत्ययो भवति वेध

चतुर्थः पादः

चादेशः, सञ्जायते।

उदाहरणम्:—वेधाः = ब्रह्मा, विद्वान्, परमेश्वरः, विधाता, शिवः, विष्णुः, भानुः, अर्कक्षुपः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विशेषेण दधातीति वेधाः, विद्वान् विधाता जगदीश्वरो वा; वेधसौ; वेधसः; वेधसम् ॥

हिन्दीः—विपूर्वकं डुधाञ् धातु से असि प्रत्यय होता है और वेध आदेश हो जाता है।

२२७—नु वो धुट् च।

अर्थः—णु स्तुतौ धातोरसि प्रत्ययो भवति धुडागमश्च।

उदाहरणम्:—नोधाः = ऋषिः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नौति स्तौति नूयते स्तूयते वा स नोधाः, ऋषिर्वा ॥

हिन्दीः—णु धातु से असि प्रत्यय होकर धुडागम हो जाता है।

२२८—गतिकारकोपपदयोः पूर्वपद प्रकृतिस्वरत्वञ्च।

अर्थः—गतिकारकोपपदयोः सतोर्धातोरसिः प्रत्ययो भवति तस्मिञ्च सति गतिसंज्ञके कारकोपपदे च पूर्वपदं प्रकृति स्वर युक्तं जायते।

उदाहरणम्:—सुतगाः = सम्यक् तप्तः। सुतेजाः = श्रेष्ठवर्चस्वी। सुवक्षाः = आयतोरुः। उग्रतेजाः = प्रचण्डवर्चाः। हिरण्यरेताः = ब्रह्मा। विश्ववेदाः = जगदीश्वरः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गतिकारकोपपदाद्धातोरसिः प्रत्ययो भवति, तस्मिन् सति गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्। उत्तरपदप्रकृतिस्वरस्यापवादः। गतौ—सुतगाः, सुतेजाः, सुवक्षाः। कारके—उग्रतेजाः, हिरण्यरेताः, जातवेदाः, सर्ववेदाः, विश्ववेदाः। वृद्धेभ्यः शृणोतीति वृद्धश्रवाः। विष्टर आसने शृणोतीति विष्टरश्रवाः इत्यादि ॥

हिन्दीः—गति तथा कारक उपपद होने पर धातु से असि प्रत्यय होता है तथा इनके पूर्वपद होने पर प्रकृति स्वर बना रहता है।

२२९—चन्द्रे मोडित्।

अर्थः—चन्द्र पूर्वकं माङ् माने धातोरसि प्रत्ययो भवति स च प्रत्ययो डित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्:—चन्द्रमाः = शशी, सोमः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चन्द्रमानन्दं मिमीतेऽसौ चन्द्रमाः, सोमो वा; चन्द्रमसो, चन्द्रमसः ॥

हिन्दी:—चन्द्र पूर्वक माङ् धातु से असि प्रत्यय होता है और वह डित् होता है ।

### २३०—वयसि धाजः ।

अर्थ:—वयः शब्दोपपदे डुधाञ् धातोरसि प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—वयोधाः = तरुणः, युवा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वयो दधातीति वयोधाः, तरुणो वा ॥

हिन्दी:—वय उपपद होने पर डुधाञ् धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३१—पयसि च ।

अर्थ:—पयस् — शब्दोपपदे डुधाञ् धातोरसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—पयोधाः = सागरः, स्तनः, जलदभेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धाज इत्येव । पयो दधातीति पयोधाः, समुद्रो वा मेघविशेषः स्तनो वा ।

हिन्दी:—पयस पूर्वक डुधाञ् धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३२—पुरसि च ।

अर्थ:—पुरस शब्दोपपदे डुधाञ् धातोरसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—पुरोधाः = पुरोहितः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—धाज इत्येव । पुरोऽग्रे यजमानं दधातीति पुरोधाः, पुरोहितो वा ॥

हिन्दी:—पुरस् पूर्वक डुधाञ् धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३३—पुरुरवाः ।

अर्थ:—पुरु उपपदे रु शब्दे धातोरसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—पुरुरवाः = राजर्षिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पुरु बहु रौत्युपदिशति ब्रवीति वा स पुरुरवाः, राजर्षिर्वा ।।

हिन्दीः—पुरु उपपद होने पर रु धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३४—चक्षेर्बहुलं शिच्च ।

अर्थः—उपपदे भूते चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि धातोर्बहुलमसिः भवति स च शित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—विचक्षाः = उपाध्यायः । नृचक्षाः = ईश्वरः, खलः । शिद् भाव पक्षे— आख्याः = प्रजापतिः । प्रख्याः = प्रजापतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विशेषेण चष्टेऽसौ विचक्षाः, उपाध्यायो वा । नृन् चष्टे पश्यति ख्याति वा स नृचक्षाः, ईश्वरो दुष्टो वा । शित्त्वाभावपक्षे—आचष्टेऽसौ 'आख्याः', प्रख्याः, प्रजापतिर्वा ।।

हिन्दीः—उपपद होने पर चक्षिङ् धातु से बहुल करके असि प्रत्यय होता है और वह शित् होता है ।

### २३५—उषः किच्च ।

अर्थः—उष दाहे धातोरसि प्रत्ययो भवति स च कित्सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—उषः = (उषस्) कर्णविलम् पर्वतविशेषः, प्रातः वेला ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—असिः । ओषति दहतीति उषः, कर्णच्छिद्रं पर्वतभेदः (वा) ; स्त्रियां सूर्योदयात् प्राक् प्रभातप्रकाशः उषाः वा । उषःकाले बुध्यते इति 'उषर्बुधः', अग्निबलिः संयमी वा । कप्रत्ययान्ताट्टापि कृते उषा रात्रिरित्यपि भवति ।।

हिन्दीः—उष धातु से असि प्रत्यय होता है और वह कित् होता है ।

### २३६—दमेरुनसि ।

अर्थः—दमु उपशमे धातोः उनसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—दमुनाः = अग्निः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दाम्यत्युपशमयतीति दमुनाः, अग्निर्वा ।।

हिन्दी:—दमु धातु से उनसि प्रत्यय होता है ।

### २३७—अंगेरसि ।

अर्थ:—अगि गतौ धातोः असिः प्रत्ययो भवति । असि प्रत्ययस्य रुडागमश्च जायते ।

उदाहरणम्:—अंगिराः = जगदीश्वरः, पावकः, ऋषि विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अंगति प्राप्नोति जानाति वा स अंगिराः, ईश्वरोऽग्निः ऋषिभेदो वा; तस्यापत्यम् 'आङ्गिरसः' । असिप्रत्ययस्य रुडागमः ॥

हिन्दी:—अगि धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३८—सर्तेरप्पूर्वापदसिः ।

अर्थ:—सृ गतौ धातोः अपपूर्वकं असिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—अप्सरसः = किरणाः, नित्यबहुवचनान्तोऽयंशब्दः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अपसरति विरुद्धं गच्छतीति अप्सराः (विद्युत्) । उपसर्गान्त्यलोपः । अथवाऽप्सु जलेषु प्राणेषु वा सरन्तीति अप्सरसः, किरणा वा; अथवा न प्सान्ति भक्षयन्ति रक्षां कुर्वन्तीति अप्सरसः, प्रत्ययस्यः रुट् (धातोर्ह्रस्वत्वं च) । नित्यबहुवचनान्तः स्त्रीलिङ्गश्च ॥

हिन्दी:—अप् पूर्वक सृ धातु से असि प्रत्यय होता है ।

### २३९—विदिभुजिभ्यां विश्वेऽसिः ।

अर्थ:—विश्वशब्दोपपदे विद् ज्ञाने भुज पालन व्यवहारयोः धातुभ्यां असिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—विश्ववेदाः = अग्निः, परमेश्वरः । विश्वभोजाः = भूपः, स्वामी, ऐश्वर्यवान् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विश्वं सर्वं वेत्ति जानातीति विश्ववेदाः, जगदीश्वरो वा; विश्वे विद्यते विश्वं वा विन्दति स विश्ववेदाः, अग्निर्वा । विश्वं भुनक्ति प्रलयसमये कारणरूपेण स्वात्मनि स्थापयति वाप विश्वं पालयतीति विश्व भोजाः, ईश्वरो राजा वा ॥



चतुर्थः पादः

हिन्दीः—विश्व शब्द के उपपद होने पर विद् तथा भुज् धातुओं से असि प्रत्यय होता है।

२४०—वशे कनसिः।

अर्थः—वश कान्तौ धातोः कनसिः प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्—उशनाः = शुक्रवासरः, भृगुपुत्रः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वष्टि कामयते स उशनाः, शुक्रः वारो वा।  
सम्प्रसारणादिकार्यम् ॥

हिन्दीः—वश धातु से कनसि प्रत्यय होता है।

॥ इतिः चतुर्थः पादः पूर्तिमगात् ॥

इत्युत्तरप्रदेशान्तर्गत एटा मण्डलान्तःपाति कासगञ्ज-

नगरभिजनेनाष्टचत्वारिंशदध्यन्तश्चित्रकूट-

(चित्तौड़गढ़) कृताखण्ड निवासेन

वैश्यवंशावतंसस्य श्रीमन्नन्मूलस्य

पौत्रेण श्रीगोपीरामप्रसादगुप्तयोः

पुत्रेण वैयाकरणशिरोमणीनां प्राप्तराज

सम्मानधुरन्धराणां पण्डितप्रवरश्रीयुत

भीमसेनशिष्येण सत्यव्रत वेदवागीश

वेदाचार्यव्याकरणाचार्येण

सम्प्रति-आर्षगुरुकुल आचार्य

रूपपाठकेन विरचितोणादि

कोषे प्रकाशिकानाम्नी

टीकायां चतुर्थपादः पूर्ति-

मगात् ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे चतुर्थः पादः ॥

# अथोणादिकोषे

पञ्चमः पादः

१—अदि भुवो डुतच् ।

अर्थः—अदि उपपदे भू सत्तायां धातोः डुतच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—अद्भुतम् = विचित्रम् । आश्चर्यम् नवरसेष्वेकरसः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अदित्यव्ययं कदाचिदर्थे । अद् भवतीति अद्भुतम् आश्चर्यम् । अद्भुतमधीते, अद्भुताध्यापकः ।

हिन्दीः—अद् उपपद होने पर भू धातु से डुतच् प्रत्यय होता है ।

२—गुधेरुमः ।

अर्थः—गुध परिवेष्टने इत्यस्माद् धातोः ऊमः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—गोधूमः = अन्नविशेषः ॥

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गुध्यति वेष्टयतीति गोधूमः, अन्नविशेषो वा । गोधूमस्य विकारो 'गोधूममयः' ॥

हिन्दीः—गुध धातु से ऊम प्रत्यय होता है ।

३—मसेरुरन् ।

अर्थः—मसी परिणामे इत्येतस्माद् धातोः ऊरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—मसूरः = व्रीहिभेदो वेश्या वा ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मस्यति परिणमतेऽसौ मसूरः, व्रीहिभेदो (वा; स्त्रियां टाप् मसूरा) वेश्या वा ।

हिन्दीः—मसी धातु से ऊरन् प्रत्यय होता है ।

४—स्थः किच्च । ऊरन् विद्यते ।

अर्थः—ष्ठा गतिनिवृत्तौ इत्यस्माद् धातोः ऊरन् प्रत्ययो भवति । स च कित् संजायते ।

उदाहरणम्—स्थूरः = मनुष्यः, अनड्वान् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तिष्ठतीति स्थूरः, मनुष्यो वा; तस्यापत्यं 'स्थौर्यः' ॥

हिन्दीः—ष्ठा धातु से ऊरन् प्रत्यय होता है और वह कित् हो जाता है ।

५—पातेरतिः ।

अर्थः—अतिः प्रवर्तते \*तृहेः क्त्वा हलोपश्चे "ति यावत्" ॥ पा रक्षणे इत्येतस्माद् धातोः अतिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्—पातिः = स्वामी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पाति रक्षतीति पातिः स्वामी; 'सम्पातिः' पक्षिराजो वा ॥

हिन्दीः—पा धातु से अति प्रत्यय होता है ।

६—वातेर्नित् ।

अर्थः—वा गतिगन्धनयोः एतस्माद् धातोः अतिः प्रत्ययो भवति । स च नित् सम्पद्यते ।

उदाहरणम्—वातिः = सूर्यश्चन्द्रोवायुर्वा

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वाति गच्छतीति वाति सूर्यश्चन्द्रो वा ॥

हिन्दीः—वा धातु से अति प्रत्यय होता है, और वह नित् हो जाता है ।

७—अर्त्तेश्च ।

अर्थः—ऋ गतौ इत्यस्माद् धातोः अतिः प्रत्ययो भवति

उदाहरणम्—अरतिः = उद्वेगः पीड़ा कष्टम् चिन्ता क्षोभम् असन्तोषः पैतृकरोगविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अर्यते गम्यते सा अरतिः, उद्वेगो वा ॥

हिन्दीः—ऋ धातु से अति प्रत्यय होता है ।

८—तृहेः क्त्वा हलोपश्च ।

अर्थः—तृह हिंसायां धातोः क्त्वा प्रत्ययो भवति धातोश्च हस्य लोपो जायते ।

उदाहरणम्—तृणम् = यवसम्, यवसपत्रम्, कटः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तृह्यते हन्यते तत् तृणम् प्रसिद्धमेव ॥

हिन्दीः—तृह धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है और धातु के "ह" का लोप हो जाता है ।

९—वृञ् लुठितनिताडिभ्य उलच् तण्डश्च ।

अर्थः—वृञ् वरणे, लुट् उपधाते, तनु विस्तारे, तडआघाते इत्येतेभ्यो

धातुभ्य उलच् प्रत्ययो भवति धातोश्च तण्डादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—तण्डुलाः = शालयः चावल इति भाषायाम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—त्रियन्ते लुठ्यन्ते तन्यन्ते, ताड्यन्ते वा ते तण्डुलाः, प्रसिद्धा वा । वृजादीनां स्थाने तण्डादेशः ।

हिन्दीः—वृञ् आदि धातुओं से उलच् प्रत्यय होता है और धातुओं को तण्डादेश हो जाता है ।

१०—दंसेष्टटनौ न आ च ।

अर्थः—दसि भाषार्थे इत्येत्स्माद् धातोः टटनौ प्रत्ययौ भवतः धातोश्च नकारस्य आकारादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—दासः = सेवकः, शूद्रः, धीवरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दंसयति दशति पश्यति वा स दासः, सेवकः शूद्रो वा । टित्वान् (द्र०—अ० ४/१/४५) डीप् 'दासी' । नकारस्याकारः । नित्करणम् पक्ष आद्युदात्तार्थम् ।

हिन्दीः—दसि धातु से ट, टन् प्रत्यय होते हैं और धातु के नकार को आकारादेश हो जाता है ।

११—दंशेश्च ।

अर्थः—दंश दशने इत्यस्माद् धातोः ट-टनौ प्रत्ययौ भवतः धातोः नकास्य च आकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—दाशः = धीवरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—टटनौ नकारस्य चात्त्वम् । दशति मत्स्यादिकमिति दाशः धीवरः । स्त्रियां 'दाशी' धीवरी ।

हिन्दीः—दंश धातु से ट, टन् प्रत्यय होते हैं, और धातु के नकार को आकारादेश हो जाता है ।

१२—उदि चेडैसिः ।

अर्थः—उदि उपपदे चिञ् चयेन धातोः डैसिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—उच्चैः = महान्, उपरि, उत्तुंगः

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उच्चीयते वर्धयतेऽसौ उच्चैः, महान् वा । स्वरादित्वाद् (अ० १/१/३६) अव्ययम् ।

हिन्दी—उत् उपपद में रहते चिञ् धातु से डैसि प्रत्यय होता है।

### १३—नौ दीर्घश्च।

अर्थः—नि उपपदे चिञ् चयने धातोः डैसिः प्रत्ययो भवति।  
नि—इत्येतस्य च दीर्घत्वं सम्पद्यते।

उदाहरणम्:—नीचैः = अधोऽधमो वा, शनैः शनैः, वामनः लघुः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चेरित्येव। निचीयत इति नीचैः, अधोऽधमो वा।  
अस्यापि स्वरादित्वात् (अ० १/१/३६) एवाव्ययत्वम्।।

हिन्दीः— नि उपपद होने पर चिञ् धातु से डैसि प्रत्यय होता है, नि को दीर्घ हो जाता है।

### १४—सौ रमेः क्तो दमे पूर्वपदस्य च दीर्घ।

अर्थः—सूपपदे रमु क्रीडायामित्यस्माद् धातोः कः प्रत्ययो भवति दमेऽर्थे  
पूर्वपदस्य च दीर्घः।

उदाहरणम्:—सूरतः = उपशान्तः, कृपालुः, शान्तः, धीरः कोमलः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सुष्ठु रमत इति सूरतः, उपशान्तः कृपालुर्वा।  
दमार्थादित्यत्र 'सुरतः' क्रीडायुक्तः।

हिन्दीः—सु उपपद होने पर रमु धातु से क्त प्रत्यय होता है दमन अर्थ में तथा पूर्वपद में दीर्घादेश हो जाता है।

### १५—पूजो यण् णुग्धस्वश्च।

अर्थः—पूज् पवने इत्यस्माद् धातोः यण् प्रत्ययो भवति धातोः, ह्रस्वादेशो  
जायते णुगागमश्च।

उदाहरणम्:—पुण्यम् = सुकृतो धर्मः शुचिः, कल्याणकारी, प्रशस्यकर्म।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पवते पवित्रो भवति येन तत् पुण्यम्, सुकृतो धर्मो वा।।

हिन्दीः—पूज् धातु से यण् प्रत्यय होता है और धातु को ह्रस्वादेश होकर णुक् का आगम होता है।

### १६—संसेः शिः कुट् किच्च।

अर्थः—यणनुवर्तते। संसु अवसंसने (पतने) इत्यस्माद् धातोः यण्  
प्रत्ययो भवति धातोश्च शिः आदेशो जायते कुडागमश्च स च कित्सम्पद्यते।

उदाहरणम्:—शिक्यम् = काचः छीका इति भाषायां प्रसिद्धः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—संसते गच्छतीति शिक्यम्, काचः 'छीका' इति प्रसिद्धः । तत्र धृतं वस्तु 'शैक्यम्' ॥

हिन्दीः—संसु धातु से यण् प्रत्यय होता है और धातु को शि आदेश होकर कुडागम होता है तथा वह कित् समझा जाता है ।

### १७—अर्तेःक्युरुच्च ।

अर्थः—ऋ गतौ धातोः क्युः प्रत्ययो भवति धातोश्च उदादेशौ जायते ।

उदाहरणम्—उरणः=मेषः, राक्षस विशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋच्छति गच्छतीति उरणः, मेषो वा ॥

हिन्दीः—ऋ धातु से क्यु प्रत्यय होता है और धातु को उत् आदेश हो जाता है ।

### १८—हिंसेरीरन्नीरचौः—

अर्थः—हिसि हिंसायाम् इत्यस्माद् धातोः ईरन्ईरचौ प्रत्ययौ भवतः । अत्र प्रत्ययद्वयं स्वरभेदार्थम् ।

उदाहरणम्—हिंसीरः = व्याघ्रः, दुष्टः, शकुनिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हिनस्तीति हिंसीरः, व्याघ्रो दुष्टो वा । (ईरन्; ईरच्) प्रत्ययद्वयं स्वर-भेदार्थम् ॥

हिन्दीः—हिसि धातु से ईरन् व ईरच् प्रत्यय स्वर भेद के कारण होते हैं ।

### १९—उदि दृणातेरलचौ पूर्व पदान्त्यलोपश्च ।

अर्थः—उद्युपपदे दृ विदारणे धातोः अल्-अचौ प्रत्ययौ भवतः । तथा च उदो दकारस्य लोपो जायते । अत्रापि प्रत्यय द्वौ स्वरभेदकौ ।

उदाहरणम्—उदरम् = आमाशयः जठरम्, वधकरणम्, तडागः, गृह्वरम्

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—उदं दृणाति येनान्मिति उदरम्, कुक्षिस्थानम् । प्रत्ययभेदोऽत्रापि स्वरभेदार्थः ॥

हिन्दीः—उत् उपपद होने पर दृ धातु से अल् व अच् स्वर भेद के लिए होते हैं ।

### २०—डित्खनेर्मुट् चोदात्तः ।

अर्थः—खनु अवदारणे धातोः डित्प्रत्ययो भवति मुडागमश्चोदत्तो

जायते ।

उदाहरणम्:—मुखम् = आस्यम्, मुखमण्डलम्, पुरोभागः, तटम् ।  
बाणफलकम्, पक्षिचञ्चुः, विवरम्, द्वारम्, गमनमार्गः आरम्भः, प्रस्तावना, तलम्,  
साधनम्, स्रोतः, वेदः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खनेरलचौ । तयोर्दित्त्वं धातोर्मुडागमश्च ।  
तस्योदात्तत्वम् । खनत्यन्नादिकमनेनेति मुखम् आस्यम्; मुखे भवो 'मुख्यः' रोगः,  
शरीरावयवाद्यत् (अ० ५/१/६) मुखमिवोत्तमं मुख्यम्, शाखादित्वात् (द्र०—अ०  
५/३/१०३) इवार्थे यत् ॥

हिन्दी:—खनु अवदारणे धातु से अल् और अच् प्रत्यय होते हैं । वह डित्  
होते हैं तथा धातु को मुट् आगम होता है ।

२१—अमेःसन् ।

अर्थः—अम् गतौ धातोः सन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—अंसः = स्कन्धः, विभागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अमति गच्छति प्राप्नोति येन सं अंसः, स्कन्धो  
विभागो वा, अंसोऽस्यास्तीति 'अंसलः' ॥

हिन्दी:—अम् धातु से सन् प्रत्यय होता है ।

२२—मुहे खो मूर्च ।

अर्थः—मुह वैचित्ये धातोः खः प्रत्ययो भवति धातोश्च मूरादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—मूर्खः = बालिशः, मन्दमतिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मुह्यति विक्षिप्त इव भवतीति मूर्खः; मूर्खस्वभावो  
'मौर्ख्यः, मूर्खिमा' वा । बाहुलकात् खस्येनादेशाभावः ॥

हिन्दी:—मुह धातु से ख प्रत्यय होता है और धातु को मूर् आदेश हो  
जाता है ।

२३—नहेर्हलोपश्च ।

अर्थः—णह बन्धने धातोः खः प्रत्ययो भवति हकारस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्:—नखः = नाखून इति भाषायाम्, विशति संख्या अंशः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—नह्यति बध्नाति रुधिरादिकमिति नखः, प्राण्यंगं

वा ॥

हिन्दी:—णह धातु से ख प्रत्यय होता है और हकार का लोप हो जाता है ।

### २४—शीङो हस्वश्च ।

अर्थ:—शीङ् स्वप्ने धातोः खः प्रत्ययो भवति धातोश्च हस्वो जायते ।

उदाहरणम्:—शिखा = चूडा, ज्वाला शृंगं वा । प्रकाशरश्मिः, शाखा प्रधानः, कामज्वरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—खः । शेतेऽसौ शिखा, चूडा केशभेदो ज्वाला वा । हस्वविधान—सामर्थ्याद् गुणाऽभावः ।

हिन्दी:—शीङ् धातु से ख प्रत्यय होता है और धातु को हस्वादेश हो जाता है ।

### २५—माङ् ऊखो मय च ।

अर्थ:—माङ् माने शब्दे च धातोः ऊखः प्रत्ययो भवति धातोश्च मयादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—मयूखः = किरणः करः कान्तिः ज्वाला सौन्दर्यम् धूपघटिकाकीलकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मिमीते मान्यहेतुर्भवतीति मयूखः, किरणः कान्तिः करो ज्वाला वा ॥

हिन्दी:—माङ् धातु से ऊख प्रत्यय होता है और धातु को मयादेश हो जाता है ।

### २६—कलिगलिभ्यां फगस्योच्च ।

अर्थ:—कल संख्याने, गल अदने धातुभ्यां फक् प्रत्ययो भवति धात्वोरकारयोः उदादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—कुल्फः = शरीर भागः रोगो वा । गुल्फाः = पाद ग्रन्थिः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कलति संख्यातीति कुल्फः, शरीरावयवो रोगो वा । गलति भक्षयतीति गुल्फः, पादग्रन्थिर्वा ॥

हिन्दी:—कल और गल धातुओं से फक् प्रत्यय होता है और धातुओं के अकारों को उदादेश हो जाता है ।



२७—स्पृशोः श्वण्शुनौ पृ च ।

अर्थः—स्पृश संस्पर्श धातोः श्वण् शुन प्रत्ययौ भवतः धातोश्च पृ आदेशो जायते ।

उदाहरणम्:—पार्श्वः = कक्षयोरधोभागः समीपवर्ती वा । पर्शुः = आयु-धम्, कुठारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—स्पृशति येन स पार्श्वः, कक्षयोरधोभागो वा । पर्शुः, आयुधं वा ।

हिन्दीः—स्पृश धातु से श्वण व शुन प्रत्यय होते हैं और धातु को पृ आदेश हो जाता है ।

२८—श्मनि श्रयतेर्दुन् ।

अर्थः—श्मन्युपपदे श्रिञ् सेवायां धातोः दुन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—श्मश्रु = पुरुषमुखरोमाणि ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—श्मनि मुखे श्रयतीति श्मश्रुः, पुरुषमुखरोमाणि वा; श्मश्रुणी, श्मश्रूणि ॥

हिन्दीः—श्मन् उपपद होने पर श्रिञ् धातु से दुन् प्रत्यय होता है

२९—अश्रादयश्च । दुन्प्रवर्तते ।

अर्थः—अशूङ् व्याप्तौ धातोः दुन् प्रत्ययो भवति । प्रत्ययस्य च आदौ रेफागमो जायते ।

उदाहरणम्:—अश्रु = नयननीरम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्रुते व्याप्नोतीति, अश्रु, नेत्रजलं वा । दुन्प्रत्ययो रुडागमश्च । एवमन्येऽपि यथायोग्यं द्रष्टव्याः ॥

हिन्दीः—अशूङ् धातु से दुन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय के आदि में रेफागम हो जाता है ।

३०—जनेष्टन् नलोपश्च ।

अर्थः—जनी प्रादुर्भावे धातोः दुन् प्रत्ययो भवति । धातोश्च नस्य लोपो जायते ।

उदाहरणम्:—जटा = दीर्घाः केशाः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायतेऽसौ जटा, दीर्घाः केशा वा; जटा अस्य

सन्तीति 'जटालः', सिध्मादित्वाद् (द्र०-अ० ५/२/१००) इलच् ।।

हिन्दी:-जनी धातु से जुन् प्रत्यय होता है और धातु के नकार का लोप हो जाता है ।

### ३१-अच् तस्य जङ्घ च ।

अर्थ:-जनी प्रादुर्भावे धातोः अच् प्रत्ययो भवति तस्य जनेश्च जङ्घ इत्ययमादेशो जायते ।

उदाहरणम्:-जङ्घा = जानोरधोभागः ।

स्वामिदयामन्दवृत्तिः-तस्य जनेः । जायतेऽसौ जङ्घा, जानोरधोभागो वा ।।

हिन्दी:-जनी धातु से अच् प्रत्यय होता है और जन जङ्घ आदेश हो जाता है ।

### ३२-हन्तेः शरीरावयवे द्वे च । अच् विद्यते ।

अर्थ:-हन् हिंसागत्योः धातोः गात्रांशे अच् प्रत्ययो भवति हन्तेद्वित्वं च जायते ।

उदाहरणम्:-जघनम् = जानोरुपरिभागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः-हन्ति येन यद् वा हन्यते तत् जघनम्, जानोरुपरिभागो वा । इवार्थे शाखादित्वाद् (द०-अ० ५/३/१०३) यत्-जघनमित्रा 'जघन्यं' नीचम् ।

हिन्दी:-हन् धातु से शरीर अवयव अर्थ में अच् प्रत्यय होता है और हन् को द्वित्व हो जाता है ।

### ३३-क्लिशोरन् लो लोपश्च ।

अर्थ:-क्लिश उपतापे धातोः अन् प्रत्ययो भवति लस्य च लोपो जायते ।

उदाहरणम्:-केशः = बाला, शिरोलोमानि ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः-क्लिश्यति येन स केशः, शिरलोमानि वा; केशा अस्य सन्तीति 'केशवः; केशिकः; केशी ।।

हिन्दी:-क्लिश धातु से अन् प्रत्यय होता है और लकार का लोप हो जाता है ।

### ३४-फलेरितजादेश्च पः ।

अर्थ:-फल निष्पत्तौ धातौः इतच् प्रत्ययो भवति धात्वादेश्च फस्यपादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—पलितम् = केशश्वैत्यम्, अधिककेशः, अलङ्कृत केशः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—फलति निष्पन्नं पक्वमिव भवतीति पलितम्, केशश्वैत्यं वा। फस्य पः।।

हिन्दी:—फल धातु से इतच् प्रत्यय होता है और धात्वादि फकार को पादेश हो जाता है।

### ३५—कृजादिभ्यः संज्ञायां वुन्।

अर्थः—वुन्प्रवृत्तिरग्निमद्विसूत्रपर्यन्तम्। डुकृञ् करणे आदिभ्यो धातुभ्यः संज्ञायां वुन् प्रत्ययो भवति।

उदाहरणम्:—करकः = वृष्टिपाषाणः, दाडिमः, कमण्डलुः। कटकः = बाहुभूषणम् श्रङ्गम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—करोतीति करकः; करका, वृष्टिपाषाणो वा। करको, दाडिमः कमण्डलुर्वा। कटति वर्षत्यावृणोति वा सं कटकः, बाहुभूषणं शिखरो वा। नृणाति नयतीति नरकम्, पापभागो वा। सरति गच्छतीति सरकम्, गमनं वा। अलति भूषितो भवतीति अलकम्, शीतादिकं वा; अलति वारयति येभ्यस्ते अलकाः, कुटिलाः केशा वा। (कुरति शब्दयतीति) कोरकः कलिका, 'कली' इति प्रसिद्धा।।

हिन्दी:—डुकृञ् आदि धातुओं से संज्ञा विषय में वुन् प्रत्यय होता है।

### ३६—चीकयतेराद्यन्तविपर्ययश्च।

अर्थः—चीक आमर्षणे धातोः वुन् प्रत्ययो भवति आद्यन्ताव्यतिक्रमश्च सम्पद्यते।

उदाहरणम्:—कीचकः = वंशः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चीकयते सहतेऽसौ कीचकः, वंशभेदो वा।।

हिन्दी:—चीक धातु से वुन् प्रत्यय होता है तथा आद्यन्त व्यतिक्रम होता है।

### ३७—पचिमच्चोरिच्चोपधायाः।

अर्थः—डुपचष् पाके, मच कल्कने इत्येताभ्यां धातुभ्यां वुन् प्रत्ययो भवति तथा धात्वोरुपधयोः इदादेशो जायते।

उदाहरणम्:—पेचकः = उलूकः— हस्ति पुच्छमलम्, पर्यकम् मेघः जूँ।  
मेचकः = कृष्णवर्णः, मयूरपक्षः चिहम्, मेघः, धूम्रम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—पचतीति पचकः, उलूकपक्षी वा । मचते शब्दयतीति मेचकः, कृष्णवर्णो मयूरपक्षचिन्हं वा ॥

हिन्दीः—पच तथा मच धातुओं से वुन् प्रत्यय होता है तथा धातुओं की उपधा को इदादेश हो जाता है ।

### ३८—जनेररष्ठ च ।

अर्थः—जनी प्रादुर्भावे धातोः अरः प्रत्ययो भवति जनेर्नकारस्य च ठकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्—जठरम् = उदरम् । कठिनम्, गर्भाशयः, वस्त्वभ्यन्तरीयभागः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायतेऽस्मादिति जठरम्, उदरं कठिनं वा ॥

हिन्दीः—जनी धातु से अर प्रत्यय होता है और जन के न को ठ आदेश हो जाता है ।

### ३९—वचिमनिभ्यां चिच्च ।

अर्थः—अरः प्रवर्तते । वच् परिभाषणे मनु अवबोधने इत्येताभ्यां धातुभ्यां अरः प्रत्ययो भवति स च चित् सम्पद्यते । अत्र चित्करणं "चितः" इत्यनेन अन्तोदात्तार्थम् ।

उदाहरणम्—वठरः = मूर्खः, दुष्टः, वैद्यः, जलपात्रम्, मत्तः, मुनिविशेषः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अन्त्यस्य ठः । वक्तीति वठरः, मूर्खो वा । मन्यतेऽसौ मठरः, मुनिभेदो मत्तो वा; तस्यापत्यं 'माठरः; माठर्यः ॥

हिन्दीः—वच तथा मनु धातुओं से अर प्रत्यय होता है और वह प्रत्यय चित् हो जाता है ।

### ४०—ऊर्जिदृणातेरलचौ ।

अर्थः—ऊर्क उपपदे दृ विदारणे धातोः अल्-अचौ भवतः । स्वरभेदपरौ द्वौ प्रत्ययौ ।

उदाहरणम्—ऊर्दरः = शूरः, दुष्टः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऊर्क् पराक्रमं रसं वा दृणातीति ऊर्दरः, शूरो दुष्टो वा । स्वरभेदार्थं प्रत्ययद्वयम् ।

हिन्दीः—ऊर्क् उपपद होने पर दृ धातु से अल्-अच् प्रत्यय होते हैं ।

### ४१—कृदरादयश्च ।

अर्थः—कृ इत्यादिषु उपपदेषु दृ विदारणे धातोः अल्-अच् प्रत्ययान्ताः

शब्दाः निपात्यन्ते ।

उदाहरणम्:—कृदरः = कुशूलः । मृदराः = व्याधिः, छिद्रम्, क्रीडाशीलः, क्षणिकम् । सूदरः = सर्पः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—कृत्स्नं दृणातीति कृदरः, कुशूलो वा । मृदं दृणातीति मृदरः, व्याधिर्बिलं वा । सृष्टिं दृणातीति सूदरः सर्पः ॥

हिन्दीः—कृ आदि उपपद दृ होने पर दृ धातु से अल् अच् प्रत्ययान्त शब्द निपातन किये जाते हैं ।

४२—हन्तेर्युन्नाद्यन्तयोर्घत्वतत्वे ।

अर्थः—हन् हिंसागत्योः धातोः युन् प्रत्ययो भवति धातोः हकारस्य घत्वं नकारस्य च तत्त्वं जायते ।

उदाहरणम्:—घातनः = हिंसकः । मारकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हन्तीति घातनः, मारको वा ॥

हिन्दीः—हन् धातु से युन् प्रत्यय होता है धातु के ह को घ और न को त आदेश होते हैं ।

४३—क्रमिगमिक्षमिभ्यस्तुन् वृद्धिश्च ।

अर्थः—क्रमु पाद विक्रमे, गन्तु गतौ, क्षमूष् मर्षणे इत्येतेभ्यः धातुभ्यः तुन् प्रत्ययो भवति धातूनां च वृद्धिर्जायते ।

उदाहरणम्:—क्रान्तुः = शकुनिः । गान्तुः = पथिकः । क्षान्तुः = सहनशीलः, धैर्यवान्, पिता ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्रामति पादान् विक्षपतीति क्रान्तुः, पक्षी वा, गच्छतीति गान्तुः, पथिको वा । 'आगान्तुः' अभ्यागतः । क्षमतेऽसौ क्षान्तुः, सहनशीलो वा ॥

हिन्दीः—क्रमु आदि धातुओं से तुन् प्रत्यय होता है और धातुओं को वृद्धि हो जाती है ।

४४—हर्यतेः कन्यन् हिर च ।

अर्थः—हृज् हरणे धातोः कन्यन् प्रत्ययो भवति धातोः च हिर सम्पद्यते ।

उदाहरणम्:—हिरण्यम् = सुवर्णम्, रजतम्, धनसंपत्तिः, वीर्यम्, शुक्रम कपर्दिका, मापविशेषः, सारांशः, धतुरः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हर्यते काम्यते तत् हिरण्यम्, सुवर्णं वा ॥

हिन्दीः—हृज् धातु से कन्यन् प्रत्यय होता है और धातु को हिर आदेश हो जाता है ।

#### ४५—कृज् पासः ।

अर्थः—डुकृज् करणे धातोः पासः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—कर्पासः = पिचुकम्, सस्यविशेषः, पिचुकक्षुपः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्रियत उत्पाद्यतेऽसौ कर्पासः, सस्यभेदो वा; कर्पासस्य विकारः 'कर्पासम्' वस्त्रम् । बिल्वादित्वाद् (द्र०—अ० ४/३/१३४) अण् ॥

हिन्दीः—डुकृज् धातु से पास प्रत्यय होता है ।

#### ४६—जनेस्तुरश्च ।

अर्थः—जनी प्रादुर्भावे धातोः तु प्रत्ययो भवति धातो नकारस्य च रेफादेशः सम्पद्यते ।

उदाहरणम्ः—जर्तुः— उपस्थेन्द्रियम् करी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—जायते यत इति जर्तुः, उपस्थेन्द्रियं हस्ती वा ॥

हिन्दीः— जनी धातु से तु प्रत्यय होता है और धातु के नकार को रेफादेश हो जाता है ।

#### ४७—ऊर्णोतेर्ङः ।

अर्थः—ऊर्णुज् आच्छादने धातोः ङः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्ः—ऊर्णा = अविमेषयोर्लोमानि ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऊर्णोत्याच्छादयति यया सा ऊर्णा, अविमेषयोः रोमाणि वा; ऊर्णा याति प्राप्नोति 'ऊर्णायुः', मेषो मेषोर्णाकम्बलो वा । (मृदुत्वाद्) ऊर्णा इव नाभिरस्य स 'ऊर्णनाभः' । समासान्तोऽच्; 'ऊर्णनाभिः' इति वा । समासान्तस्य विधेरनित्यत्वात् । लूताहिर्वा ('मकड़ी' इति प्रसिद्धा) ॥

हिन्दीः—ऊर्णुज् धातु से ङ प्रत्यय होता है ।

#### ४८—दधातेर्यञ्चट् च ।

अर्थः—डुधाज् धारणपोषणयोः धातोः यत् प्रत्ययो भवति नुडागमश्च जायते ।

उदाहरणम्:—धान्यम् = ब्रीहिः, अन्नम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—दधाति पुष्पाति लोकानिति धान्यम्, ब्रीहिर्वा; धाने पोषणे साधु = 'धान्यम्' इत्यपि ॥

हिन्दी:—डुधाञ् धातु से यत् प्रत्यय होता है । और उस प्रत्यय को नुडागम हो जाता है ।

४६—जीर्यते: क्रिन् रश्च वः ।

अर्थ:—जू वयो हानौ धातोः क्रिन् प्रत्ययो भवति, रेफस्य च वकारादेशो जायते ।

उदाहरणम्:—जिब्रिः = कालः, पक्षी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—यो जीर्यति येन वा स जिब्रिः, कालः पक्षी वा । हलि च (अ०८/२/७७) इति बाहुलकाद्दीर्घाभावः ॥

हिन्दी:—जू धातु से क्रिन् प्रत्ययो होता है और धामु के रेफ को वकारादेश हो जाता है ।

५०—मव्यतेर्यलोपो मश्चापतुट् चालः ।

अर्थ:—मव्यबन्धने धातोः आल प्रत्ययो भवति धातोश्च यकारस्य लोपो जायते वकारस्य मकारादेशः सम्पद्यते आप् तुट् चागमः ।

उदाहरणम्:—ममापतालः = बन्धनहेतुः, विषयः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मव्यति बध्नातीति ममापतालः, बन्धनहेतुर्विषयो वा ।

हिन्दी:—मव्य धातु से आल प्रत्यय होता है और धातु के य का लोप हो जाता है, व को मकारादेश हो जाता है तथा आप् तुट् का आगम होता है ।

५१—ऋजेः कीकच् ।

अर्थ:—ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु कीकच प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—ऋजीकः = सूर्यः, धूमः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अर्जति गच्छतीति ऋजीकः, सूर्यो धूमो वा ॥

हिन्दी:—ऋज धातु से कीकच् प्रत्यय होता है ।

५२—तनोतेर्ड उः सन्वच्च ।

अर्थः—तनु विस्तारे धातो डउः प्रत्ययो भवति धातोश्च सन्वत् कार्यं जायते।

उदाहरणम्—तितउः = चालनी।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तनोति विस्तृणोति येन तत् तितउः 'चालनी' पेषणशोधकपात्रम् ॥

हिन्दीः—तनु धातु से डउ प्रत्यय होता है, और धातु को सन्वत् कार्य होता है।

### ५३—अर्भकपृथुकपाकावयसि।

अर्थः—ऋधु वृद्धौ, प्रथ विस्तारे, पा पाने, इत्येतेभ्यो धातुभ्यः अर्भक-पृथुक-पाक शब्दा निपात्यन्ते वयसि गम्यमाने।

उदाहरणम्—अर्भकः = बालकः, मूर्खः, जन्तुबालः। पृथुकः = बालकः, मूर्खः, जन्तुबालः। पाकः = बालकः, परिणामः, गार्हपत्याग्निः, घूकः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—ऋध्यति वर्धतेऽसौ अर्भकः। 'ऋधु' धातोर्वुन् धस्य भः। प्रथते वर्धते स पृथुकः। कुकन् प्रत्ययः सम्प्रसारणं च। पिबतीति पाकः। कन् प्रत्ययः अर्भकपृथुकपाका बालकपर्यायाः ॥

हिन्दीः—ऋधु आदि धातुओं से अर्भक, पृथुक, पाक निपातन किये जाते हैं अवस्था अर्थ में।

### ५४—अवद्यवमाधमार्वरेफाः कुत्सिते।

अर्थः—अवद्य, अवम, अधम, अर्वन् रेफ इत्येतेशब्दाः निपात्यन्ते।

उदाहरणम्—अवद्यम् = अकथनीयम्, अपराधः, पापम्, लांछनम्, निन्दा। अवमम् = रक्षकम्, घृणायोग्यम्, अधमम्, सर्वलघु। अधमम् = निकृष्टम्। अर्वाः = अश्वः, इन्द्रः। रेफः = निन्दकः, कर्कशध्वनिः रवर्णः, अनुरागः।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—वदितुमयोग्यम् अवद्यम्। नञ्पूर्वाद् 'वद' धातोर्द्यत्। अवतीति अवमम्। अमः प्रत्ययः। तत्रैव वस्य धः = अधमम्। ऋच्छति गच्छतीति अर्वाः, वन्। रिफति निन्दतीति रेफः। कुत्सितपर्याया इमे ॥

हिन्दीः—अवद्य आदि शब्द निपातन किये जाते हैं।

\*१ अर्भकः = ऋधु + वुन् अत्र निपातनाद् ऋधु धातोर्वुन्प्रत्ययः धातोर्धकारस्य च भकारादेशो, वुस्थाने अकारादेशः, अर्भकसिद्धिः।



५५—लीरीडोर्हस्वः पुट् च तरौ श्लेषणकुत्सनयोः ।

अर्थः—लीड् श्लेषणे, रीड् गतौ, इत्येताभ्यां धातुभ्यां तरौ प्रत्ययौ भवतः पुडागमश्च श्लेषणकुत्सनयोरर्थयोर्यथसंख्यं धातोश्च हस्वो जायते ।

उदाहरणम्:—लिप्तम् = शिलष्टम् । दूषितम्, विषयुक्तम्, भुक्तम्, मिश्रितम्, रिप्रम् = निन्दकम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—लीयते शिलष्यत इति लिप्तम् शिलष्टम् । रीयते तत् रिप्रम् कुत्सितम् । तरौ प्रत्ययौ पुडागमः ।।

हिन्दी:—लीड् तथा रीड् धातुओं से तर प्रत्यय होते हैं । तथा पुडागम होता है श्लेषण तथा कुत्सन अर्थ में और धातुओं को हस्व हो जाता है ।

५६—क्लिशोरीच्योपधाया कन् लोपश्चलो नाम् च ।

अर्थः—क्लिश उपतापे इत्यस्माद्धातोः कन् प्रत्ययो भवति उपधायाश्च ईत्वं जायते लकारस्य च लोपो नाम् आगमश्च ।

उदाहरणम्:—कीनाशः\* = कृषकः, न्यायाधीशः, मर्कटविशेषः, यमोपाधिः, कृपणः, तुच्छः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्लिशनातीति कीनाशः, कृषीवलो न्यायाधीशो वा । धातोरुपधाया ईत्वं लकारलोपः कन् प्रत्ययो नामागमश्चान्त्यादचः परः ।।

हिन्दी:—क्लिश धातु से कन् प्रत्यय होता है और धातु की उपधा को ईकार होकर लकार का लोप हो जाता है एवं नाम् आगम होता है ।

५७—अश्नुतेराशुकर्मणि वरट् च ।

अर्थः—अशूङ् व्याप्तौ धातोराशुकर्मण्यर्थे कन् प्रत्ययो भवति वरडागमश्च ।

उदाहरणम्:—ईश्वरः = परमेश्वरः = स्वामी, राजा, राजकुमारः, शासकः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—अश्नुते आशु शीघ्रं करोति जगद्रचयति स ईश्वरः,

---

\*१ कीनाशः = क्लिश + कन् अत्र धातोरुपधाया ईत्वं लकारस्य च लोप कन्प्रत्ययः धातोरन्त्यात्पूर्वं अचः परो नामागमो जायते ।

क्लिश + कन्

कीलश् लस्य नाम् आदेश

कीनाश + अ

स्वामी वा । टित्वात् 'ईश्वरी'; 'वरच्' प्रत्यये 'ईश्वरा' ॥

हिन्दी:—अशूङ् धातु से आशुकर्म अर्थ में कन् प्रत्यय होकर वरडागम होता है ।

### ५८—चतेरुरन् ।

अर्थ:—चत् याचने धातोरुरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—चतुः = संख्यावाची ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—चतते याचतेऽसौ चतुः, संख्यावाची वा । चत्वारः; चतस्रः, (चत्वारि) ॥

हिन्दी:—चत धातु से उरन् प्रत्यय होता है ।

### ५९—प्राततेररन्:—

अर्थ:—प्र पूर्वक अत सातत्यगमने धातोः अरन् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—प्रातः = प्रभातकालः ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—प्रकृष्टमतति गच्छतीति प्रातः, प्रभातकालो वा । स्वरादित्वाद् (द्र०—अ० १/१/३६) अव्ययम् ॥

हिन्दी:—प्र पूर्वक अत धातु से अरन् प्रत्यय होता है ।

### ६०—अमेस्तुट् च ।

अर्थ:—अरन्प्रवर्तते । अम गतौ धातोः अरन् प्रत्ययो भवति तुडागमश्च ।

उदाहरणम्:—अस्तः = मध्यम् ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—अमति गच्छति यत्रेति अन्तः, मध्यं वा । पूर्ववदव्ययम् ॥

हिन्दी:—अम धातु से अरन् प्रत्यय होता है और प्रत्यय को तुडागम ।

### ६१—दहेर्गो हलोपो दश्च नः ।

अर्थ:—दह भस्मीकरणे धातोर्गः प्रत्ययो भवति हकारस्य च लोपो जायते दकारस्य च नकारादेशः ।

उदाहरणम्:—नगः = पर्वतः, वृक्षः, हस्ती, क्षुपः, सूर्यः, सप्तसंख्या ।

स्वामिदयानन्दवृत्ति:—दहति दह्यते वा स नगः, पर्वतो वृक्षो वा । (गप्रत्ययो हकारस्य लोपो दकारस्य च नकारादेशः ।) बाहुलकान्नकारस्य नाकारः—नागः, सर्पभेदो वा ॥

हिन्दी:—दह धातु से ग प्रत्यय होता है हकार का लोप होकर दकार

को नकारादेश हो जाता है।

### ६२—सिचैः संज्ञायां हनुमौ कश्च।

अर्थः—सिच सेचने धातोर्ह प्रत्ययो भवति नुमागमश्च, चकारस्य च ककारादेशः संज्ञायां विषये। अत्र ककारस्य स्कोः संयोगाद्योरन्ते चेत्यनेन लोपः सम्पद्यते।

उदाहरणम्ः—सिंहः = पञ्चाननः, सिंह राशिलक्षणम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—सिञ्चतीति सिंहः, प्रसिद्धो वा। धातोर्हकारान्त्यादेशो नुमागमः कश्च प्रत्ययः; हिनस्तीति सिंहः इति, पृषोदरादित्वाद् (द्र०—अ० ६/३/१०८) अप्याद्यन्तविपर्ययः।।

हिन्दीः—सिच धातु से ह प्रत्यय होता है और नुमागम होकर च को कादेश हो जाता है।

### ६३—व्याङ्घ्रिं घ्रातेश्च जातौ।

अर्थः—वि-आङ् पूर्वकं घ्रा गन्धोपादाने धातोः कः प्रत्ययो भवति जाता-वभिधेयायाम्।

उदाहरणम्ः—व्याघ्रः = सिंहः, हस्ती।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—विशेषण समन्ताज्जिघ्रतीति व्याघ्रः, द्वीपी वा।।

हिन्दीः—वि आङ् पूर्वकं घ्रा धातु से क प्रत्यय होता है। जाति वाचक अर्थ में।

### ६४—हन्तेरच् घुर च।

अर्थः—हन् हिंसागत्योः धातोः अच् प्रत्ययो भवति हन्तेश्च घुरादेशो जायते।

उदाहरणम्ः—घोरम् = भयानकम्, रौद्रम्, विषम्।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—हन्तीति घोरम्, भयानकं वा।।

हिन्दीः—हन् धातु से अच् प्रत्यय होता है और हन् को घुरादेश हो जाता है।

### ६५—क्षमेरुपधालोपश्च।

अर्थः—क्षमूष् सहने धातोरच् प्रत्ययो भवति उपधायाश्च धातोर्लोपो जायते।

उदाहरणम्:—क्ष्मा१= पृथिवी ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—क्षमते सहते सर्वमिति क्ष्मा, पृथिवी वा ॥

हिन्दी:—क्षमूष् धातु से अच् प्रत्यय होकर धातु की उपधा का लोप हो जाता है ।

६६—तरतेर्द्धिः ।

अर्थ:—तृ प्लवनसन्तरणयोः धातोः ङिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—त्रिः = संख्यावाची ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—तरतीति त्रिः, संख्यावाची वा; त्रयः; त्रीन्; त्रिभ्यः ॥

हिन्दी:—तृ धातु से ङिः प्रत्यय होता है ।

६७—ग्रहेरनिः ।

अर्थ:—ग्रह उपादाने धातोरनिः प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—ग्रहणिः = रोगविशेष । अतिसारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—गृह्णातीति ग्रहणिः । कृदिकारादक्तिनः (अ० ४/१/४५) गणसूत्र) इति डीष् 'ग्रहणी', संग्रहणी व्याधिभेदो वा ॥

हिन्दी:—ग्रह धातु से अनि प्रत्यय होता है ।

६८—प्रथेरमच् ।

अर्थ:—प्रथ प्रख्याने धातोः अमच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—प्रथमः—आद्यः, उत्तमः, नूतनः, प्रमुखः, अनुपमः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—प्रथते प्रख्यातो भवतीति प्रथमः, आद्य उत्तमो नूतनो वा ॥

हिन्दी:—प्रथ धातु से अमच् प्रत्यय होता है ।

६९—चरेश्च ।

अर्थ:—चर गति भक्षणयोः धातोरमच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—चरमः = अन्तिमः, पश्चिमः, वृद्धः, सर्वनिकृष्टः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—चरति गच्छति भक्षयतीति वा स चरमः, अन्त्यः पश्चिमो वा ॥

हिन्दी:—चर धातु से अमच् प्रत्यय होता है ।

\*१ क्ष्मा = क्ष्म + अच् अत्रोपधालोपे पुनः अजाद्यतष्टापि कृते क्ष्मा जायते ।

अधुनाचार्यश्रीकः पाणिनिप्रवरः शास्त्रान्ते वटुवृन्दानां  
मंगलमीहमानोऽन्ते “मंगेरलच्” सूत्रं विरचयति ।

७०—मंगेरलच् ।

अर्थः मगि गतौ धातोः अलच् प्रत्ययो भवति ।

उदाहरणम्:—मंगलम् = प्रशस्तम्, दिवस भेदः, कल्याणम् उल्लासः  
शुभकुशलं, आशीर्वादः, सौभाग्यं, आनन्दः, शुभावसरः, उत्सवः, शुभसंस्कारः ।

स्वामिदयानन्दवृत्तिः—मंगति प्राप्नोति सुखं येन तत् मंगलम् प्रशस्तम्;  
मंगलो वारभेदो वा । मंगलस्य भावो ‘मांगल्यम्’ ॥

हिन्दीः—मगि धातु से अलच् प्रत्यय होता है ।

रामेन्द्रियखनेत्रेब्दे, श्री विमलाप्रकाशिके ।

श्रावणे कृष्णे पञ्चम्यां, सुवृत्तीपरिपूरिते ॥

त इमे शब्दवृन्दानां, नानार्थप्रतिपत्तये ।

विद्यार्थिमुखपद्मानां, स्यातां श्रियां विवृद्धये ॥

यस्य देवस्य दिव्यस्य, कृपयैते समापिते ।

कृपाकाङ्क्षासमायुक्तो, धन्यवादान् करोम्यहम् ॥

इत्युत्तरप्रदेशान्तर्गत एटा मण्डलान्तःपाति-

कासगञ्जनगराभिजनेनाष्टचत्वारिंशदध्ययनत-

शिचत्रकूट (चित्तौडगढ) कृताखण्डनिवासेन

वैश्यवंशावतंसस्य श्रीनन्मूलस्य पौत्रेण

श्रीगोपीरामप्रसादगुप्तयोः पुत्रेण वैयाकरण

शिरोमणीनां प्राप्तराजसम्मानधुरन्धराणां पण्डितप्रवर

श्रीयुतभीमसेनशिष्येण सत्यव्रतवेदवागीशवेदाचार्य-

व्याकरणाद्याचार्येण सम्प्रति-आर्ष गुरुकुल आचार्य

रूपपाठकेन विरचितोणादिकोषे प्रकाशिकानाम्यांविमलायां च

टीकायां पञ्चमः पादः पूर्तिमगात् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

# उणादि-व्याख्यायां निर्दिष्टानां शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
	अ	अङ्कूरः	१ ३८	(अतसी)	३ ११७
अंसः	५ २१	अङ्कूषः	४ ७७	अतिथिः	४ २
(अंसलः)	५ २१	अङ्गः	४ २१७	(अतिथिः)	४ २
अंहः	४ २१४	अङ्गम्	१ १२३	अत्कः	३ ४३
अंहतिः	४ ६३	अङ्गारः	३ १३४	अत्नः	३ ६
अक्तम्	३ ८६	अङ्गिराः	४ २३७	अत्रिः	४ ६६
अक्षः	३ ६५	अङ्गुलिः	४ २	अत्री	४ ६६
अक्षरम्	३ ७०	(अजिः)	४ १४१	अदगः	१ १२३
(अक्षाणि)	३ ६५	अजिनम्	२ ४६	अदभुतम्	५ १
अक्षि	३ १५६	अजिरम्	१ ५३	(अदभुताध्यापकः)	५ १
अक्षणम्	३ १७	अञ्चतिः	४ ६२	अदमनिः	२ १०७
अगस्तिः	४ १८१	अञ्जलिः	४ २	अद्रिः	४ ६६
अग्निः	४ ५१	अञ्जिः	४ १४१	अधमम्	५ ५४
अग्रम्	२ २६	अञ्जिष्ठः	४ २	अध्वर्युः	१ ३७
अग्रेगूः	२ ६६	(अञ्जी)	४ १४	अध्वा	४ ११७
अघ्न्यः	४ ११३	अटविः	४ १३५	अनः	४ १६०
अंकः	४ २१७	अणवः	१ ६	अनलः	१ १०६
अंकतिः	४ ६२	अणु	१ ८	अनिलः	१ ५४
अङ्कुरः	१ ३८	अण्डः	१ ११४	अनीकम्	४ १८
अङ्कुशः	४ १०८	अतसः	३ ११७	अनेहाः	४ २२५

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
अन्तः	३ ८६	अयः	४ १६०	(अर्शसः)	४ १६७
अन्तः	५ ६०	(अयस्कान्तः)	४ १६०	अर्शसानः	२ ८६
अन्त्रम्	४ १६५	अयाः	४ २२३	अर्हन्तः	३ १२६
अन्दूः	१ ६३	अरणिः	२ १०४	अलकम्	५ ३५
अन्धः	४ २०७	अरण्यम्	३ १०२	अलकाः	५ ३५
अन्धुः	१ २७	अरण्यानी	३ १०२	अलतिः	४ ६१
अन्नम्	३ १०	अरतिः	४ ६१	अलाबूः	१ ८७
अन्यः	४ ११०	अरतिः	५ ७	अलिः	४ १४०
अपः	४ २०६	(अरत्तिः)	४ २	(अलिन्दः)	४ ८६
अपष्टु	१ २५	अररः	३ १३२	अलीकम्	४ २६
(अपिशालिः)	४ १२६	अररुः	४ ८०	अवगथः	२ ६
अप्तुः	१ ७५	अरिः	४ १४०	अवद्यम्	५ ५४
अप्नः	४ २०६	अरुः	२ ११६	अवनिः	२ १०४
अप्वा	१ १५४	अरुणः	३ ६०	अवन्तिः	३ ५०
अप्सरसः	४ २३८	अरूषः	४ ७४	अवन्तिः	२ ३
अप्सराः	४ २३८	अर्कः	३ ४०	अवभृथः	५ ५४
अब्जः	४ २१०	अर्चिः	२ ११०	अवसः	३ ११७
अब्दः	४ ६६	अर्जुनः	३ ५८	अविनः	२ ४७
अभिम्लातः	३ ८६	अर्जुनम्	३ ५६	अविषः	१ ४५
अभ्रकम्	२ ३३	(अर्जुनी)	३ ५८	(अविषी)	१ ४५
अमतः	३ ११०	अर्णः	४ १६८	अवीः	३ १५८
अमतिः	४ ६०	(अर्णवः)	४ १६८	अव्यथिषः	१ ४६
अमत्रम्	३ १०५	अर्थः	२ ४	(अव्यथिषी)	१ ४६
अमनिः	२ १०४	अर्पिसः	४ २	अशानिः	२ १०४
अमित्रः	४ १७५	अर्भः	३ १५२	अशित्रम्	४ १७४
अम्बरम्	३ १३१	अर्भकः	५ ५३	अशिरः	१ ५२
अम्बरीषः	४ ३०	अर्मः	१ १४०	अश्मा	४ १४८
(अम्बु)	१ २७	अर्यमा	१ १५६	अश्रिः	४ १३६
अम्ब्लः	४ १०६	अर्वः	५ ५४	अश्रु	५ २६
अम्भः	४ २११	अर्वा	४ ११४	अश्रुः	४ १०३
अम्लः	४ १०६	अर्शः	४ १६७	अश्वः	१ १५१

( २६८ )

उणादिकोषे

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
(अश्वरत्नम्)	३ १४	आडूः	१ ८६		इ
(अश्वा)	१ १५१	आतिः	४ १३२	इक्षुः	३ १५७
अष्ट (अष्टन)	१ १५७	आतुरः	१ ४१	(इक्षुकुट्टकः)	२ ३३
अष्टका	३ १४८	(आत्मनीनम्)	४ १५५	इदम्	४ १५८
असनः	२ ७६	आत्मा	४ १५४	इध्मः	१ १४५
असिः	४ १४१	(आत्रेयः)	४ ६६	इनः	३ २
असुः	१ १०	आपः	२ ५६	इन्दुः	१ १२
(असुरः)	१ १०	आपः	४ २०६	इन्द्रः	२ २६
असुरः	१ ४२	आपणिकः	२ ४६	इभः	३ १५३
अस्तिः	४ १८१	आपतिकः	२ ४६	(इरम्मदः)	२ २६
अस्त्रम्	४ १६०	आपनिकः	२ ४६	इरा	२ २६
अस्थि	३ १५४	आमयः	४ १००	(इरावान्)	२ २६
अस्मद्	१ १३६	आमलकः	२ ३३	इरिणम्	२ ५२
(अस्रपः)	२ १३	(आमलकी)	२ ३३	इल्वलः	४ १०८
अस्रम्	२ १३	आमिक्षा	३ ६६	इषिरः	१ ५१
अस्रुः	४ १०३	आमिषम्	१ ४६	इषीका	४ २२
अहः	१ १५८	(आम्मसिकः)	४ २११	इषुः	१ १३
अहल्या	४ ११३	आम्रम्	२ १६	इष्टका	३ १४८
अहिः	४ १३६	आयुः	१ २	इष्मः	१ १४५
	<b>आ</b>	आयुः	२ १२०		<b>ई</b>
आखनिकः	२ ४६	आरुः	१ ८५	ईर्मम्	१ १४५
आखुः	१ ३३	आर्द्रम्	२ १८	ईश्वरः	५ ५७
आख्याः	४ २३४	(आर्द्रा)	२ १८	(ईश्वरी)	५ ५७
आगः	४ २१२	(आलिन्दः)	४ ८६	ईष्वः	१ १५३
(आगन्तुः)	१ ६६	आलुः	१ ५		<b>उ</b>
(आगस्त्यः)	४ १८१	आवसथः	३ ११६	उक्थम्	२ ७
आगान्तुः	५ ४३	आविः	२ ११०	उक्षा	१ १५६
आगामी	४ ७	आशु	१ १	उग्रः	२ २६
(आङ्गिरसः)	४ २३७	आशुः	१ १	उग्रतेजाः	४ २२८
आजिः	४ १३२	आशुशुक्षणिः	२ १०५	उचितम्	४ १८७
आडम्बरः	३ १३१	आष्ट्रम्	४ १६१	उच्चैः	५ १२



शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २६६ )

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
उज्झकः	२	३८	उषः	४	२३५	ऋजीषम्	४	२६
उत्सः	३	६८	उषा	४	२३५	ऋजुः	१	२७
उदकधरः	२	२३	उष्ट्रः	४	१६३	ऋजः	२	२६
उदकम्	२	४०	उष्णम्	३	२	ऋञ्जसानः	२	८८
उदरथिः	४	८६	उष्म	४	१४६	ऋतम्	३	८६
उदरम्	५	१६	उष्मा	४	१४६	ऋतुः	१	७२
उदशिवत्	२	५८	उस्रः	२	१३	ऋषमः	३	१२३
उद्गीथः	२	१०	(उस्रा)	२	१३	ऋषिः	४	१२१
उद्रः	२	१३				ऋष्यः	४	११३
उन्नेता	२	६५	ऊधः	४	१६४	ए		
उपदेष्टा	२	६६	ऊनः	३	२	एकः	३	४३
उपह्वरः	३	१	ऊमम्	१	१४४	एतः	३	८६
(उमा)	१	१४४	ऊरुः	१	३०	एतत्	१	१३३
उरः	४	१६६	(ऊर्णनामः)	५	४७	एतशः	३	१४६
उरणः	५	१७	(ऊर्णनाभिः)	५	४७	एतशाः	३	१४६
(उरसिलः)	४	१६६	(ऊर्णा)	५	४७	(एता)	३	८६
उरु	१	३१	(ऊर्णायुः)	५	४७	एधतुः	१	७७
उलपम्	३	१४५	ऊर्दरः	५	४०	एनः	४	१६६
उलूकः	४	४२	ऊर्मिः	४	४५	(एनी)	३	८६
उल्का	३	४२	ऊष्मा	४	१४६	एलूकः	४	४२
उत्वः	४	६६				एवः	१	१५२
उल्मुकम्	३	८४	ऋक्	२	५८	ऐरावती	२	२६
उशानाः	४	२४०	ऋक्थम्	२	७			
उशिक्	२	७२	ऋक्षः	३	६७	ओकः	३	४१
उशी	४	१	ऋक्षम्	३	६६	ओकः	४	२१७
(उशीनरः)	४	१	ऋक्षरः	३	७५	ओजः	४	१६३
उशीरम्	४	३२	ऋच्छरः	३	१३१	ओतुः	१	६६
उषः	४	२३५	(ऋच्छरा)	३	१३१	ओदनः	२	७७
उषपः	३	१४२	ऋजीकः	४	२३	ओम्	१	१४२
(उषर्बुधः)	४	२३५	ऋजीकः	५	५१	ओष्ठः	२	४

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
(औक्थिकः)	२	७	कडत्रम्	३	१०६	कबरः	४	१५६
(औजसिकः)	४	१६३	कडम्बः	४	८३	(कबरा)	४	१५६
			कडारः	३	१३५	(कबरी)	४	१५६
कंसः	३	६२	कणीचिः	४	७१	कमठः	१	१००
कक्खटम्	४	८२	कण्ठः	१	१०३	(कमठम्)	१	१००
कक्षः	३	६२	कण्डोलः	०	६६	कमरः	३	१३२
कक्षम्	३	६२	कण्वः	१	१५१	कमलः	१	१०४
कंकटः	४	८२	कण्वम्	१	१५१	कमलम्	१	१०४
कंकणः	४	२५	कदम्बः	४	८३	(कमला)	१	१०४
कंकणीका	४	१६	कदरः	३	१३१	कम्बलः	१	१०७
कचपम्	३	१४२	(कदरी)	३	१३१	कम्बूः	१	६३
कच्छः	४	१०६	(कदलः)	३	१३१	करकः	५	३५
कच्छूः	१	८४	कदलीः	१	१०८	(करका)	५	३५
कंचूलः	४	६१	(कदली)	३	१३१	करटः	४	८२
कंजारः	३	१३७	कद्रुः	४	१०३	करण्डः	१	१२६
कटकः	५	३५	कनकम्	२	३३	करभः	३	१२२
कटकम्	२	३३	कन्तुः	१	१७	करम्बम्	४	८३
कटप्रूः	२	५८	कन्तुः	१	७३	करिः	४	१३०
कटम्बः	४	८३	कन्दः	४	६६	करीरः	४	३१
कटिः	४	११६	कन्दरः	३	१३१	करीषः	४	२७
कटत्रिम्	४	१७४	कन्दुः	१	१४	करुणः	३	५३
(कटी)	४	११६	कन्या	४	११३	(करुणा)	३	५३
कटीरः	४	३१	कपटः	४	८२	करेटुः	१	३७
कटुः	१	८	कपालम्	१	११८	करेणुः	२	१
कटोलः	१	६६	कपिः	४	१४५	कर्कः	३	४०
कट्वरम्	३	१	कपिलः	१	५५	कर्कटः	४	८२
कठाकुः	३	७७	(कपिशः)	४	१४५	कर्कम्बूः	१	६३
कठिनम्	२	५०	कपोतः	१	६२	कर्करः	३	१३१
कठेरः	१	५८	कपोलः	१	६६	कर्करीकम्	४	२१
कठोरः	१	६४	कफेलूः	१	६३	(कर्करीका)	४	२१

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
कर्करेटुः	१	३७	कश्यः	४	११३	किकिदीविः	४	५७
कर्णः	३	१०	कषाकुः	३	७७	किकीदिविः	४	५७
कर्दमः	४	८५	कषिः	४	१४१	किंकणीका	४	१६
कर्पटः	४	८२	कषीका	४	१७	किम्	४	१५६
कर्परः	३	१३१	कस्तूरः	४	६१	किरणः	२	८२
कर्पासः	५	४५	(कस्तूरी)	४	६१	किरिः	४	१४४
कर्पूरः	४	६१	काकः	३	४३	किरीटम्	४	१८६
कर्बुरः	१	४१	काकुः	१	१	किरीरः	४	३१
कर्म	४	१४६	काणूकः	४	४०	किर्मीरः	४	३१
कर्वः	१	१५५	काण्डम्	१	११५	किल्बिषम्	१	५०
कर्वरः	२	१२३	(काण्वी)	१	१५१	किशोरः	१	६५
(कर्वरी)	२	१२३	कादम्बः	४	८४	कीकसम्	३	११७
कर्षूः	१	८०	कारिः	४	१३०	कीकीदीविः	४	५७
कलत्रम्	३	१०६	कारुः	१	१	कीचकः	५	३६
कलभः	३	१२२	(कारुणिकः)	३	५३	कीनाशः	५	५६
कलमः	४	८५	(कार्पासः)	५	४५	कीर्तिः	४	१२०
कलापकः	२	३३	कार्षकः	२	३६	कुकुरः	१	४१
कलिः	४	११६	कार्षिः	४	१२८	कुक्कुरः	१	४१
कलिलम्	१	५४	काशिः	४	११६	कुक्षः	३	६८
कलुषम्	४	७६	(काशी)	४	११६	कुक्षिः	३	१५५
कल्कम्	३	४०	काशूः	१	८५	कुचितम्	४	१८७
कवचम्	४	२	(काश्यः)	४	११६	कुटपः	३	१४२
कवलः	१	१०६	काष्ठपुत्रिका	२	३३	कुटरुः	४	८१
कवसः	४	२	काष्ठम्	२	२	कुटिः	४	१४४
कविः	४	१४०	(काष्ठा)	२	२	कुटितम्	४	१८७
(कवी)	४	१४०	कासारः	३	१३६	कुटिलः	१	५४
कशेरुः	१	८८	किंवदन्ती	३	५०	(कुटी)	४	१४४
(कशेरुः)	१	८८	किंशारुः	१	४	(कुटीरः)	४	३१
कश्मलम्	१	१०६	किकिदिवः	४	५७	कुट्मलः	१	१०६
कश्मीरः	४	३३	किकिदिविः	४	५७	कुठिः	४	१४५

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
कुठेरः	१	५८	कुविन्दः	४	८७	कृषकः	२	३६
कुड्मलः	१	१०६	कुशलः	१	१०६	कृषिः	४	१२१
कुड्मलम्	४	१८८	(कुशलम्)	१	१०६	कृषिः	४	१२८
कुड्यम्	४	११३	कुष्ठः	२	२	कृषिकः	२	४१
कुणपः	३	१४३	कुष्मलम्	४	१८८	कृष्णः	३	४
कुणालः	३	७६	कुसितः	४	१०७	(कृष्णा)	३	४
कुणिन्दः	४	८६	कुसीदम्	४	१०७	कृसरः	३	७३
कुण्डः	१	११५	कुसुमम्	४	१०७	केतुः	१	७४
कुण्डलम्	१	१०४	कुसुम्भम्	४	१०७	केलिः	४	११६
(कुण्डा)	१	११५	कुसूलः	४	६१	केवलः	१	१०६
कुण्डिनः	२	५०	कुहकः	२	३८	केशः	५	३३
(कुण्डोष्णी)	४	१६४	कुडुः	१	३७	(केशवः)	५	३३
कुन्तिः	३	५०	कूचः	४	६२	(केशिकः)	५	३३
(कुन्ती)	३	५०	(कूची)	४	६२	(केशी)	५	३३
कुन्दः	४	६६	कूपः	३	२७	कोकिलः	१	५४
कुपिन्दः	४	८७	कृकवाकुः	१	६	कोटरः	३	१३१
कुबेरः	१	५६	कृच्छ्रः	२	२१	कोटिः	४	११६
कुब्रम्	२	२६	कृतकम्	२	३८	कोमलः	१	१०६
कुमारः	३	१३८	कृत्तिका	३	१४७	कोमलम्	१	१०६
कुमारयुः	१	३७	कृत्तुः	३	३०	कोरकः	५	३५
कुम्भीरः	४	३१	कृत्सम्	३	६६	कोशलः	१	१०६
कुरङ्गः	१	१२१	कृत्सन्म	३	१७	कोष्ठः	२	४
(कुरङ्गी)	१	१२१	कृदरः	५	४१	कोष्ठम्	२	४
कुररः	३	१३३	कृन्तत्रम्	३	१०६	(कौण्डिन्यः)	२	५०
कुरीरम्	४	३४	कृपणः	२	८०	क्रतुः	१	७६
कुरुः	१	२४	कृपाणः	२	६१	क्रयिकः	२	४५
कुलालः	१	११८	कृपीटम्	४	१८६	क्रान्तुः	५	४३
कुलीरः	४	३४	कृमिः	४	१२३	क्रिमिः	४	१२३
कुल्फः	५	२६	कृविः	४	५७	क्रुश्वा	४	११५
कुल्मलम्	४	१८६	कृशानुः	४	२	क्रूरः	२	२१

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
क्रेणिः	४	४६	खट्वा	१	१५१	गण्डूषः	४	७६
(क्रेणी)	४	४६	खडूः	१	८२	गण्डोलः	१	६६
क्रोष्टुः	१	६६	खड्गः	१	१२४	गतिला	१	५७
क्लेदा	१	१५६	खड्ङ्गः	१	८२	गदयित्नुः	३	२६
क्लेदुः	१	१०	खण्डः	१	११४	गन्तुः	१	६६
क्षता	२	६५	खदिरः	१	५३	गन्त्री	४	१६०
क्षत्रम्	४	१६८	खनिः	४	१४१	गभस्तिः	४	१८१
क्षान्तुः	५	४३	खनित्रम्	४	१६२	गभीरः	४	३६
क्षित्वा	४	११५	खरुः	१	३६	गमथः	३	११३
क्षिपणिः	२	१०६	खर्जूः	१	८०	गमी	४	६
क्षिपणुः	३	५२	खर्जूरः	४	६१	गम्भीरः	४	५६
क्षिपण्युः	३	५१	(खर्जूरी)	४	६१	गरुडः	४	१३७
क्षिप्रम्	२	१३	खलतिः	३	११२	गरुत्	१	६४
क्षीरम्	४	३५	खष्पः	३	२८	गर्गः	१	१२८
क्षुद्रः	२	१३	खाटिः	४	१२६	गर्तः	३	८६
(क्षुद्रा)	२	१३	खात्रम्	४	१६३	गर्दभः	३	१२२
क्षुधुनः	३	५५	खानिः	४	१४१	गर्भः	३	१५२
क्षुमा	१	१४५	खिदिरः	१	५१	(गर्भिणी)	३	१५२
क्षुरः	२	२६	खिद्रः	२	१३	(गर्भिता)	३	१५२
क्षेत्रम्	४	१७१	खुरः	२	२६	गर्मुत्	१	६५
क्षेमम्	१	१४०			<b>ग</b>	गर्वः	१	१५५
क्षोणिः	४	४६	गगनम्	२	७८	गर्वरः	२	१२३
(क्षोणी)	४	४६	गंगा	१	१२३	गवयः	२	६८
क्षोत्ता	२	६५	(गजरत्नम्)	३	१४	(गवयी)	२	६८
क्षोमम्	१	१४०	गडेरः	१	५८	गह्वरम्	३	१
क्ष्मा	५	६५	गडोलः	१	६६	गातुः	१	७३
		<b>ख</b>	गण्डः	१	११४	गात्रम्	४	१७०
खजपम्	३	१४२	गण्डयन्तः	३	१२८	गाथा	२	४
खजाकः	४	१३	गण्डिः	४	११६	गान्तुः	५	४३
(खजाका)	४	१३	गण्डुः	१	७	गान्त्रम्	४	१६१

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
गारित्रम्	४	१७२	(गौरी)	१	६५	च		
गिरिः	४	१४४	(गौरी)	२	२६	चकोरः	१	६४
गुडः	१	११५	ग्रन्थिः	४	१४१	चक्रधरः	२	२३
गुडेरः	१	५८	ग्रहणिः	५	६७	चक्रुः	१	२२
गुत्सः	३	६८	(ग्रहणी)	५	६७	चक्षुः	२	१२१
गुधेरः	१	६१	ग्रामः	१	१४३	चङ्कुरः	१	३८
गुपिलः	१	५६	ग्रीवा	१	१५४	चञ्चरीकः	४	२१
गुरुः	१	२४	ग्रीष्मः	१	१४६	चटुलः	१	६६
गुर्विणी	२	५५	ग्लानिः	४	५२	चण्डः	१	११४
गुल्फः	५	२६	ग्लौः	२	६५	चण्डालः	१	११७
गुवाकः	४	१६	(ग्लौकरोति)	२	६६	चण्डिला	१	५७
गुहिलम्	१	५६	(ग्लौभवति)	२	६६	(चण्डी)	१	११४
गुहेरः	१	६१	(ग्लौस्यात्)	२	६६	(चतस्रः)	५	५८
गूथम्	२	१२	घ			चतुरः	१	३८
गृत्सः	३	६६	घटिः	४	११६	चत्वरम्	२	१२३
गृधुः	१	२३	(घटी)	४	११६	चत्वारः	५	५८
गृध्रः	२	२५	(घटोष्ठी)	४	१६४	(चत्वारि)	५	५८
गृहयाय्यः	३	६६	घतनः	५	४२	चनः	४	२०१
गेषुः	३	१६	घर्मः	१	१४६	चन्दनम्	२	७६
(गोकरोति)	२	६८	घातनः	५	४२	चन्दिरः	१	५१
गोत्रम्	४	१६८	घातिः	४	१२६	चन्दिरम्	१	५१
(गोत्रा)	४	१६८	घासिः	४	१३१	चन्द्रः	२	१३
गोधूमः	५	२	घुण्डः	१	११५	चन्द्रमाः	४	२२६
(गोधूममयः)	५	२	घुरणः	२	८४	चपलः	१	१११
गोपीथः	२	६	घूर्णिः	४	५३	(चपला)	१	१११
(गोमायुः)	१	१	घृणा	३	४	चपेटः	४	८२
गौः	२	६८	घृणिः	४	५३	चमरः	३	१३२
गौरः	१	६५	घृतम्	३	८६	(चमरी)	१	१३२
गौरः	२	२६	घृष्विः	४	५७	चमसः	३	११७
गौरम्	१	६५	घोरम्	५	६४	(चमसी)	३	११७

शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २७५ )

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
चमूः	१ ८०	च्युपः	३ २४	जङ्घा	५ ३१
चम्पा	३ २८	च्यौत्नम्	४ १०५	जटा	५ ३०
चरकः	२ ३३		छ	(जटायुः)	२ १२०
चरमः	५ ६६	छगलः	१ ११३	(जटालः)	५ ३०
चरिः	४ १४१	छत्रम्	४ १६०	जटिः	४ ११६
चरित्रम्	४ १७३	छत्वरः	३ १	जटिलः	५ ३०
चरुः	१ ७	छदिः	२ ११०	(जटिला)	५ ३०
चर्पटः	४ ८२	छद्म	४ १४६	जठरम्	५ ३८
चर्म	४ १४६	छन्दः (अदन्तः)	४ २२०	जतु	१ १८
चषकम्	२ ३३	छन्दः (सान्तः)	४ २२०	जत्रु	४ १०३
चषालः	४ १०८	छमण्डः	१ १२६	जनिः	४४ १३१
(चाक्षुषम्)	२ १२१	छर्दिः	२ ११०	जनित्वः	४ १०५
चाटु	१ ३	छलम्	१ १०४	जनिमा	४ १५०
चात्वालः	१ ११६	छविः	४ ५७	जनुः	२ ११७
(चामरः)	३ १३२	छागः	१ १२४	जन्तुः	१ ७३
चारित्रम्	४ १७३	छातः	३ ८६	जन्म (नान्तः)	४ १४६
चारु	१ ३	छाया	४ ११०	जन्मः (अदन्तः)	१ १४५
चिकुराः	१ ४१	छित्तरः	३ १	जन्यम्	४ ११२
चिक्कणम्	४ १७७	(छित्त्वरी)	३ १	जन्युः	३ २०
(चित्रभानुः)	३ ३२	छिदकम्	२ ३८	जम्बः	४ ६६
चित्रम्	४ १६५	छिदिः	४ १४४	जम्बीरः	४ ३१
(चित्रा)	४ १६५	छिदिरः	१ ५१	जम्बुः	१ ६३
चीरम्	२ २६	छिद्रम्	२ १३	जम्बूः	१ ६३
चीवरः	३ १	छेदिः	४ १२०	जम्बूकः	४ ४२
चीवरम्	३ १			जम्भलः	१ १०६
चुक्रः	२ १४	जगत्	२ ८५	जयन्तः	३ १२८
चुब्रम्	२ २६	(जगनी)	२ ८५	(जयन्ती)	३ १२८
चूर्णिः	४ ५३	जघनम्	५ ३२	जरठः	१ १००
चेतः	४ १६०	(जघन्यम्)	५ ३२	जरन्तः	३ १२६
(चैत्रः)	४ १६५	जघ्नुः	१ २२	जरसानः	२ ८७

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
जरायुः	१	४	जीवातुः	१	७८	तन्द्रिः	४	६७
जरुथः	२	६	जुहुराणः	२	६२	(तन्द्री)	४	६७
जर्जरः	३	१३१	जुहूः	२	६१	तन्यतुः	४	२
जर्णः	३	१०	जूः	२	५८	तपः	४	१६०
जर्तुः	५	४६	जूर्णिः	४	४६	तपसः	३	११७
जसुरिः	२	७४	जैवातृकः	१	७६	(तपस्यः)	४	१६०
जहकः	२	३५	ज्यानिः	४	४६	तपुः	२	११६
जहनुः	३	३६	ज्योतिः	२	११२	तमः	४	१६०
जागृविः	४	५५	(ज्योतिषम्)	२	११२	तमतः	३	११०
जातवेदाः	४	२२८				तमसः	३	११७
जानु	१	३	डमरुः	१	३७	तमालः	१	११८
जामाता	२	६७				तरंगः	१	१२०
जामिः	४	४४	तकिला	१	५७	तरणिः	२	१०४
जाया	४	११२	तक्रम्	२	१३	तरण्डः	१	१२६
जायुः	१	१	तक्षकः	२	३३	तरन्तः	३	१२८
जिगल्नुः	३	३१	तक्षा	१	१५६	तरलः	१	१०६
(जित्वरी)	४	११५	तडाका	४	१६	तरसम्	३	११७
जित्वा	४	११५	तडागः	४	१६	तरसानः	२	८७
जिनः	३	२	तडिः	४	११६	तरिः	४	१४०
जिब्रिः	५	४६	तडित्	१	६८	तरी	४	१४०
जिह्वः	१	१४१	तण्डुलः	४	१०८	तरीः	३	१५८
जिह्वा	१	१५४	तण्डुलाः	५	६	तरीषः	४	२७
जीमूतः	३	६१	ततम्	३	८८	तरुः	१	७
जीरः	२	२४	तद्	१	१३२	तरुणः	३	५४
(जीरदानुः)	२	२४	तनयः	४	१००	(तरुणी)	३	५४
जीर्विः	४	५५	तनुः		(उकारांतः) १-७	तर्कारः	३	१३६
जीवथः	३	११३	तनुः		(सान्तः) २	११६ (तर्कारी)	३	१३६
(जीवदानुः टिप्प०)	३	२३	तनुः	१	८०	तर्कुः	१	१६
जीवन्तः	३	१२७	तन्तुः	१	६६	तर्दूः	१	८६
(जीवन्ती)	३	१२७	तन्त्रीः	३	१५८	तर्म	४	१४६



शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
तर्षः	३ ६२	तीवरः	३ १	त्रोत्रम्	४ १७४
तलिनम्	२ ५४	तीव्रम्	२ २६	त्वक्	२ ६४
तलुनः	३ ५४	तुण्डिः	४ ११६	त्वष्टा	२ ६७
(तलुनी)	३ ५४	तुण्डिलः	१ ५४	त्सरुः	१ ७
तल्पम्	३ २८	तुत्यः	२ ७	द	
तविषः	१ ४८	(तुत्या)	२ ७	दंष्ट्रा	४ १६०
(तविषी)	१ ४८	तुन्दः	४ ६६	दक्षाय्यः	३ ६६
तसरः	३ ७५	(तुन्दी)	४ ६६	दक्षिणः	२ ५१
तातः	३ ६०	तुषारम्	३ १३६	(दक्षिणा)	२ ५१
तामसम्	३ ११७	तुहिनम्	२ ५३	दण्डः	१ ११४
ताम्बूलम्	४ ६१	तूणीरः	४ ३१	दण्डधरः	२ २३
ताम्रम्	२ १६	तूणिः	४ ५२	दद्रुः	१ ६०
तालुः	१ ५	तूलिः	४ १२१	दद्रुः	१ ६०
ताविषः	१ ४८	(तूली)	४ १२१	दधिषाय्यः	३ ६७
(ताविषी)	१ ४८	तूस्तम्	३ ८६	दन्तः	३ ८६
तिग्मः	१ १४६	(तूस्तयति)	३ ८६	(दन्तुरः)	३ ८६
(तिग्मम्)	१ १४६	तृणम्	५ ८	दभ्रः	२ १३
(तिग्मा)	१ १४६	तृपत्	२ ८६	दमथः	३ ११३
तिजिलः	१ ५६	तृपला	१ १०४	दमुनाः	४ २३६
तितउः	५ ५२	तृप्रः	२ १३	(दमूनाः (टि०))	४ २३६
तित्तिरिः	४ १४४	तृपला	१ १०४	दरत्	१ १३०
तिथः	२ १२	तृष्णा	३ १२	दरथः	३ ११३
तिन्तिडीकः	४ २१	तोमरः	३ १३१	दरसानः	२ ८७
तिमिः	४ १२३	त्यद्	१ १३२	ददर्रीकम्	४ २१
तिमिरम्	१ ५१	त्रपु	१ १०	ददुर्दुरः	१ ४०
तिरीटम्	४ १८६	त्रयः	५ ६६	दद्रूः	१ ६०
तीक्षणः	३ १८	त्रिः	५ ६६	दर्भः	३ १५
(तीक्षणम्)	३ १८	त्रिपिष्टपम्	३ १४५	दर्बः	१ १५१
(तीक्ष्णा)	३ १८	त्रिफला	१ १०४	दर्विः	३ ८४
तीर्थम्	२ ७	त्रिविष्टपः	३ १४५	दर्विः	४ ५४

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
(दर्वी)	४ ५४	दीनारः	३ १४०	द्रविणम्	२ ५१
दर्शतः	३ ११०	दुकूलम्	४ ६१	द्रुः	१ ३५
दलपः	३ १४२	दुष्टुः	१ २५	(द्रुमः)	१ ३५
दल्मः	३ १५१	दुहिता	२ ६७	द्रुहिणः	२ ५०
दल्मिः	४ ४८	दूतः	३ ६०	द्रूः	२ ५८
दश	१ १५७	दूतिः	४ १८१	द्रोणः	३ १०
दशेरः	१ ५८	(दूती)	३ ६०	द्रोणिः	४ ५२
दस्मः	१ १४५	(दूती)	४ १८१	(द्रोणी)	३ १०
दस्युः	३ २०	दूरम्	२ २०	द्वाः	२ ५८
दस्रः	२ १३	दूषीका	४ १७	ध	
दहः	२ १३	दृतिः	४ १८५	धनम्	२ ८२
दाकः	३ ४०	दृप्रः	२ १३	धनुः (उकारान्तः)	१७
दात्रम्	४ १७१	दृम्फूः	१ ६३	धनुः(सान्तः)	२ ११६
दात्वः	४ १०५	दृशानः	२ ६१	धनूः	१ ८०
दानुः	३ ३२	दृशुः	१ २३	धन्वम्	४ ६६
दाम	४ १४६	दृषत्	१ १३१	धन्वा	१ १५६
दारु	१ ३	देवटः	४ ८२	(धन्वी)	४ ६६
दारुणम्	३ ५३	देवयुः	१ ३७	धमकः	२ ३६
दाशः	५ ११	देवरः	३ १३२	धमनिः	२ १०४
(दाशी)	५ ११	देवलः	१ १०६	धरणिः	२ १०४
दासः	५ १०	देवा	२ १०१	धरित्री	४ १७४
(दासी)	५ १०	देविलः	१ ५६	धरिमा	४ १४६
दिधिषूः	१ ६३	देषुः	३ १६	धर्त्रम्	३ १६८
दिनम्	२ ५०	दोः	२ ७०	धर्मः	१ १४०
दिवसः	३ १२१	दोषा	४ १७६	धर्षणिः	२ १०६
(दिवसम्)	३ १२१	(दौहित्रः)	२ ६७	(धर्षणी)	२ १०६
दिवा (नान्तः)	१ १५६	द्युवा	१ १५६	धवलः	१ १०६
दिवा (आकारान्तः)	४ १७६	द्योतनः	२ ७६	धवाणकः	३ ८३
दीदिविः	४ ५६	द्यौः	२ ६८	धाकः	३ ४०
दीनः	३ २	द्यौत्रम्	४ १६२	धाणकः	३ ८३

शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २७६ )

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
धातकम्	३	१४८	ध्यात्वम्	४	१०६	नलिनम्	२	५०
(धातकी)	३	१४८	ध्यामा	४	१५२	नवन्	१	१५७
धाता	२	६६	घ्राडिः	४	११६	नहुषः	४	७६
धातुः	१	६६	ध्रुवम्	२	६२	ना	२	१०२
धानाः	३	६	ध्वनिः	४	१४१	नाकुः	१	१८
धान्यम्	५	४८			न	नागः	५	६१
(धान्यवनिः)	४	१४१	नंशुकः	२	३१	नान्त्रम्	४	१६१
धाम	४	१५२	नक्षत्रम्	३	१०५	नापितः	३	८७
धासाः	४	२२२	नखः	५	२३	नाभिः	४	१२७
धिषणः	२	८३	नखरः	३	१३१	(नाभी)	४	१२७
धिषणा	२	८३	नखिः	४	१४०	नाम	१	१५२
धिष्यः	४	१०८	नगः	५	६१	नारंगः	१	१२२
धीरः	२	२५	नटः	४	१०५	(नारी)	२	१०२
धीवरः	३	१	नदनुः	३	५२	निकषा	४	१७६
(धीवरी)	४	११६	ननन्दा	२	१००	निघण्टुः	१	३७
धीवा	४	११६	ननान्दा	२	१००	निघातिः	४	१२६
ध्रुवकः	२	३३	नन्दन्तः	३	१२७	निघृष्वः	१	१५३
ध्रुवनः	२	८१	(नन्दन्ती)	३	१२७	निद्रा	२	१८
ध्रुस्तूरः	४	६१	नन्दयन्तः	३	१२८	निधनम्	२	८२
ध्रुकः	३	४७	नन्दिः	४	११६	निधुवनम्	२	८१
(ध्रुका)	३	४७	नप्ता	२	६७	निम्बः	४	६६
ध्रूमः	१	१४५	(नप्त्री)	२	६७	निर्ऋथः	२	८
(ध्रूमकेतुः)	१	७४	नभः	४	२१२	निशीथः	२	६
धूर्तः	३	८६	नभसः	३	११७	(निश्रेणी)	४	५२
धृत्वा	४	११५	(नभस्यः)	४	२१२	निषंगथिः	४	८८
धृषुः	१	२३	नभाकम्	४	१६	निषद्वरः	२	१२४
धेनः	३	११	नमतः	३	११०	(निषद्वरी)	२	१२४
(धेना)	३	११	नुमसः	३	११७	निष्कः	३	४५
धेनुः	३	३४	नयनम्	२	७६	निहाका	३	४४
(धेनुका)	३	३४	नरकम्	५	३५	नीकः	३	४७

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
नीचैः	५	१३	पटाकः	४	१५	पद्मा	४	११४
नीथः	२	२	पटीरः	४	३१	पनसः	३	११७
नीपः	३	२३	पटुः	१	१८	पन्थाः	४	१२
नीरम्	२	१३	पटोलः	१	६६	पन्नः	३	१०
नीलङ्गुः	१	३६	पटवः	१	१५३	पपीः	३	१५६
नीवरः	३	१	पणसः	३	११७	पपुः	१	२२
नीविः	४	१३७	पणिः	४	११६	पम्पा	३	२८
(नीवी)	४	१३७	पण्डः	१	११४	पयः	४	१६१
नृचक्षाः	४	२३४	(पण्डा)	१	११४	(पयस्विनी)	४	१६१
नृतू	१	६१	पतंगः	१	११६	(पयस्वी)	४	१६१
नेपः	३	२३	पतत्रम्	३	१०५	पयोधाः	४	२३१
नेमः	१	१४०	पतत्रिः	४	७०	परमेष्ठी	४	१०
नेमिः	४	४४	(पतत्री)	४	७०	परशुः	१	३३
नेष्ठा	२	६७	पतसः	३	११७	परिज्वा	१	१५६
नोधाः	४	२२७	पताका	४	१५	परिव्राट्	२	६०
नौः	२	६५	पतिः	४	५८	परिहाणिः	४	५२
(नौकरोति)	२	६६	पतेरः	१	५८	परीरम्	४	३१
न्यङ्कुः	१	१७	पत्तनम्	३	१५०	परुः	२	११६
न्योजाः	४	२२४	पत्तिः	४	१८३	परुषम्	४	७६
		<b>प</b>	पत्रम्	४	१६०	पर्जन्यः	३	१०३
पक्त्रम्	४	१६८	पत्सलः	३	७४	पर्णमुक्	२	२३
पक्षः	३	६६	पथः	४	१२	पर्णम्	३	६
पक्षः	४	२२१	(पथा)	४	१२	पर्णरुट्	२	२३
पङ्गुः	१	३६	पथिलः	१	५७	पर्णशुट्	२	२३
पचतः	३	११०	पदविः	४	१३५	पर्णसिः	४	१०८
पचिः	४	११६	(पदवी)	४	१३५	पर्पटः	४	८२
पचेलिमः	४	३८	पदाजिः	४	१३३	पर्पम्	३	२८
पञ्चन्	१	१५७	पदातिः	४	१३३	पर्परीकः	४	२०
पञ्चालः	१	११८	पद्मम्	१	१४०	पर्व	४	११४
पटलः	१	१०४	पद्मः	२	१३	पर्वतः	३	११०

शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २८१ )

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
पर्शुः	१ ३३	पादूः	१ ८५	पुण्डरीकम्	४ २१
पर्शुः	५ २७	(पापः)	३ २३	पुण्ड्रः	२ १३
पर्षत्	१ १३०	पापम्	३ २३	पुण्यम्	५ १५
पललम्	१ १०६	पाप्मा	४ १५२	पुत्रः	४ १६६
पलाण्डुः	१ ३७	पायुः	१ १	पुमान्	४ १७६
पलालम्	१ ११८	पारक्	१ १३६	पुरणः	२ ८२
पलितः	३ ६३	पारुः	४ १०२	पुरिः	४ १४४
पलितम्	५ ३४	पार्श्वः	५ २७	पुरीषम्	४ २८
पल्वलः	४ १०८	पार्ष्णिः	४ ५३	पुरुः	१ २३
पवाका	४ १४	पालिः	४ १३१	पुरुषः	४ ७५
पविः	४ १४०	पाशधरः	२ २३	पुरूखाः	४ २३३
पशुः	१ २७	पाषाणः	२ ६१	पुरोधः	४ २३२
(पांशुः)	१ २७	पिंगलः	१ १०६	पुलस्तिः	४ १८१
पांसुः	१ २७	पिञ्जरः	३ १३१	पुलिनम्	२ ५४
पाकः	३ ४३	पिञ्जूलम्	४ ६१	पुलिन्दः	४ ८६
पाकः	५ ५३	पिण्डिलः	१ ५४	पुष्करम्	४ ४
पाकुक्	२ ३१	पिण्याकः	४ १६	पुष्कलम्	४ ५
पाजः	४ २०४	पिता	२ ६७	पुष्पप्रचायिका	२ ३३
पाणिः	४ १३४	पिनाकः	४ १६	पूगः	१ २४
पाण्डुः	१ ३७	पियालः	३ ७६	पूजिलः	१ ५६
पातालः	१ ११७	पिशितम्	३ ६५	पूरुषः	४ ७५
पातिः	५ ५	पिशुनः	३ ५५	पूषा	१ १५६
पात्रः	४ १६०	पीतुः	१ ७१	पृथक्	१ १३६
(पात्रम्)	४ १६०	पीथः	२ ७	पृथवी	१ १५०
पात्रम्	४ १७१	पीयुः	१ ३६	पृथिवी	१ १५०
(पात्री)	४ १६०	पीयूषम्	४ ७७	पृथुः	१ २८
(पात्री)	४ १७१	पीलुः	१ ३७	पृथुकः	५ ५३
पाथः(उदकम्)	४ २०५	पीवरः	३ १	पृथ्वी	१ १५०
पाथः(अन्नम्)	४ २०६	(पीवरी)	४ ११६	पृदाकुः	३ ८०
पाथिः	२ ११६	पीवा	४ ११६	पृशिनः	४ ५३

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
पृषत्	२ ८५	प्रातः	५ ५६	बर्करः	३ १३१
पृषतः	३ ११	प्रापणिकः	२ ४२	बर्वरः	३ १३१
पृष्ठम्	२ १२	प्रावृट्	२ ५८	बर्हिः	२ १११
पेचकः	५ ३७	(प्रेर्त्वरी)	४ ११८	बर्हिणः	२ ५०
पेत्वम्	४ १०६	प्रेर्त्वा	४ ११८	बलिः	४ १२५
पेयुषम्	४ ७७	प्रोथः	२ १२	बल्हिः	४ ११६
पेरुः	४ १०२	प्लक्षः	३ ६३	(बल्हिका)	४ ११६
पेशलः	१ १०६	प्लीहा	१ १५६	बहुः	१ २६
पेषिः	४ १२०	प्लुक्षिः	३ १५५	बाहूः	१ २७
पोतः	३ ८६			<b>फ</b> बिन्दुः	१ १०
पोता (पोतु)	२ ६७	फण्डः	१ ११४	बिम्बम्	४ ६६
पोषयित्नुः	३ २६	फण्डम्	१ ११४	(बिम्बी)	४ ६६
(पौलस्त्यः)	४ १८१	फर्फरीकम्	४ २१	(बिम्बोष्ठी)	४ ६६
प्रख्याः	४ २३४	फलिनः	२ ५०	बुधानः	२ ६१
प्रतिदिवा	१ १५६	फल्गुः	१ १८	बुध्नः	३ ५
प्रथमः	५ ६८	(फल्गु)	१ १८	बृहत्	२ ८५
प्रथितिः	४ १८४	फल्गुनः	३ ५६	बृहती	२ ८५
(प्रशत्वरी)	४ ११८	फेनः	३ ३	बृहद्भानुः	३ ३२
प्रशत्वा	४ ११८	(फेनायते)	३ ३	ब्रध्नः	३ ५
प्रशास्ता	२ ६५	<b>ब</b>		ब्रह्म	४ १४७
प्रस्थायी	४ ६	बटिः (पाठा०)	४ ११६	<b>भ</b>	
(प्रहरिः)	४ १३६	बदरम् (पाठा०)	३ १३१	भगालम्	३ ७६
प्रहाणिः	४ ५२	(बदरी) (पाठा०)	३ १३१	भञ्जकः	२ ३३
प्रहिः	४ १३६	बधिरः	१ ५१	भडिलः	१ ५४
प्रहः	१ १५३	बन्धुः	१ १०	भण्डिलः	१ ५४
प्राकषिकः	२ ४२	बन्धुरः	१ ४१	भदन्तः	३ १३०
प्राट्	२ ५८	बन्धूकः	४ ४२	भदाकः	४ १६
प्राणथः	३ ११३	बन्धूरः	१ ४१	भद्रम्	२ २६
प्राणन्तः	३ १२७	बन्ध्या	४ ११३	भयानकः	३ ८२
(प्राणन्ती)	३ १२७	बभ्रुः	१ २२	भरटः	४ १०५

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
भरण्डः	१ १२६	भिषक्	१ १३८	भेरिः	४ ६७
भरतः	३ ११०	भीमः	१ १४८	(भेरी)	२ २६
भरथः	३ ११३	(भीमसेनः)	१ १४८	(भेरी)	४ ६७
भरिमा	४ १४६	(भीमा)	१ १४८	भेलः	२ २६
भरुः	१ ७	भीरुकः	२ ३२	(भेषजम्)	१ १३८
भर्गः	४ २१७	भीष्मः	१ १४८	भैषज्यम्	१ १३८
भल्लुकः	४ ४२	(भीष्मसेनः)	१ १४८	(भौरिकः)	४ ६६
भल्लुकः	४ ४२	(भीष्मा)	१ १४८	भ्रमरः	३ १३२
भवन्तः	३ १२८	भुजिः	४ १४३	भ्रमिः	४ १२२
भवन्तिः	३ ५०	भुजिष्यः	४ १८०	भ्राता	२ ६७
भवान्	१ ६३	भुज्युः	३ २१	भ्राष्ट्रः	४ १६१
भविलः	१ ५४	भुरिक्	२ ७३	भ्रूः	२ ६६
भषकः	२ ३३	भुवः	४ २१८	म्	
भसत्	१ १३०	भुवनम्	२ ८१	मकुरः	१ ४०
भस्त्रा	४ १६६	भुवन्युः	३ ५१	मक्षिका	४ १५५
भस्म	४ १४६	भुविः	२ ११४	मघवा	१ १५६
भातुः	१ ७३	भूकम्	३ ४१	(मघवान्)	१ १५६
भानुः	३ ३२	भूमिः	४ ४६	मंगलम्	५ ७०
भामः	१ १४०	(भूमिका)	४ ४६	मज्जा	१ १५६
भालुः	१ ५	(भूमी)	४ ४६	मञ्जु	१ ३७
भालुकः	४ ४२	भूरिः	४ ६६	मञ्जूषा	४ ७८
भावित्रम्	४ १७२	भूर्णिः	४ ५३	मठरः	५ ३६
भावी	४ ८	भृगुः	१ २८	मणिः	४ ११६
भासन्तः	३ १२८	भृंगः	१ १२५	(मणिरत्नम्)	३ १४
भित्तिका	३ १४७	भृंगारः	३ १३६	मण्डः	१ ११४
भिदकः	२ ३८	(भृंगारी)	३ १३६	(मण्डम्)	१ ११४
भिदिः	४ १४४	भृज्जनम्	२ ८१	मण्डयन्तः	३ १२८
भिदिरम्	१ ५१	भृमिः	४ १२२	मण्डलः	१ १०४
भिदुः	१ २३	भेकः	३ ४३	(मण्डलम्)	१ १०४
भिद्रम्	२ १३	भेरः	२ २६	(मण्डा)	१ ११४

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
मण्डूकः	४	४३	मन्दाकानि	४	१३	मल्लिका	२	३३
मत्सरः	३	७३	(मन्दाकिनी)	४	१३	मल्लूरः	४	६१
(मत्सरा)	३	७३	मन्दारः	३	१३४	मसिः	४	११६
(मत्सी)	४	१०५	(मन्दारुः)	३	१३४	मसिनम्	२	५०
मत्स्यः	४	२	मन्दिरम्	१	५१	(मसी)	४	११६
मत्स्यः	४	१०५	मन्दुरा	१	३८	मसुराः	१	४३
(मत्स्या)	४	१०५	मन्द्रः	२	१३	(मसूरः)	१	४३
मथुरा	१	३८	मन्युः	३	२०	मसूरः	५	३
मदयित्नुः	३	२६	ममाप्तालः	५	५०	(मसूरा)	५	३
मदारः	३	१३४	मयटः	४	८२	मस्तकम्	३	१४८
मदिरा	१	५१	मयुः	१	७	मस्तुः	१	६६
मद्गुः	१	७	मयूखः	५	२५	महः	४	१६०
मद्गुरः	१	४१	मयूरः	१	६७	महत्	२	८५
मद्रः	२	१३	मरतः	३	११०	(महती)	२	८५
मद्वा	४	११४	मरिमा	४	१५०	महसम्	३	११७
मधुः (उकारान्तः)	१-१८		मरीचिः	४	७१	महानसम्	४	१६०
मधुः (सान्तः)	२	११८	मरुः	१	७	महिनम्	२	५७
(मधूकः)	१	१८	मरुत्	१	६४	(महिमा)	२	८५
मधूकः	४	४२	मरुकः	४	४०	महिलः	१	५४
मध्यम्	४	११३	मर्कः	३	४३	(महिलम्)	१	५४
मनाका	४	१४	मर्कटः	४	८२	(महिला)	१	५४
मनुः (उकारान्तः)	१-१०		(मर्कटी)	४	८२	महिषः	१	४५
मनुः (सान्तः)	२	११६	मर्जूः	१	८१	(महिषी)	१	४५
(मनुषी)	२	११६	मर्त्तः	३	८६	(महेला)	१	५४
मन्ता	२	६६	(मर्त्त्यः)	३	८६	मांसम्	३	६४
मन्तुः	१	७३	मर्दलः	१	१०६	माः	४	१६०
मन्थाः	४	११	मर्मरीकः	४	२१	(मागंत्यम्)	५	७०
मन्दम्	२	८२	मलम्	१	११०	(माठरः)	५	३६
मन्दरः	३	१३१	मलयः	४	१००	(माठर्यः)	५	१६
मन्दसानः	२	८६	मलिनः	२	५०	मातरिश्वा	१	१५६



शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २८५ )

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
माता	२	६७	मुदिरः	१	५१	मृणालम्	१	११८
मात्रा	४	१६६	मुदगः	१	१२८	मृतम्	३	८८
माया	४	११०	(मुदगलः)	१	१२८	मृत्युः	३	२१
मायुः	१	१	मुद्रा	२	१३	मृदंगः	१	१२१
मार्जारः	३	१३७	मुनिः	४	१२४	मृदरः	५	४१
(मार्जारी)	३	१३७	(मुनी)	४	१२४	मृदुः	१	२८
मार्जालीयः	१	११६	मुमुचानः	२	६४	मेचकः	५	३७
मालः	२	२६	मुशलः	१	१०६	मेरुः	४	१०२
मालतिः	४	६०	मुषलः	१	१०६	मौदगल्यः	१	१२८
(मालती)	३	११०	मुष्कः	३	४१	मौनम्	४	१२४
(मालती)	४	६०	(मुष्करः)	३	४१	मौर्ख्यम्	५	२२
मालम्	२	२६	मुसलः	१	१०६	म्लानिः	४	५२
(माला)	२	२६	मुस्रम्	२	१३		य	
माहिनम्	२	५७	मुहिरः	१	५१	यकृत्	४	५६
मितद्रुः	१	३४	मुहुः	२	१२२	यक्ष्मः	१	१४०
मित्रम्	४	१६५	मुहूर्त्तम्	३	८६	यक्ष्मा	४	१५२
मित्रयुः	१	३७	मुहेरः	१	६१	यजतः	३	११०
मिथिला	१	५७	मूकः	३	४१	यजत्रम्	३	१०५
मिथुनम्	३	५५	मूत्रम्	४	१६४	यजिः	४	११६
मिश्रः	२	१३	मूर्खः	५	२२	यजुः	२	११६
मिहिरः	१	५१	(मूर्खिमा)	५	२२	यज्युः	३	२०
मीनः	३	३	मूर्द्धा	१	१५६	यतिः	४	११६
मीरः	२	२६	मूलम्	४	१०६	यद्	१	१३२
मीवः	१	१५४	मूलेरः	१	६१	यन्त्रम्	४	१६८
मीवरः	३	१	मूषिकः	२	४३	यमुना	३	६१
मुकुरः	१	४०	(मूषिका)	२	४३	ययीः	३	१५६
मुखम्	५	२०	मृगयुः	१	३७	ययुः	१	२१
(मुख्यः)	५	२०	मृडंकणः	४	२५	यवनः	२	७५
(मुख्यम्)	५	२०	मृडीकः	४	२५	यवागूः	३	८१
मुचिरः	१	५१	मृणालः	१	११८	यवासः	४	२

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
यशः	४	१६२	रजः (सान्तः)	४	२१८	(राक्षसः)	४	१६०
(यष्टी)	४	१८१				राक्षा	३	६२
यष्टिः	४	१८१	रजकः	२	३३	राजन्यः	३	१००
यद्दः	१	१५४	रजतम्	३	१११	राजा	१	१५६
याजिः	४	१२६	रजनम्	२	८०	राजातनः	२	७६
याता	२	६६	रजनिः	२	१०४	राजिः	४	१२६
यातुः	१	७३	(रजनी)	२	८०	(राजी)	४	१२६
यात्रा	४	१६६	(रजनी)	२	१०४	(राजीवम्)	४	१२६
यामः	१	१४०	रज्जुः	१	१५	रात्रिः	४	६८
यामिः	४	४४	(रज्जनम्)	२	८०	(रात्री)	४	६८
यावसः	३	११६	रण्डा	१	११४	रामठम्	१	१०१
युग्मम्	१	१४६	रतूः	१	६२	राशिः	४	१३४
युधानः	२	६१	रत्नम्	३	१४	राष्ट्रः	४	१६०
युध्मः	१	१४५	रत्निः	४	२	राष्ट्रम्	४	१६०
युयुधानः	२	६४	रथः	२	२	रासमः	३	१२५
युवा	१	१५६	रभसः	३	११७	रास्ना	३	१५
युष्मद्	१	१३६	रमकः	२	३४	राहुः	१	३
यूका	३	४७	रमण्यम्	३	१०१	रिक्थम्	२	७
यूथः	२	१२	रमतिः	४	६४	रिपुः	१	२६
यूपः	३	२७	रवणः	२	७५	रिप्रम्	५	५५
योगः	४	२१७	रवथः	३	११३	रिष्वः	१	१५३
योनिः	४	५२	रविः	४	१४०	रुक्मः	१	१४६
योषा	३	६२	रशना	२	७६	रुकमम्	१	१४६
योषित्	१	६७	रश्मिः	४	४७	(रुक्मिणी)	१	१४६
		२	रसना	२	७६	रुक्षः	३	६६
रंहः	४	२१५	रस्नम्	३	१२	रुचकम्	२	३८
रक्षः	४	१६०	रहः	४	२१६	रुचिः	४	१२१
रघुः	१	२६	(रहस्यम्)	४	२१६	रुचितम्	४	१८७
रंकः	३	४०	राः	२	६७	रुचिरम्	१	५१
रजः (अकारान्तः)	४	२१८	राका	३	४०	रुचिष्यम्	४	१८०

शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २८७ )

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
रुद्रः	२ २२			ल (लिबिकरः)	४ १२१
रुधिरम्	१ ५१	लक्षणः	३ ७	लुषभः	३ १२४
रुम्रः	२ १४	लक्षणम्	३ ७	लूनिः	४ १०६
रुरुः	४ १०४	लक्ष्मणः	३ ७	लोतः	३ ८६
रुवथः	३ ११५	(लक्ष्मणः)	३ १६०	लोत्रम्	४ १७४
रुह्यः	४ ११५	लक्ष्मणम्	३ ७	लोम	४ १५२
रूपम्	३ २८	(लक्ष्मणा)	३ ७	लोष्टम्	३ ६२
रेक्णः	४ २००	लक्ष्मीः	३ १६०	लोहितम्	३ ६४
रेणुः	३ ३८	लघट्	१ १३५	(लोहिता)	३ ६४
रेतः	४ २०३	लघुः	१ २६	(लोहिनी)	३ ६४
रेपः	४ १६१	लंका	३ ४०	व	
रेफः	५ ५४	लंगकः	२ ३८	वकुलः	१ ४१
(रैकरोति)	२ ६७	लटकः	२ ३३	वक्त्रम्	४ १६८
रोचना	२ ७६	लट्वा	१ १५१	वक्रः	२ १३
रोचिः	२ ११३	लत्तिका	३ १४७	वक्षः	३ ६२
रोदः	४ १६०	लभसः	३ ११७	वक्षः	४ २२१
(रोदसी)	४ १६०	लमकः	२ ३४	वक्षाः	४ २२२
रोधः	४ १६०	लवंगः	१ १२०	वग्नुः	३ ३३
रोम	४ १५२	लवाणकम्	३ ८३	वङ्क्रिः	४ ६७
रोहन्तः	३ १२७	लविः	४ १४०	वचक्नुः	३ ८१
(रोहन्ती)	३ १२७	लशुनम्	३ ५७	वज्रः	२ २६
रोहिः	४ १२०	लष्वः	१ १५३	वज्रधरः	२ २३
रोहिणः	२ ५६	लाक्षा	३ ६२	वञ्चथः	३ ११३
(रोहिणी)	२ ५६	लाङ्गलम्	१ १०८	वटिः	४ ११६
(रोहिणी)	३ ६४	लाङ्गूलम्	४ ६१	वटुः	१ ८
रोहित्	१ ६७	लिक्षा	३ ६६	वठरः	५ ३६
रोहितम्	३ ६४	लिगुः	१ ३६	वणिक्	२ ७१
(रोहिता)	३ ६४	लिपिः	४ १२१	वण्डः	१ ११४
(रौहिणः)	२ ५६	लिप्तम्	५ ५५	वतण्डः	१ १२६
रौहिषम्	१ ४७	लिबिः	४ १२१	वत्सः	३ ६२

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
वत्सम्	३	६२	वरुत्रम्	४	१७४	वल्गुः	१	१६
वत्सरः	३	७१	वरुथः	२	६	वल्मीकः	४	२६
वदन्तिः	३	५०	वरेण्यः	३	६८	वल्लभः	३	१२५
वदरम्	३	१३१	वर्चः	४	१६०	वल्लूरम्	४	६१
(वदरी)	३	१३१	वर्णः	३	१०	वसतिः	४	६१
वदान्यः	३	१०४	वर्णसिः	४	१०८	(वसती)	४	६१
वधकः	२	२७	वर्णिः	४	१२५	वसन्तः	३	१२८
वधत्रम्	३	१०५	वर्णुः	३	३८	वसिः	४	१४१
वधित्रम्	४	१७४	(वर्तका)	३	१४६	वसुः	१	१०
वधूः	१	८३	वर्तनिः	२	१०८	वसुरोचिः	२	११३
वनिः	४	१४१	वर्त्तिः	४	१२०	वस्तम्	३	८६
वनिष्णुः	४	२	वर्त्तिः	४	१४२	वस्तिः	४	१८१
(वनीयकः)	४	१४१	वर्त्तिका	३	१४६	वस्तु	१	७०
वन्दथः(पाठा०)	३	११३	वर्धन्तु	२	२३	वस्त्रम्	४	१६०
वन्द्रः	२	१३	वर्धम्	२	२८	वस्नः	३	६
वन्नः	२	२६	वर्षः	४	२०२	वहतिः	४	६१
वपुः	२	११६	वर्षः	४	२०२	वहतुः	१	७७
वप्रः	२	२८	वर्वरः	२	१२३	वहन्तः	२	१२८
वप्रिः	४	६७	वर्वरीकः	४	२०	वहित्रम्	४	१७४
वयः	४	१६०	वर्विः	४	५४	वहिः	४	५२
वयुनम्	३	६१	वर्षम्	३	६२	वह्यम्	४	११३
वयोधाः	४	२३०	(वर्षा)	३	६२	वाक्	२	५८
वरटः	४	८२	वलयम्	४	१००	वागुरा	१	४१
(वरटा)	४	८२	वलाकः	४	१४	वातः	३	८६
वरणः	२	७५	(वलाका)	४	१४	वातप्रमीः	३	१
वरण्डः	१	१२६	वलिः	४	११६	वातिः	५	६
(वरतन्तुः)	१	६६	वलीकम्	४	२६	वादिः	४	१२६
वरत्रा	३	१०७	वलूकः	४	४१	वादित्रम्	४	१७२
वरसानः	२	८७	वल्कम्	३	४२	वापिः	४	१२६
वरुणः	३	५३	वल्गु	१	१६	(वापी)	४	१२६

शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र	शब्द	पाद सूत्र
वामः	१ १४०	(विक्रयिकः)	२ ४५	विहा	४ ३७
वायसः	३ १२०	विचक्षाः	४ २३४	वीकः	३ ४७
(वायसः)	४ १६०	(विजयन्तः)	३ १२८	वीचिः	४ ७३
वायुः	१ १	विटपः	३ १४५	वोणा	३ १५
वारंगः	१ १२२	विडङ्गः	१ १२१	वीघ्नम्	२ २७
वारि	४ १२६	विडालः	१ ११८	वीरः	२ १३
वारिः	४ १२६	(विडाली)	१ ११८	(वीरा)	२ १३
(वार्केण्यः)	३ ४१	वितदुः	४ १०३	वृकः	३ ४१
वार्त्ताकः	४ १६	वितस्तिः	४ १८३	वृक्षः	३ ६६
वार्त्ताकम्	३ ७६	विथुरः	१ ३६	वृजनम्	२ ८२
(वार्त्ताकी)	३ ७६	विदथः	३ ११५	वृजिनः	२ ४८
(वार्त्ताकी)	४ १६	विधुः	१ ३६	वृत्रः	२ १३
वार्त्ताकुः	३ ७६	विधुरः	१ ३६	वृद्धश्रवाः	४ २२८
(वाल्मीकिः)	४ २६	विपणिः	४ ११६	वृधसानः	२ ८८
वावदूकः	४ ४२	विपिनम्	२ ५३	वृन्दम्	४ ६६
वाशिः (इन्)	४ ११६	विप्रः	२ २६	वृशः	४ १०५
वाशिः (इज्)	४ १२६	विशालः	१ ११८	वृश्चिकः	२ ४१
वाशुरा	१ ३८	विशालम्	१ ११८	वृषभः	३ १२३
वाश्रम्	२ १३	(विशाला)	१ ११८	वृषयः	४ १०१
वाष्पम्	३ २८	विशिपम्	३ १४५	वृषलः	१ १०६
वासः	४ २१६	विश्वः	१ १५१	(वृषली)	१ १०५
वासरः	३ १३२	विश्वप्सा	१ १५६	वृषा	१ १५६
वासिः	४ १२६	विश्वभोजाः	४ २३६	वृष्णिः	४ ५०
वासुः	१ १	विश्ववेदाः	४ २२८	वेणिः	४ ४६
वास्तु	१ ७०	विश्ववेदाः	४ २३६	वेणुः	३ ३८
वास्तूकः	४ ४२	(विश्वा)	१ १५१	वेतनम्	३ १५०
वाहसः	३ ११६	विषा	४ ३७	वेतसः	३ ११८
वाहीकः	४ २६	विष्टपम्	३ १४५	वेत्रम्	४ १६८
विः	४ १३५	विष्टरश्रवाः	४ २२८	वेदिः	४ १२०
विकुस्रः	२ १५	विष्णुः	३ ३६	वेधाः	४ २२६

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
वेनः	३	६	शकलः	४	१०६	शरत्	१	३०
वेन्ना	३	८	(शक्वरी)	४	११४	शरमः	३	१२२
वेमा	४	१५१	शक्वा	४	११४	शरिः	४	१२६
वेशन्तः	३	१२६	शङ्कुः	१	३६	शरिमा	४	१४६
वेष्टम्	४	१६१	शङ्खः	१	१०२	शरीरम्	४	३१
वेष्पः	३	२३	शण्डिलः	१	५४	शरुः	१	१०
वेहत्	२	८६	शण्डः	१	६६	शर्करा	४	३
वैजयन्तः	३	१२८	शतद्रुः	१	३५	शर्ध	२	२३
(वैजयन्ती)	३	१२८	शतेरः	१	६०	शर्म	४	१४६
(वैतनिकः)	३	१५०	शत्रिः	४	६८	शर्वः	१	१५५
व्यलीकम्	४	२६	शत्रुः	४	१०४	शर्वरी	२	१२३
व्याघ्रः	५	६३	शद्रिः	४	६६	शर्शरीकः	४	२०
व्योम	४	१५२	शपथः	३	११३	शलमः	३	१२२
व्रततिः	४	६०	शबलः	१	१०५	शलाका	४	१५
(व्रतती)	४	६०	शब्दः	४	६८	शलिः	४	१२६
व्राजिः	४	१२६	(शब्दग्रामः)	१	१४३	शल्कम्	३	४३
		<b>श</b>	(शब्दप्राट्)	२	५८	शल्यम्	४	१०८
शंस्ता	२	६५	शमठः	१	१००	शवः	४	१६४
शकटः	४	८२	शमथः	३	११३	शवरः	३	१३१
शकटम्	४	८२	शमलः	१	११२	शवसानः	२	८७
शकलः	१	११२	शम्बः	४	६५	शष्पम्	३	२८
शकुनः	३	४६	शम्बुकः	४	४२	शस्त्रम्	४	१६५
शकुनिः	३	४६	शम्बुकः	४	४२	शस्यम्	४	११०
शकुन्तः	३	४६	शयण्डः	१	१२६	(शाकटायनः)	४	८२
शकुन्तिः	३	४६	शयथः	३	११३	शाकम्	३	४३
शकुलः	१	४१	शयानकः	३	८२	(शाण्डिल्यः)	१	५४
शकृत्	४	५६	शयुः	१	७	(शात्रवः)	४	१०४
शक्तिधरः	२	२३	शयुनः	३	६१	शादः	४	६८
शकमा	४	१४८	शरणिः	२	१०४	शारङ्गम्	१	१२७
शकः	२	१३	शरण्यम्	३	१०१	शारिः	४	१२६

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
(शारिका)	४	१२६	शिशुः	१	२०	शूर्पम्	३	२६
शाङ्गः	१	१२७	शिशिवदानः	२	६३	शूलधरः	२	२३
शार्दूलः	४	६१	शीकरः	३	१३१	शृङ्गम्	१	१२६
शालभञ्जिका	२	३३	शीघ्रः	४	३६	शृङ्गारः	३	१३६
श्रला	१	११८	शीरः	२	१३	शृधूः	१	६१
शालिः	४	१३१	शीर्विः	४	५५	(शेषः)(अका०)	४	२०२
(शालिग्रामः)	१	१४३	शीलम्	४	३६	शेषः (सान्तः)	४	२०२
शालुः	१	५	शीवा	४	११५	शेपालम्	४	३६
शालुकम्	४	४३	शुकः	३	४२	शेफः	४	२०२
शालूरः	४	६१	(शुकशारिकम्)	४	१२६	शेवः	१	१५२
			शुक्रम्	२	२६	शेवा	१	१५४
शास्ता	२	६५	शुक्लः	२	२६	शेवालम्	४	३६
शिक्यम्	५	१६	शुक्तिः	३	१५५	(शैक्यम्)	५	१६
शिखा	५	२४	शुचिः	४	१२१	(शैग्रवः)	४	१०३
शिगुः	४	१०३	शुनकः	२	३३	शैवलम्	४	३६
शिङ्घारणकः	३	८३	(शुनः शेपः)	४	२०२	शोचिः	२	११०
शिङ्घाणम्	३	८३	(शुनी)	१	१५६	शोथः	२	४
शितिः	४	१२३	शुन्ध्युः	३	२०	शौटीरः	४	३१
शिथिलः	१	५३	शुभ्रम्	२	१३	(शौटीर्यम्)	४	३१
(शिथिला)	१	५२	शुभिः	४	६६	शमश्रु	५	२८
शिनिः	४	५२	शुल्बम्	४	६६	श्यामः	१	१४५
शिरः	४	१६५	शुषिरम्	१	५१	(श्यामा)	१	१४५
शिरिः	४	१४४	शुषिलः	१	५६	श्यामाकः	४	१६
शिरीषः	४	२८	शुष्कः	३	४१	श्येतः	३	६३
शिल्पम्	३	२८	शुष्णः	३	१२	(श्येता)	३	६३
शिवः	१	१५३	शुष्मम्	१	१४४	श्येनः	२	४७
शिवम्	१	१५३	शूद्रः	२	१६	(श्येनी)	३	६३
शिवा	१	१५३	(शूद्रा)	२	१६	(श्रवणः)	२	७६
शिविरम्	१	५३	(शूद्री)	२	१६	श्रवणा	२	७६
शिशिरम्	१	५३	शूरः	२	२६	श्रवाय्यः	३	६६

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
श्रीः	२	५८	सदः	४	१६०	सर्वः	१	१५३
श्रेणिः	४	५२	सधिः	२	११५	सर्ववेदाः	४	२२८
श्रोणः	३	६	सनिः	४	१४१	सर्षपः	३	१४१
श्रोणिः	४	५२	सन्ध्या	४	११३	सलिलम्	१	५४
श्रोत्रम्	४	१६६	सप्तन्	१	१५७	सवनः	२	७५
श्लक्ष्णः	३	१६	समया	४	१७६	सव्यम्	४	१११
श्लिकुः	१	३२	समरः	३	१३१	सव्येष्टा	२	१०३
श्लेष्मा	४	१४६	समिथः	२	११	सस्यम्	४	११०
(श्लेष्मलः)	४	१४६	समीचः	४	६३	सहः	४	१६०
श्वयीचिः	४	७२	समीची	४	६३	सहसानः	२	८८
श्वशुरः	१	४४	समुद्रः	२	१३	(सहस्यः)	४	१६०
शवा	१	१५६	(सम्पातिः)	५	५	सहारः	३	१३६
शिवत्रम्	२	१३	सम्प्रहारिः	४	१२६	सहुरिः	२	७४
	ष		सरः	४	१६०	सहोरः	१	६५
षण्डः	१	११४	सरकम्	५	३५	साकम्	३	४३
षण्डः	४	१०५	सरट्	१	१३४	सादिः	४	१२६
षिङ्गः	१	१२४	सरटः	४	८२	साधन्तः	३	१२८
	स		सरटः	४	१०६	साधुः	१	१
संयद्धरः	३	१	सरणिः	२	१०४	साध्वसम्	३	११७
संवत्सरः	३	७२	सरण्डः	१	१२६	सानसिः	४	१०८
संवसथः	३	११६	सरण्युः	३	८१	सानुः	१	३
संश्चत्	२	८६	सरयुः	३	२२	साम	४	१५४
(संश्चायते)	२	८६	सरयूः	३	२२	सारङ्गः	१	१२२
संस्तवानः	२	६०	सरलः	१	१०६	सारणिः	२	१०४
सक्तुः	१	६६	(सरसी)	४	१६०	(सारणी)	२	१०४
सक्थि	३	१५४	(सरस्वान्)	४	१६०	सारथिः	४	६०
सखा	४	१३८	सरित्	१	६७	सार्थः	२	५
संकसुकः	२	३०	सरिमा	४	१४६	सास्ना	३	१५
संग्रहणी	५	६७	सर्जूः	१	८०	(साहसिकः)	४	१६०
सङ्ग्रामः	१	१४३	सर्पिः	२	११०	सिंहः	५	६२
सत्रम्	४	१६८	सर्मः	१	१४०	सिक्थम्	२	७



शब्दानां अकारादिक्रमेण सूची

( २६३ )

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र
सितम्	३	८६	सुशर्मा	४	१५३	स्कन्धः	४	२०८
सिध्नः	२	१३	सुष्ठु	१	२५	स्तनयित्नुः	३	२६
(सिध्नकाः)	२	१३	सुस्रोताः	४	२२४	स्तम्बः	४	६७
सिनः	३	२	सूक्ष्मम्	४	१७८	स्तरिमा	४	१४६
सिन्दूरम्	१	६८	सूचः	४	६४	स्तरीः	३	१५८
सिन्धुः	१	११	सूचिः	४	१४०	स्तवकः	४	६७
सिमः	१	११४	(सूची)	४	६४	स्तिभिः	४	१२३
सिरा	२	१३	(सूची)	४	१४०	स्तीर्विः	४	५५
सीता	३	६०	सूत्रम्	४	१६४	स्तुवेय्यः	३	६६
सीमा	४	१५२	सूना	३	१३	स्तुषेय्यः	३	६६
सीमिकः	२	४४	सूनुः	३	३५	स्तूपः	३	२५
सीरः	२	२६	सूपः	३	२६	स्तोमः	१	१४०
सुजवाः	४	११४	सूमः	१	१४५	स्त्येनः	२	४७
सुतपाः	४	२२४	सूरः	२	२५	स्त्री	४	१६७
सुतपाः	४	२२८	सूरतः	५	१४	(स्त्रीरत्नम्)	३	१४
सुतेजाः	४	२२८	सूरिः	४	६५	स्थपतिः	४	६०
सुत्रामा	४	१४६	(सूरी)	४	६५	स्थविः	४	५७
सुधर्मा	४	१५३	सृकः	३	४१	स्थविरः	१	५३
(सुनीथः)	२	२	सृणिः	४	५०	स्थाणुः	३	३७
सुपयाः	४	२२४	सृणिः	४	१०५	स्थाम	४	१४६
सुप्रतीकः	४	२६	सृणीका	४	२४	स्थालम्	१	११६
(सुमित्रा)	४	१६५	सृत्वा	४	११५	(स्थाली)	१	११६
सुमेरुः	४	१०२	सृदरः	५	४१	स्थिरम्	१	५३
सुयशाः	४	२२४	सृदाकुः	३	७८	स्थूणा	३	१५
सुरः	२	२५	सृप्रः	२	१३	स्थूरः	५	४
सुरतः	५	१४	सेतुः	१	६६	(स्थौर्यः)	५	४
(सुरा)	२	२५	(सेना)	३	२	स्नायुः	१	६
सुरेणुः	३	३८	सेना	३	१०	स्नावा	४	
सुवक्षाः	४	२२८	सोमः	१	१४८	स्नुषा		
सुवनः	२	८१	सोमा	४	१५२	स्नेहा		
सुविदत्रम्	३	१०८	(सौमित्रिः)	४	१५५	स्नेहुः		

शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	शब्द	पाद	सूत्र	
स्पृहयाय्यः	३	६६	हनुषः (पाठा०)	४	७३	हिंसीरः	५	१८	
स्फारः	२	१३	हनुषः	४	७३	हिंगुः	१	३६	
स्फिरः	१	५३	हन्ता	२	६६	हिण्डीरः	४	३१	
स्यन्दनः	२	७६	हरिः	४	१२०	हिमम्	१	१४७	
स्यमिकः	३	४६	हरिणः	२	४७	(हिमानी)	१	१४७	
स्यमीकः	३	४६	(हरिणी)	२	४७	हिरण्यम्	५	४४	
स्यूनः	३	६	(हरिणी)	३	६३	हिरण्यरेताः	४	२२८	
स्यूमः	१	१४४	हरित्	१	६७	हृदयम्	४	१०१	
स्योनः	३	६	हरितः	३	६३	हृषीकम्	४	१८	
स्युक्	२	६३	(हरिता)	३	६३	हृषुः	१	२३	
स्युवः	२	६२	हरिद्रुः	१	३४	हेतुः	१	७३	
स्यूः	२	५८	हरिमा	४	१४६	हेम	४	१४६	
स्योतः	४	२०३	हरेणुः	२	१	हेमन्तः	३	१२६	
स्वधा	४	१७६	हर्यतः	३	११०	हेलिः	४	११६	
स्वप्नः	३	१०	हर्षयित्नुः	३	२६	होता	२	६७	
स्वरुः	१	१०	हर्षुलः	१	६६	होत्रम्	४	१६६	
(स्वर्भानुः)	३	३२	हलिः	४	११६	होमः	१	१४०	
स्वसा	२	६८	हविः	२	११०	होमा	४	१५२	
स्वस्तिः	४	१८२	हस्तः	३	८६	होमी	३	८४	
स्वाती	४	१३२	(हस्ती)	३	८६	हौलः	४	१०६	
स्वादुः	१	१	हस्रः	२	१३	हस्वः	१	१५३	
स		ह	हानिः	४	५२	हीकः	३	४८	
स।	हंसः	३	६२	हान्त्रम्	४	१६१	(हीका)	३	४८
सखा	हंसिका	४	१५५	हारिः	४	१२६	हीकुः	३	८५
संकसुकन्नुः	३	३०	हालुः	१	१	हलीका	३	४८	
संग्रहणी	२	२	हासा	४	२२२	हलीकुः	३	८५	
सङ्ग्रामः	१	१	१०						
सत्रम्	४								



मेरे सुहृद !

आप श्री पण्डित सत्यव्रत जी शास्त्री वेदवागीश, श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के स्नातक होने के साथ-साथ वेदव्याकरणनिरुक्ताचार्य हैं। आपका जन्म कासगंज (उत्तर प्रदेश) में सन् 1932 में एक मध्यम परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कासगंज में ही हुई। तदनन्तर सन् 1947 में स्वामि ब्रतानन्द जी महाराज के दर्शन लाभ होने एवं उनके प्रेरणाप्रद

उपदेशानुसार आपके पिता स्व. श्री रामप्रसाद जी ने सन् 1948 में इनका श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में भेजकर प्रवेश कराया। वहीं आपने सतत् निवास कर 16 जुलाई सन् 1948 से सन् 1959 तक शिक्षा प्राप्त की। आप गुरुकुल के रजतजयन्ती महोत्सव पर स्नातक बने, तत्पश्चात् सन् 1982 तक गुरुकुल में ही अध्यापन कार्य कराते रहे। आपने अपने विद्यार्थीकाल में ही दयानन्द लहरी एवं दिव्यानन्द लहरी नामक पुस्तकों की संस्कृत-हिन्दी टीकायें लिखीं और वे गुरुकुल द्वारा प्रकाशित की गयीं। अब यह आपकी उणादिकोष पर प्रकाशिका नामक संस्कृत टीका है। साथ ही विमला नामक हिन्दी टीका भी है। सन्तसुमन माला, सप्तशती दोहावली, वैराग्य मञ्जरी एवं दयानन्द दिग्विजय की सात सर्ग तक की संस्कृत टीका पाण्डुलिपि रूप में हैं, जिनके प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

आपने सन् 1982 के बाद अध्यापन कार्य कन्या गुरुकुल प्रताप नगर, चित्तौड़गढ़ में एवं आबू गुरुकुल में किया। सम्प्रति आप तीन वर्ष से आर्ष गुरुकुल एटा में ब्रह्मचारियों को व्याकरण निरुक्त आदि का अध्यापन कार्य आचार्य रूप में रहकर कर रहे हैं। यही आपने यह टीका है। मैं आपके दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

—देवराज शास्त्री

मन्त्री एवं मुख्याधिष्ठाता

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा (उ.प्र.)

हंसिक  
संस्कृत  
संग्रहण  
सङ्ग्रामः  
सत्रम्